
नवंबर (प्रथम) 1994, रुपए 12.00
सरिता
ह राव के बाद
धानमंत्री कौन?
ही नहीं
भी खर्चीली
ी के चार पल
के संग
का वैभव
दीवाली विशेषांक

दीवाली विशेषांक

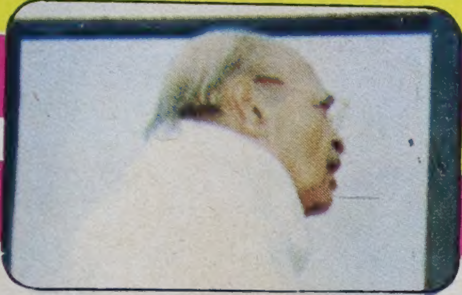
सरिता

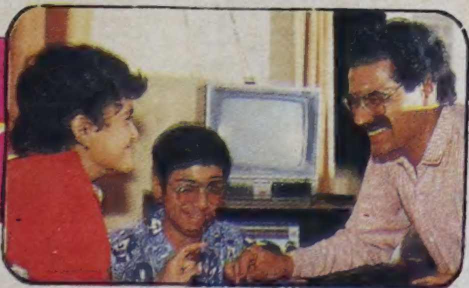
सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ

अंक : 949 नवंबर (प्रथम) 1994

लेख





कथा साहित्य



स्तंभ

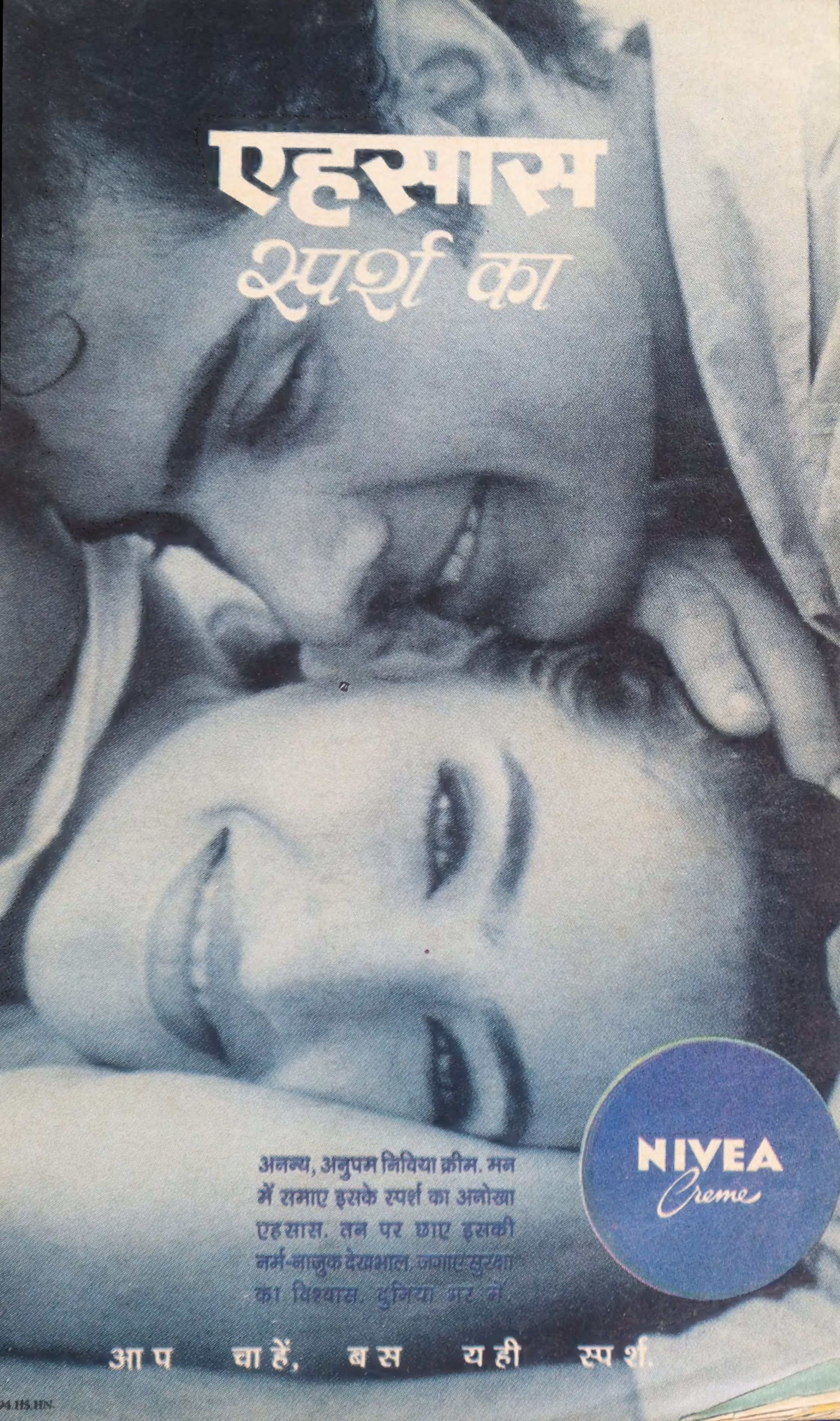
कविताएं



मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
अन्य कार्यालय: 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद**-380009.
जी-3, एचवीएस कोर्ट, कनिंघम रोड, **बंगलौर**-560052. 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, **बंबई**-400021. तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113 पार्क स्ट्रीट, **कलकत्ता**-700016. 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **मद्रास**-600008. 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद**-500003. फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ**-226001. 111, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, **पटना**-800001. जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोचीन**-642031.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य : केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लिमिटेड' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. नहीं.
विदेशों में मूल्य : एक प्रति : 20 सेंट अमेरिकी डालर, डाक व्यय अतिरिक्त
वार्षिक : 20.00 अमेरिकी डालर (समुद्री डाक से) 45.00 अमेरिकी डालर हवाई डाक से

मूल्य : एक प्रति 10.00 रुपए. वार्षिक 240 रुपए. यह प्रति 12.00 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 75 पैसे प्रति.
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में


एहसास
स्पर्श का
अनन्य, अनुपम निविया क्रीम. मन में समाए इसके स्पर्श का अनोखा एहसास. तन पर छाए इसकी नर्म-नाज़ुक देखभाल. जगाए सुरक्षा का विश्वास. दुनिया भर में.
NIVEA
Creme
आप चाहें, बस यही स्पर्श.

अजी मेरी बीवी का भी जवाब नहीं, हीरा है हीरा. बस शादी क्या हुई उसका डांस कैरियर खत्म; मगर उसने कभी चूँ तक नहीं की. शादी के सात सालों में एक नटखट पति और दो शरारती बच्चे भी उसकी सृजनशीलता को न मार सके.

उसी दिन की तो बात है जब हम चर्चा कर रहे थे कि कौन सी वाशिंग मशीन खरीदें. उसने फौरन कह दिया: "ओनिडा!" अब मैं ठहरा इंजीनियर दिमाग. उसे चेताया कि केवल नाम पर मत जाओ – "जरा उसका डिमांस्ट्रेशन देखो, पूरी डिटेल पता करो और उसके बाद फैसला करो." वह दबे ओंठो से मुस्कुराई. दो दिन बाद, जैसे ही मैं काम पर से घर लौटा, तो हे भगवान! देखता क्या हूँ कि बच्चे साजिशभरी मुस्कान से और मेरी पत्नी फटाफट एक भरत नाट्यम प्रस्तुति से मेरा स्वागत कर रही है!



बहुत ही प्रभावपूर्ण भावमुद्रा और

एक पारिवारिक साज़िश...
और ओनिडा वाशिंग मशीन.



अंगसंचालन से उसने ओनिडा वाशिंग मशीन के काम करने का ढंग दिखा डाला. उसने कहा – "अनूठा ४-वे वाटर मूवमेन्ट, बेहतरीन धुलाई के लिए" और बिजली की गति से अपनी भुजाओं को चारों दिशाओं में घुमाकर इसके जटिल मूवमेन्ट पेश कर दिए!



मैं तो भौंचक्का रह गया कि इस बीच उसकी ुल्फों की मोटी लटें किस तरह बल खाके नहरा रहीं थीं. "और कड़ी, मध्यम तथा कोमल धुलाई के बीच का खासा फ़र्क, ो किसी दूसरी मशीन में नहीं" – ये भी सने अपनी नाचती आँखों, फुर्तीली उंगलियों ौर मचलती बाहों के ज़रिए विस्तार से र दिखाया.

इसके बाद, उसने साड़ी का पल्लू कमर खोंसा और अपने पूरे शरीर का इस्तेमाल रते हुए यह कर दिखाया कि ओनिडा वाशिंग शीन की ख़ास हैवी ड्यूटी मोटर में कितनी ज़बूती और सहूलियत है कि ये बिना झंझट ालों-साल चले...

मैंने पूरी तरह प्रभावित होकर कहा – भई, मैं तो न्योछावर हो गया." ...आओ लें और तुरंत एक ओनिडा ले आएँ!"

लेकिन ये क्या... बच्चे और उनकी माँ रहस्यमय ढंग से मुस्का रहे थे. कोई आकर्षक और खूबसूरत चीज़ परदे के पीछे से झांक रही थी. आ हा'! यानि वो पहले ही खरीद लायी! मुझे तो अंदाज़ा लगा लेना चाहिए था. "नारी मुक्ति" मेरी छह साल की बिटिया चहक उठी, और परदा हटाते ही फूली न समायी.

मैंने प्यार भरी नज़रों से पत्नी को देखा. "अब तुम्हारे पास खासा समय रहेगा, अपना भरतनाट्यम फिर से शुरू कर सकती हो..."



आप के पत्र

सरित प्रवाह/सितंबर/द्वितीय

संपादकीय पढ़ा. इतनी सशक्त पत्रिका का आरक्षण पर इतना घटिया सुझाव गले से नहीं उतरता. क्या आप ने आर्थिक रूप से पिछड़े सवर्णों की व्यथा को समझने का प्रयास नहीं किया? क्या सभी सवर्ण निजी संस्थाओं द्वारा संचालित महंगे स्कूलों में अपने बच्चों को शिक्षा दिला पाएंगे? शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लिए कमर कसने का सुझाव देने के बजाय आप का यह बचकाना हल सुझाना उचित नहीं लगा. आप गरीब सवर्णों की त्रासदी समझने में असफल रहे हैं अन्यथा ऐसा न लिखते. —रमेश दत्त उनियाल

*

आप ने आरक्षण के जिस पहलू पर प्रकाश डाला है उस पर संभवतः आरक्षण समर्थकों ने चिंतन नहीं किया होगा. हर चीज की एक सीमा होती है. कानून की यदि पूर्णतया अनदेखी कर दी जाए तो भी यह शतप्रतिशत से अधिक नहीं हो सकता. लेकिन उस दशा में इस की सामाजिक विसंगतियों को झेलने के लिए आरक्षण मानने वालों को तैयार रहना चाहिए. क्योंकि तब इन पिछड़ी जातियों की सरकारी नौकर के रूप में विशिष्ट पहचान बन जाएगी. मौजूदा दौर निजीकरण का है, लाइसेंस राज समाप्ति की ओर है, ऐसी दशा में इन सरकारी नौकरों को अंधाधुंध लूट के साधन उपलब्ध नहीं हो सकेंगे. दूसरी ओर अनारक्षित जाति वाले स्वतंत्र व्यवसाय, कृषि, उद्योग, व्यापार, वकालत व अन्य धंधों की तरफ बढ़ेंगे और परिश्रम करेंगे. परिणामस्वरूप वे अधिक समृद्ध हो जाएंगे और पिछड़ी जाति वाले सरकारी नौकर होने के कारण तब भी पीछे ही रह जाएंगे. —राम शंकर त्रिपाठी

*

स्त्रियों को अपने पति व पिता की संपत्ति में हिस्सा मिलने से संबंधित बिल के विषय में आप के विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूं. इस बिल के पारित हो जाने पर संबंधों में पसरती जा रही कटुता में और बढ़ोतरी होगी. इस का सब से अधिक दुष्प्रभाव पतिपत्नी के अहम रिश्ते पर पड़ेगा, जिस से पारिवारिक विघटन की स्थिति पैदा हो जाएगी. अतः इस बिल का पारित न होना ही श्रेयस्कर है.

—विवेक सेठ

जातीय विद्वेष के शिकार

लेख 'रवांडा : जातीय विद्वेष से श्मशान बन चुका एक देश' (सितंबर/द्वितीय) पढ़ा. हमारे देश की हालत भी बिलकुल ऐसी ही हो चुकी है. रवांडा के नागरिकों की तरह हम भी जातीय विद्वेष के कारण आपस में लड़ रहे हैं, मारकाट कर रहे हैं. एकता में जो ताकत होती है वह हमारी इस आपसी लड़ाई से बिखरने लगी है. अगर हम इसी तरह आपस में लड़तेझगड़ते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब हमें भी रवांडा वासियों की तरह भूखप्यास से तड़पना पड़ेगा. हमें चाहिए कि इन जातीय झगड़ों को त्याग कर एकता व भाईचारे से रहें. —हीरालाल खेराजानी

*

जनचेतना आवश्यक है

लेख 'जब होती है भिड़ंत राजनीतिबाजों और नौकरशाहों में' (सितंबर/द्वितीय) में भिड़ंत के सभी संभावित मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है. इस आपाधापी के दौर में वही इस भिड़ंत में जीतता है जिस के जूतों में दम हो. और इस समय नौकरशाह राजनीतिबाजों पर हावी हो रहे हैं क्योंकि राजनीति जातिपांति पर आधारित होती जा रही है जिस के कारण दोनों में घालमेल की संभावनाएं कम हो गई हैं. चाहे नौकरशाही हो या राजशाही, सभी जगह सरकारी धन का दुरुपयोग हो रहा है. सभी जगह भाईभतीजावाद का जोर है. नौकरशाह यूनियनबाजी दिखा कर राजनीतिबाजों का जीना हराम किए रहते हैं तो राजनीतिबाज तबादला, तरक्की आदि अस्त्रों के द्वारा नौकरशाहों पर अंकुश लगाए रहते हैं. इन दोनों वर्गों को ठीक करने के लिए आज आवश्यकता वैचारिक व नीतिगत जनचेतना की है.

—मुकेश भारद्वाज

*

शेयरों का बोलबाला

लेख 'नए शेयर : निवेश सोचसमझ कर' (सितंबर/द्वितीय) पढ़ा. वास्तव में आजकल जिस तरह से शेयरों का बोलबाला है हर व्यक्ति धन के लोभ में शेयरों में अधिक से अधिक पैसा लगा कर मुनाफा कमाना चाहता है. ऐसे में यदि उस की आकांक्षाएं फलीभूत न हों तो क्या हो? —सुषमा सिंह

*

अनावश्यक खर्च

लेख 'जिद से पैसा नहीं टपकता' (सितंबर/द्वितीय) पढ़ा. अगर पत्नी समझदार हो तो कहना ही क्या? नईनवेली दुलहन तो आजकल पति का जीना हराम करने का संकल्प ले कर ही ससुराल में कदम रखती है. पति की मेहनत की कमाई को सूझबूझ से खर्च करने के बजाय पड़ोसिन की देखादेखी सुखसुविधाओं में उड़ाती है. पत्नी की इन हरकतों से पति पर क्या गुजरती है यह तब पता चलता है जब मामला काफी गंभीर हो जाता है. पत्नी को चाहिए कि

हमारी शुभ कामनाऐं

ਰ.100 करोड़ का ग्रुप रु. 200 करोड़ के कारोबार की ओर अग्रसर है।

**निरंतर विकास की गौरवशाली परंपरा
और अपार संभावनाओं वाला भविष्य**



हमारी इस स्वर्णिम सफलता में अपना मूल्यवान योगदान देने वाले लाखों निवेशकों, दल के सदस्यों और शुभचिंतकों को हमारी हार्दिक बधाई।

ुख्य आकर्षण

- सर्वाधिक लाभ
- पूरी तरह सुरक्षित निवेश
- मुफ्त दुर्घटना बीमा
- सार्वजनिक धन का कोई नुकसान नहीं
- निवेश राशि पर ऋण की सुविधा
- नियत अवधि से पूर्व आंशिक भुगतान
- निवेश राशि की ट्रांसफर सुविधा
- दिनांक 30.9.94 तक 38 करोड़ रु. की मेच्यूरिटी राशि का भुगतान किया गया
- सुरक्षित जीविका

**000 एकड़ में फैले विभिन्न क्षेत्रों में
ी. एफ. आई. एल. की बढ़ती गतिविधियां**

- एग्रो-फॉरेस्ट्री फॉर्म्स का विकास
- स्वर्ण उद्यान (सामाजिक वानिकी फॉर्म्स का विकास)
- यात्री स्थलों (गोल्डन कंट्री रिजॉर्ट्स) का विकास
- हरियाणा, पंजाब, उ.प्र. आंध्र प्रदेश, गुजरात, हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्यों में कई स्वच्छ पर्यावरण वाले उपनगरों का विकास

संस्था ही सर्वोपरि है

एक अपील

गोल्डन फौरेस्ट (इंडिया) लि., नाम और कार्यशैली से 1987 में रजिस्टर्ड यह एकमात्र संस्था है। हमारा रजि॰ न॰ 7310 है। चंडीगढ़, पंचकुला या मोहाली में हमारी कोई शाखा नहीं हैं हमारा कार्यक्षेत्र: कृषि आधारति सोशल फौरेस्ट्री फार्मों, इको-फ्रेंडली टाउनशिप और टुरिस्ट रिजार्टों आदि का विकास करना है। जनता से निवेदन है कि वे कुछ लोगों द्वारा किए जा रहे गलत प्रचार और हमारे नाम अथवा कार्यशैली के दुरुपयोग से गुमराह न हों। सभी चेक और रसीद हमारे प्रधान कार्यालय से ही जारी किए जाते हैं। हमारी शाखएं/चैंबर हमारे डॉक्युमेंटेशन चैनल हैं। कंपनी के नाम पर चंडीगढ़ में स्थानीय चेक/डीडी स्वीकार किए जाते हैं। बहरहाल निवेशक हमारे बैंक खाते में डिपोजिट कर हमें उसका प्रमाण भेज सकते हैं। जी. एफ. आई. एल. संगठन अपने किसी भी टीम सदस्य को विज्ञापन देने का अधिकार नही देता है।

आर. के. स्याल
चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर

Golden Forests (INDIA) LIMITED
The Eco-Friendly People

स्टर्ड और मुख्यालय : एस. सी. ओ. 832-33-34, मनीमाजरा, यू.टी. चंडीगढ़.
: 554706, 554351 फैक्स : 0172-561078, 554706

"परिपक्वता" सुनिश्चित करने वाले सगंठन में निवेश करें।

सही तरीके से धन खर्च करे और बचे हुए पैसे से अपनी इच्छाओं की पूर्ति करे. —आबिद मजीद इराकी

*

झूठी शान

लेख 'जन्मदिन सादगी से मनाएं' (सितंबर/द्वितीय) उपयुक्त लगा. आधुनिक युग में एकदूसरे से आगे बढ़ने व अपने को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ लगी हुई है. हर कोई अपने को धनवान साबित करना चाहता है. इसलिए जन्मदिन जैसे आयोजनों पर अंधाधुंध पैसा खर्च कर संपन्नता का प्रदर्शन करता है. बाद में चाहे कुछ भी हो. ऐसी ही एक महिला हैं जो कुछ वर्ष पूर्व तक अपने बेटे के जन्मदिन पर काफी शोरशराबा व धन का अनावश्यक व्यय किया करती थी. आज उन के उस बनावटीपन ने उन्हें कहीं का नहीं छोड़ा है. पति शराबी बन चुका है, मकान बिक गया है. घरखर्च चलाने के लिए परिवार का प्रत्येक सदस्य छोटेमोटे काम में लगा है. यदि लोग इस झूठी शान के चक्कर में न पड़ें तो उन्हें कभी भी ऐसी परिस्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा. —कुमकुम भौमिक

*

नींद खोलने के लिए

लेख 'फिल्मों के सपने दिखा कर ठगने वाले सौदागर' (सितंबर/द्वितीय) उन नवयुवकों की आंखें खोलने के लिए काफी है जो फिल्मी हीरोहीरोइन बनने के चक्कर में लुटते रहते हैं. इन लोगों की इस कमजोरी का फायदा उठा कर कई ठग करोड़पति बन चुके हैं, फिर भी इन के दिमाग ठिकाने नहीं आते.

आशा है, इस लेख को पढ़ने के बाद कई युवकयुवतियां इस दुस्वप्न से बचेंगे.

—हरिशंकर 'एन'. उपाध्याय

*

अटपटापन

कहानी 'प्रेमपत्र' (सितंबर/द्वितीय) पढ़ी. इस के कथानक में कुछ अटपटापन है. सत्यजित राय की पहली फिल्म लगभग 40 वर्ष पूर्व आई थी. अतः जाहिर है कि उस की प्रसिद्धि उस के बाद ही फैलनी शुरू हुई होगी. कथानक के अनुसार नायक ने 1960 में पिलानी से इंजीनियरिंग की अतः सत्यजित राय की पहली फिल्म के प्रदर्शन के वक्त उस की उम्र कम से कम 16-17 वर्ष रही होगी. ऐसे में लेखक का यह कहना कि नायक की पैदाइश के वक्त उस के पिता ने उस का नाम सत्यजित राय की फिल्मों से प्रभावित हो कर सत्यजित रखा ठीक नहीं लगता.

—सुनील कुमार चौबे

*

दिल भर आया

कहानी 'अमूल्य' (सितंबर/द्वितीय) दिल को छू गई. प्रशंसा के लिए शब्द नहीं हैं. पात्रों का सजीव चित्रण सुखद लगा. अंत इतना मार्मिक था कि बरबस दिल भर आया. 'अनूप' का चरित्र साधारण होते हुए भी महान लगा. क्या सचमुच हमारे समाज में ऐसे व्यक्ति भी हो सकते हैं? —अनजान ●



मेरे शून्य

अपने दामन में
मैं ने सर्वस्व बटोरा,
तुम्हारे पास चला आया,
मेरे हाथ भरे थे, भरे हाथों को देख,
तुम ने मुझ को अस्वीकारा.

मेरे भरे हाथों में
देखा होता,
भरे दामन में झांका होता,

उन में थे
मेरे सारे अभाव,
मेरी निर्बलताएं,
मेरे सारे शून्य.

तुम संवारती,
अपने हाथों
उन्हें सजाती,
और
उन शून्यों को सब से पहले
सजा देती
अपनी एक इकाई,
मेरे सारे शून्य
अमूल्य हो जाते.

—ब्रह्म दव

सुमन सौरभ



नवंबर 1994

सुमन सौरभ

नवंबर 1994

प्रमुख आकर्षण

कहानियां

• सफेद चमड़ी की काली साजिश • एक ही क्षण में • ऐसे मनाई दीवाली • तांत्रिक का रहस्य • समझदार सुंदर • बिजली का तार • साहसिक अभियान • गुप्त दस्तावेज • एक पत्र

ज्ञानवर्धक लेख

• एक रोमांचक नौकायन प्रतियोगिता : चूया रैली • फिलो फर्नस्वर्थ : टेलीविजन का जनक • आगरे का किला • साक्षात्कार से पहले • रहस्य आतिशबाजी के धूमधड़ाकों व इंद्रधनुषी रंगों का • एनडोरा : एक विचित्र देश • द्वितीय विश्वयुद्ध का शंख किस ने फूंका ? • अब प्लास्टिक से बनेंगे हीरे

इस के अलावा अन्य
रोचक सामग्री
एवं
सभी स्थायी स्तंभ.

1,500 रुपए की इनामी प्रतियोगिताएं







सरित प्रवाह

इस वर्ष देश में वर्षा बहुत अच्छी हुई है, इतनी अच्छी जिस की आशा नहीं थी. लगातार 5/6 वर्षों से यही आशंका रहती थी कि अब की बार मानसून महाशय देश को भूल जाएंगे और सूखा पड़ेगा. पर ऐसा होता नहीं था और अच्छी वर्षा रहती थी. इतने बड़े देश में यहां सूखा वहां बाढ़, यह तो रहता ही है. पर इस वर्ष समुचित रूप से पानी पड़ा है और बढ़िया खेती, फसलों की आशा की जानी चाहिए.

वर्षा की प्रक्रिया कोई देवी, देवता, भगवान, ईश्वर द्वारा निर्धारित रूप से नहीं चलती. इस की कमी या ज्यादती प्राकृतिक घटनाओं, कारणों पर निर्भर रहती है. अभी तक की खोजों से यही नतीजा निकला है कि भारत में मानसून विश्व में घटने वाली लगभग 16 घटनाओं पर आधारित होता है. इन में दक्षिणी धुव पर बर्फ का जमाव, तिब्बत के पठार का तापमान, दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट के समुद्र का तापमान इत्यादि हैं. ये सब घटनाएं अपनेअपने विभिन्न कारणों से घटती हैं, पर इन का सामूहिक असर भारत के मानसून पर पड़ता है.

पहले तो भारतीय मौसम विभाग फरवरीमार्च में ही जून से अगस्त में होने वाली वर्षा के अनुमान प्रकाशित कर दिया करता था, पर इस वर्ष वह चुप साध गया और लोगों ने समझा कि यह इसलिए किया गया कि अब की बार सूखा पड़ेगा और यह बतलाने से देश में खलबली पड़ जाएगी, लोग अनाज जमा करने लगेंगे और अर्थव्यवस्था को चोट पहुंचेगी.

कुछ हद तक तो यह विचार ठीक था—मौसम विभाग का खयाल था कि बारिश अब की बार पूरी नहीं होगी, क्योंकि दक्षिण अमेरिका के तटीय समुद्र का तापमान अनुकूल नहीं था, पर ऐसा नहीं हुआ. अब वैज्ञानिकों को कुछ अन्य कारण भी सोचने पड़ेंगे.

जो भी हो, जितना हो गया, हमें मिल गया, वह ठीक ही रहा और अब की बार भी खेती का उत्पादन बढ़िया ही रहेगा. क्योंकि भारत की समृद्धि खेती पर ही आधारित है इसलिए अब की दीवाली हर्ष से ही मनेगी—सूरत में प्लेग विभिन्न राज्यों और केंद्र की नरसिंह राव सरकारों के अनेक ऊटपटांग, गलत कामों के बावजूद.

*

सूरत में प्लेग का जन्म हुआ और वहां से जो लोग भागे, उन से यह अन्य स्थानों में भी फैला. समाचारपत्रों की सुर्खियों से यह रोग आतंक के रूप में बदल गया, यद्यपि इस प्लेग के कारण 50/60 से अधिक लोग नहीं मरे हैं.

देखादेखी लोग चेहरों पर कपड़े की नकाबें लगाने लगे क्योंकि कुछ डाक्टरों ने कहा कि यह प्लेग सांस के साथ दूसरों को ग्रस्त करता है. दिल्ली में बच्चों के स्कू[ल] और सिनेमाघर बंद कर दिए गए. य[दि] किसी को थोड़ी सी सर्दी लगी, नजलाजुका[म] हुआ, घरवालों ने कहा चलो छूत रो[ग]

सरिता के पाठकों को दीवाली की शुभकामनाएं

अस्पताल भागो. इस प्रकार भरती लोगों की संख्या सारे देश में हजारों में पहुंच गई—पर मरे केवल थोड़े से.

अब कुछ डाक्टर कहते हैं कि यह प्लेग था ही नहीं, कोई और बीमारी थी, और बेकार का इतना हल्लागुल्ला मचाया गया.

इस सब के लिए आवश्यक है कि सरकार एक ऊंचे दर्जे की तहकीकात समिति बनाए जो इस समस्या में गहराई से जाए और पता लगाए कि असली कारण क्या था, और आगे क्या कदम उठाए जाएं, ताकि ऐसी हड़बड़ी आगे न हो जिस के कारण देश को बहुत बड़ी आर्थिक और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान की हानि हुई. साथ ही शहरों, कसबों और गांवों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाए. जिस प्रकार देश के हर नगर में (पहाड़ी इलाकों को छोड़ कर) हर रोज नहाना जरूरी समझा जाता है, उसी तरह गली, बाजारों का कूड़ा हर रोज बिना नागा उठाना चाहिए.

*

2 अक्तूबर को जो महात्मा गांधी का जन्मदिवस था, उत्तर प्रदेश में उत्तराखंड के निवासियों द्वारा दिल्ली में आयोजित रैली में शामिल होने के लिए जाते हुए लोगों पर उत्तर प्रदेश की बंदूकधारी पुलिस (पी.ए.सी.) ने गोलियां चलाईं और लाठियां मारीं. पुलिस ने जोरदार हमला किया, औरतों को मारापीटा और उन की बेइज्जती की. कितने लोग मरे, कितनी स्त्रियों का बलात्कार हुआ,इस की पुष्टि अभी तक नहीं हुई है. यह सब इसलिए हुआ कि मुलायम सिंह की सरकार ने आदेश दिया कि इन लोगों को किसी हालत में दिल्ली नहीं जाने दिया जाए. अफवाह यह फैलाई गई कि इन लोगों के पास आधुनिक हथियार हैं जिन का उपयोग ये लोग दिल्ली में करेंगे, पर पुलिस आज तक एक भी हथियार नहीं बरामद कर पाई.

उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमिटी ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास कर के नरसिंह राव सरकार से मांग की कि वह मुलायम सिंह सरकार को बरखास्त कर दे. पर नरसिंह राव न 'हां' करते हैं, न 'ना' करते हैं. उन की चाल हमेशा यही रहती है कि बस जो हो रहा है चलने दो, समस्याएं अपनेआप अपना हल निकाल लेती हैं. नरसिंह राव ने अपने इर्दगिर्द के लोगों में से उन सभी को नाकारा कर दिया है जो उन की गद्दी को चुनौती दे सकें. इसलिए वह सोचते हैं कि किसी जोखिमभरे कदम को उठाने की तकलीफ ही क्यों की जाए.

वैसे जहां केंद्र द्वारा किसी राज्य सरकार को बरखास्त करने का हथियार आसानी से इस्तेमाल नहीं करना चाहिए. वहीं वर्तमान केंद्रीय कांग्रेस नेताओं को यह कानूनी और नैतिक अधिकार तो है ही कि वे मुलायम सिंह सरकार को अपना समर्थन न देने का फैसला कर सकते हैं.

इस समय दोनों पक्षों को जोरदार चुनौतियां दी जा रही हैं. मुलायम सिंह कहते हैं चुनाव कराने हैं तो कराओ. मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि मैं बहुमत में आऊंगा. उधर कांग्रेसी खम ठोंक कर कहते हैं हम 222 सीटों पर कब्जा करेंगे—चुनाव तत्काल होने चाहिए.

पर जैसा कि ऊपर कहा गया है, नरसिंह राव यह सोच रहे हैं कि मुलायम सिंह को अभी गद्दीविहीन नहीं किया जाए. जितने दिन वह मुख्यमंत्री बने रहेंगे, उतनी ही ज्यादा गलतियां करेंगे और जन आक्रोश उतना ही बढ़ेगा. काफी हद तक यह सोच ठीक भी लगती है. क्योंकि जब कोई व्यक्ति चारों ओर से घिर जाता है तो वह गलतियां ज्यादा करता है.

*

उत्तराखंड आंदोलन के सिलसिले में उत्तर प्रदेश के कुछ समाचारपत्रों में काफी विस्तृत विवरण छापा जो मुख्यमंत्री मुलायम सिंह को पसंद नहीं आया. फलस्वरूप उन्होंने दो समाचारपत्रों—जागरण व अमर उजाला के विरुद्ध 'हल्ला

बोल' दिया है. इन पत्रों की प्रतियां जलाई गईं. हाकरों को मारापीटा गया. कार्यालयों पर धावा बोला गया.

जहां तक मुलायम सिंह का अपने अनुयायियों से यह कहना कि वे ये पत्र पढ़ना बंद कर दें, कुछ हद तक माना जा सकता है. पर मारपीट, कार्यालयों पर धावा, प्रतियां जलाना यह जनतंत्र के विरुद्ध है—प्रेस की स्वतंत्रता तो जनतंत्र का आधार है. यह बात नहीं है कि कोई समाचारपत्र गलती नहीं कर सकता. पर उस पर धावा बोलना जनतंत्र का अपमान है. अगर कोई समाचारपत्र गलत बात कहता है तो उस पर मुकदमा चलाइए. उस के कार्यालय को जलाने का प्रयत्न आप के अधिकार में नहीं है—न यह कानूनी है न नैतिक. और अंत में यह उलटा असर भी पैदा करता है—जनसाधारण की सहानुभूति इन पत्रों के साथ हो जाती है और इन की प्रचार संख्या बढ़ जाती है.

*

पश्चिम बंगाल राज्य में पिछले 17 वर्षों से ज्योति बसु के नेतृत्व में मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी का राज है. कम्यूनिज्म का सिद्धांत गरीबीअमीरी के बीच की खाई को पाटना है, बराबरी और मजदूर का राज स्थापित करना है. नागरिक पूंजी लगा कर व्यापार, उद्योग लगाएं यह कम्यूनिस्टी, साम्यवादी, समाजवादी वेदशास्त्र के घोर विरुद्ध है, पाप है.और इन 17 वर्षों के अपने राज में पश्चिम बंगाल की कम्यूनिस्ट सरकार ने अपने सिद्धांतों को लागू करने का जीतोड़ परिश्रम भी किया.

नतीजा, आज पश्चिम बंगाल में 50 लाख से अधिक लोग बेकार हैं. सब बड़े उद्योग वहां से भाग खड़े हुए हैं. औद्योगिक उन्नति के बजाय घोर अवनति हो रही है. मजदूर राज स्थापित करने के लिए जो घेराव, हड़तालें, नारेबाजी और मशीनें जाम करने का सिलसिला शुरू हुआ, वह अब अपना रंग दिखा रहा है.

पिछले दिनों ज्योति बसु सरकार ने जो नई औद्योगिक नीति पेश की है, उस में तो वह चीज भी शामिल है जो अब तक कम्यूनिस्टी समाजवादी विचारधारा के लिए प्लेग था—विदेशी पूंजी. पश्चिम बंगाल सरकार अब खुलेआम इसे आमंत्रित कर रही है—आइए, हमारे यहां उद्योग लगाइए, जो सुविधाएं आप मांगेंगे, हम वे सब आप को देंगे; उग्रवादी मजदूर आंदोलन की समाप्ति भी कर देंगे.

1917 में कम्यूनिस्टों के कब्जे में आने से पहले रूस संसार के बड़े समृद्ध, संपन्न देशों में था. आज वह विदेशी भीख पर निर्भर है. यही हाल भारत का हुआ है. 1947 के बाद जरमनी और जापान तो दूसरे विश्वयुद्ध में तहसनहस हो गए थे, आज विशाल धनसंपत्ति के मालिक हैं. भारत भी इन के मुकाबले का राष्ट्र हो सकता था, पर यह आज जो है वह सर्वविदित ही है—समाजवादी जनून के कारण.

गनीमत है मार्क्सवादी कम्यूनिस्टों को कुछ अक्ल तो आई. अपने वेदशास्त्रपुराण को छोड़ कर धरती पर कदम रख रहे हैं.

*

इराक का तानाशाह सद्दाम हुसैन बड़े मजे से अमेरिका और सारे संसार के साथ चूहेबिल्ली का खेल खेल रहा है. पिछली बार की बड़ी शर्मनाक पिटाई के बाद भी हजरत ने अक्तूबर में अपनी सेनाएं फिर कुवैत की सीमा पर एकत्रित कर दीं और लगा कि अब वे कुवैत में घुसीं, अब घुसीं. इस पर अमेरिका की प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी. उस ने भी अपने 60 हजार सैनिक, जंगी पानी के और हवाई जहाजों का फारस खाड़ी में जमाव कर दिया.

1990 के कुवैत पर धावे के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ के आदेश से इराक का विदेश व्यापार ठप हो गया है. न वहां कोई चीज जा सकती है, न आ सकती है. केवल थोड़ा सा तेल तुर्की में से होती हुई पाइप लाइन से बाहर जा रहा है जिस से खाद्य सामग्री और दवाइयां पहुंच रही हैं.

राष्ट्र संघ ने कहा है वह खाने के

सामान और दवाइयों को बेरोकटोक आने दे सकता है अगर इन के वितरण पर राष्ट्र संघ की निगरानी हो—यह सद्दाम हुसैन के अहं को कैसे बरदाश्त होता?

इराक का कहना है कि उस ने कुवैत सीमा पर सेना का जमाव इसलिए किया था कि वह सारे संसार का ध्यान अपने ऊपर लगी रोकों पर दिलवाना चाहता था. पर इस प्रकार की नाटकबाजी से इराक को कुछ लाभ होगा, यह सोचना बेवकूफी ही है. पर अकसर घेरे में बंद बेवकूफ तानाशाह गलतियों पर गलतियां किए जाते हैं जो अंत में उन्हें ले डूबती हैं.

इधर कुछ देश, जिन में रूस, फ्रांस, चीन हैं, इराक पर लगे प्रतिबंध ढीले करने के पक्ष में दिखाई दे रहे थे. पर अब वे भी इराक का समर्थन बहुत सोचविचार के बाद करेंगे क्योंकि बैठेबिठाए कौन एक नया युद्ध देखना चाहता है, जो लगता है सद्दाम हुसैन के जीवन का परम और शायद अंतिम उद्देश्य है. इन महाशय की चालें बिलकुल हिटलर और मुसोलिनी की तरह हैं—हिटलर ने जरमनी को सारे संसार का मालिक बनाने की चाहत में पहलकदमी 1937 में यूरोप के छोटे से देश आस्ट्रिया पर कब्जा करने से की थी, और मुसोलिनी ने इटली को एक विश्वशक्ति बनाने के लिए पूर्वी अफ्रीका के देश इथियोपिया पर धावा बोलने से.

पर जिस यूरोप अमेरिका के संगठन ने हिटलर और मुसोलिनी को नष्ट कर दिया, वह आज भी सजग, संपन्न, शक्तिशाली है.

*

सनसनीखेज खबरें छापने वाली पत्रपत्रिकाओं की एक विशेषता है जो उन्हें प्रचार संख्या में सफल बनाती हैं, पर जनसाधारण को बेवकूफ भी बनाती हैं. और शायद इन के पाठक बेवकूफ बनना भी पसंद करते हैं. विशेषता यह है कि पहले तो ये एक व्यक्ति को खूब बढ़ाचढ़ा कर ऊपर आसमान में चढ़ा देते हैं और फिर मौका मिलते ही नीचे गिराने में नहीं चूकते.

हमारे यहां फिल्मी सितारों के साथ यही होता रहता है. जहां किसी की कोई फिल्म हिट हुई कि वह इन पत्रपत्रिकाओं का लाड़ला बन जाता है और हर अंक में उस के तरहतरह के पोज छपते हैं, उस पर लंबेचौड़े लेख लिखे जाते हैं. पर जहां उस की एकदो फिल्में टिकट खिड़की पर असफल रहीं, पिट गईं कि बस उसे नीचे गिराने में कोई कसर नहीं रखी जाती.

इंगलैंड में फिल्म स्टारों के अलावा राजघराना भी इन पत्रपत्रिकाओं का विषय रहता है. महारानी, उन के लड़केलड़कियां, उन की पुत्रवधुएं, सब इन पत्रपत्रिकाओं के हर रोज पन्ने भरते रहते हैं—किस ने क्या किया, कब कहां गया, क्या खाया, किस से मिले. किस के साथ सोए वगैरहवगैरह.

ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ के पुत्र चार्ल्स की पत्नी डायना काफी अरसे से चर्चा में रही है. सुंदर, सुडौल तो वह है ही. जब उस का विवाह हुआ तो इन पत्रपत्रिकाओं ने इसे वास्तव में एक देवी बना दिया—जैसा कि उस का नाम भी है, 'डाइएना' प्राचीन रोम की एक देवी है, जो सुंदरता, शालीनता व सतीत्व की प्रतीक मानी जाती है.

पर धीरेधीरे उस के और उस के पति ब्रिटेन की राजगद्दी के उत्तराधिकारी राजकुमार चार्ल्स के बीच अनबनी के लुभावने चर्चे होने लगे. अब दोनों पतिपत्नी खुलेआम अलग रहते हैं. चार्ल्स ने एक प्रेमिका पाल ली है और डायना के अवैध प्रेमप्रसंगों की चर्चा हो रही है.

डायना और चार्ल्स कहते हैं कि हमें आप बक्श दें. हमारे बारे में कुछ न छापें. पर पत्रपत्रिकाएं बड़ी मोटी रकमें दे कर इन दोनों के अवैध प्रेमप्रसंगों को चोरी से रिकार्ड करवाते हैं और छापते हैं.

अब अगर इन दोनों में से कोई मानहानि का दावा भी करता है तो भी उस की ही मुसीबत है—दावे की काररवाई और जिरह प्रकाशित करने पर प्रसार संख्या बढ़ जाएगी, जो अगर मोटा हरजाना भी देना पड़ा तो भी घाटे को पूरा कर देगा. ●

नरसिंह राव

लेख • ब्रजगोपाल राय 'चंचल'

"पिछले 3 वर्षों के मेरे शासनकाल में पत्रकारों ने मुझे बहुत सहयोग दिया. उस के लिए मैं उन का आभार प्रकट करता हूं. पंडित जवाहरलाल नेहरू के शासनकाल में ऐसी बहुत सी किताबें छपीं कि नेहरू के बाद कौन? मैं चाहता हूं कि भारत के लेखक और पत्रकार लिखें कि 'आफ्टर राव हू' (यानी राव के बाद कौन?) ताकि मुझे भी कुछ पता चल सके."

14 जुलाई को दिल्ली में लाल किले के पास आयोजित कांग्रेस रैली में नरसिंह राव के भाषण का अंश.

"पाकिस्तान कशमीर के संदर्भ में बारबार एक अधूरा कार्य रह जाने का जिक्र करता है. मेरी राय में एक ही अधूरा कार्य रह गया है कि कशमीर के जिस हिस्से में पाकिस्तान का कब्जा है, वह कब्जा हट जाए और वह हमारे भारत में शरीक हो जाए. पाकिस्तान की ओर हम दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं. उसे यह हाथ ले लेना चाहिए."

—15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से नरसिंह राव के भाषण से उद्धृत.

भारत के प्रधानमंत्रियों के इतिहास का यह अहम पहलू रहा है कि यहां हमेशा सज्जन दिखने वाले वृद्धों को ही देश की बागडोर सौंपी गई है. वर्तमान प्रधानमंत्री भी इस की मिसाल हैं. किंतु वह स्वयं को पार्टी का 'सुप्रीमो' मान कर पुनः प्रधानमंत्री बनने के ख्वाब देख रहे हैं. आज के इस गतिशील युग में जब विश्व भर में युवा नेताओं का बोलबाला है, हमारे ये बुजुर्ग नेता देश को किस ओर ले जाएंगे?

21 जून 1991 को देश के 12वें प्रधानमंत्री का पदभार ग्रहण करने के 3 वर्ष बाद ही नरसिंह राव के उक्त दोनों वक्तव्य बेहद अर्थपूर्ण हैं. अपने पहले बयान के जरिए उन्होंने अपना दर्प और अभिमान व्यक्त किया जबकि दूसरे बयान के जरिए उन्होंने य

के बाद कौन



साबित करने की कोशिश की है कि उन की बूढ़ी रगों में बहता रक्त अभी ठंडा नहीं पड़ा है और वह जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी की तरह देश का कोई नया इतिहास रचना चाहते हैं.

14 जुलाई 1994 को जब मुफ्त में दिल्ली की सैर कराने के लिए लाई गई कथित इंकाइयों की रैली में नरसिंह राव ने अपने हुकूमत काल की कथित उपलब्धियां गिनाते हुए उपर्युक्त दर्पभरा वक्तव्य दिया तो आमतौर पर पत्रकारों ने यही अंदाजा लगाया कि नरसिंह राव कांग्रेस पार्टी में स्वयं को 'सुप्रीमो' साबित करना चाहते हैं. कुछ पत्रकारों और बुद्धिजीवियों का आकलन था कि वह अपने कथित प्रतिद्वंद्वियों, अर्जुन सिंह तथा शरद पवार को 'ठंडा' करने के मूड में हैं. जिस तरह उन्होंने अपनी अल्पमत की सरकार को बहुमत की सरकार में बदला (जोड़तोड़ और सांठगांठ की राजनीति कर के) लोगों का अनुमान यही था कि वह अगले चुनाव में भी स्वयं को प्रधानमंत्री घोषित हो जाने का संकेत देना चाहते हैं.

कुछ पत्रकारों ने उन की खुद की नेहरू से की गई तुलना की खिल्ली उड़ाई और कुछ ने उन की विरुदावली भी गानी शुरू कर दी. एक वरिष्ठ पत्रकार सुरेंद्र प्रताप सिंह ने अपने एक लेख में लिखा, "वह अब पार्टी के स्तर से ऊपर उठ कर एक राष्ट्र नेता के रूप में अपनेआप को पूरे देश का निर्विवाद नेता घोषित करना चाहते हैं. अगली बार आप मतदान चाहे जैसे भी करें, पर इस का ध्यान रखें कि एक व्यक्ति है, जो चीजों को सहेजना जानता है. उस की ठोस उपलब्धियों पर मत जाइए, सिर्फ यह देखिए कि उस की उपस्थिति से चीजें इतनी नहीं बिगड़ेंगी कि खेल ही खत्म हो जाए."

नेहरू प्रशंसक अग्रज पत्रकार कुलदीप नैयर ने 'बिटवीन द लाइंस' में 27 जुलाई को लिखा, "नरसिंह राव भाग्यवान हैं. उन्हें ऐसी दुनिया से वास्ता नहीं पड़ा जो दो परस्पर विरोधी गुटों में विभाजित थी. नेहरू के बाद एक कमजोर और पिछड़ा भारत जो गुट-निरपेक्षता की नीति का पक्षधर रहा, सुभेद्य सा ही लगता था. राव के पूर्ववर्तियों को अनेक ऐसे अवसर झेलने पड़े थे जब वे उद्विग्न हो उठे थे. शीत युद्ध की समाप्ति के बाद अब राव एक ही साथ अमेरिका और रूस की ओर झुकाव रख सकते हैं. उन से कोई भी यह सवाल पूछने वाला नहीं कि वे हैं किस ओर?"

संयोगवश, इन्हीं दिनों पूर्व राष्ट्रपति आर. वेंकट रमन की पुस्तक 'माई प्रेसिडेंशियल ईयर्स' की भी खासी चर्चा रही है. इस पुस्तक में वेंकट रमन ने दिवंगत राजीव गांधी को 'अपरिपक्व राजनेता' कह कर उन की आलोचना ही की है. इस चर्चा से भी राव के पक्ष में उन के परिपक्व, चतुर, सुजान और गंभीर राजनेता की छवि को प्रकारांतर से बल मिला है. और भी इधरउधर कुछ चर्चाएं हो रही हैं. बहरहाल, हम अपनी चर्चा 'नरसिंह राव के बाद कौन' के बजाय 'नेहरू के दौरान क्या' से शुरू करना चाहते हैं, क्योंकि नरसिंह राव की इस बहस को करवाने की सदाशयता का मूल उत्स ही 'नेहरू महान थे' की भावना में छिपा हुआ है.

जवाहरलाल नेहरू लगभग दो दशक तक भारत के प्रधानमंत्री रहे. चीन से युद्ध हार जाने के बाद, अपने जीवन के अंतिम वर्षों में वह काफी हताश और निराश हो गए थे. तब यह बात उठी थी कि नेहरू के बाद कौन? यह बात सिर्फ इसीलिए उठी थी कि नेहरू ने गांधी के नेतृत्व में आजादी की लंबी लड़ाई लड़ी थी. नेहरू की अपनी योग्यता या प्रतिभा इस संघर्ष में महज यही थी कि वह गांधीजी के सर्वाधिक कृपापात्र बन सके और गांधी से यह कहलवा सके कि मेरे बाद नेहरू मेरी ही भाषा बोलेगा. परंतु दो दशकों का उन का प्रधानमंत्री काल अत्यंत निराशापूर्ण ही रहा था. देश का बंटवारा, कशमीर की समस्या, पाकिस्तान का पहला हमला, चीन से हार आदि उन के शास[न] की असफलताएं हैं.

समाजवाद नेहरू को प्रिय था, उ[से] उन्होंने देश पर थोपा भी. फलतः देश [में] भाईभतीजावाद, भ्रष्टाचार, निकम्मापन, ठेक[ा] परमिट, लाईसेंस प्रणाली आदि का उदय हु[आ]



लाल किले से भाषण देते हुए प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव : देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा अभी बरकरार है.

उस वक्त एक अमेरिकी ब्राडकास्टर वैल्स हैंगेन ने 3 वर्ष दिल्ली में गुजारने के बाद 'नेहरू के बाद कौन?' किताब लिखी थी. उन के उत्तराधिकारियों में देसाई, कृष्ण मेनन, लाल बहादुर शास्त्री, यशवंतराव बलवंतराव चह्वाण, इंदिरा गांधी, जयप्रकाश नारायण, एस.के. पाटिल और ब्रजमोहन कौल के नाम अनुमानित थे. इन में से शास्त्री, देसाई और इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनी भी.

इतिहास गवाह है

इतिहास साक्षी है कि जिन्होंने इतिहास बदला है या बनाया है, उन्होंने अपने यौवन में या युवावस्था के पहले चरण से ही अपने तेज का जौहर दिखाया था. बाबर ने जब भारत पर आक्रमण किया था, महज 36 वर्ष का था. अकबर ने भी 14 वर्ष की उम्र में ही गद्‌दी संभाली थी. सिकंदर 19 वर्ष की उम्र में ही विश्व विजय के लिए निकल पड़ा था. 12 से 15 वर्ष की उम्र में ही शंकराचार्य ने अपने सारे ग्रंथ लिख कर दिग्विजय यात्रा शुरू कर दी थी. विवेकानंद ने 30 वर्ष की उम्र में ही अपना विख्यात भाषण अमेरिका में दिया था.

हमारे देश को इस के विपरीत चिरकाल से ही वृद्ध, अशक्त लोगों को परंपरागत रूप से गद्‌दी पर बैठा देने की आदत पड़ी हुई है. हम ने कभी भी अपने शासक को स्पर्द्धा में उतार कर उसे विजेता के रूप में गद्दी पर नहीं बिठाया. यही कारण रहा कि सर्वथा अयोग्य व्यक्ति शासक बनते रहे और स्पर्द्धा में आने वालों को सर्वदा राजद्रोही या विद्रोही कह कर कुचला जाता रहा. जो विद्रोही विध्वंस कर के एक बार शासक बन गया तो हम ने चुपचाप उस की अधीनता स्वीकार कर ली और बाद में फिर उसी के पुत्र, पौत्र को परंपरागत रूप से गद्दी पर बिठाते रहे. हमारी 2,000 साल की गुलामी के मूल में यही कुप्रथा रही है.

हम ने हमेशा उसी को राजा या प्रधानमंत्री बनाया, जो उम्र में बूढ़ा और शरीर से सज्जन नजर आता था. कभी भी उसे अवसर



नहीं दिया जो राजा बनने के लिए तलवार लिए दौड़ रहा था. हमारी 2,000 वर्षों की हारों की दास्तां में एक नहीं, दर्जनों ऐसे राजाओं के उदाहरण हैं जिन्होंने महज बुढ़ापे की वजह से, या सज्जनता के कारण युद्ध को टालने की गरज से, हथियार नहीं उठाए और समझौते करते रहे. अगर इन बूढ़े खूसटों में दम होता तो क्या यह देश 2,000 साल तक गुलाम रहता?

जरा 700 वर्षों के मुगल शासकों के इतिहास पर नजर डालिए. हुमायूं, जहांगीर, शाहजहां, खुसरो, औरंगजेब... इन्होंने युवावस्था में ही सत्ता के लिए संघर्ष शुरू कर दिया और खुद को बादशाह साबित करने के लिए जंगें लड़ीं. यह बात दूसरी है कि वे जिन के खिलाफ लड़े, वे उन के पिता या सगे भाई थे. मुद्दा सिर्फ यह है कि उन्होंने अगर हुकूमत की, तो पहले साबित किया कि वे हुकूमत करने लायक हैं.

हम राम से ही शुरू करें. युवा राम ने इतिहास बदला. मगर बूढ़े दशरथ ने कैकेई के यौवन में मदांध होने के अलावा क्या किया. वृद्ध राजा धृतराष्ट्र क्या महाभारत के युद्ध को रोक सके? पृथ्वीराज चौहान ने 17 बार महमूद गजनवी के आक्रमण को विफल किया, परंतु वह हारे कब? जब बूढ़े होने लगे. अलाउद्दीन खिलजी ने जब खिलजी साम्राज्य को बढ़ाया था, तो वह 18 वर्ष का युवा था.

शेरशाह सूरी ने जब हुमायूं से जंग लड़ी थी, तब वह भी युवा था. जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब ने अपने पिता के विरुद्ध ही विद्रोह किया था. नादिरशाह ने भी बूढ़े मुहम्मद शाह के शासनकाल में दिल्ली पर आक्रमण किया था. 1398 में तैमूर लंग ने युवावस्था में ही भारत पर आक्रमण कर के दिल्ली सल्तनत की नींव हिला दी थी.

अहमद शाह अब्दाली ने युवावस्था में ही भारत के मंदिरों को लूटा था. मुगल शासन में पहली बार हिंदू शासक बनने वाले शिवाजी ने

शरद पवार (बाएं) और अर्जुन सिंह (नीचे) : प्रधानमंत्री पद के इन तथाकथित दावेदारों की उपयोगिताएं क्या इस पद को गौरवान्वित कर पाएंगी?



अपनी लड़ाई युवावस्था में ही शुरू की थी. बूढ़े राणा सांगा को बाबर ने खनुवा के युद्ध में पराजित कर दिया था.

विख्यात रानी ध्रुवस्वामिनी ने अपने क्लीव वृद्ध पति रामगुप्त की स्वयं अपने देवर चंद्रगुप्त (द्वितीय) से हत्या कराई थी और देवर से विवाह कर के शासन चलाया था. लक्ष्मीबा ने युवावस्था में ही अंगरेजों से लोहा लिया था भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राम प्रसा बिस्मिल, सुभाषचंद्र बोस युवा ही तो थे जिन्होंने अपनेअपने तरीकों से जंग लड़ी. वे जी न सके, परंतु क्या उन की वीरता में कोई कम थी?



शंकर राव चह्वाण : स्वप्न में भी प्रधानमंत्री पद पाने की चाह नहीं. ▲

स्वतंत्रता के बाद

आजादी के बाद जब जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री बने तब तक उन का उत्साह समाप्त हो चुका था. उन्हें गद्दी एक तरह से गांधीजी के वरदान के रूप में मिली. न उन्होंने चुनाव लड़ा, न संघर्ष किया. स्वतंत्रता संग्राम की बागडोर ज्यादातर गांधी और उन के युवा साथियों के हाथ में थी. नेहरू तो मात्र दिखावटी चेहरे थे. लाल बहादुर शास्त्री अच्छे प्रधानमंत्री साबित हुए पर उन्होंने पद संघर्ष से, सफलता से प्राप्त नहीं किया, बल्कि यह पद उन्हें लगभग बैठेबिठाए दे दिया गया. यही हाल इंदिरा गांधी का 1965 में हुआ.

इंदिरा गांधी ने भी अगर 1971 की लड़ाई जीती, तो भी महज इसलिए कि तब वह युवा न सही, बहरहाल 'राष्ट्रमाता' नहीं थीं. मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने तब वह 85 साल के थे. चरणसिंह 75 वर्ष के थे. चंद्रशेखर भी 70 से कम नहीं. इन्होंने इसीलिए कुछ नहीं किया, क्योंकि ये कुछ करने लायक कभी थे ही नहीं. सत्ता के लिए ये न तो कभी दलबदल करने से चूके, न किसी कुत्सित राजनीतिक हथकंडे से. येनकेन प्रकारेण सत्ता पा लेना ही इन का उद्देश्य था. नरसिंह राव भी इस भीड़ से इतर नहीं हैं.

ये हैं नरसिंह राव के बाद

नरसिंह राव के बाद कौन का जवाब एक पंक्ति में सिर्फ यही है कि आप के बाद भी आप जैसा ही कोई विद्वान, सज्जन, चरित्रवान और वयोवृद्ध व्यक्ति हमारे ये बूढ़े सांसद चुन लेंगे. पक्ष हो या विपक्ष, दोनों ही तरफ प्रधानमंत्री बनने 'लायक' जिन नामों पर नजर जाती है, सभी की अयोग्यताएं मालूम हैं, योग्यताएं नहीं.

उदाहरण के लिए सर्वप्रथम शरद पवार को ही लें. इन मराठा रणबांकुरे की ईमानदारी, सदाचार, विद्वत्ता, अपराधों से दूर रहने की सद्प्रवृत्ति की चर्चा और गुणगान आजकल गोविंद राघो खैरनार गलीगली में कर रहे हैं. आप ने कांग्रेस पार्टी में रह कर ही कांग्रेस की गलत नीतियों के विरुद्ध आवाज उठाने का इतनी बार प्रयास किया है कि वह संख्या 'गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड्स' में अंकित की जा सके. अगर आप प्रधानमंत्री बने तो जिस तरह से आप का यौवन देश सेवा में गुजरा है, उसी तरह से वृद्धावस्था भी गुजर जाएगी.

दूसरे नंबर पर लोग अकारण ही अर्जुन सिंह का नाम उछाल देते हैं, जबकि अर्जुन सिंह कभी भी नहीं चाहते कि सोनिया गांधी के रहते वह प्रधानमंत्री बनें. अर्जुन सिंह ने जब भी कांग्रेस की गलत नीतियों की आलोचना की, हमेशा पत्र लिख कर ही की और पत्र की फोटोस्टेट प्रतियां पत्रकारों को 'लीक' कीं. इन पत्रों के लेखन का एकमात्र उद्देश्य कांग्रेस को नेहरू, राजीव गांधी की नीतियों से अलग हट कर चलने देने से रोकना रहा है, ताकि देश कांग्रेस के बैनर तले सोनिया, राहुल और प्रियंका के नेतृत्व तले अपना विकास कर सके. अर्जुन सिंह ने युवावस्था में सिवाय चुरहट लाटरी कांड के और कोई भी कांड नहीं किया.

बाकी, शंकर राव चह्वाण तो कभी स्वप्न में भी नहीं सोचते कि वह प्रधानमंत्री

बनेंगे. यही हाल प्रणव मुकर्जी, मनमोहन सिंह, गाडगिल आदि का है. माधवराव सिंधिया को अपनी माता विजयाराजे सिंधिया से मुकदमे लड़ने में बहुत व्यस्त रहना पड़ता है.

विपक्षी नेताओं में सर्वप्रथम वयोवृद्ध आडवाणीजी को लें. सन 1977 से पहले आप का पता ही नहीं था कि राजनीति में हैं, वकालत में या संघ में. भूल से प्रधानमंत्री चुनवा दिए गए तो हिंदू मंदिरों के पुनर्निर्माण के लिए सरकारी रथयात्राएं शुरू हो जाएंगी. विकास कार्यों का उद्‌घाटन पुरोहितों के बताए मुहूर्त के अनुसार नारियल फोड़ कर किया जाएगा.

आडवाणी ने संघर्ष अवश्य किया है पर देशघातक. वह पहले ही देश को दंगों में झोंक चुके हैं. संतों के इशारे पर चलने वाले भारत को किस तरह चलाएंगे, यह उन के दल के कामकाज के तरीकों से साफ है.

हमारे देश में लोकतंत्र है और हमें गर्व भी है कि हम दुनिया के सब से बड़े लोकतंत्र हैं. परंतु हम अन्य विकसित लोकतांत्रिक राष्ट्रों जैसे अमेरिका और ब्रिटेन से कोई सबक नहीं सीखते. अमेरिका में वहां की जनता उसी को राष्ट्रपति चुनती है जो स्पर्द्धा में स्वयं को राष्ट्रपति के रूप में पेश करता है. जनता उस की कड़ी परीक्षा लेती है और उम्मीदवार परीक्षा में पास हो कर दिखाता है. अमेरिका के राष्ट्रपति का उम्मीदवार पहले अपनी पार्टी में ही लड़ाई लड़ता है. नेतृत्व के लिए तुले बैठे 7-8 उम्मीदवारों के ऊपर वह पहले अपनी प्रशासनिक दक्षता, वाक्पटुता, योग्यता और फंड जुटाने की सामर्थ्य का प्रदर्शन करता है. उस के बाद, जब पार्टी उसे नेता मान लेती है तब वह जनता के बीच जाता है.

जानकार बताते हैं कि राष्ट्रपति का चुनाव लड़ने से 4 साल पहले ही उसे अपनी तैयारी करनी पड़ती है. हजारों सभाओं में वह गद्‌दी पर बैठे राष्ट्रपति की खामियां गिनाता है और अपनी योजनाएं बताता है. इस के बाद जब चुनाव आता है तो खुली जंग में दोनों एकदूसरे पर तर्कपूर्ण आरोपप्रत्यारोप लगाते हैं. अपनीअपनी योजनाएं बताते हैं. टीवी, अखबार, प्रचार, पोस्टर के भीषण संग्राम के बाद जनता उसे ही चुनती है जो अपनी सर्वोत्कृष्ट तार्किक प्रतिभा का प्रदर्शन करता है.

ऐसी गला काट स्पर्द्धा में लल्लूपंजू किस्म का आदमी मैदान में आ ही नहीं सकता. जाहिर है, तब वही इस सर्वोच्च पद पर बैठ सकता है जिस ने खुली लड़ाई में स्वयं को जीनियस साबित किया हो. ऐसा व्यक्ति गलत निर्णय

भारत के प्रधानमंत्रियों का शासन काल

प्रधानमंत्री	प्र.म. बनते समय उम्र (लगभग)	कब से कब तक
पंडित जवाहर लाल नेहरू	58 वर्ष	15 अगस्त 1947–27 मई 1964
गुलजारी लाल नंदा (कार्य वाहक)	65 वर्ष	27 मई 1964–9 जून 1964
लालबहादुर शास्त्री	60 वर्ष	9 जून 1964–11 जनवरी 1966
गुलजारी लाल नंदा	67 वर्ष	11 जनवरी 1966–24 जनवरी 1966
इंदिरा गांधी	48 वर्ष	24 जनवरी 1966–24 मार्च 1977
मोरारजी देसाई	81 वर्ष	24 मार्च 1977–28 जुलाई 1979
चरण सिंह	77 वर्ष	28 जुलाई 1979–14 जनवरी 1980
इंदिरा गांधी	62 वर्ष	14 जनवरी 1980–31 अक्तू. 1984
राजीव गांधी	40 वर्ष	31 अक्तूबर 1984–1 दिसंबर 1989
विश्वनाथ प्रताप सिंह	58 वर्ष	2 दिसंबर 1989–10 नवंबर 1990
चंद्रशेखर	62 वर्ष	10 नवंबर 1990 –21 जून 1991
पी.वी. नरसिंह राव	70 वर्ष	21 जून 1991 से....

नहीं ले सकता. इतिहास में अपना नाम अमर करने के लिए जनता उसे 8 वर्ष देती है. 4 वर्ष के प्रथम कार्यकाल में यदि उस ने एक भी गलत निर्णय ले लिया तो जनता उसे फौरन व्हाइट हाउस से भगा देती है.

यही कारण है कि अमेरिका विगत 50 वर्षों से विश्व विजेता बना हुआ है और एक हद तक दुनिया के 175 से भी अधिक देशों पर अपनी धाक जमाए हुए है. आज किस देश की मजाल है जो अमेरिका के सामने चूंचपड़ कर सके? यह शक्ति अमेरिकी जनता ने अपने ही लोगों में से सर्वोत्कृष्ट प्रशासक को चुन कर स्वयं प्राप्त की है.

महानायक या खलनायक

भारत के 45 वर्षों के स्वतंत्र इतिहास में सिवाय विश्वनाथ प्रताप सिंह के एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ, जिस ने अमेरिकी शैली में पहले अपनी पार्टी में लड़ाई लड़ी हो और फिर चुनाव के मैदान में खुली लड़ाई लड़ कर प्रधानमंत्री बना हो.

आज विश्वनाथ प्रताप सिंह राजनीति के हाशिए पर हैं, तो सिर्फ इसलिए कि उन्होंने परिस्थितिवश, जल्दबाजी में, फैसले ले लिए. मंडल कमीशन की सिफारिशें लागू करना उन का बेमिसाल फैसला था, जिस ने भारतीय समाज की सब से दुखती नब्ज पर हाथ रखा था, मगर वह गलत वक्त पर गलत तरीके से लागू किया गया. यही कारण है कि आज सामाजिक न्याय देश की राजनीति का अहम मुद्दा बन गया है. सभी दल इसी जातिवादी मुद्दे से जूझ रहे हैं, परंतु जो इस का जन्मदाता था, प्रणेता था, वही व्यक्ति इतिहास के हाशिए पर है. जिसे हीरो होना चाहिए था, वही आज जीरो हो गया है. इतिहास में जिसे महानायक बनना था, वही आज खलनायक बन चुका है. इस के लिए दोषी स्वयं विश्वनाथ प्रताप सिंह हैं, जिन्होंने जीवन में बारबार गद्दी को त्यागा और अंत में जब इतिहास पुरुष बनने का वक्त आया तो सत्ता बचाने के लिए गलत निर्णय ले लिया. मंडल आयोग का ब्रह्मास्त्र चलाने से पहले उन्हें उतनी ही आक्रामकता से मंदिर मुद्दे से जूझना चाहिए था, जितनी आक्रामकता से उन्होंने बोफोर्स की जंग लड़ी थी.

नरसिंह राव का प्रधानमंत्री बनना केवल संयोग है. प्रधानमंत्री बन कर कुछ करने का न उन का कभी कोई सपना था, न उन्होंने इस के लिए कभी कुछ किया. (नेहरू वंशवाद में यह संभव भी कहां था?) राजीव गांधी ने तो उन्हें 'आउट आफ डेट' मान कर संसदीय चुनाव की टिकट तक नहीं दी थी. राजीव गांधी की हत्या के बाद कांग्रेस के जीत जाने पर अचानक नेतृत्व के निपटारे के लिए उन्हें चुना गया. वह भी महज इसलिए कि कहीं कांग्रेस न टूट जाए. उन की सज्जनता, विद्वत्ता और बेदाग चरित्र के बारे में कोई संदेह नहीं. परंतु इंदिरा गांधी या राजीव गांधी के कार्यकाल में भी क्या उन्होंने पार्टी के भीतर या बाहर कोई लड़ाई लड़ी? उलटे उन के 3 वर्षों के प्रधानमंत्री काल में भ्रष्टाचार, बाबरी विध्वंस, शेयर घोटाला, चीनी घोटाला, बंबई बम कांड, कशमीर समस्या, परिवारवाद आदि आरोपों की एक लंबी फेहरिस्त है.

राव के बाद कौन के उत्तर में हम एक बार फिर किसी अस्वीकृत नेता को ढूंढ़ेंगे और उसे प्रधानमंत्री बना देंगे. ऐसे व्यक्ति को जिस के सामने न कोई सपना है, न कुछ करने की तमन्ना.

हमारे महामहिम राष्ट्रपति भी अत्यधिक वृद्ध हैं. वे दो बार सार्वजनिक स्थानों पर गिर चुके हैं. आखिर ये लोग देश को कैसे चलाएंगे? जिस समय टीवी पर नरसिंह राव और अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के हाथ मिलाने का दृश्य दिखाया जा रहा था, क्या ऐसा नहीं लगा था कि काश, वहां राजीव होते? क्या युवा क्लिंटन राव से योग्यता में कहीं भी कम हैं. क्या पाकिस्तान की लड़ाका खूबसूरत शेरनी बेनजीर भुट्टो अपनी राजनीति में राव से कहीं भी कम पड़ रही हैं. हमारे पड़ोसी बंगलादेश, नेपाल, भूटान और श्रीलंका हर जगह युवा वर्ग ही शासक है. क्या 90 करोड़ की आबादी में से एक भी युवा ऐसा नहीं निकलेगा जो तेजतर्रार, आक्रामक और आकर्षक भी हो? •

लेख • जगदीश चावला

टाडा सरकारी

इन दिनों आतंकवादी और विध्वंसकारी कार्यकलाप निवारक अधिनियम यानी 'टाडा' के औचित्य और उस की प्रासंगिकता पर अनेक सवाल उठाए जा रहे हैं. कारण, यह कानून जिन खूंखार आतंकवादियों की नाक में नकेल डालने के लिए बनाया गया था वे आज भी पुलिस की गिरफ्त से बाहर छुट्टे घूमतेफिरते हैं जबकि इस कानून के हंटर ज्यादातर निरपराधियों, नाबालिग बच्चों, बूढ़ों और महिलाओं पर जम कर बरसते हैं.

मई 1985 में जब राजीव गांधी सरकार ने इस अधिनियम को पारित किया था तभी इस का दुरुपयोग होने तथा विपक्षियों से बदले की कारवाई में सत्तापक्ष द्वारा इस के प्रयोग किए जाने





की आशंकाएं व्यक्त की गई थीं. किंतु तब तत्कालीन सरकार ने तरहतरह के तर्क और आश्वासन दें कर विपक्षी पार्टियों को यह भरोसा दिलाया था कि इस कानून का किसी भी तरह से बेजा इस्तेमाल नहीं होगा. लेकिन बाद में प्रदेश सरकारों द्वारा लागू किया जाने वाला यह केंद्रीय कानून न केवल उत्पीड़न और सत्ता विरोधियों को दबाने का औजार बना बल्कि इस कानून ने पुलिस और प्रशासन को असीमित अधिकार दे कर जुल्म और सितम के नए रास्ते भी खोल दिए.

जिन दिनों यह अधिनियम संसद में लाया गया था उन दिनों दिल्ली और इस के आसपास के क्षेत्रों में लगातार ट्रांजिस्टर बम फट रहे थे और बसों, गाड़ियों तथा

सार्वजनिक स्थलों पर भारी संख्या में बेगुनाहों की जिंदगी पर विराम लग गए थे. इसलिए यह समझा जाने लगा था कि खालिस्तानी उग्रवाद पंजाब के अलावा दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान तक में फैल रहा है. ऐसे हालात में काली ताकतों पर काबू पाने के लिए ही 'टाडा' बनाया गया और उस समय सरकार ने 4 राज्यों और 2 केंद्र शासित क्षेत्रों को इस अधिनियम के तहत रखा था. लेकिन इस समय 'टाडा' का विस्तार 25 में से 22 राज्यों तथा 7 में से 2 केंद्र शासित क्षेत्रों में है. इस प्रकाश देश की 93 प्रतिशत आबादी पर टाडा कानून की तलवार लटक रही है.

'टाडा' एक केंद्रीय कानून है लेकिन इसे लागू राज्य सरकारों द्वारा ही किया

आतंकवाद को काबू करने के लिए बना 'टाडा' कानून सरकार आतंक का पर्याय बन चुका है. सत्तापक्ष व पुलिस प्रशासन के लिए यह अपने विरोधियों को कुचलने का अह हथियार है. इस में जकड़े अनेक मासूम लोग आज मानसिक व शारीरिक यंत्रणाएं झेलने को विवश हैं. ऐसे जबकि यह मौलिक अधिकारों के लिए ही चुनौती बन गया है तो इसे जारी रखने का क्या औचित्य है

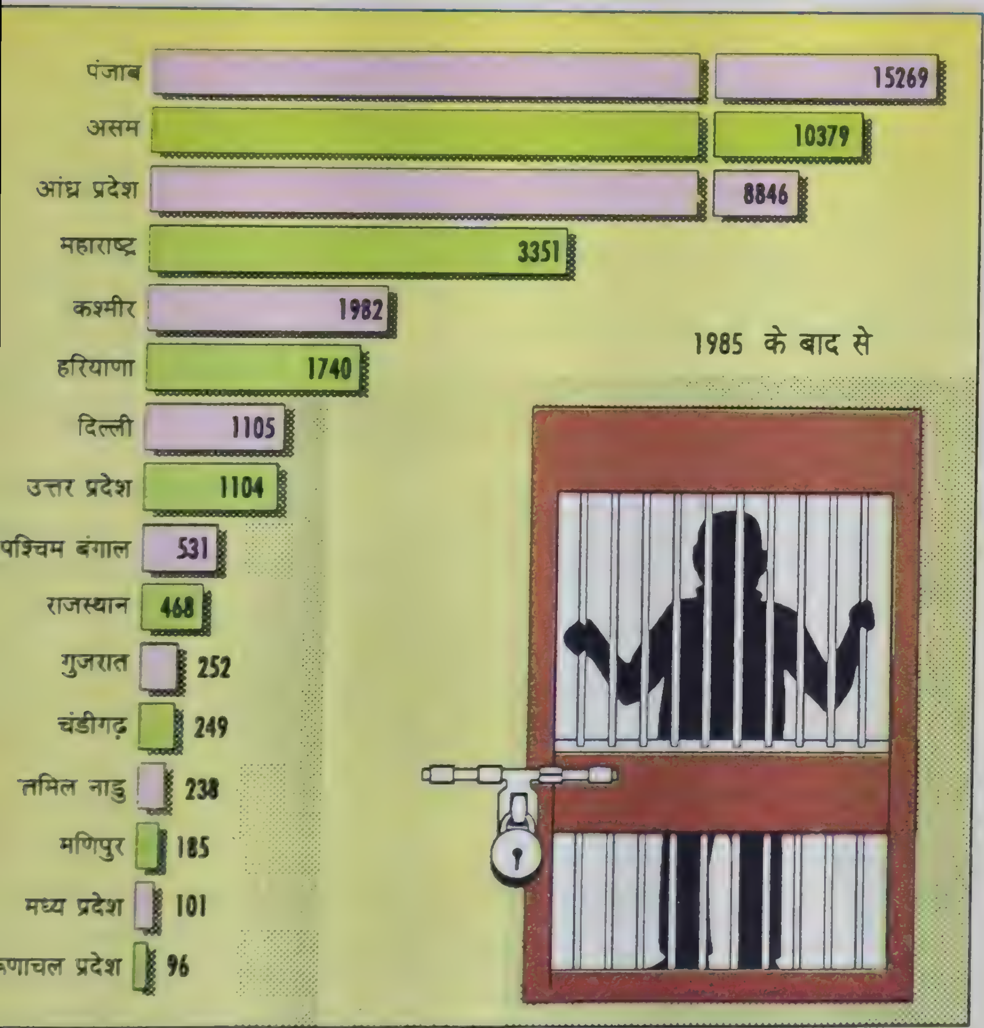
जाता है जिन्हें लगता है कि आतंकवाद ने उन के प्रदेश में जड़ें जमा ली हैं, तब वे सामान्यतः इस की अधिसूचना जारी करती हैं और इस कानून के तहत सुनवाई के लिए नामजद विशेष दर्जा लिए अदालतों की व्यवस्था भी करती हैं. इस कानून में जमानत की व्यवस्था नहीं है और खुद को निर्दोष साबित करने की जिम्मेदारी अभियुक्तों पर ही डाली गई है.

ऐसी अनेक मिसाले हैं जहां राज्य सरकारों और पुलिस ने टाडा कानून का जम कर दुरुपयोग किया है. मसलन, हरियाणा में 1991 के आम चुनावों के दौरान जिन 27 लोगों को मौजूदा मुख्यमंत्री चौधरी भजनलाल की हत्या का आरोपी बता कर टाडा कानून के अंतर्गत गिरफ्तार किया गया उन में सजपा के टिकट पर आद विधानसभा क्षेत्र से भजनलाल के खि चुनाव लड़ने वाले मास्टर हरि सिंह क वर्षीय बेटा रणदीप सिंह भी था जो 1 कक्षा का विद्यार्थी है और जिसे लगा 20 दिनों तक हिसार (हरियाणा) की से जेल में मानसिक यंत्रणाओं के अनेक झेलने पड़े. बाद में अदालत ने टाडा के तमाम मामलों को निरस्त करते हुए आरोपियों को बेगुनाह साबित कर दि

इसी तरह कशमीर के शीर्ष अब्दुल गनी लोन की 28 वर्षीया शबनम लोन पर भी कशमीरी आतंकवा से मिले होने का आरोप लगा कर उसे जुलाई 1992 को सुबहसवेरे 'टाडा' के गिरफ्तार कर लिया गया. चूंकि शब लोन सर्वोच्च न्यायालय के मशहूर व के.के. वेणुगोपालन की सहायिका इसलिए वेणुगोपालन तथा बार का ने तत्काल ही अदालत का दर खटखटाया जिस पर न्यायालय संविधान पीठ ने अटार्नी जनरल को 4 भीतर ही सरकारी पक्ष पेश कर निर्देश दिया और बाद में विशेष दर्ज अदालत को भी शबनम की ज याचिका तुरंत लेने की हिदायतें दीं. सरकार ने शबनम के खिलाफ खड़ा मामला वापस ले लिया है.

असम में एक साप्ताहिक 'बुध प्रकाशित जे. एन. बोरा के एक ले आपत्तिजनक मानते हुए वहां की प बोरा के विरुद्ध टाडा का मामला दर्ज

ाडा कानून के तहत विभिन्न राज्यों में गिरफ्तार किए गए लोगों की सारणी (1985 से)



में उस ने यह तक नहीं देखा कि वह युक्त कहां है और उस का उक्त लेख छपा. इस प्रकार जब पुलिस बोरा को तार करने गई तो पता चला कि टाडा ह आरोपी काफी समय पहले मृत्यु को हो चुका है और उस का उक्त लेख भी शताब्दी पहले लिखा गया था.

इसी तरह बंबई में गत 12 मार्च को म विस्फोटों के सिलसिले में अभिनेता दत्त को भी टाडा के तहत बंदी ा गया. उस पर अवैध हथियार रखने रोप हैं. बम विस्फोटों के मामले में संजय दत्त कितना कुसूरवार है यह तो बाद में ही पता चलेगा पर फिलहाल उस की अंतरिम जमानत पर रिहाई की कोई संभावनाएं नहीं हैं.

ऐसे में यह कहना गैरवाजिब न होगा कि अपराधों को रोकने के लिए राज्य सरकारें या उन का पुलिस विभाग भी यदि अपराध करे तो यह इजाजत उन्हें किसी ने नहीं दी है. लेकिन टाडा के नाम पर आज जो कुछ हो रहा है उसे झेलना भी लोगों की मजबूरी ही है.

मानवाधिकारवादी संस्थाओं द्वारा

प्राप्त कराए गए आंकड़ों के अनुसार विभिन्न राज्यों में टाडा अधिनियम के अंतर्गत जो गिरफ्तारियां दिखाई गई हैं वे अनंत हैं और उस में सजा पाने वालों की औसत दर लगभग नगण्य है. पीपल्स यूनियन आफ सिविल लिबर्टीज के अध्यक्ष और उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेंद्र सच्चर ने बताया, "1975 से 1993 के दौरान पूरे देश में टाडा के तहत 52, 298 मामले दर्ज हुए जिन में से सिर्फ 434 लोगों को सजा दी गई. यानी 0.81% मामले ही टाडा कानून के अंतर्गत



उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेंद्र सच्चर : इसे कूड़ेदान में फेंकना जरूरी है.

सजा योग्य पाए गए. इस में यदि पंजाब का रेकार्ड देखें जहां आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर दनदनाता रहा है तो वहां भी मार्च 1992 तक दर्ज किए गए 14,007 टाडा मामलों में से सिर्फ 52 लोगों (0.37 प्रतिशत) को ही सजा सुनाई गई है.

"टाडा कानून का, जो मूलतः पंजाब और जम्मूकश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों की रोकथाम के लिए लाया गया था, सर्वाधिक दुरुपयोग गुजरात में हुआ है जहां 14,049 लोगों को इस कानून के अंतर्गत बंदी बनाया गया और बाद में अधिकांश लोगों को रिहा भी कर दिया गया. टाडा के तहत आरोपित ज्यादातर मामले ऐसे ही समस्याविहीन प्रदेशों से संबद्ध हैं और उन का आतंकवादी और विध्वंसकारी कार्यकलापों से कोई संबंध भी नहीं है.

"खुद सरकार द्वारा नियुक्त अल्प-संख्यक आयोग तक ने यह कहा है कि टाडा का दुरुपयोग अल्पसंख्यक समुदाय के निर्दोष लोगों के खिलाफ हो रहा है जिस में केंद्रीय सरकार की भूमिका सनकभरी और हास्यास्पद लगती है.

"हमारी संस्था का मानना है कि टाडा कानून हमारे आपराधिक न्याय तंत्र में व्यापक भ्रष्टाचार की परिणति है और इस कानून के अंतर्गत दर्ज किए गए अधिकतर मामले आतंकवादी और विध्वंसकारी गतिविधियों की परिभाषा के घेरे में नहीं आते. फिलहाल यह कानून भी राजनीतिक सत्ता का पिट्ठू बना लगता है."

इस कानून की कई धाराएं ऐसी हैं जो मानवीय मूल्यों के विपरीत हैं और जिन्हें न्यायसंगत भी नहीं कहा जा सकता. मसलन, टाडा कानून की धारा 15 (1) को देखें तो इस में कहा गया है कि अगर कोई अभियुक्त पुलिस अधीक्षक या उस से ऊपर के ओहदे वाले पुलिस अधिकारी के सामने अपराध कबूल करता है तो यह 'अपराध स्वीकृति' अदालत में बतौर सुबूत स्वीकार कर ली जाएगी. सामान्यतः पुलिस के समक्ष दिए गए वक्तव्य को अदालत में सुबूत के तौर पर स्वीकार नहीं किया जा सकता. पुलिस को 'अपराध स्वीकृति' उस अभियोग पत्र बनाने में मदद करती है. सुबूत तभी माना जाता है जब किसी न्यायिक अधिकारी के समक्ष यही स्वीकृति दोहराई जाए.

सच्चर के अनुसार, "टाडा का प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 20

खुली अवहेलना है जिस में नागरिक को 'अपराधों के लिए दोषसिद्धि' के संबंध में संरक्षण दिया गया है. अनुच्छेद 20 (3) में साफतौर पर यह दिया गया है कि किसी अपराध के लिए अभियुक्त किसी व्यक्ति को स्वयं अपने विरुद्ध साक्षी होने पर बाध्य नहीं करेगा. टाडा कानून का यह प्रावधान भी नागरिकों की मौलिक आजादी के साथ खिलवाड़ करता नजर आता है कि इस में गवाहों की पहचान गुप्त रखी जाएगी. इस से अभियुक्त का अपने विरुद्ध गवाही देने वाले व्यक्तियों से जिरह करने, उन के साक्ष्य के अंतर्विरोधों की गहराई से जांचपड़ताल करने का अधिकार बाधित होता है. पुलिस को गवाह का नाम न बताने की आजादी देना या गवाह को परदे के पीछे रख कर कानूनी काररवाइयां करना न्यायोचित नहीं है."

टाडा विरोध के मुख्य कारण

• इस में अभियुक्त के लिए आयु सीमा निर्धारित नहीं है यानी दूध पीते बच्चे से ले कर 80 साल के बूढ़े तक को भी इस की जद में लाया जा सकता है.

• पुलिस अभियुक्त को 180 दिनों तक हिरासत में रख सकती है. इस के बाद दंडाधिकारी के समक्ष उपस्थित कर फिर उसे 180 दिनों तक हिरासत में रखा जा सकता है.

• पुलिस के सामने की गई अपराध स्वीकृति को साक्ष्य माना जा सकता है.

• टाडा का मुकदमा एक से दूसरे राज्य या अदालत में स्थानांतरित किया जा सकता है.

• इस कानून की परिभाषा ऐसी है कि पुलिस अपने विवेक से सामान्य अपराध और कम सजा वाले अपराध को भी इस के दायरे में ला सकती है जिस में उम्रकैद और मृत्युदंड का भी प्रावधान है.

• अभियुक्त को आरोपों और गवाहों की जानकारी से वंचित रखा जा सकता है.

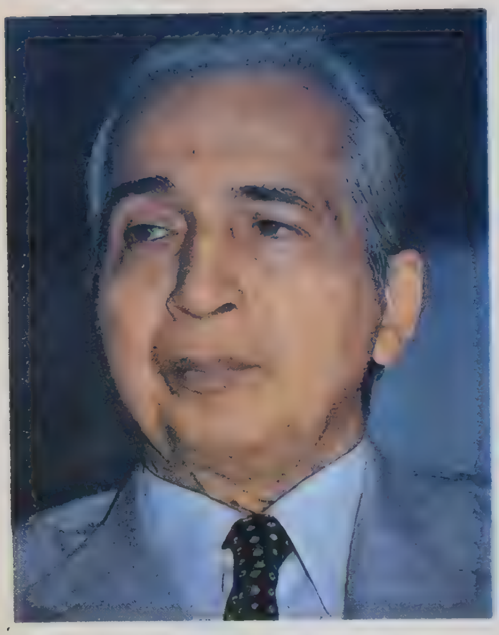
• टाडा की अपील मात्र 30 दिन के अंदर केवल उच्चतम न्यायालय में ही की जा सकती है.

• इस कानून का यह प्रावधान भी अनोखा है कि जिन लोगों का संबंध भले ही आतंकवादियों से न हो पर यदि यह पाया जाए कि वे आतंकवादियों को सहयोग देते हैं, उन से संपर्क रखते हैं या उन से उन का कोई पत्रव्यवहार हुआ हो तो भी उन्हें टाडा के अंतर्गत बंदी बनाया जा सकता है.

टाडा में विध्वंसकारी कार्यकलाप की वही परिभाषा दी गई है जो गैरकानूनी गतिविधि अधिनियम में है. गैरकानूनी गतिविधि अधिनियम में अपराधी के लिए अधिकतम 7 वर्ष के कारावास की व्यवस्था है जबकि टाडा के अधीन मृत्युदंड अथवा आजीवन कारावास तक की सजा दी जा सकती है. यानी यह अब पुलिस पर ही निर्भर करता है कि वह अभियुक्त को किस श्रेणी में रखे. इस विसंगति के कारण भी ऐसी शिकायतों की भरमार सुनाई पड़ती है जहां पुलिस ने लोगों को डराधमका कर उन से पैसा ऐंठने के प्रयास किए हैं और टाडा कानून को अपनी अतिरिक्त आमदनी का जरिया बना लिया है.

अतः यह कहना गलत न होगा कि टाडा कानून अपने मकसद में कहीं भी सही साबित नहीं हो रहा है और केंद्र सरकार भी इसे अपने राजनीतिक हित साधने के लिए लागू रखना चाहती है.

टाडा के मामले में राज्य सरकारों से ज्यादा केंद्र की भूमिका ऐसी है जो उस के दोगलेपन को जाहिर करती है. एक तरफ तो केंद्रीय आंतरिक सुरक्षामंत्री राजेश पायलट यह बयान देते है, "यदि यह पाया गया कि राज्य सरकारें टाडा कानून का दुरुपयोग कर रही हैं तो केंद्र 1995 से यह कानून वापस ले लेगा." मगर दूसरी तरफ गृहमंत्री शंकरराव चव्हाण उन के इस वक्तव्य की अनदेखी कर के टाडा की वकालत ही नहीं करते बल्कि इसे हटाने की संभावनाओं से इनकार भी करते हैं. राजेंद्र सच्चर का मत है, "इस से पता चलता है कि टाडा जैसे उत्पीड़क और निरंकुश कानून के बारे में सत्तापक्ष का आत्मंथन कैसा है. जबकि इस कानून के व्यापक विरोध को



राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति रंगनाथमिश्रः इस कानून की समाप्ति ही लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकेगी.

देखते हुए इसे कूड़ेदान में फेंकना ज्यादा जरूरी है. टाडा कानून के बारे में केंद्र सरकार की नासमझी मुझे लियो टालस्टाय की उस उक्ति का स्मरण कराती है जिस का आशय है कि 'मैं जिंदा पीठ पर सवार हूं और मेरे बोझ से उस पीठ का दम तक निकला जा रहा है. लेकिन मैं उस की यह पीड़ा जानते हुए भी अफसोसजदा तो हूं पर उस पीठ पर से उतरना मुझे स्वीकार्य नहीं है.'''

इसी तरह 'पीपल्स यूनियन फार डेमोक्रेटिक राइट्स' के प्रवक्ता राजेश धवन और हरीश गुप्ता ने बताया, ''टाडा कानून ने जहां अच्छे और बुरे व्यक्ति की पहचान तक को खत्म कर दिया है वहीं अब इस की जद में आतंकवादियों के साथ उन पत्रकारों, लेखकों, समाज सेवियों, डाक्टरों, इंजीनियरों और मजदूर नेताओं को भी रखा जा रहा है जो अपराधों की किसी भी श्रेणी में नहीं आते. यहां तक कि आम निर्दोष लोगों को भी आतंकवादी करार दे कर उन पर टाडा के शिकंजे को कसना अब पुलिस अपना पैदाइशी हक मानने लगी है. अंगरेजी राज के बुरे से बुरे वक्तों में भी ऐसे कानून नहीं बनाए गए जिन में यह कहा गया हो कि पुलिसकर्मी को दिया गया बयान अदालत में मान्य होगा.''

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्र तक ने टाडा कानून के विरुद्ध अपनी आवाज को उठा कर उन हजारों लोगों की तर्जुमानी की है जो निर्दोष होने पर भी इस बेलगाम कानून की वजह से पिछले एक दशक से जेलों में रह कर हर तरह की प्रताड़नाएं और जुल्म सह रहे हैं.

न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्र का कहना है, ''देश में टाडा कानून की वजह से आतंकवादी गतिविधियों पर कितना अंकुश लगा है यह बताना तो कठिन है परंतु इस के रहते लोकतांत्रिक मूल्यों तथा वैयक्तिक स्वतंत्रता को लंबे समय तक सुरक्षित रहने की गारंटी नहीं दी जा सकती. इस कानून की समाप्ति ही लोकतांत्रिक मूल्यों की दीर्घकालीन सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकेगी.''

टाडा कानून को रद्द करने के लिए मानवाधिकार आयोग ने गत अगस्त महीने में उच्चतम न्यायालय में एक याचिका भी दायर की थी लेकिन उच्चतम न्यायालय ने याचिका सुनने से इनकार कर दिया और कहा कि टाडा कानून के विवादास्पद पहलुओं को ले कर चल रहे मामलों में हस्तक्षेप करने की इजाजत पहले भी नहीं दी गई और अब भी मौजूदा मामले के तथ्य और परिस्थितियों के मद्देनजर अदालत इस आयोग को तीसरा पक्ष मान कर इस में हस्तक्षेप की अनुमति नहीं दे सकती.

इस समय कुछ राज्य सरकारें इस कानून को खत्म करने के पक्ष में नहीं हैं. बिहार में लालू प्रसाद यादव की सरकार ने यद्यपि अपने राज्य में टाडा के इस्तेमाल न करने का फैसला किया है तो उधर पंजाब और महाराष्ट्र के मुख्य मंत्रियों ने इस कानून के हटाने का विरोध भी किया है. ●

ऐसे चल रहे हैं फर्जी डाक्टर बनाने के कारखाने

नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाले एक राष्ट्रीय दैनिक के 19 जून 1994 के अंक में एक विज्ञापन छपा. वह विज्ञापन किसी 'हेल्थ एंड मेडिकेयर' संस्था के प्रिंसिपल डा. एस. के. अग्रवाल द्वारा छपवाया गया था. उस विज्ञापन का मजमून इस प्रकार था : 'मेडिकल प्रवेश सूचना डिप्लोमा पाठ्यक्रम/नियमित पत्राचार 1. इंडो एलोपैथी (डी आई ए एस), 2. इलेक्ट्रो होमियोपैथी (डी ई एच एम), 3. बायो-केमिक (डी बी एम एस), 4. प्राकृतिक चिकित्सा (डी एन टी), 5. बैच फ्लावर (डी बी एफ आर), 6. एक्यूप्रेशर (डी ए टी), 7. चुंबक चिकित्सा (डी एम टी), 8. योग एवं मर्दन (डी वाइ एम एस). योग्यता : हाईस्कूल. अवधि : 6. माह, विवरणिका निशुल्क एम.डी. (ए.एम). कोर्स : केवल चिकित्सकों के लिए आर.एम.पी.



लेख● विनोद श्रीवास्तव



अनुभव आधार पर सभी कोर्स/आर एम पी अंतरराष्ट्रीय मान्यताप्राप्त 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिंस' के अधीन.'

अब इस विज्ञापन के कुछ खास हिस्सों पर ध्यान दीजिए. पाठ्यक्रम में दाखिला लेने की योग्यता सिर्फ हाईस्कूल. पाठ्यक्रम पूरा होने की अवधि केवल 6 महीने. सीधेसीधे शब्दों में किसी भी श्रेणी से हाईस्कूल पास छात्र इस संस्था द्वारा चलाए जा रहे डाक्टरी के पाठ्यक्रम में प्रवेश ले कर घर बैठे डाक्टरी की डिगरी हासिल कर सकता है. संस्था में ज्यादा से ज्यादा डाक्टर बनने के इच्छुक लोग दाखिला लें, इसलिए संस्था को 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिंस' के तहत अंतरराष्ट्रीय मान्यता-प्राप्त बता दिया गया.

लोगों को घर बैठे डाक्टर बनाने वाली 80, चौरंगी रोड, कलकत्ता की हेल्थ एंड मेडिकेयर ही अकेली संस्था नहीं है. 36, सेंट्रल मार्केट दक्षिण पुरी, दिल्ली का 'हेल्थ केयर इंस्टिट्यूट, सहरसा (बिहार) का भुवनेश्वर हेल्थ इंस्टिट्यूट आदि दर्जन से ज्यादा ऐसी संस्थाएं हैं जो साल में कई बार उपर्युक्त किस्म के लुभावने विज्ञापन छपवा कर अपनी संस्था में दाखिला लेने का न्योता देती हैं. फलस्वरूप लोग आंख बंद कर के विज्ञापनों पर यकीन करते हुए दाखिले हेतु अपना फार्म भेज देते हैं. इस के बाद ऐसे लोगों के छले जाने का सिलसिला बदस्तूर जारी हो जाता है.

असल में डाक्टरी के पेशे में शोहरत और दौलत की काफी संभावनाएं छिपी हैं. लेकिन साधारण छात्र मान्यता प्राप्त डाक्टरी कोर्स में दाखिला नहीं ले पाता. ऐसे ही असफल लोगों की मानसिकता को ध्यान में रखते हुए दिमाग के तेज जालसाजों ने फर्जी मेडिकल पद्धति के फर्जी मेडिकल कालिज, बोर्ड और संस्था बना कर लोगों को चूना लगाना शुरू किया है. कलकत्ता की 'हेल्थ एंड केयर,' दक्षिण पुरी, दिल्ली का 'हेल्थ केयर इंस्टिट्यूट', सहरसा (बिहार) का 'भुवनेश्वर हेल्थ इंस्टिट्यूट' आदि ऐसी ही संस्थाएं हैं जो बगैर सरकार की मान्यता पाए धड़ल्ले से अपना कारोबार चला रही हैं. ये सभी संस्थाएं खुद को 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिंस, कलकत्ता से संबद्ध बताती हैं.

आल्टरनेटिव मेडिसिन में लोगों को डाक्टरी डिगरियां बांटने वाली दिल्ली की एक संस्था 'हेल्थ केयर इंस्टिट्यूट' में जा कर इस प्रतिनिधि ने कामकाज, पाठ्यक्रम और डिगरियां उपलब्ध कराने के तौरतरीकों की गहन जांचपड़ताल की. संस्था का कार्यालय ऐसी गंदी और बदबूदार जगह पर है, जहां का पता लगाने में लोगों को पच्चीसों गलियों का चक्कर काटना पड़ेगा.

संकरी सीढ़ियों से होते हुए जब आप उस संस्था के सीलन भरे 2 छोटे से कमरों के आफिस में पहुंचेंगे तो आप को जरा सा भी यकीन नहीं होगा कि आप ने डाक्टरी जैसे लाजवाब पेशे में प्रवेश करने के लिए इसी जगह प्रवेश फार्म भेजा है. लेकिन कार्यालय में 2 छोटीछोटी मेजों के सामने बैठे आदमी प्रवेशपत्रों पर नंबर डालते आप को यकीन दिला देंगे कि आप ने अन्य हजारों लोगों की तरह डाक्टर बनने के लिए 'सही जगह' पर फार्म भेजा है.

एक बड़े आश्चर्य की बात यह भी है

डाक्टर बनाने का व्यवसाय हमारे देश में आजकल काफी फलफूल रहा है. इसीलिए आए दिन अखबारों में ऐसे विज्ञापन देखने को मिल जाते हैं. इस तरह फर्जी डाक्टर बनाने वाले इन लोगों ने क्या डाक्टरी जैसे संजीदा व अहम पेशे को महज एक खेल बना कर नहीं रख दिया है?

HEALTH & MEDICARE

Regd. by Govt. of West Bengal under Central Govt. Act XVI of 1908)

Affiliated with

★ THE OPEN INTERNATIONAL UNIVERSITY FOR COMPLIMENTARY MEDICINES

(Medicina Alternativa)

Established as per World Health Organisation, Alma Ata. U.S.S.R. declaration, 1962 which is recognised by the United Nations Peace University constituted under resolution no. 35/55/5/XII/80 of Aug. 15, 1988.

★ INDIAN BOARD OF ALTERNATIVE MEDICINE

The Board is recognised under Act XXVI of 1961, of Govt. of West Bengal. Based on the Central Govt. Act XXI of 1860, Literary & Scientific Institution Act 1854. Applicable to the advancement and promotion of alternative medical sciences in several states of India.

INTERNATIONAL ALTERNATIVE MEDICAL ASSOCIATION

HEALTH & MEDICARE

80, CHOWRANGHEE ROAD
CALCUTTA-700 020 (India)
Phone No. : (033) 247-0157
Telex : 021-7618 Nina In ✱ Fax : 9133751799/9133286871

PROSPECTUS

(Regular / Correspondence)

.—All courses are approved and recogned by the Senate of The Open International University.

कलकत्ता का 'हेल्थ एंड मेडिकेयर' संस्था का प्रोस्पेक्टस : लोगों को धोखा देने व पैसा ऐंठने का पूरापूरा प्रबंध.

क इस छोटे से कार्यालय ने पिछले 2 सालों दौरान ढाई हजार से अधिक लोगों को क्टर बना दिया है.

एक अन्य सूत्र के मुताबिक 'इंडियन र्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिस' कलकत्ता संबद्ध पूरे देश में तकरीबन 4 दर्जन से धक ऐसी संस्थाएं हैं जो 'आल्टरनेटिव डसिन' में लोगों को खुलेआम डाक्टर ाने का काम कर रही हैं. आश्चर्यजनक त यह है कि भारत सरकार अथवा किसी सरकारी संस्था ने इन की कारगुजारियों अंकुश लगाने की जहमत नहीं उठाई है. णामत: इन सभी संस्थाओं के सक्रिय योग से पिछले 3 सालों के दौरान लगभग 12 हजार तथाकथित डाक्टर तैयार हो गए हैं जो 'नीम हकीम खतरे जान' की कहावत को चरितार्थ करते हुए शहरों एवं गांवों के हजारों लोगों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं.

'हेल्थ केयर इंस्टिट्यूट' दिल्ली का सचिव पवन मोदी जो मात्र वाणिज्य स्नातक है, अपने इस संस्थान को सन 1992 से चला रहा है. पवन मोदी के अनुसार, वह सिर्फ डाक्टर बनने के इच्छुक लोगों से फार्म इकट्ठे कर के 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिस' कलकत्ता भेजता है, जहां से उसे प्रतिफार्म कमीशन मिलता है. उस के पास सब से अधिक फार्म उत्तर प्रदेश, बिहार और हरियाणा से आते हैं.

आखिर यह आल्टरनेटिव मेडिसिस की पद्धति क्या है? भारत में तो फिलहाल कुल 4 मान्य चिकित्सा प्रणालियां ही हैं. इन प्रणालियों को एलोपैथी, आयुर्वेदिक, होमियोपैथी और यूनानी के नाम से जाना जाता है. भारत में विधिक रूप से इन्हीं 4 प्रणालियों की संस्थाओं के माध्यम से चिकित्सा पाठ्यक्रम एवं चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं.

लेकिन 'इंडियन आल्टरनेटिव मेडिसिस या मेडिसिना आल्टरनेटिवा' इन चारों पद्धतियों में कहीं भी नहीं आती हैं, इसलिए उस की डिगरियां तो क्या, उस से जुड़ी संस्थाओं के मान्य होने का भी सवाल नहीं उठता.

जैसाकि इस तरह की संस्थाएं लोगों

को अपने लुभावने जाल में फंसा कर 'रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर' (आर एम पी) का लाइसेंस दिलाने का भी वादा करती हैं तो वह भी कोरी गप ही है. आप को मालूम होगा कि भारत सरकार ने पिछले 25 से भी अधिक सालों से 'आर एम पी' सर्टिफिकेट देने पर रोक लगा रखी है.

इस के बावजूद आल्टरनेटिव मेडिसिस में धड़ल्ले से अपनी संस्थाओं को बेरोकटोक चलाने वालों का दावा है कि वे ऐसा कर के कोई गलत काम नहीं कर रहे हैं. भारतीय चिकित्सा विज्ञान अधिनियम (1860) की धारा 21 का हवाला दे कर वे बताते हैं कि उन्हें इस नियम के तहत आल्टरनेटिव मेडिसिन को विकसित करने का पूरा हक व अधिकार मिला हुआ है.

गौरतलब है कि इस धारा के तहत विज्ञान की किसी शाखा को विकसित तो किया जा सकता है, पर कोई बोर्ड या कालिज खोल कर न तो व्यावसायिक शिक्षा दी जा सकती है और न तो डिगरियां, सर्टिफिकेट आदि ही बांटे जा सकते हैं.

जहां तक आल्टरनेटिव मेडिसिन का सवाल है तो इस की जनक संस्था कलकत्ता की 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव

एक फर्जी संस्था के ऊंचे दावे

अक्सर कुछ बड़ी और फर्जी संस्थाएं अपने बारे में जो बड़ाचढ़ा कर दावे पेश करती हैं, उन के उन्हीं दावों में उन की पोल छिपी होती है. पर मासूम और गैरजानकार किस्म के लोग उन के शब्दों के उलटफेर को भांप नहीं पाते हैं, लिहाजा ऐसी फर्जी संस्थाओं को सही मान कर उन के जाल में उलझ जाते हैं.

अब 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिस' की ही बात लीजिए. इस ने अपने 'प्रोस्पेक्टस' में घोषणा की है कि वह 'दि ओपन इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी फार कंप्लीमेंटरी मेडिसिस' द्वारा एफिलिएटेड है. अब सवाल यह उठता है कि यह ओपन यूनिवर्सिटी विश्व के किस देश में स्थित है और इस ने किन शर्तों पर 'हेल्थ एंड मेडिकेयर' संस्था को मान्यता दी है?

गौरतलब है कि इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिस' ने ही अपना धंधा चलाने के लिए 'हेल्थ एंड मेडिकेयर' नामक एक और फर्जी संस्था खोल रखी है. सूत्र बताते हैं कि जिस 'हेल्थ एंड मेडिकेयर'संस्था को'दि ओपन इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी फार कंप्लीमेंटरी मेडिसिस' द्वारा मान्यता मिली हुई है वह यूनिवर्सिटी ही कहीं वजूद में नहीं है. और जब यह'ओपन यूनिवर्सिटी' ही वजूद में नहीं है तो बाकी सारी बातें फिजूल हैं.

इसी प्रकार लोगों को गुमराह करने के लिए 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिस' ने अपने बारे में यह दावा किया है कि वह 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के दिशानिर्देशों और सिद्धांतों पर आधारित है. अपना दावा पुख्ता करने के लिए यह बोर्ड 'अल्मा आता' घोषणापत्र का हवाला देती है. इस संस्था के प्रोस्पेक्टस के मुताबिक 'मेडिसिना आल्टरनेटिवा संस्था' एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है जो 1962 में 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' द्वारा जारी किए गए निर्देशों पर स्थापित है.

यहां सवाल यह उठता है कि सन 1962 में हुई जिस अल्मा आता कानफ्रेंस का जिक्र इस संस्था द्वारा किया गया है, वह कानफ्रेंस क्या वास्तव में 1962 में हुई ही थी? 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के एक सूत्र के मुताबिक, 1962 में अल्मा आता में कोई ऐसी कानफ्रेंस हुई ही नहीं. 'सन 2000 तक सब को स्वास्थ्य' के नारे के तहत 6 से 12 सितंबर 1978 के दौरान भूतपूर्व सोवियत संघ के अल्मा आता में 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' और यूनिसेफ के सम्मिलित सहयोग से एक कानफ्रेंस तो जरूर आयोजित की गई, पर उस में ऐसी किसी भी घोषणा का जिक्र नहीं है, जिस का दावा संस्था ने किया है और जिस के आधार पर उस ने अपने को स्थापित बताया है.

इस 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिस 'जैसी कथित अंतरराष्ट्रीय संस्था का

मेडिसिंस' की बुनियाद भी 1860 के अधिनियम की उसी धारा पर टिकी हुई है. इतना ही नहीं, इसे स्टैंडर्ड, वैध और असली साबित करने के लिए इस के संस्थापकों ने 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिंस' को विश्व स्वास्थ्य संगठन की 1962 की उस घोषणा के आधार पर स्थापित बताया है जो अल्मा आता (भूतपूर्व सोवियत संघ का एक स्थान) में की गई थी. इस बोर्ड के सूत्र बताते हैं कि उन का बोर्ड 'यूनाइटेड नेशंस पीस यूनिवर्सिटी' द्वारा मान्यताप्राप्त है जो एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है. यूनाइटेड नेशंस पीस यूनिवर्सिटी की स्थापना रिजोलूशन नं. 35/55/5/XII/80 के तहत 15 अगस्त 1988 को हुई.

हो सकता है आल्टरनेटिव मेडिसिंस का बोर्ड अंतरराष्ट्रीय मान्यताप्राप्त हो (जैसाकि बोर्ड दावा करता है) पर भारत में इस की स्थिति बिलकुल अवैध, फर्जी और नियमकानूनों के विरुद्ध है, इसलिए इस तरह का कोई बोर्ड खोल कर मनमरजी से कमरेनुमा मेडिकल कालिजों को मान्यता देना, डाक्टरी डिगरियां बांटना या इस तरह का कोई भी काम करना गलत और फर्जी गतिविधियों के दायरे में आता है. केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के एक सूत्र के मुताबिक, "अगर इस पद्धति का कोई डाक्टर प्रैक्टिस करता पाया जाता है तो उस पर दंड विधान की धाराओं के मुताबिक दंडात्मक कारखाई की जा सकती है."

अब आइए देखें कि अल्मा आता में क्या घोषणा हुई थी, जिस का जिक्र इस बोर्ड के कुछ सूत्र करते हैं. प्राप्त जानकारियों के मुताबिक, विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ ने अपने मिलेजुले प्रयासों के तहत अल्मा आता में एक कानफ्रेंस की थी, जिस में सन 2000 तक सब के लिए स्वास्थ्य का



इन फर्जी संस्थाओं से डाक्टर की डिगरी हासिल कर के ये डाक्टर क्या मरीज का सही इलाज कर सकने में सक्षम हैं?

'विश्व स्वास्थ्य संगठन' अथवा 'यूनिसेफ' से ...या ताल्लुक है? 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के ...क्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र के लोक सूचना एकक ...े एक उच्च पदाधिकारी जे. तुली के मुताबिक, ..."इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिंस,' ...डिसिना आल्टरनेटिवा इंस्टिट्यूट' अथवा ...ल्थ एंड मेडिकेयर' नामक किसी भी संस्था का ...विश्व स्वास्थ्य संगठन' से किसी भी तरह का ...ोई ताल्लुक नहीं है."

इस सिलसिले में इस प्रतिनिधि ने भारत ...रकार के स्वास्थ्य मंत्रालय से पूछताछ की तो ...वाब संतोषजनक नहीं मिला.

'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के पास ऐसा ...ोई प्राधिकार नहीं है कि वह किसी भी ...क्ति, संस्था अथवा संस्थान को 'शैक्षिक ...ायाकलाप चलाने अथवा सर्टिफिकेट प्रदान ...रने की अनुमति या मान्यता दे सके. खुद ...श्व स्वास्थ्य संगठन भी ऐसा नहीं कर ...कता. तब 'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव ...डिसिंस या इस के जैसी कोई और संस्था लोगों ... फर्जी डिगरियां/डिप्लोमा बांटने का ...धिकार कैसे रख सकती है, ऐसा दावा फर्जी ...ीं है तो और क्या है.

...यों भी 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' जिस भी ... में काम करता है, वह उस देश के स्वास्थ्य ...ालय के तहत ही होता है, लिहाजा 'इंडियन ...र्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिंस' जैसी किसी ...रराष्ट्रीय संस्था की जानकारी भारतीय ...स्थ्य मंत्रालय को न हो तो उस संस्था को ... कहा जाना चाहिए फर्जी या असली?

संकल्प लिया गया था. उस सम्मेलन में प्राथमिक स्वास्थ्य और उस की देखभाल से जुड़े हुए विषयों की व्याख्या करते हुए यह कहा गया था कि अनिवार्य स्वास्थ्य की देखभाल की शैली और तरीका कुछ ऐसा हो, जो व्यावहारिक हो, वैज्ञानिक हो और उसे सामाजिक रूप से स्वीकार करने में किसी को दिक्कत भी न हो.

उस घोषणा में आगे कहा गया था कि प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल के लिए जो भी तरीके अपनाएं जाएं वे इतने खर्चीले न हों कि उन का खर्चा व्यक्ति, समाज और देश उठा ही न सकें. क्योंकि स्वास्थ्य और विकास दोनों जरूरी हैं. उन्हें किसी एक की कीमत पर पूरा करने का प्रयास किया गया तो स्वास्थ्य और विकास दोनों के मूल्य आपस में टकराएंगे और दोनों क्षेत्रों में पूर्ण समर्पण और आत्मनिर्भरता का लक्ष्य पूरा नहीं हो पाएगा.

गौरतलब है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ की उक्त अल्मा आता घोषणा को इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिस वालों ने अपने हिसाब से परिभाषित किया है और कहा है कि प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल के लिए ही उन्होंने इस पद्धति का विकास करने के संदर्भ में कार्यकर्ताओं, फिजीशियनों, नर्सों इत्यादि को ट्रेनिंग देने का काम शुरू किया है. 'मेडिसिना आल्टरनेटिवा' की स्थापना भी इसी दिशानिर्देश के तहत हुई है कि इस पद्धति के डाक्टर, नर्स आदि को शिक्षित कर के सर्टिफिकेट प्रदान किया जाए ताकि वे लोगों के प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल का जिम्मा उठा सकें.

आल्टरनेटिव मेडिसिन क्या है?

'इंडियन बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिस' के योजनाकारों ने आल्टरनेटिव मेडिसिन की बहुत दिलचस्प व्याख्या की है.

आल्टरनेटिव का मूल अर्थ वैकल्पिक है. इसी अर्थ को ध्यान में रखते हुए यह कहा गया है कि हर वह दवा, इलाज या इलाज की पद्धति जो पश्चिमी चिकित्सा पद्धति (मान्य और वैधानिक) की मुख्य धारा से अलग है, आल्टरनेटिव मेडिसिन की विषय सूची में आती है.

इस तरह की चिकित्सा पद्धतियों में पारंपरिक चिकित्सा, लोक चिकित्सा धारा (तंत्रमंत्र, झाड़ फूंक आदि) का नाम गिनाया जाता है.

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आल्टरनेटिव मेडिसिन झाड़फूंक और तंत्रमंत्र से भी इलाज का तरीका बताती है और झाड़फूंक करने का लाइसेंस भी देती है.

आवश्यक तथ्य है कि इस पद्धति के तहत इलाज की जिन विधाओं में डाक्टर बनाने के प्रमाणपत्र बांटे जाते हैं, उन में से भारत में कोई भी मान्य और वैधानिक पद्धति नहीं है. आल्टरनेटिव मेडिसिस बोर्ड द्वारा जिस इलेक्ट्रोहोमियोपैथी पद्धति में सब से ज्यादा डाक्टर बनाए जाते हैं, वह भी मान्यताप्राप्त नहीं है. 'सरिता' में इलेक्ट्रो-होमियोपैथी पर विस्तृत लेख पहले ही प्रकाशित किया जा चुका है (देखें सरिता, दिसंबर/प्रथम ,1993).

हमारे देश की यह विडंबना ही है कि यहां खुलेआम गलत खेल खेलने की छूट मिली हुई है. लिहाजा अब समाज को ही चेतना होगा कि वह ऐसे गलत लोगों का मुकाबला कैसे करे. सरकार से अपेक्षा करना बेकार है. कारण, यदि सरकार की आंख खुली होती तो बोर्ड आफ आल्टरनेटिव मेडिसिस जैसे फर्जी, बोगस और गलत बोर्ड अपनी न तो दुकानदारी चला पाते और न ही हर साल हजारों छात्रों को इन के जाल में उलझ कर अपना भविष्य चौपट करना पड़ता.

कहानी • प्रमिला नानिवडेकर

प्रतीति

सुबोध की चिट्ठी हाथ में फड़फड़ाती रही. सामने रखी हुई काफी से उठती भाप का सारा सम्मोहन निमिष मात्र में समाप्त हो गया. दीवाली के लिए मिठाइयां और नमकीन बनाने में दोपहर गुजर चुकी थी. बच्चों और उन के पिता के आने से पहले काफी पी कर वह खुद को व्यवस्थित कर लेना चाहती थी. पर अब यह चिट्ठी...

काफी के प्याले की ओर देख कर उस ने एक ठंडी आह भरी. आंखें घड़ी से टकराईं तो पता चला कि अभी भी उस के पास खुद का स्वतंत्र कुछ समय बचा है. उस ने हलकी, छोटी कुरसी को सामने की ओर खींच लिया और दुखती टांगें उस पर टिका कर निढाल सी, अधलेटी, आंखें मूंदें पड़ी रही.

पर मन कहां शांत था. वह तो दौड़ कर भूतकाल के विशाल समुद्रतट पर बिखरी यादों के मोती समेट रहा था. उन्हीं की माला गूंथने की कोशिश में था...

वह भी ऐसी ही एक दोपहर थी. बाहर रिमझिम बारिश हो रही थी. कुछ ही देर पहले पढ़ कर एक तरफ रखी हुई सुंदर पुस्तक का खुमार मन पर हावी था. वह उसी उपन्यास के पात्रों को मन की आंखों से देख रही थी कि फोन की घंटी झनझना उठी.

अनमने भाव से ही उस ने चोंगा उठाया. फिर आवाज में तटस्थ माधुर्य की कुछ अतिरिक्त मात्रा घोल कर कहा, "हैलो."

"हैलो... क्या आप 364432 से बोल रही हैं? संजय के घर से?" उस व्यक्ति ने कुछ अधीरता से पूछा. आवाज बड़ी सुसंस्कृत, सधी हुई और मीठी थी.

"जी, मैं उन की पत्नी हूं... कहिए? आप का शुभ नाम?"

"मैं सुबोध हूं. संजय के साथ महाविद्यालय में पढ़ता था," वह रुका.

"अच्छा... संजय आप को अकसर याद करते हैं. लेकिन मुलाकात का मौका तो..."



''जी हां, तभी तो... आज आप लोगों के यहां होने के बारे में पता चलते ही फोन किया. मेरा भाई संजय के भानजे के कार्यालय में कुछ दिनों के लिए काम कर रहा था. बस, बातोंबातों में संजय का जिक्र किया तो उस ने फोन नंबर भी ला कर दे दिया,'' उस ने हंसी बिखेर कर बात पूरी की.

''अच्छा ही हुआ. संजय बहुत खुश होंगे, आप से मिल कर. कहिए, आज शाम को आइएगा?'' शुक्ला ने कुछ आत्मीयता से पूछा, ''अकेले ही आए हैं... या...?''

''केवल आया ही नहीं हूं, भाभीजी, हां घर भी बना रहा हूं. आप ही के शहर में जम के रहने का इरादा है,'' उस ने कहा.

''तब तो और भी अच्छा है,'' शुक्ला की मीठी हंसी गूंजी, ''हम लोगों ने भी यहीं र एक छोटा सा मकान बना लिया है. च्छा साथ रहेगा, आप का... संजय के नए?''

वह हंसा—खुली, खुशी से भरी हंसी.

''तो आज शाम को उन को 'सरप्राइज' देते हैं,'' शुक्ला ने सुझाया, ''क्या पता, खुश हो जाएं तो मुझे भी कुछ इनामविनाम दे ही दें.''

यह था सुबोध से उस का पहला परिचय. दोनों के बेतकल्लुफ, बातूनी स्वभाव के कारण औपचारिकता की रेखा लांघ कर दिलचस्प बातचीत के वातावरण में अपनेआप प्रवेश करने वाला प्रथम परिचय.

उस शाम सुबोध आया और खाने के लिए रुका भी. बड़ा प्रभावशाली व्यक्तित्व था जिस में यौवन के उत्साह के साथ प्रौढता की गंभीरता भी मिली हुई थी. बोलने की कला में माहिर, वह हंसमुख दोस्त शुक्ला



'दीवाली का त्योहार क्यों न अभी से ही शुरू कर दें,'' शुक्ला संजय को बांहों में भर कर बोली.

सुबोध के हंसमुख, आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर शुक्ला धीरेधीरे उस के प्रति आकर्षित होने लगी थी. यह उस की समझ से बाहर था कि उस के जैसे व्यक्ति को भला उस की पत्नी छोड़ कर क्यों चली गई? परंतु जल्दी ही यह रहस्य उस के सामने खुल गया.

को बहुत अच्छा लगा. खाने की मेज पर बच्चों के साथ हंसीमजाक भी किया, उस ने. शुक्ला बीचबीच में उस की ओर निगाह फेंक कर सोचती रही, 'भूल गया है, यह अपनी पत्नी को? क्यों लिया होगा उस ने तलाक? बच्चों के ऊपर क्या असर पड़ा होगा?'

उस ने सुन रखा था कि सुबोध की बेटी की तो शादी भी हो गई है और बेटा भी अब नौकरी करने लगा है. 48-49 की उम्र में ही वह बच्चों की जिम्मेदारियों से मुक्त हो गया था. 'शायद उस का अपना विवाह काफी जल्दी हुआ होगा... 23-24 की उम्र में?

शुक्ला फिर सोचने लगी, 'फिर भी यह इतना खुश कैसे रह सकता है? इसे अकेलापन काटने नहीं दौड़ता होगा? इस उम्र में किसी साथी की जरूरत नहीं है इसे?'

"अब आप लोगों की बारी है, मेरे घर आने की," खाने के बाद सुबोध ने आमंत्रण दिया.

"अब बारीवारी छोड़ यार," संजय ने टोका, "अकेला आदमी है, तू. कभी भी, कहीं भी आजा सकता है. हमारी तरह के बंधन तो हैं नहीं तेरे लिए."

सुबोध के जख्म कहीं हरे न हो जाएं, इस डर के मारे शुक्ला बीच में ही बोल पड़ी, "हम आएंगे जरूर... लेकिन इन बच्चों की छोटीमोटी परीक्षाओं से जरा निबट लें."

फिर तो सुबोध अकसर आने लगा था. उस के और शुक्ला के बीच एक नया मित्रता का रिश्ता बन गया था. संजय के और मित्रों की तरह, वह भी 'भाई साहब' या 'भैया' कह कर पुकारा जाए, उस से पहले ही सुबोध ने शुक्ला को बता दिया था, 'देखिए, मैं आप का भी दोस्त हूं. सुबोध ही कहलवाना पसंद करूंगा.'

फिर भी उस के आगे एक छोटा सा 'जी' जोड़ कर शुक्ला ने फासला बनाए रखा था.

संजय स्वभाव से ही कुछ गंभीर, मितभाषी था. अंतर्मुखी होने के कारण उस के प्रति कभी चिढ़ तो कभी रहस्यमय आकर्षण अनुभव करती थी, शुक्ला. पर उस के बातूनी और चहचहाते मिजाज को गप्पें लड़ाने के लिए सुबोध भा गया था.

सुबोध का घर बन गया, तो उस ने गृहप्रवेश की जोरदार दावत भी दी. शुक्ला उन दिनों अपनी बहन के घर उस की बीमारी में सहायता करने गई हुई थी. सो, जा नहीं पाई. पर आने के बाद उस ने संजय से कई प्रश्न पूछ डाले थे, "कितना बड़ा घर है? रसोई में सफेद संगमरमर है या काला शाहपुरी पत्थर? स्नानघर में कैसी टाइलें हैं..."

संजय कुछ क्षण सोचता रहा. फिर जवाब दिया था, "तुम खुद ही देख लेना. मैं ने घर तो देखा है, पर... ऐसी सारी चीजें तो मुझे याद नहीं रहतीं."

बच्चों ने बोल दिया था, "बोर मत करो न मां, अब घर जैसा घर है... और क्या? वैसे पिताजी के शब्दों में, हमारा ही घर सब से सुंदर है."

"जहां तुम हो, तुम्हारी मां है."

कितना प्यार था, उन शब्दों में. कितना विश्वास था संजय को अपनी शुक्ला पर.

संतुलित पौष्टिकता + किफ़ायती दाम

नया सेरेलॅक व्हीट + सोया। गेहूं के और सोया की पौष्टिकता से भरपूर।

क व्हीट + सोया। शिशुओं का ती ठोस आहार जिसमें हैं क पदार्थ। चिरपरिचित गुणों से और प्रोटीन्स की पौष्टिकता से । ताकि चौथे महीने से आपके ां के दूध के साथ मिल सके **रौर पौष्टिक ठोस आहार**। उसे स्थ और चुस्त-तंदुरुस्त रखने के

व्हीट + सोया में 12 विटामिन रल भी समुचित रूप में मौजूद हैं। ा शिशु हर तरह से तंदुरुस्त रहे और ा डट कर मुकाबला कर सके।

नेस्ले की **नई Z-लाइन तकनीक** से गया है जिससे इसका घोल पहले से यम और पचने में ज्यादा आसान है। स्वादिष्ट भी!

से बड़ी खूबी, कि ये सब विशेषताएं बहुत ती दाम में!





शिशु को दीजिए सेरेलॅक का अनूठा लाभ.

यक सूचना: मां का दूध शिशु के लिए सबसे उत्तम है। 4 महीने की उम्र से शिशु को मां के दूध के साथ-साथ अन्नयुक्त आहार दीजिए।

पर शुक्ला को तो सुबोध का भव्य, सजाधजा घर देख कर खुशी के बदले झुंझलाहट ही हो आई थी, अपनी जिंदगी पर. ऊपर से हंस कर बतियाती शुक्ला का अंतर्मन रो रहा था, 'हमारा घर खूबसूरत क्यों नहीं है? क्या कमी है, मुझ में? सुंदर हूं, सलीका है, परिश्रमी हूं, पर मेरे लिए तो किस्तों में कीमत चुका कर कई वर्षों बाद जिसे अपना बना पाऊंगी ऐसा छोटा सा फ्लैट ही है. उस की शोभा बढ़ाने के लिए न तो सुंदर परदे हैं, न कीमती कालीन. सुंदर देशीविदेशी चीजों का तो सपना भी मैं नहीं देख सकती. इतना सुंदर घर, ऐसा अच्छा, हंसमुख, देशविदेश घुमा सकने वाला पति. सुबोध की पत्नी मूर्ख होगी, तभी तो छोड़ गई यह सब...''

''तुम तो मेरे घर में हो ही नहीं शुक्ला,'' अचानक सुबोध ने उस के विचारों की लड़ी को काटा था, वह भी 'तुम' कह कर, अपनत्व से.

''क्या मतलब? यहीं तो हूं... सब के साथ...''

''मन यहां नहीं है, तुम्हारा. मुझे पता है, तुम मेरे घर की किस कमी के बारे में सोच रही हो. ओह... मैं ने बातोंबातों में आप को 'तुम' कह दिया...''

''तो क्या हुआ?'' संजय ने प्रतिवाद किया, ''मुझे 'तुम' कहते हो... शुक्ला कहीं मुझ से अलग है?''

''यही सही... 'तुम' में ज्यादा नजदीकी है,'' सुबोध का स्वर शुक्ला को कुछ अधिक स्नेहसिक्त लगा. उस ने पलकें उठाईं तो वह बड़े प्यार से उसे निहार रहा था. शुक्ला के मन में कुछ आनंद, कुछ आत्मसंतोष और कुछ चोरी करते हुए पकड़े जाने जैसी विचित्र अनुभूति की लहरें उठीं.

तब से धीरेधीरे शब्दों से नहीं, पर आंखों से सुबोध उस के प्रति अपना प्यार जताता रहा था. शुक्ला का मन महकमहक उठता. इतने अच्छे, सुशिक्षित, सुसंस्कृत पुरुष की वह प्रिय सखी बन सकती है, यह सोच कर उस का मुख खिलखिल जाता.

सुबोध की अनुपस्थिति में वह धमाके के साथ अपनी दुनिया में वापस आ गिरती.

छोटा घर, आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए धन की हमेशा खलती कमी, रिश्तेदारों के कारण गंवाने वाले घूमनेफिरने के, मौजशौक के मौके. फोन भी उन दिनों उन के मकान मालिक अमेरिका जाते हुए उन के पास 4 महीनों के लिए छोड़ गए थे.

पता नहीं कैसे उस ने संजय के साथ जीवन के 20 वर्ष बिताए. सारा जीवन अब रसहीन सा लगने लगा था. पकाओ, पढ़ाओ और घर की जेल में पंख फड़फड़ाते पंछी बन कर सिर पछाड़ते रहो.

> ### *क्षणभंगुरता*
>
> *किसी भी विचारशील व्यक्ति के लिए जीवन की क्षणभंगुरता का अर्थ यह नहीं है कि वह उन क्षणों को बरबाद करे.*
>
> *—रस्किन*

जब से सुबोध आया था, कभीकभा[र] आग्रह कर के पूरे परिवार को भ्रमण [के] लिए या फिल्म या बाद में बाहर खाने [के] लिए ले जाता. वह दिन, वे घंटे पल[क] झपकते बीत जाते. सुबोध हंसहंस क[र] बोलता रहता, चुटकुले, बेसुरे गीत सुना[ता] और पतंगबाजी जैसे खेल भी खेलत[ा]. बच्चे भी खुश हो जाते. कभीकभार उस [के] बच्चों के बारे में भी बातें होतीं, पर व[ह] ज्यादा बोलता नहीं था उस विषय पर.

''सुबोध की शादी बड़ी जल्दी हो ग[ई] थी,'' एक बार संजय ने कहा था, ''हम स[ब] दोस्त गए थे शरीक होने... उस के करीब [...] वर्षों के बाद हम लोगों ने विवाह किया, इसलिए उस के बच्चे जल्दी 'सेटल' हो ग[ए] हैं.''

''कैसी थी, सुबोध की पत्नी?'' ए[क] बार शुक्ला ने कुतूहल प्रदर्शित किया थ[ा].

''भई, हमें तो अच्छी लगी थीं. [...]

ये आसान व्यायाम कीजिए, बालों को खूबसूरत बनाइए: हर दिन २० मिनट मोड़िए.

बालों को गीला करके अनेक भागों में बांट दें.

हर हिस्से को सीधे कर्लर में लपेटकर, बालों की जड़ों से ऊपर उठाएं, लेकिन सिरों को खुला रहने दें.

कर्लर को 'सी' के आकार में मोडे और सिर की विपरीत दिशा में कस दें.

२० मिनट बाद कर्लर निकालें, लेकिन ब्रश न करें उंगलियों या मोटे दांते वाली कंघी से बाल संवारे

बालों को गीला करके अनेक भागों में बांट दें.

हर हिस्से को सीधे कर्लर पर लपेट दें

कर्लर को 'सी' के आकार में घुमाव की विपरीत दिशा में मोड़ दें

२० मिनट बाद कर्लर निकालें लेकिन ब्रश न करें उंगलियों या मोटे दांते वाली कंघी से बाल संवार

बालों को गीला करके अनेक भागों में बांट दें

हर हिस्से को कर्लर के एक सिरे से दुसरे सिरे तक लपेट दें

बालों की जडों से पकड़कर कर्लर को 'वॉकिंग स्टिक' के आकार में मोड़ दें

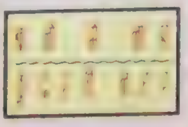
२० मिनट बाद कर्लर निकालें, लेकिन ब्रश न करें उंगलियों या मोटे दांते वाली कंघी से बाल संवारे



तो सबसे पहले लगाइए अपना मनपसंद संगीत. आइने के सामने खड़े होकर सामान्य तरीके से सांस लें. अब, अपने हाथों को उठाकर आपके हलके गीले और हिस्सों में बंटे बालों में फेम कर्लर लपेटे. अब आराम से बैठ जाइए. आपके सिर की गर्मी से फ़ेम कर्लर कर देंगे शुरू अपना काम. २० मिनट बाद कर्लर निकालिए... देखिए कितने कमाल के नज़र आते हैं आपके बाल! इनमें उंगलियां घुमाकर देखिए... हैं न पहले की तरह नर्म-मुलायम और सही-सलामत!

तो फिर भूल जाइए बालों को 'कर्ल' करने के वो तकलीफ़दायक तरीकें यानी गर्म रोलर या रासायनिक पर्मिंग लोशन. जो-'न रहे बाल, न बचे जंजाल' वाली कहावत सच करते हैं. तो फ़ेम कर्लर इस्तेमाल कीजिए, अपने बालों में ख़ूबसूरती बल लाइए. इन्हें स्वस्थ और सुंदर बनाए रखिए.

विशेष: ज़्यादा 'गहरे कर्ल' के लिए आजमाइए यह तरीका: बालों को लपेटने से पहले इन पर फ़ैम हेअर फ़िक्सर लगाइए. अपनी जुल्फ़ों को ज़्यादा लहरदार बनाइए!









गुस्ताखियां

ये माना कि
गुस्ताखियां की मैं ने,
इस लड़कपन का
कुछ तो खयाल
किया होता.
—दिव्या सक्सेना

इतना शरमा रही थीं कि बोलना तो नामुमकिन ही था. ज्यादा पढ़ीलिखी भी नहीं थीं. उम्र में भी कम ही रही होंगी न?"

"शायद बौद्धिक पिछड़ेपन के कारण पतिपत्नी में मनमुटाव हुआ होगा?" शुक्ला ने फट से कहा था, "अशिक्षितों से निभाना बड़ा कठिन होता है... खासकर अशिक्षित स्त्रियों से," उस का इशारा शायद अपनी सास व जेठानी की ओर भी था.

संजय गंभीर हो गया था. फिर बोला, "दुनिया में जैसे पैसा ही सब कुछ नहीं है, वैसे शिक्षा भी सब कुछ नहीं है, शुक्ला. असल में सुसंस्कृत होना या शायद... प्यार, विश्वास, निष्ठा जैसे गुणों का होना मुझे बहुत जरूरी लगता है. रही अनपढ़ स्त्रियों के साथ निभाने की बात... तो अगर पढ़ेलिखे लोग ही कुछ समझदारी से काम न लें, तो उन की पढ़ाईलिखाई किस काम की?"

शुक्ला चकित हो गई थी. संजय इतना तो कभी बोलता नहीं था. शुक्ला ने जवाब न दिया. उस के मन पर संजय के वक्तव्य का कोई असर न हुआ. पता नहीं दुनिया में ऐसी बेमेल जोड़ियां ही क्यों नजर आती हैं. उस के खुद के ससुर पिता के समान, ममता से भरे हुए थे, पर सास? बाप रे, काली का अवतार. उस के जेठ कितने समझदार और जेठानी? छोटीछोटी बातों का बुरा मान कर मुंह फुलाने वाली झगड़ा करने वाली. सुबोध इतना गुणवान है, किसी भी स्त्री को आकर्षित कर सकता है और उस की पत्नी गंवार, फूहड़, झगड़ालू होगी... तभी तो...

पर कई बार सत्य कल्पना से बहुत दूर होता है. उसे वह दिन अच्छी तरह याद है जब अचानक ही संजय सुबोध को खाने के लिए ले आया था. सुबोध उस दिन कुछ अनमना सा लग रहा था. बच्चे उन दिनों दादाजी को मिलने गए हुए थे. अचानक संजय को स्कूटर ले कर डाक्टर के पास जाना पड़ा. पड़ोस के हरि चाचा के बेटे को तेज बुखार था. हरि चाचा और चाची ड... गए थे. तब पड़ोसी के सिवा और किस की मदद मांगते?

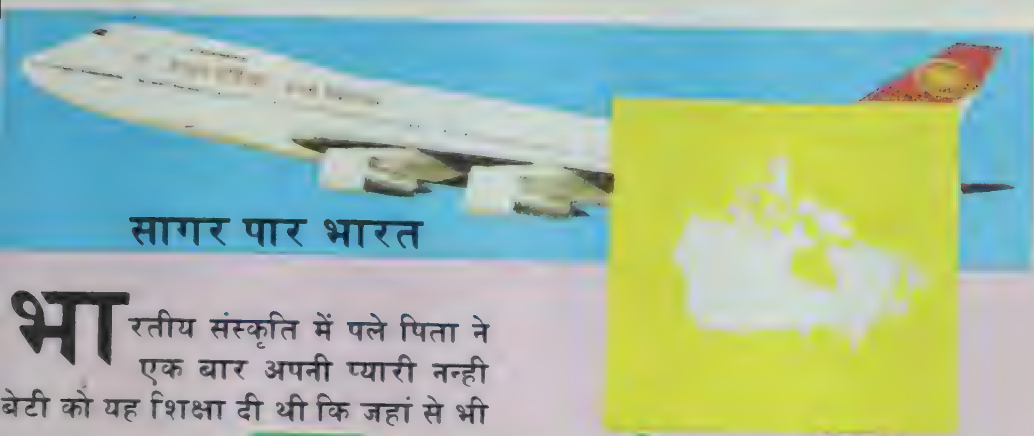
संजय के जाने के बाद सुबोध ने उ... कर शुक्ला को बांहों में भींच लिया था, "... तुम्हारे बिना रह नहीं सकता शुक्ला... अकेलापन मुझे खाए जा रहा है..."

शुक्ला चकित सी, कुछ आत्मप्रशंसा में पगी सी चुपचाप खड़ी रही, उस दायरे में... पता नहीं कब तक...

"मैं तुम से कुछ ज्यादा नहीं मांगता, शुक्ला. तुम्हारे बच्चे, तुम्हारा पति, तुम्हारा हंसताखेलता छोटा सा घर... सब कुछ ऐसे ही रहेगा. सिर्फ तुम मुझे अपना साथ देती रहो... वही मेरे लिए अमृत ... मैं... कोई न कोई अच्छी व्यवस्था करूंगा एकांत में मिलने के लिए. तुम्हें तकलीफ नहीं होगी. मैं तुम्हें विश्वास दिलाता ... शुक्ला... कि तुम्हें बदनामी का खतरा ... नहीं उठाना पड़ेगा. मैं खुश रखूंगा तुम्हें, बहुत खुश..."

शुक्ला को मानो काले नाग ने ... लिया. सुबोध, जिसे वह सुशिक्षि... सुसंस्कृत समझती थी, उसे व्यभिचार...

(शेष पृष्ठ 216 पर)



सागर पार भारत

भारतीय संस्कृति में पले पिता ने एक बार अपनी प्यारी नन्ही बेटी को यह शिक्षा दी थी कि जहां से भी

वारिया दंपती

तुम्हारी जीविका उपार्जित हो उसे, उस से ाप्त आय का कुछ अंश जरूर वापस करना. उस आज्ञाकारिणी पुत्री ने उस शिक्षा को गांठ बांध लिया था. वह सुबोध ालिका आज बड़ी हो कर प्रौढता की दहलीज र खड़ी है, और उस ांठ बांधी शिक्षा को ाज भी भारत से तनी दूर अमेरिका के ंटकी प्रांत के मार्टिन ाहर में रहते हुए मयसमय दोहरा रही .



इतना ही नहीं न्हें पति भी ऐसे मिले जो उसी सिद्धांत में स्था रखते हैं. अतः चारों के मेल ने सोने र सुहागा का काम किया है.

ये प्रशंसनीय दंपती हैं डाक्टर चंद्रा रिया व डाक्टर महेंद्र वारिया.

भारत के गुजरात राज्य में जामनगर निवासिनी, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय से .डी. करने वाली, 3 स्वर्ण पदक की ामिनी डाक्टर चंद्रा वारिया ने अपने देश में ही नहीं, वरन आप्रवासी भारतीय की हैसियत से विदेश में भी अपने कीर्तिमान द्वारा दूसरे पुरस्कारों के साथसाथ 1991 का 'प्रेस्टंसबर्ग कम्यूनिटी कालिज फैकल्टी एसेंबली' एवार्ड भी जीता है और आज वह गत 2 वर्षों से 'अवर लेडी आफ दि वे' अस्पताल के 'चीफ आफ स्टाफ' के पद पर आसीन हैं.

डाक्टर महेंद्र वारिया भी मूलतः जामनगर निवासी हैं. बंबई पशुचिकित्सा कालिज से शिक्षा प्राप्त कर उसी क्षेत्र में 7 वर्षों तक जीविकोपार्जन कर और 10 साल तक पशु रोग विज्ञान विभाग में प्रोफेसर के पद पर रहने के बाद अब वह अमेरिका में वेटरिनरी प्रैक्टिस कर रहे हैं.

इन दोनों की सराहना करते हुए यहां के कई समाचारपत्रों ने इन की अनुदान प्रवृत्ति की दाद दी है, 'इन के सुप्रयासों से बहुत सारे नौजवानों का भविष्य सुनहरा होगा. इन्होंने अपने हृदय की आवाज पर



डाक्टर चंद्रा वारिया और डाक्टर महेंद्र वारिया: नई पीढ़ी की भलाई व उन्नति के पथ पर अग्रसर

यह पैसा लगाया है. कंटकी के रमणीय पहाड़ी स्थल की रागिनी इन्हें भा गई और यहां के निवासी भी इन्हें अपने मध्य पा स्वयं को कृतकृत्य समझते हैं. दोनों ने ही एकदूसरे के हृदय के तारों को छुआ है, अनुगुंजित किया है.'

डाक्टर चंद्रा वारिया ने अपने 14 वर्ष के कार्यकाल में यहां 3,400 बच्चों की प्रसूति में योगदान दिया है, और अब उन्हीं देश के भावी कर्णधारों की भलाई व उन्नति के लिए इस डाक्टर दंपती ने 25,000 डालर का स्कालरशिप फंड 'प्रेस्टंसबर्ग कम्यूनिटी कालिज' व 'यूनिवर्सिटी आफ कंटकी' में स्थापित किया है.

उन्होंने 27 नवंबर,1993 को इस बात की घोषणा एक बहुत ही नए तरीके से की. उन्होंने 'ए सेलीब्रेशन आफ चिल्ड्रन' (बाल समारोह) शीर्षक के अंतर्गत एक पार्टी का आयोजन किया और उस में उन सब बच्चों को,जिन के जन्म में डाक्टर चंद्रा डाक्टर की हैसियत से सहायक थीं,सपरिवार आमंत्रित किया. इस समारोह में करीब 2 हजार व्यक्तियों ने भाग लिया.

डाक्टर चंद्रा ने उसी समय यह भी घोषणा की कि अब वह प्रसूति का कार्य नहीं करेंगी वरन अब से वह स्त्री रोग विशेषज्ञा के रूप में स्तन कैंसर तथा रतिज रोगों के उपचार पर काम करेंगी.

जहां इस दंपती ने जामनगर में 10 लाख रुपए के अनुदान से 'श्री मगन लाल डी. वोरा चैरिटेबल ट्रस्ट' की स्थापना की, वहीं इन्होंने 1,000 डालर का अनुदान 'सिंगल पेरेंट/होम मेकर' प्रोग्राम को दिया. इसी प्रकार इन्होंने अमेरिकन रेडक्रास आदि अनेक संस्थाओं को पर्याप्त अनुदान दिया. उन के द्वारा दिए गए कुछ उल्लेखनीय अनुदान हैं : जरूरतमंद रोगियों के लिए 25,000 डालर का अनुदान और 'प्रेस्टंसबर्ग कम्यूनिटी कालिज' की नई साइंस बिल्डिंग में 'वारिया नर्सिंग लेबोरटरी' की स्थापना के लिए 20,000 डालर का अनुदान.

उच्च शिक्षा में विश्वास रखने वाले इस दंपती ने 1,00,000 डालर के अनुदान से प्रेस्टंसबर्ग कम्यूनिटी कालिज के छात्रों के सहायतार्थ एक 'एंडाउमेंट फंड' की स्थापना की है जिस से प्रतिभाशाली जरूरतमंद छात्रों की पढ़ाई के लिए बिना ब्याज कर्जा मिलेगा. आर्थिक अभाव के दौरान वे छात्र इस फंड से पैसा उधार ले कर बाद में जीविकोपार्जन शुरू करने पर आराम से इस फंड को लौटा सकेंगे.

जब कुछ छोटे बच्चों ने डाक्टर चंद्रा वारिया से यह प्रश्न पूछा कि उन्होंने इतना ढेर सारा पैसा अनुदान में क्यों दे दिया, इस से तो वह 2 मर्सीडीज कार खरीद सकती थीं, तो उन्होंने हंस कर कहा कि मनुष्य को अपना वैभव बांट कर भोगना चाहिए. पैसा होना अच्छी बात है पर उस पैसे को किसी अच्छे काम में लगाना और भी अच्छी बात है.

वारिया दंपती के अनुसार शैक्षणिक संस्थाओं को दिया अनुदान आगे आने वाली एक नहीं अनेक पीढ़ियों के लिए उन के सपनों को साकार करने में सहायक सिद्ध होगा.

—स्नेह ठाकुर (कनाडा से)



पटाखे: कितने हानिकारक

लेख • शोभा छुटानी

दीवाली हो या शादी, सगाई हो या जन्मदिन, हर शुभ अवसर पर पटाखे जलाए जाते हैं. हर कोई पटाखे जला कर आनंद प्राप्त करता है. यदि खुशी किसी कष्ट में बदल जाए तो त्योहार का सारा मजा किरकिरा हो जाता है.

दीवाली या किसी भी पर्व पर पटाखे जलाएं, लेकिन अपना तथा बच्चों का ध्यान अवश्य रखें.

नाक, कान और गले के विशेषज्ञ डा. एम.एम. चावला के अनुसार अधिक जोर के विस्फोट से बच्चों के मस्तिष्क तथा





आज पटाखों के शोर के बिना दीवाली का आनंद अधूरा सा लगता है परंतु इन का सावधानी से प्रयोग न किया जाए तो ये क्षति भी पहुंचा सकते हैं. अतः पटाखे चलाते समय पूरीपूरी सावधानी बरतें अन्यथा आप की थोड़ी सी लापरवाही भी रंग में भंग डाल सकती है.

कानों के परदों पर बुरा असर पड़ता है. विस्फोटक पदार्थ के धुएं से जुकाम, खांसी, साईनस आदि की शिकायतें हो जाती हैं जिस से कान के मध्य भाग पर दबाव पड़ता है. इस दबाव के कारण मिनियर्स होने का खतरा बना रहता है. धीरेधीरे सुनने की शक्ति कम हो जाती है. अंदरूनी कान की सुनने वाली कोशिकाओं में भी विकार उत्पन्न हो जाता है जिस से बहरेपन का खतरा बढ़ जाता है.

डा. चावला ने बताया कि प्रतिवर्ष दीवाली के उपरांत दिल्ली तथा उस के आसपास के नगरों से 100 से अधिक बच्चे कान खराब कर के आते हैं. कई बच्चों को तो मद्रास स्थित कानों के अस्पताल में भेज कर कानों का इलाज करवाना पड़ा.

पटाखों से कान ही नहीं आंखें भी प्रभावित होती हैं. पटाखों की तेज रोशनी, जैसे फुलझड़ी को लगातार देखते रहने से नजर पर बुरा प्रभाव पड़ता है. पटाखे का जरा सा कण भी आंखों में नहीं पड़ना चाहिए. यदि पड़ जाए तो उसी समय ठंडे पानी से आंखों को धो कर तुरंत डाक्टर को दिखाएं.

बच्चों को खुली आग व आग की लौ से भी दूर रखें. पटाखे घर से बाहर जलाएं. यदि फ्लैट में रहते हों तो पटाखे छत पर न जलाएं बल्कि फ्लैटों के बाहर अहाते में जलाएं.

बच्चों को सूती कपड़े पहनाएं, स्वयं भी सूती कपड़े पहन कर पटाखे जलाएं. पटाखे जलाते समय नाईलोन के व सिंथेटिक कपड़े नहीं पहनने चाहिए, क्योंकि ये कपड़े जल्दी आग पकड़ लेते हैं.

कई बार देखा गया है कि मसखरे युवा गायों या कुत्तों की पूंछ पर पटाखे बांध कर जला देते हैं. ऐसी अवस्था में गाएं सींग मार सकती हैं और कुत्ता काट सकता है. ऐसा घिनौना मजाक न करें.

हरियाणा के गुड़गांव जिले में दीवाली के अवसर पर एक बार कुछ युवकों को मजाक सूझा. दो युवकों ने एक गाय को पकड़ कर मुंह खोल कर उसे बोतल से



राकेट को बोतल में सीधा खड़ा कर के दूर से ही जलाना चाहिए.

जबरन शराब पिला दी और पूंछ पर पटाखे की लंबी लड़ी सैलो टेप से चिपका दी. देखते ही देखते गाय एक पंडाल में घुस गई. वहां एक नवदंपती का स्वागत समारोह चल रहा था. गाय नवविवाहित दंपती के स्टेज तक जा पहुंची. वहां भगदड़ मच गई. नवविवाहिता को बहुत चोटें लगीं. खाने का सामान भी गाय ने पैरों तले रौंद दिया तथा खाने के लिए सजाई गई मेजें और प्लेटें भी



च्चों को पटाखे चलाने के सही दिशानिर्देश ते हुए पूरी सावधानी के साथ दीवाली मनाएं.

ड़ दीं. इस घटना ने एक मिनट में रंग में ग डाल दिया.

राकेट चलाते समय किसी शरबत खाली बोतल का प्रयोग करें. बोतल में केट को सीधा खड़ा कर के मोमबत्ती से नाएं ताकि वह सीधा आकाश में जाए. ाखे जलाने के लिए बड़ी मोमबत्ती का ोग करें. मोमबत्ती से हाथ भी सुरक्षित गा और आंखें भी सुरक्षित रहेंगी.

अनार जैसे पटाखे का प्रयोग न ही करें अच्छा है. उस में से निकली चिनगारियां खों की रोशनी के लिए बहुत ही नकारक हो सकती हैं. फिर भी यदि र जलाना चाहें तो बच्चों को उस से 25 फुट की दूरी पर रखें. बच्चों का ध्यान पलटने के लिए दूसरा पटाखा जलाने को कहा जा सकता है. यदि कोई पटाखा पूरा नहीं जला है तो उसे उठाएं नहीं और न ही उसे मुंह से हवा दें. उठाने के बाद भी विस्फोट हो सकता है. मुंह या आंखों पर चिनगारियां पड़ सकती हैं. मुंह भी जल सकता है. वैसे भी देखा जाता है कि बच्चे अपनी बहुत बहादुरी दिखाने की कोशिश करते हैं. बम को हाथ में पकड़ कर आग लगाते हैं. ऐसा करने से उन्हें रोकिए.

राजौरी गार्डन (दिल्ली) की घटना है. 7 वर्षीय राहुल ने हाथ में बम पकड़ा और उस के दोस्त वरुण ने फुलझड़ी से बम चला कर फेंकने की सलाह दी.

आग देते ही बम फट गया. राहुल की एक आंख जल गई. साथ ही चेहरा भी झुलस गया. चेहरे पर प्लास्टिक सर्जरी करानी पड़ी.

पटाखे जलाते समय नारियल का तेल, बरनाल जैसी वस्तुएं साथ ही रखें.

कंबल या रजाई भी तैयार रखें ताकि आग लगने की कोई दुर्घटना होने पर शीघ्र उसे बुझाया जा सके. नारियल का तेल, बरनाल जले पर लगाया जा सकता है. इस से छाले नहीं पड़ते हैं.

कमरों में जहां लंबेलंबे परदे लगे हों वहां भी पटाखे न जलाएं. कोई भी पटाखा परदे पर गिर कर आग पकड़ सकता है.

आजकल कुछ घरों में जेनरेटर भी होते हैं. इन जेनरेटरों से दूर हट कर पटाखे जलाएं. सफदरजंग अस्पताल में एक बार जेनरेटर से जला एक युवक दिखाई दिया. उस के केवल पैर की उंगलियां ही दिखती थीं, बाकी शरीर तो काला पड़ गया था. इसलिए जेनरेटर को भी दूर रखा जाए.

जितना हो सके पटाखे जलाने में सावधानी बरतें तभी दुर्घटनाओं से बच पाएंगे.

नया उजाला

कहानी • कुमुद भटनागर

मालविका को देखते ही तन्वी प्रसन्नता से खिल उठी. उस ने सोचा, एक तो पुरानी सहेली, दूसरे मालदार ग्राहक, अब आई है तो 2-3 हजार की खरीदारी कर के ही जाएगी.

"आइएआइए, सेठानीजी," उस ने मालविका के गदराए शरीर की ओर कटाक्ष करते हुए कहा.

"सेठानियों की तरह मोटी होने में थोड़ा समय लगेगा अभी," मालविका हंसी.

"मगर विनोद सेठ की बीवी तो सेठानी ही कहलाएगी," तन्वी ने छेड़ा.

"उस तरह तो तू भी 'लखपत्नी' कहला सकती है... क्योंकि तेरी दुकान में भी 2-3 लाख का माल तो होगा ही."

"शायद इस से भी ज्यादा का हो, लेकिन मुझे 'पत्नी' शब्द पसंद नहीं है. कोई और नाम सोच मेरे लिए, जो मेरे व्यक्तित्व के अनुरूप हो... यानी लाखों रुपयों के माल की मालकिन, अपने शरीर, अपनी मरजी की मालकिन और शहर में कलात्मक कपड़ों का निर्माण करने वाली..."

"उस के लिए तो शब्दकोश देखना पड़ेगा. लेकिन तेरे यहां के वस्त्र वास्तव में कलात्मक होते हैं, तन्वी. तुझे यह वस्त्रागार खोलने का खयाल कैसे आया? कालिज के बाद तो तू पेंटिंग सीखने बड़ौदा गई थी न?" मालविका को लगा कि उस की बात सुन कर तन्वी की आंखों में दर्द उभर आया है.

पर दूसरे ही पल तन्वी अपने लापरवाह अंदाज से बोली, "वहां से छुट्टियों में आने पर मैं ने कुछ नमूनों के रेखाचित्र बना कर दिए तो वे बहुत पसंद किए गए. जब मेरे बनाए नमूनों ने बाजार में धूम मचा दी तो सोचा, चित्रकला सीखने के बजाय कपड़े ही क्यों न डिजाइन किए जाएं. पिताजी को भी काला पैसा सफेद करना था, सो उन्होंने यह 'वस्त्रागार' खुलवा दिया. अब तो नए बन रहे 5 सितारा होटल में भी एक बुटीक खोलने वाली हूं," उस ने गर्व से बताया.

"अब यह सब का चक्कर छोड़, घर बसाने की सोच..."

"और नमूने बनाने के बजाय नमूने पैदा कर," तन्वी ने बात काटी.

"खुश रहेगी, वह सब कर के."



''मैं ऐसे ही बहुत खुश हूं... और तू
झे खुश करने के लिए कुछ बोहनी
ा.''

मालविका ने काफी सामान खरीदा. फिर एक हरे रंग के सूट को देखते हुए बोली, ''बहुत ही प्यारा डिजाइन है. यह किसी और रंग में मिलेगा?''

''मेरे यहां कोई डिजाइन दोहराया



समान अभिरुचि वाले अखिल और तन्वी एकदूसरे को पसंद करते थे. वे विवाह करना चाहते थे. लेकिन दीवाली की वह रात उन के जीवन को अंधकारमय बना गई. आखिर क्या घटित हुआ था उन के साथ?

नहीं जाता," तन्वी ने दर्प से बताया.

"मगर इसे तो मेरे लिए दोहराना पड़ेगा, हलके गुलाबी या आसमानी रंग में."

"उन रंगों में तो बहुत डिजाइन मिल जाएंगे."

"मगर मुझे यही पसंद है."

"तो यही ले ले न. हरा रंग तो तुझे पसंद भी बहुत है. हमेशा सब्जपरी बनी घूमा करती थी."

"मगर विनोद को हरा रंग पसंद नहीं है."

"सूट तुझे पहनना है या विनोद को?"

"पहनना तो मुझे ही है, पर देखना तो विनोद को है न."

"यानी तू विनोद को दिखाने के लिए कपड़े पहनती है?" तन्वी ने चिढ़ाया.

"मैं क्या, सभी बीवियां यही करती हैं... शादी करेगी तो पता चलेगा."

"फिर वही बात. अच्छा, यह बता, तुझे घर जाने की जल्दी तो नहीं है?"

"कोई खास नहीं... क्यों?"

"तो फिर चल, आज दोनों खरीदारी करती हैं. फिर किसी बढ़िया जगह खाना खाएंगी."

"चल, मजा आ जाएगा. विनोद भी पुणे में है, सो मुझे घर जाने की जल्दी भी नहीं है. लेकिन तू अपनी दुकान छोड़ कर कहीं और खरीदारी करेगी?" मालविका ने हैरानी से पूछा.

"कपड़ों के अलावा जिंदगी में और भी कई चीजों की जरूरत पड़ती है, सेठानीजी," तन्वी हंसी, "फिर दीवाली भी आने वाली है. कुछ तोहफे भी खरीदने हैं, अजीजों के लिए."

"अरे, वाह... तेरे भी कोई अजीज हैं?" मालविका ने चौंक कर पूछा.

"क्यों, मैं यतीम हूं क्या? लेकिन शायद तेरी शब्दावली में 'अजीज' शब्द सिर्फ 'आशिक' के लिए ही इस्तेमाल होता है?"

"सही समझा. लेकिन यह बता, तेरा क्या कभी भी कोई खास दोस्त नहीं बना?" मालविका ने सीधे तन्वी की आंखों में देखा.

"कभी नहीं कहना तो गलत होगा," तन्वी ने नजरें झुका कर कहा, "लेकिन फिलहाल कोई नहीं है... और न ही बनाने का इरादा है."

"क्यों, पहले वाले ने धोखा दिया था?"

"यह कहना भी गलत होगा," तन्वी ने कहा और अपनी सहायिका को बुलाया. "मैं 3-4 घंटे के लिए बाहर जा रही हूं. तु सब संभाल लेना."

खरीदारी करने और खाना खाने के बा चलने से पहले मालविका ने मनुहार के स्व में कहा, "उस हरे सूट जैसा ही मेरे लि हलके आसमानी रंग में एक सूट बनवा न."

"अच्छा बाबा, अगले हफ्ते त तैयार करवा देती हूं," तन्वी बोली.

"तो ठीक है, अगले सप्ताह मिलेंगे मालविका ने विदा लेते हुए कहा.

अगले सप्ताह मिलने पर मालविक बातोंबातों में कहा, "तू अगर चित्रका सीखती तो इस से भी ज्यादा सफल रह आजकल चित्रकार बेहिसाब कमा रहे विनोद पुणे से एक पेंटिंग लाया है, हजार रुपए की. एक पार्टी का दृश्य है. आदमी के चेहरे पर ऐसे भाव हैं, जैसे इस सब रौनक और भीड़ में भी अकेला है

''अच्छा... पुणे में भला इतना महंगा चित्रकार कौन है?'' तन्वी ने हैरानी से पूछा.

''नाम तो मुझे नहीं मालूम,'' मालविका बोली, ''तुम एक दिन आ कर चित्र देखना... तभी उस पर किए उस के हस्ताक्षर भी पढ़ लेना.''

''अच्छी बात है, चक्कर लगाती हूं, किसी दिन.''

घर लौट कर मालविका ने विनोद को बताया कि तन्वी पूछ रही थी कि पुणे में इतना महंगा चित्रकार कौन है?''

''अखिल की कलाकृतियां तो और भी महंगी बिकती हैं. वह मेरे दोस्त निखिल का बड़ा भाई है, इसलिए मुझे सस्ती मिल गई.''

''यानी छोटे भाई के दोस्त को रियायत दे दी.''

''नहीं, दोस्त ने ही रियायत दी. असल में अखिल की बनाई मूर्तियां और तसवीरें निखिल ही बेचता है. अखिल बेचारा तो एकदम संन्यासी किस्म का आदमी है. उस का अपना न तो कोई शौक है और न ही शोहरत की चाह,'' विनोद ने मुग्ध भाव से कहा.

''बड़ी उम्र का है?'' मालविका ने पूछा.

''अरे नहीं, जवान आदमी है. मुझ से एकदो साल बड़ा या छोटा होगा.''

''तो फिर भरी जवानी में जोगी क्यों बना हुआ है?''

''यह तुम उस से मिलने पर पूछ लेना. अखिल हर वर्ष दीवाली के शोरशराबे से बचने के लिए कहीं एकांत में चला जाता है. इस बार मैं ने उसे अपने फार्म हाउस पर आने की दावत दी है. 2-4 रोज में आ जाएगा,'' विनोद ने बताया.

मालविका ने तन्वी को फोन किया तो उस ने उत्साह से कहा कि वह अवश्य उस के विशिष्ट मेहमान से मिलना चाहेगी क्योंकि वह जानना चाहती है कि आजकल कला की दुनिया में नया क्या हो रहा है.

2-3 दिन के बाद अखिल आ गया. लंबा, पतला, सुदर्शन युवक, जिस की आंखों में बसा दर्द उस के होंठों की मुसकान से मेल नहीं खाता था. अखिल को फार्म हाउस बहुत पसंद आया.

''कितना सुकून, कितनी स्फूर्ति है इस एकांत में,'' वह विभोर हो कर बोला, ''मैं इस शांति के एकएक पल को जीऊंगा.''

''इस से पहले कि तुम परंपराओं के अनुसार मुझे दांव पर लगाओ, मेरा यहां से चले जाना ही बेहतर होगा,'' तन्वी अखिल से बोली.



"लेकिन एक शाम मैं यह शांति भंग करूंगी. अब की दीवाली की दावत यहां कर के मैं आप को अपने सब मित्रों से मिलवाना चाहती हूं," मालविका ने बताया.

अखिल का चेहरा एकदम बुझ गया, "ओह, तब तो मुझे आज ही यहां से भागना पड़ेगा."

"मैं भागने दूंगी तब न," मालविका ने हठी बालिका की तरह कहा, "मेरी पार्टी की शोभा बढ़ाए बगैर आप यहां से नहीं जा पाएंगे."

"क्षमा चाहूंगा बहन, मैं किसी भी... खासकर दीवाली की पार्टी में कभी भी न जाने की प्रतिज्ञा कर चुका हूं... जिसे किसी भी कीमत पर तोड़ना नहीं चाहूंगा. मुझे विवश मत करिए," अखिल ने व्यथित स्वर में कहा.

"लेकिन एक शर्त पर... आप को मुझे यह बताना पड़ेगा कि आप ने भरी जवानी में संन्यास क्यों ले लिया? देखिए, आप ने मुझे 'बहन' कहा है, क्या मुझ से अपना दुख नहीं बांटेंगे?" मालविका ने स्नेहसिक्त स्वर में कहा.

"मैं दुख बांटने में विश्वास नहीं करता," अखिल टालने के स्वर में बोला, "इसलिए मैं ने आज तक यह दुख किसी से नहीं बांटा."

"आज तक मेरे जैसी हठीली बहन भी तो नहीं मिली होगी. विश्वास करो भैया, जब तक आप की इस व्यथा की वजह नहीं जान लूंगी, मैं यहां से नहीं जाऊंगी," मालविका ने दृढ़ स्वर में कहा.

अखिल ने बेबसी से गहरी सांस खींची "एक शर्त पर... आप मुझ से उस का नाम नहीं पूछेंगी. कभी मैं भी बहुत शौकीन और रंगीन तबीयत का था. शिल्प और चित्रकला महज शौक के लिए सीख रहा था. पैसा कमाने के लिए तो पिताजी का होटल था ही. उन्हीं दिनों उस से मुलाकात हुई थी. दोनों की एक सी अभिरुचियां थीं, दोनों ही आधुनिक, आभिजात्य वर्ग से थे, सो दोस्ती होते और उसे प्रेम में बदलते देर न लगी.

"दीवाली की छुट्टियों में घर जाने से पहले मैं ने अपने कमरे में दावत का आयोजन किया. मेरी सहायता करने के लिए वह जल्दी आ गई थी. मैं ने उसे एक सोने की अंगूठी पहनाते हुए कहा कि हीरे की अंगूठी तो घरवाले पहनाएंगे. यह अपनी ओर से दीवाली का उपहार दे रहा हूं.

"उस ने कहा, 'मैं भी तुम्हारे लिए एक उपहार लाई हूं,' और उस ने मुझे एक घड़ी पहना दी. फिर बोली, 'पसंद आई?'

"मैं ने मुसकराते हुए कहा, 'इस का सुबूत तो तुम्हें तब मिलेगा, जब देखोगी कि यह घड़ी मेरे शरीर का अंग बन चुकी है.'

"फिर कमरे में रखी शराब की बोतलें देख कर उस ने पूछा कि क्या मैं शराब पीता हूं?

कुत्ते के काटने का असर 20 वर्ष तक रह सकता है

सही है बिलकुल ठीक

कुत्ते के काटने का असर 20 वर्ष तक भी रह सकता है, यानी इस से होने वाली हाइड्रोफोबिया नामक बीमारी 20 वर्ष बाद भी हो सकती है. इस का कोई इलाज नहीं है. पीड़ित व्यक्ति की 48 घंटे के अंदर मौत हो सकती है.

इस बीमारी से पीड़ित व्यक्ति पानी देखते ही कांपने लगता है. उस के मुंह से झाग आने लगता है, वह सांस लेते हुए तुरंत उत्तेजित हो जाता है. अगर यह व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को दांत काट ले तो उसे भी वह बीमारी हो सकती है.

अतः कुत्ते के काटने पर तुरंत इलाज कराना चाहिए तथा 10 दिनों तक कुत्ते पर निगरानी रखनी चाहिए. कुत्ते की मौत होने की स्थिति में डाक्टर से संपर्क कर एंटी रेबीज वेक्सीन का इंजेक्शन लगवाना अत्यंत आवश्यक है.

''मैं ने जवाब दिया, 'कभीकभार... लेकिन दीवाली पर शराब पीना और जुआ खेलना हमारे परिवार की परंपरा है.'

'''मुझ से शादी करने के बाद तुम्हें यह परंपरा तोड़नी होगी, अखिल.'

'''मैं भला अपने परिवार का प्रचलन कैसे बदल सकता हूं?' मैं ने शराब की बोतल खोलते हुए कहा, 'तुम्हें भी हमारे रिवाज के मुताबिक होली, दीवाली पर शराब पीनी पड़ेगी, सो आज से ही क्यों न यह नेक काम शुरू कर दो.'

'''तब की तब देखेंगे, आज तो नहीं,' कह कर वह अलग हट गई. फिर पूछा, 'इस जुए और शराब वाली पार्टी में तुम ने लड़कियों को क्यों बुलाया?'

'''क्यों न बुलाता... क्या वे हमारी मित्र नहीं हैं?'

'''जरूर हैं, मगर वे इस दावत में करेंगी क्या?'

'''वही, जो हम सब करेंगे... यानी जाम भी थामेंगी और दांव भी लगाएंगी.'

'''कोई ऐसा नहीं करेगी.'

'''हो जाए शर्त देखना, कैसे एकएक को पिलाता और खिलाता हूं,' मैं ने चुनौती के स्वर में कहा. पर वह कुछ न बोली.

''अधिकांश युवतियों ने तो बगैर नानुकर के ही जाम थाम लिए और जो हिचकिचाईं, उन्हें मैं ने मनुहार कर के जबरदस्ती पिला दी. कुछ शराब का सुरूर और कुछ उसे चिढ़ाने के लिए मैं ने कुछ ज्यादा ही पी ली.

''फिर ताश शुरू हो गई. जोश में मैं 'ब्लाइंड' पर 'ब्लाइंड' चलता रहा. हलके पत्तों पर भी आखिर एक बड़ी चाल चलता गया. एक बार जब सचमुच अच्छे पत्ते आए तो मेरे पास पैसे खत्म हो चुके थे. मैं ने कलाई से उतार कर उस की दी घड़ी दांव पर लगा दी.

'''अगले दांव पर इसे लगाओ,' उस ने अंगूठी उतार कर मुझे पकड़ा दी.

'''यह हुई न बात,' मैं ने जोश से कहा, 'तुम बखूबी हमारे खानदान की परंपराओं का निर्वाह करोगी.'

'''इस से पहले कि तुम परंपराओं के अनुसार मुझे अगले दांव पर लगाओ, मेरा यहां से चले जाना ही बेहतर होगा,' इतना कह कर वह तेजी से बाहर निकल गई. यार लोगों ने इस पर जोरदार ठहाका लगाया. तब मैं ने भी उन का साथ दिया.

''अगली सुबह नशा उतरने पर मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ. मैं तुरंत उस के होस्टल पहुंचा. वह स्टेशन जाने के लिए निकल ही रही थी.

'''जब मैं तुम्हारी खानदानी परंपराओं का ही निर्वाह नहीं कर सकती तो मुझ से संबंध बनाने का फायदा?' उस ने रुखाई से पूछा.

''मैं ने सिर झुका कर कहा, 'मैं अपने व्यवहार के लिए बहुत लज्जित हूं. तुम्हारी



''तुम ने दीवाली के लिए सामान लाने की जो सूची दी थी, महंगाई को देखते हुए आधा सामान ही लाया हूं... शेष अगली दीवाली पर...''

'कसम' खाता हूं, मैं अपने परिवार की इस गलत प्रथा को हमेशा के लिए खत्म कर दूंगा.'

"'वाह, 'कसम'... और वह भी खानदानी जुआरी और शराबी की,' वह अवहेलना से हंसी, 'किसी और को बेवकूफ बनाओ.'

"पर मैं तो खुद ही बेवकूफ बन चुका था और किसी को क्या बनाता. इसी बीच निखिल ने मेरे बनाए कुछ चित्र और मूर्तियां होटल में ठहरे विदेशी पर्यटकों को ऊंचे दामों में बेच दीं. फिर वह मेरे पीछे पड़ गया कि मैं व्यावसायिक स्तर पर मूर्तियां और तसवीरें बनानी शुरू कर दूं. मगर मुझे अब किसी भी काम में दिलचस्पी नहीं रह गई थी, सो मैं ने मना कर दिया.

सुंदर वस्तु

सुंदर वस्तु में सभी की दृष्टि को आकर्षित करने की इतनी प्रबल शक्ति होती है कि कोई भी उस से प्रसन्न हुए बिना नहीं रह सकता. *—कलेंडन*

"पर निखिल जिद पर अड़ गया कि उस की खातिर मुझे यह काम करना ही पड़ेगा क्योंकि उस को इस अतिरिक्त आय का चसका लग गया था. मैं ने सोचा कि अगर उस का साथ न दिया तो वह गलत तरीके से पैसा बनाएगा. हार कर मैं ने एक शर्त पर उस की बात मान ली कि वह कभी शराब और ताश को हाथ नहीं लगाएगा.

"एक तरह से निखिल की जिद से फायदा ही हुआ. काम में लगे रहने की वजह से दिल की कसक अब कम कचोटती है."

"आप ने दोबारा उस लड़की से संपर्क नहीं किया?" मालविका ने पूछा.

"जब उस को मुझ पर विश्वास ही नहीं रहा तो फिर संपर्क करने के लिए रह ही क्या गया था?" अखिल ने मायूसी से कहा.

"विश्वास तो मैं उसे पल भर में करवा दूंगी, बशर्ते आप मुझे उस का पता बता दें," मालविका ने चुनौती के स्वर में कहा.

"जैसे वह अब तक तो जरूर कुंआरी बैठी होगी, एक खानदानी शराबी और जुआरी के सुधरने की इंतजार में," अखिल के स्वर में दर्द से ज्यादा व्यंग्य था.

मालविका के पास इस का कोई जवाब नहीं था. वह उदास मन से घर लौट आ[ई] और विनोद को सब बताया.

"जुए और शराब के साथ दीवाली मनाने की यह प्रथा है तो गलत," विनोद कुछ सोचते हुए बोला, "थोड़ी देर के रोमांच के लिए उम्र भर का दर्द ले लेते हैं कुछ लोग. वैसे भी कितना पैसा, सेहत और समय बरबाद करते हैं, इस व्यर्थ की प्रथा में?"

दीवाली की सुबह विनोद ने मालविका से कहा कि भले ही अखिल को दीवाली मनाने में कोई दिलचस्पी न हो, परंतु उन लोगों को उस के लिए कुछ मिठाई और बढ़िया खाना ले कर जाना चाहिए.

मालविका को भी बात जंची, मगर उस की समझ में नहीं आ रहा था कि वे लोग अखिल से बात क्या करेंगे. तभी उसे खयाल आया कि क्यों न तन्वी को बुला ले. उस से कला जगत की गतिविधियों के बा[रे] में बात करने से अखिल का ध्यान भी बं[टा] जाएगा. उस ने विनोद से कहा कि वह तन्वी को फोन करे, उस की बात वह कभी नहीं टालेगी.

"आप के कलाकार मेहमान से मिलना तो मैं भी चाहती हूं," तन्वी बोली, "लेकिन रातभर की मयकशी और हारजीत के बाद आप के मेहमान और आप बातचीत करने की हालत में होंगे?"

"क्या बात कर रही हो तन्वी, वह तो शराब को छूता तक नहीं. एकदम सीधा संन्यासी आदमी है, केवल कला के लि[ए] जीने वाला," विनोद बोला.

"रहने भी दो, हजारों रुपयों में ए[क] पेंटिंग बेचने वाला कलाकार और सीधा

दा?" तन्वी अविश्वास से हंसी.

"तभी तो कह रहा हूं कि खुद मिल र देखो."

"ऐसी बात है तो जरूर मिलूंगी. भी तो हम सब लोग अपने फार्म हाउस जा रहे हैं, वहां से लौटते हुए मैं आप के ां आ जाऊंगी."

"हम लोग भी तो फार्म हाउस पर ही रहे हैं और वह तुम्हारे फार्म के नजदीक है," विनोद ने बताया.

"मुझे मालूम है. आप वहां कब तक चेंगे?"

"बस, निकलने ही वाले हैं. ऐसा करो, दोपहर का खाना हमारे साथ ही ओ," विनोद ने आग्रह किया.

"ठीक है, एक बजे तक पहुंच ऊंगी," इतना कह कर तन्वी ने रिसीवर दिया.

खिल अमराई में बैठा शून्य में ऐसे देख था, जैसे उस के सामने अतीत के परदे यादों के चलचित्र आजा रहे हों.

"तो मानी नहीं न आप," उस ने शता से मालविका की ओर देखा.

"नहीं, हम कुछ हंगामा या दावत रह नहीं कर रहे," विनोद बोला, "बस, ना खाना उठा कर आप के साथ खाने आए हैं. इस में तो आप को एतराज होगा न?"

"एक बात पर भैया को एतराज हो ता है. मैं ने अपनी एक कलाकार सहेली इन से मिलने को बुला लिया है," विका धीरे से बोली.

"मुझे तो खैर नहीं, लेकिन मुझ से ने के बाद आप की सहेली को आप से नी रखने में एतराज हो सकता है," ल फीकी सी हंसी हंसा.

वातावरण कुछ बोझिल सा हो गया. बात करने के खयाल से विनोद ने पूछा, प ने हमारा पूरा फार्म देखा कि नहीं?"

"जी नहीं, चलिए... आप के साथ ते हैं," अखिल उठ खड़ा हुआ.

वे लोग अंगूर की बेलों के नीचे खड़े थे कि तन्वी की आवाज आई, "अरे भई, किधर हैं, आप लोग?"

"इधर, अंगूर की बेलों की छाया में," विनोद ने कहा और तन्वी को लाने आगे बढ़ गया.

"अंगूर की बेटी न सही, बेल ही सही. दीवाली पर अंगूर से नाता नहीं तोड़ सकते आप लोग?" तन्वी ने हंसते हुए कहा.

"यकीन करोगी, इस बार हम दोनों न तो किसी पार्टी में गए और न ही हम ने खुद पार्टी दी."

"बहुत खूब... क्या एक संन्यासी कलाकार के प्रभाव में आ कर? पर हैं कहां, वह महानुभाव?"

"मैं यहां हूं तन्वी," अखिल भर्राए स्वर में बोला तो सब ने चौंक कर एकदूसरे की तरफ देखा.

"अखिल, तुम? यह क्या हालत बना रखी है तुम ने?" तन्वी ने हैरानी से पूछा.

"सब आप ही की मेहरबानी लगती है," मालविका व्यंग्य से बोली, फिर अखिल की ओर मुड़ी, "भैया, मैं ने कहा था न कि अगर वह लड़की मिले तो मैं उसे पल भर में आप के पश्चात्ताप का विश्वास दिलवा दूंगी... और हां, तन्वी ने अभी तक शादी भी नहीं की है."

"तो अब कर लेगी," विनोद हंसा, "और अब तुम्हें उस से कुछ कहने की जरूरत नहीं है. वह सब समझ चुकी है."

"यानी अब हमें यहां से चलना चाहिए," मालविका ने कहा.

"नहीं, मैं अकेली अखिल को अपने घर वालों से मिलवाने कैसे ले कर जा सकती हूं," तन्वी ने कहा, "आप दोनों को हमारे फार्म हाउस तक तो चलना ही पड़ेगा."

"क्यों नहीं, तुम्हारी अंधेरी दीवाली में नया उजाला लाने के लिए तो हम कहीं भी चल सकते हैं," विनोद बोला.

"हां, जब यहां तक ले आए हैं तो विवाह मंडप में ही ले जा कर छोड़ेंगे," कहते हुए मालविका जोर से हंस पड़ी. ●


मिठाई
बाजार से चाहे जितनी मिठाई मंगा लो, कभी मेहमानों के लिए कम पड़ जाती है तो कभी नौकर रह जाते हैं.
पिछली बार तो अपने लिए ही मिठाई नहीं बची थी.
क्यों न इस बार हलवाई ही घर में बिठा लें.
वाह!
बहूबेटे की पहली दीवाली है. खाली हाथ कैसे आती



श्रीमतीजी, हमारा चुन्नू एक वर्ष का हो गया. फिर आज दीवाली भी है. मैं केक और मिठाई दोनों लाई हूं.
भाभीजी, आपको सोहन हलवा बहुत पसंद है न, इसलिए खासतौर से पूरे दो किलो बनवा कर लाया हूं.
बीबीजी, आपने जिस-जिस के घर डिब्बे भेजे थे, बदले में उन सब ने भी एक-एक डब्बा थमा दिया.
उफ! इतनी मिठाई!! अब क्या करें?

काजल बन बैठी है बाती



नयन हमारे दीप हो गए
काजल बन बैठी है बाती.
मुसकानों की फुलझड़ियों
पढ़ दी मेरे मन की पाती.

सुर्ख कपोलों की आभा से
दमक उठा हर कोनाकोना,
कमी रह गई प्रियतम तेरी
बिन तेरे सब बोनाबोना.

तुम आ जाओ द्वार हमारे
तब दीवाली गाएंगे,
मिलबांट कर सारी खुशिय
दीपदीप छिटकाएंगे.

पहर दीप सजने की आई
कमी तुम्हारी हमें सताती,
सब सखियां मिलजुल कर
मैं दोहरी मन में हो जाती.

नयन हमारे दीप हो गए
काजल बन बैठी है बाती.

☐ अशोक श्रीवास्तव 'अनज


मंगलमय हो दीवाली
Godrej
REFRIGERATORS
THE PROMISE OF GOOD LIVING
HTA 2474 95

दीवाली के रसीले मिष्ठान

स्वीट चाकलेट बाल

सामग्री : 100 ग्राम नारियल का चूरा, 2 बड़े चम्मच चाकलेट पाउडर, 1 मिल्क मेड (गाढ़ा दूध) का डब्बा, 2 छोटे चम्मच मक्खन, 1 बड़ा चम्मच कोको पाउडर, ½ प्याला बादाम कटा हुआ.

बनाने में लगने वाला समय : 20 मिनट.

विधि : नारियल के चूरे को थाली में फैला लें. चाकलेट व कोको पाउडर को छान कर चूरे के साथ मिलाएं तथा बारीक कटा बादाम व मिल्क मेड (गाढ़ा दूध) डाल कर पूरी सामग्री को अच्छी तरह मिला कर एकसार मिश्रण तैयार करें.

एक थाली को मक्खन से चिकना करें व चिकने हाथों से मिश्रण से एकसमान आकार की गोलियां बना कर चिकनी थाली में रखते जाएं. इन तैयार गोलियों को थोड़ी देर फ्रिज में रख कर सेट करें व बाद में डब्बों में भर कर रखें.

—अमिता दीक्षित

स्वीट चाकलेट बाल



पपीते की गुझिया

सामग्री : 250 ग्राम कच्चा पपीता, 150 ग्राम खोया, 250 ग्राम बूरा या चीनी पिसी हुई, 600 ग्राम मैदा, 1 प्याला घी मोयन के लिए, 50 ग्राम नारियल कद्दूकस किया हुआ, 5 इलायची का चूरा, 50 ग्राम चिरौंजी, 50 ग्राम किशमिश, 200 ग्राम घी तलने के लिए.

बनाने में लगने वाला समय : 1½ घंटा.

विधि : कच्चे पपीते को अच्छी तरह धो छील कर कद्दूकस कर लें और उसे ½ बड़ा चम्मच घी डाल कर कड़ाही में भून लें. सुनहरा होने पर आंच से उतार कर फैला दें. फिर खोए को भी इसी तरह भून कर ठंडा करें. ठंडा होने पर पपीता व खोया मिला कर उस में पिसी हुई चीनी या बूरा व इलायची चूरा डालें. सभी मेवों को मिला दें. मिश्रण तैयार हो जाने पर मैदे को मोयन डाल कर नरम गूंध लें और उस की छोटीछोटी पूरियां बना कर सांचे पर रख कर मिश्रण भर कर गुझिया का आकार दें और घी गरम कर के इन गुझियों को सुनहरा तलें. पपीते की स्वादिष्ट गुझिया तैयार हैं.

खरबूजे की गिरी की टिकिया

सामग्री : 200 ग्राम खरबूजे की गिरी,

पपीते की गुझिया



150 ग्राम चीनी, 5 इलायची पिसी, ½ कटोरी इच्छानुसार बारीक कटा मेवा, 50 ग्राम खोया.

सजाने हेतु सामग्री : खरबूजे की साबूत गिरी.

पकाने में लगने वाला समय : 30 मिनट.

विधि : खरबूजे की गिरी को चिकनी कड़ाही में हलका सुनहरा भून कर ठंडा करें. खोए को भी हलका सुनहरा भून कर ठंडा कर लें. दोनों को ठंडा हो जाने पर मिक्सी में डाल कर बारीक पीस कर पाउडर बना लें. इलायची तथा मेवा डाल कर फिर एक बार पीसें और चीनी की 3 तार की चाशनी बना कर उस में मिला कर अच्छी तरह घोंट दें तथा तुरंत ही किसी चिकनी थाली या ट्रे फैला कर गोल आकार में काट दें. मिश्र को अधिक ठंडा न करें, नहीं तो ग आकार ठीक से नहीं आएगा. खरबूजे गिरी ऊपर से चिपका कर टिकिया पेश क

अरारोट के वेजीटेबल ब

सामग्री : 100 ग्राम अरारोट, 50 ग्र सूजी, 2 छोटे चम्मच मैदा, 1 छोटा चम्म नमक, 2 गाजर, 2 मूली, 2 हरी मिर्चें, बड़ा चम्मच हरी धनिया, ½ इंच अदरक उबला आलू, ¼ कटोरी गरम तेल मोयन लिए, 2 कटोरी तेल तलने के लिए, कटोरी गुनगुना पानी, 1 बूंद लाल खाने रंग, 1 बूंद हरा खाने का रंग.

खरबूजे की गिरी की टिकिया



पकाने में लगने वाला समय : 40 मिनट.

विधि : अरारोट, मैदा, सूजी को छान कर ½ छोटा चम्मच नमक तथा मोयन डाल कर गरम पानी से न अधिक कड़ा न अधिक नरम यानी बीच का गूंध लें. गूंधे मिश्रण से थोड़ा सा आटा ले कर उस के दो भाग कर लें व एकएक बूंद लाल व हरा रंग डाल कर रंगीन आटा तैयार करें व इस से लड़ियां बनाएं. गाजर व मूली को छील कर धो कर कद्दूकस कर लें तथा कसा उबला आलू, कटी धनिया, अदरक व हरी मिर्च मिला कर गरम तथा चिकने तवे पर 1 छोटा चम्मच तेल डाल कर करारा भून लें. जब मिश्रण अच्छी तरह सूख जाए तो उतार कर ठंडा कर लें. फिर नमक डाल कर पीठी तैयार करें. गूंधी हुई सामग्री की लोइयों में उचित मात्रा में भर कर अंडों का आकार दे कर किसी दूसरे रंग की लड़ी चिपकाएं. फिर तेल गरम कर के धीमीधीमी आंच पर करारा तलें. वेजीटेबल बम तैयार हो जाएंगे.

डबलरोटी के बिजली बम

सामग्री : 1 कटोरी बेसन, 1 कटोरी मैदा, 4 स्लाइस ब्रेड के, 1 छोटा चम्मच नमक, ½ छोटा चम्मच गरममसाला पाउडर, ¼ छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, सरसों भर हींग, 1 छोटा चम्मच सरसों का तेल, ½ कटोरी ताजा दही, 3 बड़े

अरारोट के वेजीटेबल बम



चम्मच मोयन का घी, पर्याप्त मात्रा में तलने के लिए घी.

पकाने में लगने वाला समय : 35 मिनट.

विधि : बेसन और मैदे को अच्छी तरह छान कर उस में ½ छोटा चम्मच नमक डाल कर मोयन मिला कर दही से नरम गूंध लें. डबलरोटी के 4 टुकड़ों को पानी में डुबो कर तुरंत निकाल कर कस कर निचोड़ें और खूब अच्छी तरह हाथों से मथ लें तथा नमक, मिर्च, गरममसाला मिला कर गरम सरसों के तेल में हींग डाल कर करारा भून कर पीठी बनाएं. बेसन मिश्रण से लंबी सांखें बेल कर बीच में ब्रेड पीठी भर कर रोल कर के धीमी आंच पर तलें. डबलरोटी के बिजली बम तैयार हैं. —सर्वेश मिश्र

सुनहरी चमचम

सामग्री : 100 ग्राम चना दाल, 12 ग्राम खोया, 4 बड़े चम्मच मैदा, ¼ छोटा चम्मच छोटी इलायची का पाउडर, छोटा चम्मच बारीक कुतरे हुए बादाम, 1½ प्याला चीनी, 1½ प्याला पानी, 2 छोटे चम्मच दूध, तलने के लिए पर्याप्त मात्रा में तेल.

सजाने हेतु सामग्री : 2 चांदी के वरक.

बनाने में लगने वाला समय : 3 मिनट.

विधि : चना दाल को धो कर 4 घंटे के लिए भिगो दें. पतीले या प्रेशर कुकर में

डबलरोटी के बिजली बम



गलने तक पकाएं. छलनी में डाल कर पानी निकाल दें और बची दाल को पीस कर बारीक पीठी बना लें. खोए को कद्दूकस कर के हथेलियों से मसलें. दाल पीठी, मैदा और खोए को अच्छी प्रकार मिला लें और इस में छोटी इलायची का पाउडर भी मिला कर मिश्रण को थोड़ी देर के लिए रख दें.

चीनी में पानी डाल कर एकतार की चाशनी तैयार करें. 2 चम्मच दूध डाल कर चाशनी का मैल उतार लें.

मिश्रण की छोटीछोटी गोलियां बना कर बीच में गड्ढा कर के कुतरा बादाम डालें. हथेली पर चपटा कर के अंडाकार चमचम बनाएं. घी या तेल को अच्छी तरह गरम कर के थोड़ा ठंडा करें. मध्यम आंच पर चमचम को हलका भूरा होने तक तलें और तैयार की हुई चाशनी में डाल दें. चाशनी पी जाने के बाद बाहर निकाल लें और चांदी के वरक से सजा दें.

रंगबिरंगी चकरियां

सामग्री : 400 ग्राम मैदा, 70 ग्राम तेल, 2 बड़े चम्मच दही, 1 छोटा चम्मच नमक, ¼ छोटा चम्मच अजवायन, चुटकीभर सोडा बाईकार्ब, 2-2 बूंद हरा व लाल रंग.

भरने के लिए सामग्री : 250 ग्राम पनीर, 1/3 छोटा चम्मच नमक, ¼ छोटा चम्मच गरममसाला, 3 क्यूब प्रोसेस्ड चीज, तलने के लिए पर्याप्त मात्रा में तेल.

सुनहरी चमचम



पकाने में लगने वाला समय : 45 मिनट.

विधि : मैदा, नमक और सोडा बाईकार्ब को मिला कर छानें. अजवायन और मोयन के तेल को अच्छी प्रकार मिलाएं. अब दही मिलाएं. थोड़ाथोड़ा पानी डाल कर मैदे को सख्त गूंधें. इस के 3 भाग करें. एक भाग में हरा रंग मिलाएं, दूसरे भाग में लाल रंग मिलाएं तथा तीसरा भाग सफेद ही रहने दें.

पनीर को मसल कर उस में नमक, गरममसाला मिलाएं व उस की छोटीछोटी गोलियां बनाएं. प्रोसेस्ट चीज को भी कद्दूकस कर लें.

मैदे की छोटीछोटी पेड़ियां बना कर पतली पूरियां बेलें. एक पूरी लें उस पर पनीर की गोली बीचोबीच रखें. चारों ओर प्रोसेस्ड चीज बुरकें. चारों ओर पानी लगाएं. ऊपर दूसरी पूरी रख कर अच्छी प्रकार चिपका दें. चारों ओर कांटे से अच्छी प्रकार गोदें और किसी गोल सांचे या ढक्कन से गोलगोल काटें. इसी प्रकार सारी चकरियां तैयार करें. अब एक कड़ाही में तेल अच्छी प्रकार गरम करें. थोड़ा ठंडा कर के मध्यम आंच पर हलका बादामी होने तक इन चकरियों को तलें. —कृष्णा वर्मा

मिक्स मसाला बम

सामग्री : 2 प्याले मैदा, 4 बड़े चम्मच तेल मोयन के लिए, ½ प्याला बारीक कटे

रंगबिरंगी चकरियां



शरूम, ½ प्याला बारीक कटा पनीर, ¼ ाला बारीक कटा प्याज, ¼ प्याला रीक कटा टमाटर, ¼ प्याला बारीक टी भुनी मूंगफली, 1 छोटा चम्मच नमक, छोटा चम्मच पिसी लाल मिर्च, 1 छोटा म्मच कालामसाला, 2 बड़े चम्मच कसा ाज, तलने के लिए पर्याप्त मात्रा में तेल, 1 ड़ा चम्मच बारीक कटी हरी धनिया, 1 ड़ा चम्मच बारीक कटी हरी मिर्चें.

विधि : मैदा छान लें व उस में कसा ाज, ¼ छोटा चम्मच नमक व मोयन का न डाल कर हाथों से मसल लें. थोड़े पानी साथ गूंध लें. कुल तेल से 1½ बड़ा म्मच तेल ले कर गरम करें व उस में कटे ाज डाल कर तल कर नरम करें. मशरूम व टमाटर के टुकड़े डाल कर प्याज के साथ भूनें. जब मशरूम लगभग गल जाएं तो पनीर, लाल मिर्च, नमक डाल कर मिला कर भून कर आंच से उतार लें. थोड़ा ठंडा कर के कालामसाला, कटी हरी मिर्चें व कटी हरी धनिया, कुटी मूंगफली डाल कर 'बारूद' (भरावन) तैयार करें.

अब बम बनाने के लिए गूंधे आटे से लोइयां तोड़ें व पतलीपतली, गोलगोल छोटी पूरियां बेल लें. थोड़ाथोड़ा भरावन बीच में रखें व सारे किनारे इकट्ठे कर के ऊपर नोंक बना दें.

जब सारे बम तैयार हो जाएं तब तेल गरम कर के हलकी आंच पर करारेकरारे तल लें.

—सुधा माथुर ●

मिक्स मसाला बम





कहानी • गौरी वर्मा

"आंटी, जल्दी आइए, सुधा आत्महत्या करने जा रही है. बदन पर मिट्टी का तेल डाल चुकी है. सामने का दरवाजा बंद कर लिया है, मेरी बात सुन नहीं रही. आप जल्दी आइए."

यह मैं क्या सुन रही हूं? कुछ दिन पहले ही तो यह नया जोड़ा मेरे पड़ोस में आया था. कितने खुश थे वे लोग? छोटेमोटे काम पड़ने पर या नई गृहस्थी की अनुभवहीनता की समस्या के समाधान के लिए वे लोग प्रायः मेरे यहां आ जाते थे, जबकि घरघर घूमना सुधा पसंद नहीं करती थी. खाली समय में सिलाईकढ़ाई करती या किसी पत्रिका में मन लगा लेती

विश्वास

इलाहाबाद से बदली हो कर उस के पति नरेश यहां आए थे.

मैं दौड़ कर गई. सामने का दरवाजा तो बंद था पर एक खिड़की खुली थी जिसे बंद करना शायद वह भूल गई थी.

"सुधा, दरवाजा खोलो."

"नहीं आंटी, मुझे मरने दीजिए, मैं दरवाजा नहीं खोलूंगी."

"पागलपन मत करो, दरवाजा खोलो वरना किवाड़ तोड़ने के लिए मजबूर हो जाएंगे हम लोग," घबराहट के मारे थरथर कांपते हुए मैं ने कहा.

तब तक मकान मालिक भी आ पहुंचे थे. उन के घर का दरवाजा टूटे, यह उन्हें भी पसंद नहीं था इसलिए वह भी जोरजोर से दरवाजा पीटने लगे, "सुनिए सुधाजी, दरवाजा खोलिए, क्या बचपना कर रही हैं?"

पर सुधा निर्विकार, थक कर बैठ गई थी स्कूटर पर, जो सामने वाले कमरे में ही रखा था. क्या किया जाए, समझ में नहीं आ रहा था. मैं ने सोचा, जो काम डांट से नहीं हो रहा, शायद प्यार से हो जाए.

"बेटी, दरवाजा खोलो, मैं तो तुम्हारी मां जैसी हूं, मेरी बात नहीं मानोगी?"

'मां' शब्द सुनते ही सुधा पिघल गई. उस का गम आंसू बन कर झरझर बहने लगा.

धीरे से मैं बोली, "बेटी, अंदर नहीं आने दोगी?"

"सिर्फ आप रहिए, बाकी सब को जाने दीजिए तभी मैं दरवाजा खोलूंगी."

मैं ने सभी लोगों को संकेत से परे किया. दरवाजा खोलते ही सुधा छोटी बच्ची की तरह मुझ से लिपट कर रोने लगी. सलवारकमीज मिट्टी के तेल से सनी हुई थी. आंसुओं का वेग जब थोड़ा कम हुआ तो मैं बोली, "चलो, कपड़े बदल लो, मैं तुम्हारे लिए तब तक थोड़ा गरम दूध ले आती हूं."

जब वह कुछ



शांत हुई तो मैं ने पूछा, "क्या हुआ था सुधा? ऐसा भयानक कदम क्यों उठा रही थी?"

"मेरे पति मुझ पर शक करते हैं. वह मुझे चरित्रहीन कहते हैं. आप की नजर में भी मैं यही हूं क्या?"

"नहीं बेटी, ऐसी बात नहीं है," मैं बोली, "पर सुधा, ऐसा आरोप लगाने का कोई आधार तो होगा?"

"आधार?" सुधा ने कहा, "अगर आधार ही होता तो दुख किस बात का था? जो मैं नहीं हूं, वह आरोप क्यों लगाया गया? मैं अपनी चरित्रहीनता का झूठा आरोप नहीं सह सकती, आंटी."

फिर वह फफकफफक कर रोने लगी.

"आखिर बात क्या है? साफसाफ बताओ सुधा. देखूं, मैं कुछ मदद कर सकती हूं कि नहीं?"

का काम ही कितना है? थोड़ी देर बै तो,' कह उठता तो मन मसोस कर जाती.

"एक दिन मैं इन को बो 'सुनिएजी, आप जब घर पर न रहें तो को आने के लिए मना कर दीजिए.'"

"'क्यों? तुम मना नहीं कर सव हो? तुम्हें भी अच्छा लगता होगा.'

"मैं तो कितनी बार अपने व्यवहा समझा चुकी हूं कि वह यहां न आए, पर समझ कर भी शायद समझना नहीं चाह एक बार आप ही उसे कस कर डांट दी न?' उन की आंखों में मैं सहारा खोज रही.

"'मैं उसे कैसे डांट सकता हूं? मि मंडली में मेरी हंसी उड़ाना चाहती सभी यही कहेंगे कि अपनी बीवी को

सुधा और नरेश को अपनी गृहस्थी बसाए अभी कुछ ही समय हुआ था कि उन्हें परेशानियों ने आ घेरा. इस का परिणाम यह हुआ कि दोनों में मनमुटाव होने लगा. हालात इतने बदतर हो गए कि सुधा को अपनी जीवनलीला समाप्त करना ही उचित लगा. क्या इस त्रासद स्थिति से दोनों उबर पाए?

"आंटी, जब शुरूशुरू में हम लोग यहां पर आए तो अकसर इन के साथी हमारे यहां आ जाते थे. कुछ तो शादीशुदा थे, लेकिन 2-4 कुंआरे भी थे. हम लोगों को भी अच्छा लगता था क्योंकि नए होने के कारण हम लोग भी अपना परिचय बढ़ाना चाहते थे. इन के साथी तभी आते थे, जब 'ये' घर पर रहते.

"पर इन का एक साथी, पता नहीं क्यों मुझे अच्छा नहीं लगता, वह जबतब पहुंच जाता है. ये घर पर रहें या न रहें, इस की परवाह किए बिना ही वह आ धमकता है. अच्छा न लगते हुए भी बैठाना पड़ता है.

"'भाभीजी, चाय नहीं पिलाइएगा?' उस के ऐसा कहने पर मन न होते हुए भी चाय बनानी पड़ती. कामकाज का बहाना बना कर उठने पर 'अरे भाभीजी, दो आदमी

किसी से मिलने देना नहीं चाहता. दकियानूस हूं. पर सच तो यह है कि मैं नहीं चाहता कि वह मेरी गैरहाजिरी में यहां आए. अब तुम जानो.'

"यह कैसी विडंबना थी, यह आप कैसे समझाऊं आंटी? एक औरत हो औरत की यह लाचारी आप ही स सकती हैं.

"इस समस्या से छुटकारा पाने क उपाय सोचती रही. कुछ दिन बाद वह आया. इस अप्रिय अध्याय को खत्म क की मैं पहले से ही सोच चुकी थी. अ स्वर काफी संयत कर मैं बोली, 'देखि नहीं चाहते कि इन की गैरहाजिरी में यहां आएं.'

"पर जानती हैं आंटी, वह बोला?



Protex
2 Whole Family



''क्यों? तुम मना नहीं कर सकती हो? तुम्हें भी अच्छा लगता होगा,'' नरेश सुधा से बोला

"'नरेश ने तो कभी मना नहीं किया और भाभीजी आप... वह नहीं चाहता है तो क्या? आप तो चाहती हैं न?'

"'नरेश आप को मना नहीं करते पर मैं कहती हूं कि आप निकल जाइए यहां से, इसी वक्त. फिर कभी यहां आने की हिम्मत न कीजिएगा.'

"'इतना गुस्सा क्यों कर रही हैं भाभीजी? मैं तो सिर्फ आप के पास आता हूं और तो कुछ नहीं चाहता?' और अचानक उठ कर उस ने मेरा हाथ पकड़ लिया.

''तभी अचानक नरेश आ गए. इस नाटक का आज अंत हो जाए, शायद इसीलिए नरेश को आते देख वह तो चला गया. आज भी नरेश ने उसे कुछ नहीं कहा, पर बरस पड़े मुझ पर. नारी चरित्र को अपमानित करने के लिए जिनजिन शब्दों का प्रयोग किया जा सकता था, नरेश ने सब किया.

''मैं कितना ही समझाने की कोशि करती रही कि आज जो तुम ने देखा है सच नहीं है, आज तो मैं आखिरी बा धक्का दे कर निकालने वाली थी. जो स तुम नहीं कर पा रहे थे, वह आज मैं जा रही थी. पर सब बेकार.

''उस ने कहा, 'तुम को उस के मिलनाजुलना अच्छा लगता है इसलि ने कभी उसे मना नहीं किया.'

''मैं क्या कहती? तुम तो पुरुष ह भी कापुरुष हो. मेरे चरित्र की रक्षा का उत्तरदायित्व सिर्फ क्या मेरा ही फेरों के समय तो वचन दिया था, तु हर हाल में रक्षा करोगे.

''और अब? एक पुरुष ने मुझे चाहा और एक पुरुष जो कि मेरा प अविश्वास और लांछन के आघात से मुझे घायल कर दिया. मैं क्या करूं


शालीमार
शालीमार
नारियल तेल
एक परम्परा — एक नाम !
Shalimar's
COCONUT
OIL
शालीमार केमिकल वर्क्स लिमिटेड कलकत्ता 700 027

दिशाहीन हो कर ही मैं ने आज यह कदम उठाया था."

"इतनी विह्वल मत होओ सुधा. अभी तुम दोनों ही बहुत नासमझ हो. देखती हूं, नरेश से बात कर के."

तब तक नरेश भी आ गया था. पास बुला कर मैं ने पूछा, "क्यों नरेश, यह सब क्या सुन रही हूं?"

"क्यों? मेरा क्या दोष है आंटी? मैं क्या कर सकता हूं?"

"करने को तो तुम बहुत कुछ कर सकते हो. अपने घर की शांति कायम रखने के लिए तुम अपने साथी को यहां आने से मना कर सकते थे. उस के बाद भी अगर वह आता तो तुम अपने बाकी साथियों का सहारा ले कर उस पर रोक लगा सकते थे. इस से तुम दकियानूस नहीं कहलाते.

"सब से बड़ी बात है, पतिपत्नी के बीच विश्वास की, जिस की ताकत से तुम लोग दुनिया में कुछ भी कर सकते हो. क्या तुम ने अपने मन को टटोल कर देखा है? तुम्हारे भीतर भी भारतीय संस्कार छिपा हुआ है. एक तरफ तुम चाहते थे, तुम्हा पत्नी और मर्द के साथ ज्यादा मेलजोल बढ़ाए, वहीं दूसरी तरफ अपने 'आधुनिक' साबित करने के फेर में अ घर को ही जला रहे थे. दो नावों में पैर रख का यही परिणाम होता है.

"सब से पहले तुम्हारे घर की शां है नरेश, वह तुम दकियानूस कहला क कायम रखो या आधुनिक बन क अभीअभी तो तुम लोगों का घोंसला बन शुरू हुआ है. अपनीअपनी नासमझी कारण आज वह घोंसला बिखरतेबिखर बच गया. आशा करती हूं, अपनी आंटी बातों का बुरा नहीं मनोगे. भविष्य के लि एक बात गांठ बांध लो, अपने घर सुखशांति के लिए किसी से समझौता न करना चाहिए, चाहे वह तुम्हारा अपना या पराया."

2-4 दिन बाद ही सुधा अपने माय चली गई. यहां वे लोग काफी चर्चा विषय बन गए थे. थोड़े दिनों के बाद नरे ने भी अपनी बदली यहां से दूसरे शहर करा ली.



जब घर आएं मेहमान

लेख • विनोदिनी गोयनका

जब पिछले वर्ष हम कानपुर एक विवाह में बराती बन कर गए तो ां अपने पुराने मित्र के घर भी थोड़ा सा य निकाल कर मिलने चले गए. घंटी ाने पर नौकर ने दरवाजा खोला और बैठने को कहा. जब गृहस्वामी तथा उन की पत्नी के विषय में पूछा तो नौकर ने कहा, "साहब तो दफ्तर गए हैं, मेम साहब अभी आ रही हैं."

जब काफी देर हो गई तो फिर नौकर से पूछा. उस ने कहा, "मेम साहब अभी तैयार हो कर आ रही हैं न."

हमें जल्दी थी. जब करीब आधा घंटा हो गया और हम उकता कर जाने को

अचानक घर आए मेहमान को देख कर परेशान होने के बजाय आप अपने व्यवहार द्वारा उन्हें आत्मीयता प्रदान कर अपने आतिथ्य को सफल कर सकते हैं. इस के लिए केवल कुछ ही उपायों की आवश्यकता है. क्या आप इन्हें अपना कर अपने मेहमानों के आनंद को बढ़ाना नहीं चाहेंगे?

खड़े हो गए तब नखशिख शृंगार कर गृहस्वामिनी निकलीं और जेवरभरे हाथ नचा कर कहने लगीं, "अरे बहनजी, कहां जा रही हैं, बैठिए न. इतने दिनों बाद आई हैं तो चायनाश्ता तो करना ही पड़ेगा."

फिर उन्होंने नौकर को आवाजें लगाईं पर वह लापता था. उन का पारा चढ़ गया और जब वह आया तो हमारे सामने ही उसे उलटासीधा बकने लगीं.

यह सब देख कर ही हमारा तो सारा मूड बिगड़ गया. सोचा बेकार ही यहां आए. ऐसा कौन सा जरूरी मिलाप था.

उन्हें समझाया, "बहनजी, हम तो बरात में आए हैं. पहले ही खाखा कर परेशान हो रहे हैं. हम तो आप से मिलने आए थे पर अब क्षमा करें हमें जल्दी ही जाना होगा. बरात चढ़ने का समय हो रहा है." इतना कह कर उठ खड़े हुए.

जब घर में मेहमान आएं तो हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य है कि जैसे भी हैं दौड़ कर उन का स्वागत सम्मान करें. उन्हें प्रतीत हो कि वे विशिष्ट व्यक्ति हैं, उन के आने से हमें अत्यंत प्रसन्नता हुई है. मौसम तथा समय के अनुसार उन से गरम या ठंडा पेय, नाश्ता, भोजन का आग्रह करें.

आप क्या खिला रहे हैं यह महत्त्वपू
नहीं है परंतु आप कैसे प्यार से आग्रह क
खिला रहे हैं यह आवश्यक है. चाहे छप्प
भोग ही निरादर से प्रस्तुत करें, सब व्य
हैं. सीधासादा भोजन या नाश्ता जो घर
उपलब्ध हो उसे ही आग्रहपूर्वक प्रस्तुत क
तो अतिथि प्रसन्न हो जाएगा.

प्रायः देखा जाता है कि कोई
मेहमान घर आया कि उस के सम्मुख अप
पति की ही प्रशंसा आरंभ हो जाती
बच्चों को बुला कर बाल कविताएं व गा
सुनवाए जाते हैं या उन की स्कूल की रिपो
भी देखने को दी जाती है. इतना ही नहीं उ
के सामने अपने या किसी रिश्तेदार
विवाह का फोटो एलबम देखने को र
दिया जाता है तथा मेजबान गृहि
चायनाश्ता बनाने लंबे समय के लिए चौ
में घुस जाती है.

मेहमान इन सब से ऊब कर सोच
है, अच्छे फंसे आज तो. सारी खातिरदा
व्यर्थ हो जाती है. इसलिए उचित यही
कि मेहमान से उस के विषय में अधिक ब
करें तथा अपने और अपने परिवार के ब
में केवल पूछने पर ही बताएं.

हमारे मित्र हैं मेहरचंद. आपस
गरमागरम बहस करते वे पतिपत्नी हम
सम्मुख ही उलझ पड़ते. मेरी दशा स
छछूंदर की सी हो जाती, न तो बैठते
बनता है, न उठते ही.

हमारे एक पड़ोसी कन्हैयालाल हैं.
भी उन के घर मिलने जाती वे पतिप
एकदूसरे को लपेट कर बड़प्पन,
इत्यादि की डींग मारने लगते. एक दिन
ने कहा, "देखिए बहनजी, आप कि
सादगी से रहती हैं और देखसुन कर
चलाती हैं. कुछ मेरी पत्नी को
सिखलाइए न. यह इतनी खर्चीली है वि
महीने जब तक 10-20 हजार के ज
कपड़े नहीं खरीद लेती, चैन ही
पड़ता."

पत्नी ने उत्तर दिया, "ऊंह अ
लाखों रुपए कमाकमा कर ग



घर आए मेहमान को विशिष्ट व्यक्ति होने का भाव उन की बातों को महत्त्व दे कर भी दिया जा सकता है.

...सलिए मुझे देते हो. खर्च नहीं करूंगी तो ...ड़ जाएंगे नोट."

फिर उस ने मुझ पर तिरस्कार से ...ष्टि डाली और कहने लगी, "ऊंह, मुझ से ...सब उलटेसीधे जेवर नहीं पहने जाते, मैं ... नए से नए फैशन के कपड़े, जेवर पहनती ... मैं ने तो अपनी ऐसी नाइलान की साड़ियां ... दाईनौकरों में बांट दीं."

वह अच्छी तरह जानती थी कि हम ...करीपेशा लोग एक बंधी आय में ही खर्च ...र सकते हैं और उन की तरह धनिक ...पारी नहीं हैं.

मैं अपमानित हो वहां से यह कह कर ...नी आई कि हम जैसे हैं वैसे ही अच्छे हैं. ...ी हमारा अपना व्यक्तित्व है. हमें दूसरों ... पसंद से कोई मतलब नहीं.

कभी भी ऐसी बात मेहमान से मजाक ...भी नहीं करनी चाहिए जिस से उसे कष्ट ...चे और न ही अपनी प्रशंसा व उस की ...हीन करनी चाहिए. इस से मित्रता के ...ले दुश्मनी ही बढ़ती है.

एक दिन मेरी सहेली नीता ने मुझे ...य पीने बड़े आग्रह से बुलाया. उस दिन ...ी काम करने वाली आया नहीं आई तो 3 ...ल के अपने बेटे विकी को भी साथ ले गई, ... में छोड़ती किस पर.

जैसे ही मैं गाड़ी से उतर कर उन के ... में विकी का हाथ पकड़े घुसी, पहले तो लपक कर मेरा स्वागत किया परंतु विकी को देखते ही उस का चेहरा उतर गया. फिर कुछ रूखेपन से विकी को कहने लगी, "कुछ छूना नहीं, टूट जाएगा, बहुत कीमती सामान है. दौड़ना नहीं गिर जाएगा."

फिर मुझ से बोली, "देख विनीता, बच्चे तो बच्चे ही हैं, नासमझ होते हैं. देशविदेश से लाया हुआ कट ग्लास का इतना कीमती सामान है, टूटने से बहुत नुकसान हो जाएगा. मैं तो अपने बच्चों को भी कुछ छूने नहीं देती थी. तू तो जानती है मेरा तो यही घर सजाने का शौक है. बच्चे को ड्राइवर के साथ बाहर लान में खेलने को भेज दे. तब हम दोनों सहेलियां हिलमिल कर चाय पर बात भी कर सकेंगी."

उस के इस व्यवहार ने मुझे एकदम झकझोर दिया. मन में तो आया कि तुरंत ही उलटे पैरों लौट जाऊं. परंतु यह अनुचित लगता, इसीलिए विकी को ड्राइवर के पास भेज कर बेमन से उस की सजीसजाई बैठक में बैठी, पर डर लगता रहा कहीं उस का कालीन गंदा न हो जाए.

चांदी के बरतनों में उन के वरदी पहने बैरे ने चायनाश्ता पेश किया पर मुझे तो

सब बेस्वाद मिट्टी समान लग रहा था. जल्दीजल्दी किसी तरह समाप्त कर उठ खड़ी हुई और आवश्यक काम का बहाना बना कर लौट आई.

रास्तेभर सोचती रही, इतनी सजावट का क्या लाभ जिस से मेहमान का अपमान हो. मैं ने मन ही मन प्रण किया कि घर में कभी भी ऐसी सजावट नहीं करूंगी जिस से मेहमान का स्वागत नहीं उस का अपमान हो जाए.



जब घर में कोई मेहमान आए तो उसे अपनापन लगना चाहिए. उसे स्वतंत्रता तथा सुख प्राप्त हो तभी आतिथ्य सफल होता है.

एक दिन अचानक दिल्ली जाना पड़ा. वहां मेरे चचेरे भाईभाभी रहते थे. जब उन के घर टैक्सी से उतरी तो साथ में सामान देखते ही भाभीजी का मुंह उतर गया. कहने लगीं, "दीदी, अचानक कैसे आ गईं. न कोई समाचार, न कोई फोन. आज तो हमारा मित्रों के साथ पिकनिक का कार्यक्रम है."

उन का उतरा चेहरा तथा बहाना सुन कर मैं ने चुपचाप टैक्सी में दोबारा साम[ान] रख उन से कहा, "मैं तो एक सेमिनार [में] आई हूं. उन्होंने ही ठहरने की व्यवस्था [की] है. मैं ने सोचा था कि रविवार है, अप[ने] भाईभाभी के साथ कुछ समय व्यतीत क[र] वहां चली जाऊंगी. आप लोग पिकनि[क] अवश्य जाएं. मुझे तो अभी अपना भाष[ण] भी तैयार करना है. आप मेरी एकदम चि[न्ता] न करें."

उन के रोकने पर भी मैं नहीं रुक[ी] और जा कर एक होटल में टिक गई.

व्यंजनों की अधिकता से नहीं वरन प्रेम से आग्रह कर खिलाने में ही अपनापन झलकता है.

अतिथि का तो अर्थ ही होता है [जिस] के आने की कोई तिथि नहीं होती. इस[लिए] अचानक आए अतिथि को देख कर परेशान क्यों?

यदि अपने कार्यक्रम में उन्हें शामिल कर लें तो दोनों को ही वि[शेष] आनंद प्राप्त होगा या उस में कुछ त्या[ग या] परिवर्तन भी करना पड़े तो घर [आए] अतिथि का अनादर नहीं होगा.

घर को साफ और सुव्यवस्थित रखें



लेख • सरला अग्रवाल

जब मुकेश ने दफ्तर से आ कर बताया कि रजनी और दीपक 5 नंबर वाले न में आ गए हैं तो मैं हैरान रह गई. उन से सुरुचि संपन्न लोग भला इतने गंदे न में रहने की बात कैसे सोच सकते हैं.

"कब बदला मकान?"

"कई दिन हो गए अब तो, मुझे तो ही दफ्तर में पता चला. चलती हो, आएं?"

जब हम लोग रजनी के घर गए तो च ही हैरान रह गए. यह तो लगता ही न था कि यह वही मकान है जिस में कुछ दिन पूर्व लाल दंपती रहते थे. सारा घर एकदम नया सा लग रहा था. खिड़कियां, दरवाजे आदि एकदम साफसुथरे, मानो उन्हें नया ही बनवाया हो. मैं ने उल्लसित हो कर कहा, "भई, मान गए रजनी तुझे. एक गंदे मकान को इतना सुंदर रूप दे दिया तू ने."

"मेहनत सफल हो गई मेरी तो, तेरे मुख से अपनी इतनी प्रशंसा सुन कर. पर मेहनत तो काफी पड़ी है इस को ठीकठाक रहने लायक बनाने में. भई, क्या करें. आजकल आसानी से मकान मिलते ही कहां

तरीके से सजा साफसुथरा घर आप की जीवन-शैली को दर्शाता है. खराब से खराब मकान को भी साफ रख कर उसे कलात्मक बनाया जा सकता है. इसे करने के लिए केवल कुछ उपायों की ही आवश्यकता होती है. क्या आप इन्हें नहीं अपनाना चाहेंगी?

हैं? बड़ी मुशकिल से यह मकान हाथ आया तो दीपक कहने लगे कि अब रहने भी दो, कहांकहां की सिफारिशें लगा कर तो यह मकान किराए पर मिला है, इसी को मन मुताबिक ठीक कर लेना."

"भई, मैं तो एक बार ही आई थी सुनीता लाल के घर. उस दिन किटी पार्टी उस के घर ही पर थी. इतना गंदा घर देख कर हैरान ही रह गए थे हम सब लोग. वैसे तो सभी आधुनिका और सफाई पसंद बनती हैं. फैशन में तो सभी के कान काटती हैं. बातें ऊंचीऊंची करती हैं. लेकिन लगता है कि घर में कभी न झाड़ू लगवाती होगी और न ही जाले उतरवाती होगी. पता नहीं, सारे दिन क्या करती रहती हैं वह आलसी टट्टू. नाश्ते में ध्यान है उस ने क्या खिलाया था?"

फिर उस दिन की बातें याद कर के दोनों खूब हंसी.

घर की साफसफाई करते समय दरवाजों के हत्थों पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है. ▶

मैं घूमघूम कर रजनी के साथ उस पूरे घर का निरीक्षण करने लगी. पूरा सुव्यवस्थित था. प्रत्येक वस्तु अपने स्थ पर रखी थी, जहां उसे होना चाहिए गेरू से पुते गमलों में हरेभरे सुंदरसुंदर पौ लगे थे. मनीप्लांट की बेलें दीवारों लटक रही थीं.

"अरे रजनी, कमाल कर दिया तो, यह घर तो बहुत गंदा था."

"भई, क्या बताऊं, तेजाब का कम है, उसी से हम ने जगहजगह जमी गंद को छुड़ाया. तब लोहे के ब्रुश से सफ कराई. 2 दिन तक बेलदार लगा कर फर्श, छतों, खिड़कियों, दरवाजों, जालि आदि को लोहे के ब्रुश और रेगमार से स करवाया तब उन्हें पेंट करवाया. दरव खिड़कियों के शीशे, वाशबेसन, सि टाइल्स सभी चिकटे पड़े थे. वे तो हम द ने ही लग कर साफ किए. बाहर की पोर भी कारस्कूटरों का मोबिलआयल



ड़ा था." वह फिक से हंस पड़ी.

"वाकई कमाल कर दिया. फर्श तो ब चमक रहे हैं अब."

"जगहजगह चिकनाइयों आदि के ने थक्के जमा थे कि डिटर्जेंट तथा विम रगड़रगड़ कर साफ करवाए, तब जा र साफ हुए हैं. फर्श की दीवारों के साथ किनारियां तो एकदम ही काली हो रही



पानी में डिटर्जेंट के प्रयोग द्वारा फर्श कदार बनाया जा सकता है.

अब भी सप्ताह में एक बार गरम पानी टर्जेंट डाल कर पौंछा लगवाती रहूंगी. हमेशा साफ बने रहेंगे. लगता है कि नों से वे लोग बिना पौंछा लगवाए ही रहे थे."

वास्तव में अधिकांश महिलाएं घर खरेख पर उतना समय नहीं लगातीं ना उन्हें लगाना चाहिए. केवल ऊपरी ाम की और बस काम समाप्त हो पति के दफ्तर व बच्चों के स्कूल जाते नौकरानी से झाड़ूपौंछा लगवाया, ब्जी बनाई और सजधज कर जा कहीं अड़ोसपड़ोस में बतियाने या फिर काफी पार्टियों, मीटिंगों, किटीपार्टियों में. पार्टटाइम नौकरानियां तो मालूम ही है कैसा काम करती हैं.

यदि गृहिणी नित्यप्रति कम से कम 2-3 घंटे भी घर की देखरेख में लगाए तो उस का घर हमेशा ही सुंदर दिखाई दे सकता है तथा कई अचानक आ पड़ने वाली परेशानियों से भी बचा जा सकता है.

नीचे से घर का फर्नीचर व्यवस्थित होने पर भी यदि दीवारों पर व छतों में जगहजगह जाले लटके रहें, मकड़ियां घूमती दिखाई दें, फर्नीचर पर धूल जमी हो तथा बरसों के इस्तेमाल के कारण जगह-जगह कालेपन के धब्बे बन गए हों, उस के ऊपर चढ़ा कपड़ा फटने लगा हो, स्प्रिंग दब गई हों, या डनलप की गद्दियां मैल से चीकटी पड़ी हों, घर के दरवाजेखिड़कियों के हत्थों तथा स्विच बोर्ड के स्विचों पर हाथों के काले निशान पड़े हों तो क्या वह घर किसी को सुंदर दिखाई दे सकता है?

सदैव घर में रहने वालों का भले ही इन बातों पर ध्यान न जाए किंतु बाहर से आने वालों की नजरों में ये बातें खटकती हैं. रोशनदानों में भरी धूल, इग्जोस्ट फैन पर जमी रसोई की चीकट, छत के पंखों की पंखड़ियों पर छाई कालीकाली गंदगी, घर में लगे झाड़फानूस व लैंप शेड्स तथा बल्ब व ट्यूब चाहे कितने ही सुंदर क्यों न हों, जब तक उन्हें समयसमय पर साफ न किया जाए वे कभी सुंदर व कलात्मक नहीं लग सकते.

गृहिणी की जिम्मेदारी है कि वह पति या अन्य मददगारों के सहयोग से इन सब वस्तुओं की सफाई व देखरेख का भलीभांति ध्यान रखे, अपने समय में से कुछ समय घर की उचित व वांछित देखभाल में लगाए.



पीतल की वस्तुओं की सफा
इमली का पानी भी उपयु
रहता है.

अक्सर देखा गया है कि घरों के लिए सुंदर सजावटी सामान जिस चाव के साथ खरीदा जाता है, उसी शौक के साथ उस की देखभाल नहीं की जाती. फलतः वे कुछ समय पश्चात अपनी चमक खो कर एकदम ही काले, बदरंग व भद्दे दिखाई देने लगते हैं. यदि आप ने पीतल व कांच के सजावटी सामान जैसे मोमबत्ती स्टैंड, मूर्तियां, पीतल की गोल या चौकोर पटियां आदि सजा रखे हैं तो उन्हें महीने में कम से कम एक बार तो अवश्य ही साफ करें. पीतल की वस्तुओं में इमली का घोल लगा कर कुछ देर रख देने से व फिर विम आदि से रगड़ कर धोने व धूप में रख देने से उन में एकदम चमक आ जाती है. पीतल की पालिश से भी उन्हें चमकाया जा सकता है.

दरवाजों, खिड़कियों व अलमारियों के हत्थे पीतल व एल्यूमीनियम के हों तो उन्हें भी महीने में एक बार अवश्य चमकाएं. फर्नीचर अधिक न रखें, पर जो भी रखें सुंदर, कलात्मक, सुरुचिपूर्ण एवं साफसुथरा रखें.

गद्दियों के कवर, कुशनकवर, सोफाकवर,परदे आदि सब समयसमय पर धुलवा कर प्रेस करवाती रहें. यह नहीं कि

एक बार लगा दिए तो
गई महीनोंबरसों की धु
दीवारों पर लगी पीतल
पटिया व सुंदर कलात
पेंटिंगों को समयसमय
साफ करती रहें या
उतार कर नई वस्तु लगा

कई घरों में देखा
है कि जैसी साजसज्जा
बार कर दी जाती है
कईकई वर्ष के पश्चात
जाने पर भी सब वस्तुएं
की तहां, त्यों की त्यों ही
जाती हैं. यह रुख ठीक नहीं है. समयस
पर साजसज्जा में बदलाव लाने से ही घ
नवीनता आती है जो गृहिणी की परिष
रुचि की परिचायक है.

बैठक में, जीने के चौकोरों में,जी
नीचे, आंगन व अन्य रिक्त स्थानों पर
या दो गमले सुंदर पौधों के रखे जा सक
क्राटन, बाटलपाम, रबर प्लांट, मनी प
आदि अंदर लगाने वाले कई पौधे आ
पौधों के गमले पीतल, अच्छी चीनी मि
खरीदे जा सकते हैं. वैसे सादा मिट्
गमले भी अच्छे रहते हैं पर उन्हें गेरु
स्नोसम से पेंट कर लें. चाहें तो
कलात्मक कपड़े का कवर उन के चारों
सिल लें अथवा उन्हें बेंत की पुरानी टो
में रख दें, बहुत सुंदर लगेंगे.

शयनकक्ष में बिछे पलंगों के सि
व पायताने तथा साइड टेबल की रो
सफाई करें. सनमाइका लगी हो तो
पुराने मोजे में साबुन लगा कर साफ
तुरंत चमक उठेंगे.

अलमारियों में गैमेक्सीन डाल
भूरे कागज बिछाएं और तह बना कर
रखें. रोज के धुले हुए कपड़े रखने के
अलग स्थान बनाएं ताकि आनेजाने

ाने वाले कपड़ों की तहें खराब न हों. ोबी को इस्तिरी के लिए दिए जाने वाले पड़ों के लिए एक अलग बड़ा थैला बना ें. धुले हुए कपड़े सूखने के पश्चात, तह नाते समय इस्तिरी के लिए छांट कर ाथोंहाथ कापी में लिख कर उस थैले में र कर रख दें. जब भी इस्तिरी वाला आए ो आप के व्यस्त होने पर या घर से बाहर ोने पर घर का कोई भी सदस्य वह पोटली ठा कर उसे पकड़ा सकता है.

सब के रोज के धुले कपड़ों के स्थान नश्चित कर दें और नित्य वहीं रखें, ताकि र के बड़े, छोटे और स्वयं आप भी बिना कसी परेशानी के वहां से जल्दी में भी कपड़े नकाल सकें. रोज सुबह के समय कपड़ों के लए महाभारत न हो.

जूतों, चप्पलों व मोजों के लिए भी थान निश्चित रखें.

चाबियों के गुच्छे को ले कर घरों में क्सर खोजबीन होती रहती है. आप ाबियां टांगने के लिए दीवार पर चाबी टैंड लगा लें. घर की, मोपेड, साइकिल, कूटर, बिजलीपानी के मीटरों की तथा अन्य सभी चाबियां वहीं पर टांगें. इस से घर के सभी लोगों को सुविधा रहेगी.

दीवार घड़ी कई हैं तो उन्हें हर कमरे में लगा दें. यदि एक ही है तो ऐसी जगह पर लगाएं जिस से सभी लोगों को समय देखने में आसानी हो. विशेषतौर पर गृहिणी को समय देखने में आसानी हो. वह खाना बनाते समय दिखाई देती रहे, ताकि नाश्ता और खाना समय पर तैयार किया जा सके.

सब से बड़ी बात घर की देखरेख में यह आती है कि घर की हर वस्तु के लिए एक नियत स्थान बना देना परम आवश्यक है और हर बार प्रयोग में लाए जाने के पश्चात वह वस्तु वापस अपने स्थान पर रखी जानी चाहिए ताकि अगली बार प्रयोग के समय घर के सभी लोगों को वांछित वस्तु अपने नियत स्थान पर उपलब्ध हो सके, जैसे मोमबत्ती, माचिस, टार्च अंधेरा होने पर समय पर मिल सकें. चाकू छुरी, कैंची आदि सब्जी, फल या कपड़ा काटने के समय तुरंत मिल सकें. पेचकस, प्लास, फ्यूजवायर आदि बिजली जाने पर तुरंत उपलब्ध हो जाएं.

रसोईघर की देखरेख पर गृहिणी को सब से अधिक समय देना चाहिए. अधिकांश महिलाएं खाना अच्छा बनाने

शल गृहिणी की 'संज्ञा' सुव्यवस्थित रसोई रा प्राप्त की जा सकती है.





पर तो ध्यान देतीं हैं किंतु दालें, आटा, मसाले, चीनी, चाय, पापड़ आदि कच्ची खाद्य सामग्री रखने के डब्बों पर उतना ध्यान नहीं देतीं. कुछ नई आधुनिका एवं धनसंपन्न महिलाओं की बात यदि छोड़ दी जाए तो कुछ घरों में तो यह हाल है कि बाजार से सामान लाने के पश्चात यों ही लिफाफों व पोलीपैक्स की थैलियों में पड़ेपड़े ही काम में लाया जाता है. समाप्त होने पर फिर इसी तरह का क्रम चलता रहता है. कुछ पुराने घरों में बाबा आदम के जमाने से जो अलगअलग तरह के रंगबिरंगे, जंग खाए छोटेबड़े डब्बे चले आ रहे हैं तो बस चले आ रहे हैं, पुश्तैनी संपत्ति की भांति. उन्हीं में फिर सामान भर दिए जाते हैं.

कुशल गृहिणी को चाहिए कि वह समय के साथ घर के रखरखाव में बदलाव लाए और रसोई की सफाई व साजसज्जा पर भी पूरा ध्यान दे. एक ही तरह के स्टील, पर्लपैट, प्लास्टिक या कांच की एक जैसी आवश्यकतानुसार बरनियां ला कर, वस्तुओं के नाम की पट्टियां लगा कर दाल, मसाले आदि व्यवस्थित ढंग से रखें. यदि किन्हीं कारणों से ऐसा नहीं हो सके तो दूध, घी, तेल आदि वस्तुओं के एक ही आकार के खाली डब्बों को एक जैसे पेंट से

नियमित रूप से की गई सफाई आप को [कई] परेशानियों से मुक्ति दिलाने में भी सहा[यक] सिद्ध होती है.

रंग कर सफाई से नाम पट्टी लगा [कर] अलमारी में सजाएं. हर बार महीने [का] सामान भरने से पूर्व डब्बों को धो कर [या] गीले कपड़े से पौंछ कर साफ भी करें.

खाद्य सामग्री को समयसमय पर ध[ूप] में रखें. रसोई व टायलेट तथा गुसलखाने [में] मनीप्लांट या अन्य पौधे अवश्य लगा[एं]. इन्हें अपनी कलात्मकता से अछूता न छो[ड़ें]. रसोई का सिंक रोज ही महरी से सा[फ] करवाएं.

घरमकान चाहे अपना हो अथ[वा] किराए का समयसमय पर मरम्मत कर[ते] रहना रहने वालों की जिम्मेदारी होती [है]. जहांतहां प्लास्टर उखड़ रहा हो, पानी [के] नलों की टोंटियां लीक कर रही हों, छत [पर] रखी टंकी से पानी बह रहा हो, वाशबे[सिन] टूट रहा हो या उस का नल खराब पड़ा [हो], बिजली के स्विच टूटे पड़े हों, खिड़[कियों] दरवाजों के कांच या जालियां टूटी पड़ी [हों] या दरवाजों की चटखनियां खराब पड़ी [हों] तो रहने वालों को ही परेशानी होती [है]. जहां लोग रहेंगे वहां टूटफूट तो होगी [ही] परंतु इन की समयसमय पर मरम्मत कर[ते] रहने से घर में रहने वालों को परेश[ानी] महसूस नहीं होती. घर की दीवारों में सी[लन] नहीं भरती तथा फर्श पर बहते पान[ी से] आनेजाने वालों के पैर भी नहीं फिसल[ते]. घर सुंदर, स्वच्छ, सुविधासंपन्न [व] सुरुचिपूर्ण दिखाई देता है.

घर की छतों, सीढ़ियों, आमनेस[ामने] या बगल में कच्ची जमीनों की सफा[ई व] देखरेख का भी ध्यान रखना चाहिए, त[ाकि] घर दूर से ही सुंदर दिखाई दे. भांतिभ[ांति] के सुंदर पौधे गमलों में लगा कर उन्हें [घर] भी सुंदर बनाया जा सकता है. खरा[ब से] खराब मकान को भी साफ रख[कर] कलात्मक ढंग से सजाने पर सुंदर ब[नाया] जा सकता है बशर्ते उस की देखभाल [में] कुछ समय खर्च किया जाए.

पुरुष ही नहीं महिलाएं भी खर्चीली होती हैं

लेख • अमरजीत साहिवाल

आमतौर पर कहा जाता है कि आदमी को घरगृहस्थी के संबंध में ज्यादा कुछ पता नहीं होता. इसलिए वह नापतौल कर, सोच कर या फिर बजट को सामने रख खर्च नहीं करता. परिधि में जीने की उस की आदत नहीं, तभी तो वह आज में जीता है. वर्तमान की घड़ी का भरपूर आनंद लेते हुए आने वाले पल को भूल सा जाता है.

इस के विपरीत स्त्री संवेदनशील, सहनशील, सुघड़ और सुचारु रूप से घर को चलाने वाली वह धुरी है जो स्वयं भूखी रह कर औरों का न केवल भरणपोषण करती है, बल्कि घरबाहर की छवि को धूमिल होने से बचाती हुई अपनी आहुति



आय और व्यय के बीच संतुलन रखने का काम गृहिणी का ही होता है. परंतु कठिनाई वहां खड़ी हो उठती है जब पुरुष के बजाय स्त्री ही बिना सोचेसमझे खर्च करती हो. कहीं आप भी ऐसा कर के घर का बजट गड़बड़ा तो नहीं देती हैं?

इस यज्ञ में हंसतेहंसते डाल देती है.

पति के यानी पुरुष के जिम्मे युगों से कमाई करना रहा है. अतः उस के हाथ में पैसा शुरू से ही रहा है. पत्नी ने कमाया नहीं या उस के पास आया नहीं, दोनों ही स्थितियों में उस ने दोबारा पैसा हाथ में आने तक गुजबसर की. बस यही सामान्य सी बात एक विशेषता के रूप में स्त्री की झोली में गिर गई कि औरत ही घर को बनाती है, गृहस्थी को जोड़ती है. आय और व्यय के बीच संतुलन रखना गृहिणी की जिम्मेदारी है. गया मर्द तो घर लुटाते हैं, बीवी तो बिगड़े घर को बनाती है.

आमतौर पर पुरुषों के खर्चों के विषय में यह धारणा बन चुकी है कि वे क्या जोड़ेंगे, वे तो खुला खर्च करना जानते हैं, उन के हाथ में तो पैसे टिकते नहीं, यह तो बेचारी बीवी है जो जैसेतैसे खर्च चला ले है. संभवतः पुरुषों की इस बगैर सोचेसम खर्च करने की आदत ने ही उन के साथ य अवधारणा जोड़ दी है. लेकिन क्या क आप ने ऐसी औरतों को देखा है जो पति आमदनी को चुटकियों में लुटा देती पुरुष नहीं महिलाएं भी खर्चीली होती

इस बात को चरितार्थ करती बंगलौर की अशोका शर्मा. अशोका अप बहन की शादी के सिलसिले में खरीदा करने दिल्ली आई. मां ने बेटी को बहन दहेज के लिए कुछ अच्छी साड़ियां त कीमती सूट खरीदने की हिदायत दी. ब फिर क्या था एक से एक बढ़िया सूट अ साड़ियां खरीदी गईं.

गाड़ी में हर चीज के दोदो पैकेट दे कर पति महाशय पूछे बिना न रह स



"क्या सारी दुकान खरीद ल हो?"

वह हंसते हुए बोल "दुकान क्या, मेरा वश चल तो खरीदारी अभी बंद ही करती, वह तो तुम ने 'च चलो' की जल्दी मचा रखी सो अफरातफरी में शोभा अ अपने लिए 11-11 जोड़े ही पाई हूं."

"और पैसे?"

"अरे, आप के होते किस को फिक्र?"

बेचारे पतिदेव सोच में

यह गृहिणी की जिम्मेदारी है कि द्वारा कमाए गए रुपयों में ही हिसाब के साथ सुचारु रूप से गृह चलाए.



अपने बजट को देखते हुए आवश्यकता के अनुसार चीजें खरीदने में ही समझदारी है.

ए, '30-40 हजार की खरीदारी भला से समायोजित की जा सकेगी?'

बीच बाजार में 'तूतू मैंमैं' का च्छाखासा 'फ्री शो' हो गया. "क्या रती हो? पैसे मेरे पास कहां हैं? कुछ तो चा होता. कम से कम पूछ ही लिया ता. फिर तुम्हारे पास क्या कमी है? पहले ढेरों कपड़े हैं..." अच्छाखासा घर युद्ध अखाड़ा बन गया था पत्नी की खर्चीली दत से.

आय से अधिक व्यय और आवश्यकता अधिक खरीदारी करना भी एक तरह से लुटाना ही है.

रमा के पति प्राइवेट कंपनी में औसत न वाले अधिकारी हैं. चाहते हैं उन के योगी की पत्नी की भांति उन की पत्नी कम खर्च से उन के उच्च अधिकारियों ा ग्राहकों का सत्कार कर उन के सम्मान बढ़ाए.

रमा है तो मृदुल स्वभाव की, परंतु नी आदत से विवश. जब भी किसी मान के आगमन की सूचना पाती है तो रा बाजार ही उठा लाती है. भले ही टपकौड़ी या बिस्कुट ही की जरूरत हो, कन वह तरहतरह के बिस्कुटों का ढेर ा लेती है.

उस दिन की ही तो बात है. पति के ने सहयोगी विदेश से आ रहे थे सुबह चाय पर. बस इतना सुनना था कि रमा ने फ्रेंच ब्रेड, फ्रेंच लोफ, पिजाबेस, बर्गर, डिनर रोल, मशरूम ब्रेड, अफगानी ब्रेड आदि न जाने क्याक्या खरीद लिया. फिजूलखर्ची के चक्कर में यह भी भूल गई कि विदेशी मित्र टोस्टर में सिंकी ब्रेड का केवल एक टुकड़ा काफी के साथ खाने का आदी है. उस ने ब्रेड की जगह अन्य चीजों की खरीदारी में 200 रुपए खर्च कर दिए. वैसे यदि पति दूध का एक भी टोकन फालतू ले आएं तो सारा घर आसमान पर उठा लेती है.

इन से मिलिए. आप हमारी पड़ोसन हैं. स्वयं तो कमाती नहीं, पति 6-7 हजार रुपए महीना कमा लाते हैं. सरकारी घर है सो किराया देना नहीं पड़ता. बच्चों का खर्च न के बराबर है, अभी छोटे हैं स्कूल के खर्चे शुरू नहीं हुए, फिर भी जहां 10 तारीख गुजरी नहीं कि 'बहन जी, 200 रुपए देना, कल ही लौटा दूंगी' जैसी बातें शुरू हो जाती हैं. यह कहें कि 'घर पर थोड़े ही रखे हैं' ढिठाई से कहेंगी, 'चैक काट दीजिए न अभी बाजार जा रही हूं बैंक से भुनवा लूंगी.' 'इतनी जरूरत क्या आ पड़ी' पूछने पर जवाब मिलता है. 'कुछ नहीं प्लाजा में नई फिल्म लगी है' सो उसे आज ही (ब्लैक की टिकट ले कर ही सही) जरूर देखेंगी. फिर अकेली तो जाएंगी भी नहीं, साथ वाले को आटोरिकशा पर ले कर ही जाएंगी, इंतजार भी करवाएंगी उस से, क्योंकि रास्ते से पिकअप भी तो करना है. इस फिजूलखर्ची से उन्हें क्या मतलब? उधारी जिंदाबाद.

कई महिलाएं हर महीने घर पर भजनकीर्तन का आयोजन कर लेती हैं. इस प्रयोजन में ब्राह्मण की सेवा, पाठपूजा,

मेहमानों की आवभगत में महीनेभर की बंधीबंधाई कमाई का अच्छाखासा हिस्सा खर्च हो जाता है. भगवान के निमत्त किया गया खर्च फिजूलखर्च भला कैसे हो सकता है? भले ही महीने के आखिरी दिनों में उपवास करना पड़े. ऐसी पत्नियों के पति सुखशांति के लिए करवाए पाठ को भला 'इतना खर्च करने की क्या जरूरत थी' कह कर अशांति तो नहीं कर सकता न, वरना अशांति को पुनः शांति में बदलने के लिए पत्नी को एक और पूजन करवाना होगा.

धनी, संपन्न या मध्यमवर्ग की कुछ कामकाजी महिलाओं के हाथ में पहली तारीख को पैसा आने पर खुजली
लगती है, "भई, आज खाना ब
खाएंगे." और फिर, होटल में सब की
का खाना आता है. सभी डट कर खा
कल की कल देखी जाएगी. अगले दिन
की जरूरी खरीदारी के साथसाथ
कर के रखने के चक्कर में कुछ अनाव
सामान भी आ जाता है. फिर तीसरे दि
पैसे बचे, उन से जो भी उपस्थित हुआ
का बिल अदा हो जाता है, बाकी बे
चक्कर काटते रहते हैं. शेष दिनों में प
अधिक रुपयों की मांग, कलह, चिड़चिड़
चलता रहता है. यदि पति महोदय गुस
कह दें, "रहने दो, अब आगे से घर का
में ही करूंगा," तो तुनक कर जवाब हा
है, "अजी जाने दीजिए, गृहस्थी च
खालाजी का घर नहीं. दो दिन में ही
याद आ जाएगी, आटेदाल का भाव म
हो जाएगा."

वास्तव में औरतें भी खर्चीली
हैं. वे पैसा देख कर उसे खर्च करने का
संवरण नहीं कर पातीं. क्योंकि इस
उन्हें केवल हाथ में आया पैसा ही दिख
घर भरा होने के बावजूद हर चीज
अभाव खटकता है और वे खर्च कर
हैं.

मनोवैज्ञानिकों के एक मनोविश्ले
तथा सौंदर्य प्रसाधन,डिटरजेंट कंपनि
सर्वेक्षण से पता चला है कि अधिक
करने की प्रवृत्ति प्रायः उन औरतों में
जाती है जिन्हें कमाने और मेहनत
एहसास न के बराबर होता है.
मनोवृत्ति से प्रेरित वे हर चीज के
आसक्त हो कर पैसा पानी की तरह
देती हैं. झूठी शान, क्लबों में जाने
तथा जुआ खेलने वाली महिलाएं भी कु
तक इस बात के लिए जिम्मेदार हैं.

पतिदेव कमाते तो बहुत हैं,
कड़की हरदम बनी रहती है. बेचार
एहसास भर से अनभिज्ञ हैं कि आय
व्यय के बीच संतुलन रखना पुरुष ह
गृहिणी की भी जिम्मेदारी है.

चिकित्सक : आवश्यकता है पुनर्बोध प्रशिक्षण की

सामान्यतः यह समझा जाता है कि दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति के लिए आपातकालीन स्थिति में निकटस्थ अस्पताल श्रेयस्कर हो सकता है. किंतु ब्रिटेन के डाक्टरों पर किए गए एक सर्वेक्षण में यह पाया गया कि अगर चक्कर आने या किसी अन्य कारण से कोई व्यक्ति राह चलते दुर्घटनाग्रस्त हो जाए तो किसी राहगीर द्वारा उसे होश में लाने के लिए किया गया उपचार अपेक्षाकृत बेहतर हो सकता है.

यह सर्वेक्षण बेडफोर्ड जनरल अस्पताल के 24 डाक्टरों पर किया गया जो मरीज को पुनः होश में लाने का प्रयास कर रहे थे. इन में से 42% डाक्टरों का प्रदर्शन इतना खराब था कि उन्हें 'शून्य' दिया गया. वरिष्ठ चिकित्सकों की अपेक्षा कनिष्ठ चिकित्सकों का प्रदर्शन श्रेष्ठ था.

यहां यह उल्लेखनीय है कि बदतर प्रदर्शन वाले चिकित्सकों में से दो तिहाई चिकित्सकों ने 2 घंटे के प्रशिक्षण के बाद अधिकतम अंक हासिल किए. इस से यह स्पष्ट है कि चिकित्सकों के लिए समयसमय पर पुनर्बोध प्रशिक्षण आवश्यक है.



बच्चों के लिए नरम मुलायम खिलौने

लेख • सुस्मिता कुमार

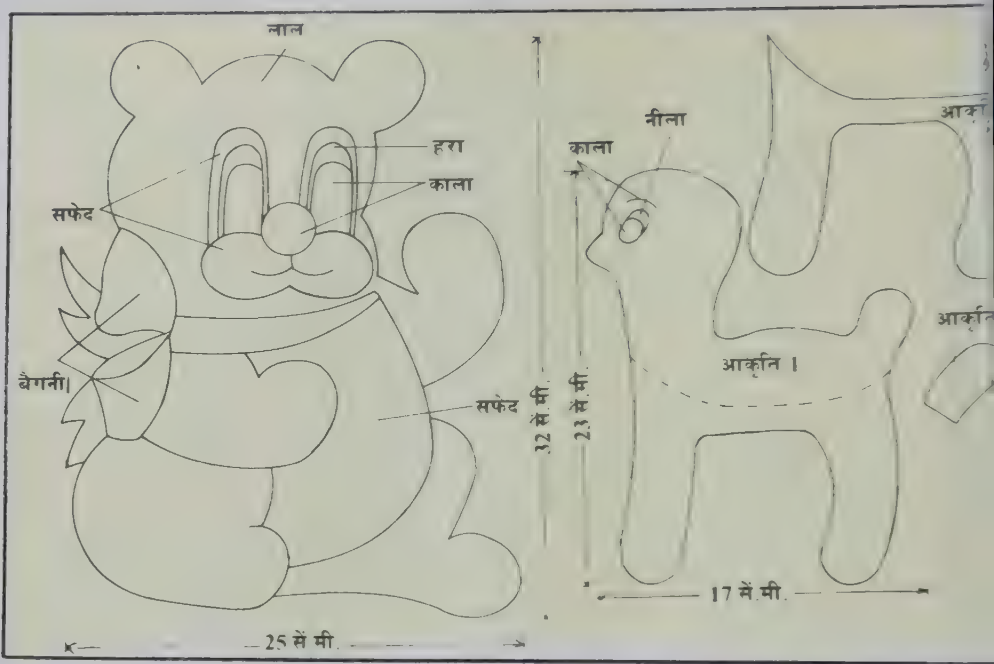
ब च्चों के लिए प्रतिदिन नए खिलौनों की समस्या हर माता के लिए आम यों तो आजकल बाजार में भांतिभांति खलौने मिलते हैं पर कहां तक खरीदे ं. एक खिलौने से बच्चों का मन भी जल्दी भर जाता है और यदि बारबार ार का मुंह देखा जाए तो बजट मुंह ाता है. ऐसे में यदि अपनी दिनचर्या में से ा सा समय निकाल कर घर में ही कुछ ौने बना लिए जाएं तो पैसे की बचत होती है, बच्चों को नए खिलौने भी ते हैं और सब से बड़ी बात यह कि ी बनाई चीजों को देख कर बड़ा ही नसंतोष मिलता है.

एक बात और, पड़ोस में किसी के बच्चे का जन्म हुआ हो या किसी मित्र को बेटा या बेटी हुई हो, आप जाएंगी तो उपहार ले ही जाएंगी. यदि अपने हाथों से बनाए ये खिलौने उपहारस्वरूप ले जाएं तो उपहार के साथसाथ आप के प्यार की गरमाहट भी होगी जिस से भेंट स्वीकार करने वाला अछूता नहीं रहेगा तो लीजिए पेश है कुछ खिलौनों को बनाने की अत्यधिक सरल विधि.

लाल भालू

सामग्री : 40 सें.मी. लाल कपड़ा (स्पन), 10 सें.मी. बैंगनी कपड़ा, 15 सें.मी. सफेद कपड़ा, काले और हरे कपड़ों के छोटे टुकड़े, फेवीकोल, वीटो इंक, फोम के मुलायम टुकड़े या फिर धुनी हुई रुई.

विधि : भालू का खाका एक कागज पर खींच कर कार्बन की सहायता से लाल कपड़े पर ट्रेस करें. ध्यान रहे कि लाल वाला कपड़ा खड़ा ही लें आडा नहीं. पूरी आकृति छापने के बाद



ट्रेस किए लाल कपड़े पर विभिन्न रंग के काटे टुकड़ों को भालू की आकृति के अनुसार उस पर चिपका दें (ऊपर). मेमना तैयार करने के लिए विभिन्न आकार में काटी गई आकृतियां (ऊपर).



सिलाई के लिए चारों ओर आधाआधा इंच कपड़ा छोड़ कर 2 टुकड़े एक आगे का और एक पीछे का एक सा ही काट कर निकाल लें. पीछे के पीस में बीच में 6" या 7" लंबा स्लिट (काटा) लगा दें जिस से भीतर रुई भरी जा सके. आकृति के अनुसार बैंगनी, सफेद, काले और हरे रंग के टुकड़े काट लें. गले के बैंगनी रिबन और बो वाले टुकड़े के बीच में हलका फेवीकोल या ग्लू लगा कर आकृति वाले स्थान पर लाल कपड़े पर चिपका दें. पेट के सफेद कपड़े को भी इसी प्रकार चिपका लें. अब भीतर के सारे किनारों को हलका सा मोड़ते हुए मशीन चला कर पक्का कर लें. मुंह, नाक

था आंख के कपड़ों को क्रमशः चिपका लें. ंख के लिए पहले सफेद, फिर हरा और स के ऊपर काला टुकड़ा चिपकाएं. दोनों ंखों को चिपकाने के बाद मुंह और फिर त में नाक चिपकाएं. मुंह की धारी काली टो इंक से बनाएं.

अब दोनों लाल टुकड़ों का सीधा ला भाग भीतर की ओर रख कर चारों र मशीन चला दें. पलट कर सीधा कर के लू के चारों ओर टाप स्टिच करें. अब छे की ओर से रुई या फोम भर कर सूई से ाई से सिलाई कर के पक्का कर दें. बस ारा सा लाल भालू तैयार है.

मेमना

सामग्री : 25 सें.मी. सफेद फलालेन, ले और काले कपड़े के टुकड़े, थोड़ा सा ला धागा, फेवीकोल और धुनी हुई रुई.

विधि : आकृति के 2 टुकड़े, आकृति 2 2 टुकड़े तथा आकृति 3 के 4 टुकड़े जाइन के बाद सिलाई का दबाव रखते काट लें. अब उलटी ओर से आकृति 1 और 2 के 1-1 टुकड़े को रख कर सी लें. उस से मेमने के 2 पैर बन जाएंगे. उसी प्रकार दूसरे दोनों पैरों को भी सी लें. अब आकृति 1 के दोनों टुकड़ों को भी सी लें. अब आकृति के दोनों टुकड़ों को ए से बी तक एकसाथ सी लें.

सभी जगह मजबूती के लिए दोहरी सिलाई लगाएं. धीरे से इसे पलट लें. धुनी हुई रुई अच्छे से कस कर भर लें. अंदरूनी सिलाई से पेट के नीचे की ओर से मेमने को सी कर पक्का कर लें.

आकृति 3 के 2-2 टुकड़ों को उलटी ओर से एकसाथ सीएं. नीचे की ओर से खुला रखें. पलट कर किनारों को भीतर दबाते हुए कान की जगह पर दोनों ओर 1-1 कान टांक दें. आकृति के अनुसार नीले और काले रंग के 2-2 टुकड़े काटें. आंख की जगह पहले नीला फिर काला कपड़ा फेवीकोल से अच्छी तरह चिपका लें. आंख के ऊपर काले धागे से स्टेम स्टिच से, आंख के ऊपर की रेखा बना दें. बस आप के बच्चे के लिए प्यारा सलोना मेमना तैयार है. •



नहले पे दहल

कहानी • विश्वनाथ याद

1657 ई. दिल्ली शहर की एक घटना...

वह युवती अपूर्व सौंदर्य की स्वामिनी थी. उस का अपना निवास स्थान था. दासदासियां थीं. काफी संपत्ति भी थी.

मातापिता काफी अरसा पहले गुजर ग
भाईबहन नहीं थे. उस ने अभी तक वि
भी नहीं किया था. उस के चाहने वाल

ी नहीं थी, किंतु वह किसी को भी प्रश्रय
 देती थी.

इधर कुछ दिनों से जब भी वह बाहर
कलती, एक युवक उस के आगेपीछे
कर मारता. उस के चेहरे पर कामना के
 पढ़ने में उसे कोई असुविधा नहीं हुई.
ने चाहने वालों में एक की बढ़ोतरी होने
उसे कोई परेशानी नहीं हुई थी.

एक दिन वह किसी रिश्तेदार के यहां
 थी. लौटते वक्त वह युवक उस की
की के साथसाथ चलने लगा. मौका पा
 उस ने प्रणय निवेदन भी कर दिया.
ती ने युवक की तरफ देखा भी नहीं.
क उस की इस उपेक्षा से मर्माहत हुआ

युवक का प्यार एकतरफा था. प्रणय
दन में असफल हो उस ने युवती को
उपहार भेजने शुरू किए. किंतु वे उस के पास वैसे ही लौट आते. युवती ने उन्हें स्वीकार नहीं किया. इस से युवक ने बेइज्जती महसूस की तथा युवती के गर्व को कुचलने के लिए योजना बना एक षड्यंत्र रच डाला.

युवती की एक वृद्धा बांदी थी. वह उसे गुसल कराती. उस के केश संवारती. युवक ने इस वृद्धा बांदी के घर जाना शुरू किया तथा थोड़े समय में उसे अपने वश में कर लिया. बांदी को रिश्वत दे कर उस ने युवती के बारे में गोपनीय खबरें एकत्र कर लीं.

युवक ने योजनानुसार षड्यंत्र को मूर्त रूप देने के लिए दिल्ली के काजी की अदालत में मामला दायर कर दिया. युवक की नालिश के अनुसार, युवती उस के साथ बहुत सी रातें गुजारने के बाद अब शादी करने से मुकर रही है. युवती ने व्यभिचार किया है. अतः काजी इस का उचित फैसला करें.

युवक की नालिश के अनुसार काजी ने युवती को अपनी अदालत में तलब किया.



काजी के पूछने पर युवती ने आश्चर्य व्यक्त कर युवक को झूठा ठहराया. उस ने बताया कि उलटे युवक ही कुछ दिनों से उस के पीछे चक्कर लगाता हुआ उसे परेशान कर रहा है. उस ने उपहार भेजे, जिन्हें उस ने लौटा दिया. युवक के साथ विवाह करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता.

काजी ने इस बार युवक की तरफ देखा. युवक ने युवती की तरफ आग्नेय नेत्रों से देख कर कहा, "हुजूर, यह झूठ कह रही है."

"तुम सत्य कह रहे हो, इस का प्रमाण क्या है?"

"हुजूर, प्रमाण है."

"तो पेश करो."

"हुजूर पहले यह बताएं कि इन्होंने कभी मुझ से एकांत में भेंट की है या नहीं?"

युवती ने घृणा से युवक की तरफ देख कर कहा, "प्रश्न ही नहीं उठता है."

"हुजूर, मैं इन के ढके शरीर के कुछ गोपन चिह्न इन्हें बता सकता हूं. जब यह कभी मुझ से एकांत में मिली ही नहीं तो मैं इस की जानकारी कहां से पाऊंगा."

काजी सोच में पड़ गया. उस ने युवक को अपने पास बुलाया. युवक ने युवती के कुछ गोपन चिह्नों के बारे में काजी को बताया.

युवती काजी और युवक के वार्त्तालाप को सुन नहीं पा रही थी, किंतु वह अंदाजा ठीक ही लगा रही थी फिर भी वह निश्चिंत थी. युवक से उस ने एकांत में कभी मुलाकात ही नहीं की तो वह उस के शरीर के गोपन चिह्नों की खबर कैसे पा जाएगा.

युवक ने काजी को पसोपेश में डाल दिया. अंत में काजी ने निर्णय लिया कि युवक के दावे के सचझूठ की परीक्षा कर ली
उस ने एक खोजा और एक बांदी को यु
के शरीर पर उन निशानों को देख
परीक्षा करने के लिए भेज दिया.

कुछ देर बाद बांदी काजी की अदा
में हाजिर हुई तथा सिर झुका कर युव
समर्थन में सिर हिला दिया. सत्य ही यु
के शरीर में वे चिह्न पाए गए थे.

काजी की दृष्टि में अब युवक स
था तथा युवती व्यभिचारिणी. उस ने यु
को फैसला सुना आदेश दिया, "तुम्हें
युवक से विवाह करना होगा."

युवती काजी के फैसले से आई वि
को अच्छी तरह अनुभव कर रही थी. यु
ने किसी तरह उस के शरीर के ग
चिह्नों को जान उसे मात दी थी. उस ने
नहले का उत्तर दहले से देने का निश्चय
तुरंत प्रकृतिस्थ हो काजी से अनुनय
स्वर में कहा, "हुजूर का हुक्म सिर अ
पर. किंतु विवाह की तैयारियों के लिए
कुछ महीनों की मुहलत देनी होगी.
रिश्तेदार दूर रहते हैं, उन्हें खबर
होगी. विवाह की तैयारियों में वैसे भी
होती ही है."

युवक अपने षड्यंत्र में सफल हो
पर फूला नहीं समा रहा था. युवती उ
विवाह करने को रजामंद हो गई थी, व
काजी के सामने. अतः कुछ महीने इंत
कर लेने में हर्ज ही क्या है. वह इंतजार
को खुशीखुशी राजी हो गया.

युवकयुवती के राजी हो जाने
काजी क्यों अपनी टांग अड़ाता. उस
युवती को सहर्ष कुछ महीनों की मुह
दी.

युवती काजी की अदालत से अप
वापस आ कर अपनी दासियों से जिरह

*वह बला की सुंदर थी. उस के रूप को देख कर एक युवक त
विचलित ही हो गया. उसे पाने के लिए उस ने एक
चाल चली और वह सफल भी हुआ. किंतु युवती ने उसे नह
पर दहला दे कर मात दे दी. आखिर कैसे?*



म्हें तो जिंदा गाड़ कर कुत्तों से नुचवा देना
हिए," काजी ने युवक को कहा. ▲

ी. तब वृद्धा दासी ने घबरा कर सत्य को
ूल कर लिया. उस ने ही कुछ स्वर्ण मुहरों
लालच में युवक को उन गोपनीय चिह्नों
जानकारी दी थी. जब युवती ने वृद्धा
ी को धमकाया तो वह युवती के कहे
ुसार काजी की अदालत में उचित समय
े पर सही बातें बताने को राजी हो गई.

धीरेधीरे 8 महीने गुजर गए. एक
युवती 2 शक्तिशाली दासों तथा एक
की व उस के वाहकों को ले कर युवक के
पहुंची. युवक अपने घर में अकेला रहता
तथा कुछ महीनों से बीमार था. उस का
र अब एक जीर्ण काया में बदल गया

युवती ने युवक के घर में प्रवेश कर अपने दोनों दासों को संकेत किया. दासों ने उस युवक को जबरदस्ती उठा कर पालकी में लिटा दिया. शीघ्र ही पालकी शहर काजी की अदालत की ओर चल पड़ी.

युवती ने उस युवक को अपने दोनों दासों की सहायता से काजी के समक्ष उपस्थित कर कहा, "हुजूर कल मैं और यह युवक जब एकांत में मिले थे तो यह मेरे बहुमूल्य स्वर्णहार को चोरी कर भाग गया. हुजूर इंसाफ कर मेरे हार को वापस दिलवाएं."

युवक ने कराहते हुए कहा, "हुजूर मैं तो महीनों से बीमार हूं. मुझ से तो ठीक से चला भी नहीं जाता. यह औरत मुझे जबरदस्ती इन दोनों व्यक्तियों के सहारे पकड़ कर लाई है."

"हुजूर यह व्यक्ति मक्कार तथा झूठ गढ़ने में माहिर है."

"हुजूर यह औरत ही झूठी है. इसे तो मैं ने कभी देखा भी नहीं है."

"क्यों, कल क्या तुम मेरे घर नहीं थे?"



खबर भी नहीं

मिलते हैं रोज दीवाने हजारों
लबों के इस पैमाने के,
छलकता है मय जिन की खातिर
अब तलक उन्हें खबर भी नहीं.

—मनोज सिंह

"हुजूर, इस औरत को आज से पहले मैं ने कभी देखा नहीं है."

काजी को लगा कि युवक सही कह रहा है. उस ने औरत से पूछा, "तुम्हारा कोई गवाह है?"

औरत ने समर्थन में सिर हिलाया तो युवक ने चीखते हुए कहा, "हुजूर यह झूठ कह रही है. इस का कोई भी गवाह नहीं है."

"हुजूर, मेरा गवाह यह युवक ही है."

काजी ने विस्फारित नेत्रों से युवती की तरफ देखा. उसे लग रहा था कि उस ने युवती को कहीं देखा है. किंतु वह स्मरण नहीं कर पा रहा था. इस पर युवती ने मुसकराते हुए पूछा, "हुजूर ने मुझे पहचाना नहीं?"

काजी ने अपनी स्मरण-शक्ति पर जोर दिया, किंतु वह उस औरत को पहचानने में विफल रहा. इस पर उस युवती ने कहा, "हुजूर 8 महीने पहले इस युवक ने आप की अदालत में मेरे विरुद्ध नालिश की थी. हुजूर ने भी मुझे व्यभिचारिणी मान मुझे इस से विवाह करने का हुक्मनामा सुनाया था.

"मैं ने हुजूर से कुछ महीने की मु
मांगी थी. आज यह युवक मुझे पहचान
इनकार कर रहा है. मेरे शरीर के ग
चिह्नों को स्मरण रखने वाला मेरे चेह
इतनी जल्दी कैसे भूल गया? हुजूर उस
तथा खोजा से इस की शनाख्त करें, जि
इस की नालिश पर हुजूर के हुक्म से
शरीर की परीक्षा की थी."

काजी ने बांदी और खोजा को बु
कर उन से पूछा तो उन्होंने युवती और य
को पहचान युवती के कथन का स
किया.

इस पर लज्जित हो काजी ने
"मुझे प्रतिदिन सैकड़ों मामलों पर फै
सुनाना पड़ता है. फिर मैं वृद्ध भी हो च
अतः तुम्हें न पहचानने की मेरी
स्वाभाविक है. किंतु मेरी समझ में नह
रहा है कि इस व्यक्ति ने तुम्हारे शरी
गोपन चिह्नों के बारे में कैसे जान लि

इस पर उस औरत ने अपनी वृद्धा
की कुछ स्वर्ण मुहरों के बदले गद्दार
घटना को कह सुनाया. काजी ने दास
उसी समय सिपाही भेज अदाल
बुलवाया तो उस ने डरतेडरते सभी
स्वीकार कर लिया.

काजी ने अब क्रोधित हो युव
तरफ देखा. वह थरथर कांप रहा था.
ने दांत भींचते हुए कहा, "तुम्हें तो
गाड़ कर कुत्तों से नुचवा देना चाहिए
मैं स्वयं को भी लज्जित महसूस कर र
तुम्हारी चिकनीचुपड़ी बातों में आ मैं
शरीफ औरत के साथ बेइंसाफी की है
तुम्हारे साथ इंसाफ शहंशाह ही क

काजी ने पूरे मामले को मुगल बा
शाहजहां के पास फैसले के लिए भेज
दोनों की मुगल दरबार में पेशी हुई. य
सारी घटना का वर्णन कर बादशाह से
करने की प्रार्थना की.

बादशाह ने वृद्धा दासी से पूछताछ
उस ने डरतेडरते सही घटना बता
शाहजहां ने युवक से प्रश्न वि

ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए
ाया कि वह उस औरत के प्रेम में पड़ गया
पर उस की उपेक्षा से वह उसे किसी भी
ह हासिल करने को कटिबद्ध हो गया था.
ने उस वृद्धा औरत को लालच दे उस से
औरत के शरीर के गुप्त चिह्नों की
नकारी पा काजी को बहका कर अपने पक्ष
फैसला करवा लिया था.

वह औरत 8 महीने बाद अपना केश
न्यास बदल तथा दूसरे किस्म के कपड़े
न अपने दोनों दासों की सहायता से उसे
रदस्ती काजी की अदालत में ले गई.
र उस ने चोरी के मामले में उसे अभियुक्त
राना चाहा तो वह उस के बदले भेस के
ते उसे पहचान नहीं पाया. वह अपने
ए पर अब लज्जित था तथा बादशाह से
क कर देने की आरजू कर रहा था.

बादशाह ने गंभीर हो कहा, "एक शरीफ औरत को बदनामी के साथसाथ मानसिक कष्ट भी हुआ. उस की क्षतिपूर्ति तो मैं स्वयं भी नहीं कर सकता. किंतु इस तरह की घटना की पुनरावृत्ति न हो, अतः युवक और वृद्धा दासी को कड़ी सजा मिलनी ही चाहिए."

बादशाह ने युवती की बुद्धि की तारीफ कर उसे पुरस्कृत किया.

उसी दिन बादशाह के आदेश से दिल्ली के राजपथ पर उस युवक और उस की सहयोगिनी वृद्धा दासी को कमर तक मिट्टी में गाड़ दिया गया. फिर तीर मार कर दोनों की हत्या कर दी गई. दोनों की मृत देह 24 घंटे तक रास्ते पर पड़ी रही, जिस से कि राहगीर उन्हें देख कर शिक्षा ग्रहण करें.

युवती द्वारा नहले पर दहला मारने की घटना भी दिल्ली में काफी दिनों तक चर्चित रही. ●

ये पत्नियां

रे चाचा की शादी एक गांव
की लड़की से हुई थी. शादी
अभी 2 दिन ही हुए थे तभी
चाचा खेलने के लिए कैरम
ले आए. गांव की होने के
ण चाची को कैरम बोर्ड के
में पता न था. पूछने पर
ने मजाक में कह दिया,
नहाने का पटरा है और इस
छिद्रों से पानी निकलता है."

दूसरे दिन शाम को चाचा
आए तो देखते हैं कि कैरम
गुसलखाने में पड़ा है और
पर चाची नहा चुकी है.

—पारस बत्रा

*

मारे भैया ने 'सरिता' में
प्रकाशित लेख 'ससुराल में
नें साथ न ले जाएं?' पढ़ कर
से कहा, "लेख बहुत
है. इसे पढ़ना और इस पर
करना."

लेख पढ़ने के कुछ ही घंटों
भैया ने भाभी से चाय बनाने तथा थोड़ी अधिक शक्कर डालने को कहा, लेकिन भाभी ने कम शक्कर वाली चाय बना कर भैया को दे दी. कारण पूछने पर बोलीं, "तुम्हीं ने तो कहा था कि इस लेख को पढ़ कर उस पर अमल करना. इसलिए ज्यादा शक्कर की चाय बनाने की आदत तो मैं मायके में छोड़ कर आ गई हूं."

—संजय भाटी

भारत व इंगलैंड के एक दिवसीय क्रिकेट मैच का सीधा प्रसारण टीवी पर आ रहा था और हम सब उस का आनंद ले रहे थे. भाभी 3-4 बार हम सब को खाने के लिए कह चुकी थीं पर कोई टस से मस नहीं हो रहा था. कांबली व तेंदूलकर चौकेछक्के लगा रहे थे.

तंग आ कर गुस्से से भाभी हमारे पास पहुंचीं और उन के कुछ कहने से पहले फिर एक छक्का लगा. भाई साहब ने भाभी से कहा, "क्या तुम छक्का लगा सकती हो?"

भाभी बोलीं, "लगा नहीं सकती तो क्या हुआ, छक्के छुड़ा तो सकती हूं."

सब हंसते हुए बिना कुछ बोले खाना खाने बैठ गए.

—हरिश्चंद्र जैन

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

आत्मकथ्य

व्यंग्य • मयंक सीतापुर

जी हां, बिलकुल सच है. सौ प्रतिशत ही नहीं बल्कि डेढ़ सौ प्रतिशत सत्य है मैं पत्नी का गुलाम हूं. मेरी जानकारी में 98 [प्रति]शत लोग अपनी पत्नी के गुलाम हैं. 2 प्रतिशत जो इस गुलामी को नकारते हैं, वे विश्व के महानतम झूठे लोग हैं. उन में सत्य को स्वीकारने का न साहस है और न दम. मिथ्या अहम को सिर पर लादे घूमते हैं वे.



गुलाम प्रथा भले ही खत्म हो गई है लेकिन पत्नी की गुलामी से क छुटकारा नहीं है. अच्छेअच्छे उस की महत्ता को नकार नहीं सकते. आतंकवादी, उग्रवादियों से छुटकारा मिल सकता परंतु उस से नहीं. लेकिन हमारे गुरु हमें ऐसा गुर बता गए कि पत्नी की गुलामी करते हुए भी हम परम सुखी हैं

मैं ही नहीं, बड़ेबड़े कप्तान, करनैल, जरनैल को भी पत्नी के सामने मूंछें झुकाते एवं गिड़गिड़ाते देखा गया है. तर्कशास्त्र में परीक्षा में प्रश्न पूछा गया था कि सेना पर सेनापति शासन करता है. सेनापति की पत्नी सेनापति पर शासन करती है तो बताइए, सेना का वास्तविक कमांडर कौन है? मैं ने बिना झिझक लिख दिया कि सेनापति की पत्नी. आंतरिक परीक्षा थी. अतः पढ़ाने वाले प्राध्यापक ने पूछ ही लिया, "तुम तो सुयोग्य विद्यार्थी हो. गलत उत्तर क्यों लिख दिया? इस से तुम्हारे अंक कट गए. कक्षा में प्रथम आने से रह गए."

मेरी वाणी में गर्वोक्ति भर गई, "अंक प्राप्त हों या नहीं, कक्षा में प्रथम आऊं या न आऊं पर झूठ नहीं लिखूंगा."

"पर मैं ने तुम्हें पढ़ाया था कि असल कमांडर सेनापति होता है क्योंकि उस के हस्ताक्षर के बिना कोई आदेश लागू नहीं हो सकता है," प्राध्यापक महोदय बड़े सहज भाव से बोले.

"श्रीमान," मैं ने तर्क प्रस्तुत किया, "सेनापति की पत्नी सेनापति पर कमांड करती है तो उस के मनचाहे आदेश पर सेनापति को वैसे ही हस्ताक्षर करने पड़ सकते हैं जैसे सेनापति सेना पर करता है."

प्राध्यापक महोदय के चेहरे पर हलकी मुसकान आ गई, "बात तो कुछ ठीक लग रही है पर महत्त्व सेनापति के हस्ताक्षर का है, उस की पत्नी के हस्ताक्षर का नहीं."

"उस का भी महत्त्व है श्रीमान. जो मनचाहे आदेश पर हस्ताक्षर करवा सकता है, उस की समझ उस से अधिक है जो हस्ताक्षर करता है. अब देखिए, प्रधानमंत्री की मरजी चलती है और हस्त राष्ट्रपति को करने पड़ते हैं. करने पड़ या नहीं?

"अब आप ही बताइए कि हस्त करने वाले का महत्त्व है या हस्त करवाने वाले का? श्रीमानजी, अगर को साध लो तो उस के अधिकारी प मनचाहा आदेश करवा सकते न्यायाधीश से निर्णय बदलवा हस्ताक्षर करवा सकते हो."

प्राध्यापक मुसकराए, "तर्क तुम्हारा सहज लग रहा है पर अविवा होते हुए तुम यह कटु सत्य कैसे जान प जिस का ज्ञान सिर्फ विवाहितों को ह है?"

"अपने घर में रोज ही देखता हूं. कल को 6 बजे आप के घर गया था. जो सुनाई दिया, उस से दरवाजा खटख की हिम्मत न पड़ी, उलटे पांव लौट अ घोड़ी नहीं चढ़ा हूं पर बरातें तो देखी बटलोई का एक चावल बता देता है कि पक गए या सब कच्चे हैं." बहुत सहजतापूर्ण मेरा उत्तर था. वह खिलखि उठे, "बहुत नालायक हो तुम."

यह तो न जान पाया कि प्राध्य महोदय ने मेरी बात स्वीकारी या नही लगा कि उन पर कुछ प्रभाव जरूर पड़ वह बेचारे कर भी क्या सकते थे. पु घिसीपिटी बातें पढ़ाने के इतने आदि चुके थे कि उन में मौलिक चिंतन का अ सा हो चुका था.

मातृसत्तात्मक समाज में पति पतियों द्वारा पत्नी की गुलामी व विवशता है पर पितृसत्तात्मक समाज

स के नियमों ने पति को पत्नी का गुलाम ा कर रख दिया है. आप की पत्नी अकड़ र कह दे कि मेरे पिताजी ने तुम्हारे बाप से ज की लंबीचौड़ी रकम दे कर तुम्हें रीद कर दिया है तो बताइए, आप के पास ा उत्तर है. मैं जानता हूं कि कोई सटीक नर न होगा. लचर उत्तर सिवा स्यास्पद स्थिति बनाने के और कुछ कर नहीं सकता. आप को मान लेना चाहिए विवाह के उपरांत आदमी अपनी पत्नी गुलाम ही नहीं अपितु जरखरीद गुलाम जाता है.

ऐसे भी लोग हैं जिन के समाज में या के पिता को दानदहेज दिया जाता है. छित रकम ले कर ही वे कन्या ब्याहते हैं. प कहेंगे कि ऐसी स्थिति में पत्नी को खरीद गुलाम होना चाहिए. लेकिन ऐसी ति में भी पति को ही गुलामी करनी पड़ती है. अगर पत्नी नाराज हो कर पिता के घर चली गई और पिता ने कुछ मांग और कर दी तो वह क्या कर पाएगा? विवश हो कर पत्नी की गुलामी करना ही पसंद करेगा ताकि भारी तूफान से बच कर स्वस्थ गृहस्थ जीवन जी सके.

देखिए, गुलामी करना और बात है, डरना और बात. मैं गुलामी जरूर करता हूं पर डरता नहीं हूं. हां, अगर लिहाज करने को आप डरना कहते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है. कौन है जो अपने हाकिम और मालिक का लिहाज नहीं करता, जो नहीं करता उसे देरसवेर इस का फल भुगतना ही पड़ जाता है.

सब्जी काटने बैठे तो उंगली काट ली, परिणाम यह हुआ कि अब कुछ नहीं करना पड़ता.





साधना

तुम मिले प्यार की कामना हो गई
और जी लूं यही भावना हो गई,
सामने आ गए पूजने मैं लगा
जिंदगी की यही साधना हो गई.
—शिवप्रसाद 'कमल'

असल में शरीर से ले कर मस्तिष्क तक को तनावों से दूर रखने के लिए मेरे विवेक ने प्रारंभ से उन की गुलामी स्वीकार करने की सलाह दे डाली. मेरी उन के पिता पहुंच वाले नागरिक थे. और एक भाई नगर का प्रसिद्ध दादा था. कुछ मिथ्या अहमवादी जवांमर्दों पर बीती हुई घटनाओं ने मुझे अपने विवेक की सलाह मानने पर विवश कर दिया वरना तनावों से ग्रस्त शरीर एवं मस्तिष्क लिए हुए न्यायालयों के चक्कर लगा रहा होता. हर पेशी के बाद देखता हूं कि जूते का तल्ला पौन इंच घट गया. अधिक अवकाश लेने के कारण कार्यालय से सेवामुक्त हो जाता.

व्यापारी होता तो पूरा व्यापार चौपट हो जाता. अब ससुरजी सिर पर हाथ फेर कर कहते हैं कि मेरा दामाद करोड़ों में एक है. मेरी बेटी का खयाल रखता है. दादा सरीखा साला लोगों से बतियाता है कि मेरे जीजा का कोई जवाब नहीं. जीजी का पूरा खयाल रखते हैं. अब आप ही बताइए, यह गुलामी सुखकर है या जवांमर्दी का ढोंग रचा कर जूते के तले घिसने वाली स्थिति.

उस के बाद वह समय भी अ
जब वह पूर्ण लोकसभा बन गई.
सदस्य उन के अपने हो गए. बेटे भी
बेटी भी उन की, दामाद भी उन का
सदन वही पारित करता है जो वह
हैं. अगर कुछ न करने की नौबत आ
उन के आंसुओं की धार सदस्यों को
करने पर विवश कर देती है. मुझे भा
राष्ट्रपति की तरह हस्ताक्षर करने
जाते हैं. इस के अतिरिक्त कोई और
तो मुझे अवश्य बताने की कृपा कीजि

लोग जैसे दो टके की हांडी खरी
तो खूब ठोकबजा कर देख लेते हैं, वै
हर कोई अपने लिए या आप की पुत्री के
गुलाम खरीदता है. बाद में मूर्ख निकल
तो कहना ही पड़ता है कि जब रकम
खरीदा है तो पड़ा रहने दो. दरवा
पहरा ही देगा. घर में घुसते हुए व
आवारा पशुओं को भगाएगा. जब मैं
के सामने स्वयं को मूर्ख साबित कर दि
मेरे सुख के दिन आ गए.

मुझे अपने सुख के लिए बुद्धि से अलि
समझौता करना ही पड़ा कि तुम चाहे
रहो पर तुम्हें मूर्खता का जामा पहन
पड़ेगा. सुख कौन नहीं चाहता? अत
भी इस ढोंग में मदद देने हेतु तैयार हो

मैं ने शुरू से वैवाहिक जीवन में
जताते हुए कहा कि तुम आटा गूंध ल
सब्जी काट लेता हूं. वह तैयार हो
सब्जी काटने का चाकू इतना भोथरा
बेहूदा था कि कई बार गड़ाने पर उंगल
काटना तो दूर निशान तक न बना
लघुशंका के बहाने बाथरूम गया
उंगली पर चीरा बना लिया. रक्त
होने लगा.

सब्जी काटने के स्थान पर बै
चीखा, "मेरी उंगली कट गई, जरा
और पट्टी दे जाना. खून रुक ही नहीं
है." बेचारी फौरन दौड़ आई. सारा
छोड़ कर रुई में डिटाल भर कर ल
और पट्टी बांधी. दूसरे दिन सब्जी का

पेशकश की तो भभक पड़ी कि जो काम करने की तमीज नहीं है, वह काम न करने दूंगी. जितनी देर तुम्हारे पट्टी बांधने में लगती है उतनी देर में मैं सब काम निबटा लूंगी.

मुझे फुरसत मिल गई. सब्जी खरीदने बाजार गया तो जानबूझ कर सड़ीगली सब्जी का पता लगा कर ले आया और बड़े गर्व से फरमा दिया कि बड़ी सस्ती मिली. उस सब्जी को फेंक कर मुझे सब्जी खरीदने से फुरसत दिला दी गई. इसी तरह हर कार्य में कुछ ऐसी मूर्खताएं प्रदर्शित कीं कि मुझे उन कामों को करने से रोक दिया गया.

उदाहरणस्वरूप आटा पिसाने गया तो उसी चक्की से पिसा लाया जो तुरंत कुटवाई गई थी. राशन की दुकान पर गया तो फौरन लौट कर खुली होने पर भी बता दिया कि बंद है. वह स्वयं गई. सामान खरीद लाई और मुझ से जवाबतलब की कि दुकान तो खुली थी. मैं ने फौरन कह दिया कि जब मैं गया था तब बंद थी. अब खुल गई होगी. इन राशन की दुकानों का कोई एतबार ही कहां है. कब बंद होगी, कब खुलेगी.

अब देखिए, उस चक्की वाले ने भी धोखा दिया. अगर बता दिया होता कि अभी कुटवाया है तो मैं दूसरी चक्की से पिसवा लाता. पता नहीं, उन्होंने मेरी बात पर यकीन किया या नहीं पर मुझ से य... कराना ही बंद कर दिया.

मुझे मांस खाने का बड़ा शौ... मेरी 'वो' को प्याजलहसुन तक खा... दूर, छूना तक गंवारा न था. एक बा... सा बुखार आया तो मैं ने ऐसा हंगामा किया कि जैसे मुझे अंतिम चरण का ... हो गया. डाक्टर साहब केवल डाक्टर ... थे मेरे साहित्यक गुरु भी थे. ... गिड़गिड़ा कर विश्वास में ले लिया. उ... झूठ बोलने की आदत न थी पर शि... लिए झूठ बोल ही दिया कि बहुत क... हो गए. जहरीला बुखार हो गया ... तुम्हारी सेवा से बच गए वरना मैं तो ... नजर में ही निराश हो चुका था. इन्हें ग... का शोरवा ही पहले जैसा स्वस्थ बना स... है अन्यथा रोग के दोबारा आक्रमण... स्थिति गंभीर हो सकती है.

अब देखिए, कौन आका चाहता ... उस का गुलाम शीघ्र मर जाए? उस के ... पिताजी की भरपूर कंजूसी से पैदा ... पैसा व्यर्थ हो जाए? शाम को कार्याल... लौटा तो देखा कि मेरी 'वो' नाक पर ... ही आंचल की पट्टी कसे गोश्त भून रह... जैसी जमादारिनें मैला उठाने के समय ... लेती हैं.

धीरेधीरे स्थिति यह आ गई कि ... मुझे विश्व का सब से बड़ा नाकारा आ... समझने लगी. ऐसा व्यक्ति जो किसी ...

मुहब्बत करने वाले जोड़े गिरफ्तार

मलेशिया की सरकार ने मुहब्बत करने वालों पर पाबंदी लगा कर उन के प्रति अपनी रंजि... जाहिर की है. उल्लेखनीय है कि यह पाबंदी सिर्फ अविवाहित जोड़ों तक सीमित है.

120 किलोमीटर दूर पोर्ट डिक्सन में ऐसे 14 बदनसीब जोड़ों को गिरफ्तार किया गया ... 'खलबल' के आरोप में गिरफ्तार क्वालालंपुर के ये जोड़े 18 से 30 वर्ष के बीच के हैं तथा इन्हें होट... के कमरों, कारों और निर्जन स्थानों से पकड़ा गया है.

खलबल के दायरे में गैर शादीशुदा जोड़ों द्वारा एकदूसरे का हाथ थामने, चुंबन व आलिंगन आ... हैं.

फिलहाल इन्हें 200 डालर की जमानत पर छोड़ा गया है लेकिन अभी अदालत में इन ... मुकदमा चलाया जाएगा. अपराध साबित होने पर 200 डालर का जुर्माना या 2 साल की कैद या दो... ही सजाएं दी जा सकती हैं.


ईर्ष्यालु पड़ोसी के मनहूस मनसूबे ...२

के काबिल न हो. इस तरह मुझे हर काम से फुरसत मिल गई.

एक दिन मैं ने पूछ ही लिया, "आखिर मैं क्या करूं? कैसे तुम्हारी मदद किया करूं?"

मेरी 'वो' ने आंखों को रंगमय किया, "सब्जी काटने बैठे, उंगली काट ली. चाय बनाने गए, हाथ जला लिए. आटा पिसाने गए, किड़किड़ा आटा पिसा लाए. सब्जी खरीदने गए, सड़ीगली सब्जी उठा लाए. राशन की दुकानवाला खुली होने पर भी तुम्हें देख कर बंद कर देता है. अब यही अच्छा है कि तुम कुछ भी न करो. आराम से बैठे रहो. मैं स्वयं सब कर लूंगी."

परिणाम यह हुआ कि मुझे कुछ करना भी नहीं पड़ता और मेरे शौक भी पूरे हो जाते हैं.

अंत में, मैं आप को बताना चाहूंगा कि मैं 'सुखी ही नहीं' अति सुखी हूं. आप भी होना चाहें तो मेरी राह पर चलें, अन्यथा आप की इच्छा. मेरे श्रद्धेय गुरुज
करने के बाद मर कर कहां गए यह त
पता, पर जब तक जिए, जी
सुखभोग का उपभोग करते रहे.
आतंकवादियों से डरते थे, न उग्रवादि
और न ही हत्यारों से. मगर उन के
जम कर लिखा करते थे. हां, वह
पत्नी से बेहद डरते थे.

वह कहा करते थे कि अ
उग्रवादी, आतंकवादी क्या कर पा
नाराज हो कर गोली ही तो मार देंगे
पत्नी की नाराजगी जीवनभर न
रहने देती है और न ही मरने देत
ऐसी स्थिति से बचने हेतु उस से डरते
आवश्यक है. सुखी गृहस्थी निबाहनी
पत्नी से सदा ऐसा झूठ बोलते रहो कि
पकड़ न पाए.

गुरुजी का उपदेश बड़ा सार्थक
उसी के बल पर मेरी गृहस्थी के आगे
दुनिया का सुख भी तुच्छ है.

हमारी बेड़ियां

दीवाली के बाद हमारे यहां एक त्योहार मनाया जाता है जो 'घेघे एकादसी' कहलाता है. इस त्योहार के दिन शाम को लोहे के तार या कोई पतली छड़ी के एक सिरे पर मोटा कपड़ा लपेट कर उसे मिट्टी के तेल में भिगो कर तथा उसे जला कर अपने चारों ओर तेजी से घुमाया जाता है.

हमारे यहां जब यह रस्म की जा रही थी तो लोहे के तार पर लिपटा जलता हुआ कपड़ा पास खड़े एक लड़के की पीठ पर जा गिरा जिस से उस की कमीज



में आग लग गई और लड़के का बदन बुरी तरह झुलस गया. उसे ठीक होने में महीनों लग गए.

—सुनील कुमार गर्ग

*

हमारे पड़ोस की एक वृद्ध महिला शनिवार के दिन कोई भी लोहे की वस्तु घर में लाना अपशकुन समझती हैं.

एक बार उन का पुत्र शनिवार को ही एक नई साइकिल खरीद लाया. इस पर उस की मां ने उसे खूब डांटा तथा कहा, "आज रात को इस साइकिल को बाहर ही खड़ी रखो, कल ही इसे तुम घर में ला सकते हो."

मजबूरन साइकिल बाहर खड़ी करनी पड़ी. सुबह उठने पर मालूम हुआ कि साईकिल कोई ले गया. इस तरह बेवकूफी के कारण उन्हें 1,200 रुपए की साइकिल से हाथ धोना पड़ा.

—राजकमल लेखराव

*

ऐसी मान्यता है कि क्रीडा में लीन सांप के जोड़े पर अगर लाल रंग का कपड़ा फेंक दिया जाए और उस कपड़े को ले कर घर में रखा जाए तो उस परिवार में धनदौलत आती है.

हमारे पड़ोसी ने भी जब अपने घर के पीछे के जंगलझाड़ में सांप के जोड़े को वैसी स्थिति में देखा तो वह दौड़ कर घर आए और लाल कपड़ा ले कर शीघ्रता से सांप के जोड़े पर फेंक दिया. अपने आनंद में विघ्न पड़ता देख सांप क्रोधित हो गया और हमारे पड़ोसी का पीछा कर उन के पैर में काट लिया. उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाना पड़ा जहां बड़ी मुशकिल से उन की जान बची. —राजू कुमार 'राजा'

*

किसी बीमारी के कारण मेरे एक परिचित के एक पैर को लकवा मार गया. बहुत इलाज कराने के बाद भी लकवा ठीक नहीं हुआ.

एक बार वह अपनी दुकान पर बैठा था तो एक साधु आया. साधु ने बताया कि उस पत्नी व उस की राशि भिन्न के कारण ही उस के पैर कुप्रभाव हुआ है. बातों ही ब में उस ने कहा कि 3 यज्ञों द्व उसे ठीक किया जा सकता है. परिचित के मातापिता भी की बातों में आ गए. उन्होंने स के कहे अनुसार यज्ञ की तैया शुरू कर दी.

साधु ने हमारे परिचि और उस की पत्नी की सोने अंगूठियां दूध से भरे एक प्या में डाल दीं और 7-8 घंटे रो



पूजा करता. जब वह बाह जाता तो घरवाले अंगूठी व जांच कर लेते. विश्वास जी कर वह साधु जब एक दि बाहर गया तो लौटा ही नहीं दोनों अंगूठियां तथा 1(रुपए भी, जो गीता की पुस्त के अंदर रखे थे, गायब थे.

—धर्मपाल चौहान

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

चार पल जिंदगी के परिवार के संग जिएं



लेख • कविता मालपाणी

इस भागतीदौड़ती जिंदगी की तेज रफ्तार में हर कोई चकरघिन्नी सा ...म रहा है. किसी से भी मिलिए, मुसकरा ...र कहेगा, "जरा व्यस्तता थी." व्यस्त ...यापारी विजेन की पत्नी महिमा को अपने ...ति से शिकायत है, "इन्हें अपने कारोबार ... फुरसत नहीं तो शादी करने की क्या ...रूरत थी." असीम की पत्नी हिना कहती ... "अब तो इन्हें बुढ़ापे में ही वक्त मिलेगा."

इधर नौकरीपेशा मोहित की पत्नी भी बड़ी खफा हो कर कहती है, "जी हां, दफ्तर से 6 बजे जो छूटते हैं तो रात 11 बजे ही दोस्तों से पीछा छूटता है."

एक छोटी सी बच्ची रिनी को अपने सामाजिक कार्यकर्ता पिता से शिकायत है

कि कितने ही दिन वह अपने पापा का चेहरा भी नहीं देख पाती क्योंकि पापा बड़े सवेरे ही घर से निकल पड़ते हैं और जब तक वह रात को लौटते हैं हम सो चुके होते हैं.

डाक्टरों की पत्नियों से मिलो तो वे खिसिया कर कहेंगी, "मरीज... मरीज... मरीज, क्या कहेंगे ये मरीज. इन्होंने तो हमें ही मरीज बना दिया."

और वकीलों की पत्नियों की जबान पर तो मुवक्किलों की ही रट मिलेगी. एक श्रीमतीजी तो कहती हैं, "दिल करता है मैं ही कोई केस ले कर मुवक्किल बन कर घंटों उन के सामने बैठ कर, अपनी तमाम समस्याएं उन्हें बताती जाऊं."

हर पेशे से संबंधित पतियों की पत्नियों और परिवारजनों को गृहस्वामी से एक ही शिकायत है कि घर के लिए उन के पास वक्त नहीं. जनाब, माना कि आज के

भीतर खुदबखुद मिल जाएगी.

बेशक आज हमारे यहां भी स
परिवार प्रथा दम तोड़ रही है. फि
परिवार के नाम पर जो कुछ शेष रह ग
उसे अब भी वक्त है सहेज लें और इ
लिए गृहस्वामिनी को ही बड़े धैर्य
सजगता के साथ खुशी के छोटेछोटे
को सजाना और संवारना होगा. औ
ही यह कार्य संपन्न कर सकती है त
परिवार की भारतीय संस्कृति, विरास
मिली हमारी तहजीब और तमीज
उसी गौरव से हमारी हर पीढ़ी के
जीवित रह सके.

बेशक आधुनिक बनें, वैज्ञा
दृष्टिकोण अपनाएं लेकिन एक सच यह
है कि पुराने विशाल वृक्ष पर, प
टहनियों पर उगती हुई नई पी
कितनी अच्छी लगती हैं. मुझे अब भी

जिंदगी जीने के लिए है. कुढ़कुढ़ कर जीने के बजाय क्यों
हंसबोल कर जिंदगी बिताई जाए. मगर यह तभी
संभव है जब परिवार का हर सदस्य एकदूसरे का खयाल र
एकदूसरे की भावनाओं का सम्मान करे.
फिर जिंदगी में जो लुत्फ आएगा उसे आप भूल नहीं पाएं

बदलते हुए परिवेश में मात्र रोजीरोटी के वास्ते नहीं बल्कि प्रतियोगिता में टिके रहने के लिए भी पति और पत्नी दोनों को संघर्ष करते रहना पड़ता है और ताउम्र यह संघर्ष कभी प्रकृति से, कभी परिस्थितियों से, कभी समाज से चलता ही रहता है.

लेकिन इस का मतलब यह तो नहीं कि हम जीने के लिए जो लड़ाई लड़ रहे हैं उस जीने की तासीर ही भूल जाएं. नहीं, कदापि नहीं. जरा सा मुसकराएं, खिलखिलाएं और जीने के लिए जी कर देखें तो जिंदगी के गमों का सारा बोझ दूसरों में बांटी खुशी में बंट कर आप के दिलोदिमाग को हलकाफुलका कर छूमंतर हो जाएगा. और यह खुशी कहीं बाहर जा कर खोजने की जरूरत नहीं, आप को अपने ही परिवार के

है हम अलस्सुब्राह पूरे परिवार सहित
की ताजी हवा में सैर को जाया करते.र
भर पिताजी के प्रश्नों के उत्तर, प
गणित के जवाब उछलतेकूदते दिया क

आज भी परिवार के हर सदस्य
सात्विक संस्कार रचेबसे हैं. एक पारिव
मित्र अब भी कहते हैं, "लगता है,
सूरज यहीं से निकलता है," अपने परि
अपनी संस्कृति से जुड़े रह कर ही
'परिवार' को सहेजे रख सकते हैं. औ
में स्नेह और सौहार्द की भीनीभीनी
हमेशा बरकरार रखने के लिए गृहस्वा
को चाहिए कि वह अपने प्रभुत्व से
परंपराओं को जीवित रखने की कोशि
करे.

हर घर में सुबह इकट्ठे नाश्ते

नियम रखें. और इन थोड़े से पलों को जीवंत, हास्य से भरपूर बनाए रखने के लिए कुछ हलकेफुलके मनोरंजक वार्त्तालाप करें. बच्चों से चुटकुले सुनें. उन से पहेलियां बूझें, अखबार की सुर्खियां स्त्रियों, बच्चों को भी सुनाएं ताकि उन का सामान्य ज्ञान भी बढ़े और वे देश के सजग नागरिक भी बनें. अखबार के कार्टूनों पर टीका करें. कोशिश करें कि हर चेहरा ताजा गुलाब सा खिला रहे ताकि परिवार के तमाम सदस्य प्रफुल्लित और शांत मन से, नए आत्मविश्वास से भरे हुए कदम बाहर रखें.

दोपहर का भोजन जरूरी नहीं कि सब लोग साथसाथ ही करें लेकिन रात्रि का भोजन यथासंभव साथ ही लें. यह वह समय है जब सारे सदस्य अपनेअपने काम से फारिग हो कर थकेमांदे परिवार के ममत्व की गोद में पलभर चैन से लेटने को व्याकुल से लौटते हैं.

यद्यपि इस नए दौर में भावनाओं के लिए कोई जगह नहीं, फिर भी यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि हर इनसान को जिंदगी में किसी न किसी पल में मनोबल की, प्रेरणा की, प्रोत्साहन की जरूरत पड़ती है. और यह सब शक्ति और स्फूर्ति मिलती है उसे अपने परिवार से.

तो रात्रि के भोजन पर एकत्रित हों. तब तक भोजन की शुरुआत न करें जब तक कि परिवार का छोटे से छोटा सदस्य भी वहां न पहुंच जाए. और फिर अपनी परंपरा के अनुसार, शालीनता से सब से बड़े सदस्य व गृहस्वामी को हृदय से उचित आदर व स्थान दें और गृहस्वामी भी समयानुसार उन सब से सहज, स्नेहपूर्ण संबंध रखें ताकि छोटेबड़े सभी
उन का आदर करें, न कि भयवश.
के लिए रुकने पर जहां प्रत्येक स
अपनी महत्ता का एहसास मिले
स्नेह की यह डोर कुछ और मजबू

और जब सब साथ मिल बैठ
भोजन के साथ आपसी दुखसुख भी
हैं. एकदूसरे के साथ अपनी समस्या
विचारते हुए सौहार्दपूर्ण माहौल में
का आदानप्रदान करते हैं. विच
मतभेद स्वाभाविक है लेकिन सुख अ
के तमाम क्षणों को वे साथसाथ ज
जिन से ये आत्मीय संबंध विकसित



बच्चों के साथ बच्चा बनना जहां आप
मानसिक संतुष्टि दिलाता है वहीं बच्चों का
मनोबल बढ़ाता है.

आप सफल हो जाते हैं.

आप चाहे जितने व्यस्त हों, प
के सदस्यों और पारिवारिक मित्रों
के महत्त्वपूर्ण दिनों, सफलताओं पर
मंगलकामना और आशीर्वाद देना
आप नहीं जानते, स्नेह से परिप
छोटीछोटी सौगातें किसी के मनोब
बढ़ाने में किस हद तक सहायक हो
हैं. अगर आप व्यक्तिगत रूप से न भ
पाएं तो फोन या पत्र के द्वारा जरूर
खुशी का इजहार करें. परिवार के

को इस बात का एहसास हो जाएगा कि आप मौजूद न हो कर भी उन के करीब हैं.

हां, विशेष अवसरों पर विशेष तरीके से शुभकामना दें. कहीं पढ़ा था, एक प्रसिद्ध परिवार में यह प्रथा थी कि जिस दिन परिवार के किसी सदस्य का जन्मदिन होता भोजन की मेज पर उस की कुरसी के सामने फूलों के खूबसूरत गुलदस्तों के ढेर शुभकामनाओं के साथ लग जाते. तब उस इनसान के लिए वाकई उस का जन्मदिन कितना खुशगवार और ताजा सा होगा.

जन्मदिन के अलावा, अपने सभी त्योहार जैसे ईद, होली, दीवाली, बैसाखी, रक्षाबंधन इत्यादि अपने परिवार और पारिवारिक मित्रों के साथ बारीबारी से एकएक स्थान पर मनाने की योजना बनाएं. त्योहार हमेशा अपने पारंपरिक तरीके से ही मनाएं, आखिर युगोंयुगों तक हमें अपनी भारतीय परंपराओं को जीवित रखना है जो हमें हमारे पुरखों से विरासत में मिली हैं. यही वह वक्त है जब भाईबहनों में, मित्रों में, अन्य रिश्तेदारों में स्नेह की डोर और अधिक मजबूत होगी अन्यथा यों तो किसी को, किसी के वास्ते वक्त ही कहां है?

जब भी परिवार में मिल बैठें, एक सहज, सौम्य और आत्मीय सा माहौल बनाएं. अहं और प्रतिस्पर्धा की भावना, किसी को नीचा दिखाने की भावना परिवार के बीच न उपजने दें बल्कि खुले मन से, खुशी के पलों को सहेज लें, इन दिनों को यादगार दिन बना दें. संगीत के सुरों, हंसी की फुलझड़ियों से सारा आंगन गुलजार कर दें. गृहस्वामिनी ध्यान रखे कि कहीं परिवार का कोई सदस्य अकेला, उदास न हो.

अगर आप नौकरीपेशा या व्यापारी हों तब भी हफ्ते में एक दिन और साल में 15 दिन का अवकाश परिवार के लिए सुरक्षित रखें, क्योंकि आप भी तो अपनी रोज की दिनचर्या के काम से ऊबे होंगे, थके होंगे और यह मनोवैज्ञानिक नियम है कि काम में स्फूर्ति और बेहतरी के लिए इनसान को पुनः तरोताजा होना सब से जरूरी है.

छुट्टियां अगर घर में मनानी हों
मिलजुल कर हर काम में अपना हा
बटाएं और सामूहिक रूप से बढ़िया
और सीरियल टीवी पर देखें. फिर
मिल कर हंसने में कैसा मजा है.
की मधुर धुनों के साथ कैरम, ताश
शतरंज की बिसात बिछाएं. श
स्फूर्ति बनाए रखने के लिए कुछ देर
भोजन की मेज को ही टेबल टेनिस
बना लें. और अगर रात का वक्त
बैडमिंटन ले कर खड़े हो जाएं. कि
एक सदस्य को 'रेफरी' करार दें.

और यदि बाहर पिकनिक का प्र
हो तो क्या कहने. पारिवारिक क्रिकेट
का मजा तो बस खेलने वाले ही बता
हैं. पिकनिक को आपस में सहज भ
मनाएं. बहुत सारा बोझा ले कर चलने
पिकनिक का मजा ही किरकिर
जाएगा. ध्यान रखें, परिवार का हर स
पिकनिक का आनंद ले.

और यदि आप शहर से बाहर छु
मनाने जा रहे हों तो कोशिश क
मनोरंजन के साथ आप अपने देश की त
भौगोलिक, ऐतिहासिक घटनाओं से
स्थलों के साथ जुड़ते जाएं. देखिएगा,
बच्चों को इतिहास, भूगोल और वन
विज्ञान किताबों से रट कर नहीं
पड़ेगा.

और अगर कहीं न जा सकें तो '
वाक एंड टाक' परिवार के साथ
गुजारने का बेहतरीन तरीका है. जब
की चमकीली रातों में और गरमिय
उमस भरी रातों में धीमेधीमे चलते
हम शहर की सड़कों को नापते हैं, कालि
दिन जैसे फिर लौट आते हैं.

माहौल को खुशगवार बनाने के
परिवार में दोस्ताना ताल्लुक बनाए
के लिए इस बात की आदत डालें कि
चाहे जिस भी उम्र के हों, बच्चों के
बच्चे बन जाएं, बूढ़ों के साथ बूढ़े. ज
वक्त मिले बच्चों को ऐतिहासिक
स्वतंत्रता संग्राम की कहानियां स


VIPUL
SAREES
THE DESIRE OF A BEAUTIFUL WOMAN
VIPUL
SAREES & FASHION FABRICS



नक्षत्र और तारों, रात और दिन और अन्य सभी विषयों से संबंधित अपना संचित ज्ञान मनोरंजक तरीके से धीरेधीरे उन्हें देते जाएं. इस से उन के जिज्ञासु मस्तिष्क को खुराक भी मिलेगी और उन का सामान्य ज्ञान भी बढ़ेगा.

बच्चों की तरह घर के बड़ेबूढ़ों को भी शिकायत होती है कि आजकल के लोगों के पास दादी, नानी के पास बैठने को वक्त नहीं. अपनी गप्पगोष्ठी में उन्हें भी शामिल करें. उन से भी हंसीमजाक और मसखरी करें. यों भी जब पुराने लोग किस्सागो की तरह अपने पुराने किस्से और जीवनशैली का बखान करते हैं तो उसे सुनने में बड़ा लुत्फ आता है. उन की बातों में रुचि ले कर तो देखें, उन के बुढ़ापे की आधी बीमारी छूमंतर हो जाएगी. घंटों उन की गोद में लेट कर अपने बचपन को दोहराना, एक सुखद एहसास है. किसी भी वक्त आप उन से अपने पसंदीदा व्यंजन की फरमाइश कर के तो देखें, उन के हाथों की बनी प्रेम में पगी चीजों को खाने का जहां आप को मजा आएगा वहीं उन्हें भी अपनी ममता न्योछावर करने में जो सुकून मिलेगा वह असीम होगा. यों भी घर में बड़ेबूढ़ों की उपस्थिति, हमारे सिरों पर उन के हाथ

तनाव से भरी जिंदगी के कुछ पल परिवार के संग मिलबैठ कर खुशगवार बनाए जा सकते हैं.

हमें एक मानसिक संबल प्रदान करते हैं.

क्यों न इन चंद पलों को कुछ इस त
से जीएं कि इन की यादें भी धूप में हम
लिए छांव बन कर आएं. यह जिंदगी
जैसे एक रेल यात्रा है. माना कि अपनेअप
हिस्सों का बोझ हमें खुद ही ढोना है मग
हंसतेखेलते सफर कितना आसान हो जा
है. जिंदगी है तो जीना है और जब जीना
है तो भय और आशंकाओं से नहीं बलि
हर पल आशा और उत्साह के साथ जी

अपने वास्ते तो सब जीते हैं, जरा स
के हो कर देखें, सब के लिए जी कर दे
कितना सुकून है ऐसे जीने में. परिवार
माने को सार्थक बना कर तो देखें. परिव
में हर सदस्य का अपना एक मुकाम है. उ
के खालीपन को कोई भी दूसरा कभी
नहीं सकता. इसलिए जो भी पल जिंदगी
आप के पास शेष हैं, स्नेह के धागों से इ
कस कर जोड़ लें. घर के फूलों को यों
मुरझाने दें. अब भी वक्त है सहेज लें इन
खुशबू को. टूट कर इन को यों न बिख
जाने दें.



शीघ्र ही आपके परिवार

में आएंगे नए सदस्य.

उनके लिए भी थोड़ी

जगह रखिए.

BPL

185 लीटर पर्फ़ेक्ट मैच रेफ्रिजरेटिंग सिस्टम. ज़्यादा जगह. ज़्यादा सुविधा. अनुकूल क़ीमत.

भी तो आपका गा ही. और रू में आपके की ज़रूरतें भी छोटी ही उनकी मांगें बढ़

मुन्ने सदस्यों के लिए , 185 लीटर पर्फ़ेक्ट टिंग सिस्टम के साथ. साधारण 165 लीटर पेक्षा 20 लीटर अधिक कि आप अपने बढ़ते आवश्यकताओं के दा दूध, फल, अंडे, साग-

सब्ज़ियां और आइस क्रीम रख सकें. ज़्यादा जगह का मतलब यह भी है कि बाज़ार के चक्कर कम होंगे और अपने बड़े हो रहे बच्चों के साथ बिताने के लिए आपको अधिक समय मिलेगा.

बर्फ़ - मुक्त भीतरी भाग और अलग - अलग तापमान के कारण आपके बच्चों को मिलेगा सही मायनों में तरो - ताज़ा स्वास्थ्यकर खाना.

और इसकी शॉक - प्रूफ़ बॉडी उन्हें प्रदान करेगी, संपूर्ण सुरक्षा.

185 लीटर पर्फ़ेक्ट मैच बी पी एल रेफ्रिजरेटिंग सिस्टम. आज की सुविधा और कल की आवश्यकताओं के लिए. जिन्दगी की बदलती ज़रूरतों से मेल खाए - पूर्ण रूप से.

BPL REFRIGERATING SYSTEMS

आधुनिक जीवन शैली का प्रतीक

FROM BPL REFRIGERATION LIMITED

BPL REFRIGERATION LIMITED : Ahmedabad, [illegible] Bangalore, [illegible] Bombay, Tel [illegible] Chandigarh, [illegible] Cochin, [illegible] Coimbatore, [illegible] Ghaziabad, [illegible] Hyderabad, [illegible] Kanpur, [illegible] Madras, [illegible] New Delhi, [illegible] Pune, Tel 342638



खूबियां:

- सैन्यो तकनॉलजी
- भीतरी भाग बर्फ़ मुक्त
- अलग अलग तापमान के ज़ोन
- - 18°C फ्रीज़र
- भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाया गया कम्प्रेसर
- बेहतरीन पफ़ इन्स्युलेशन
- मज़बूत ए बी एस लाइनर
- एडजस्टेबल शेल्फ़
- रस्ट प्रूफ़
- खूबसूरत फ्लैट - बैक डिज़ाइन.

भारत की सबसे विशाल **फ्रॉस्ट-फ्री** श्रृंखला

TSMcCANN/BLR/BPL/439/94

गणेशजी

व्यंग्य • रेणुका पालित

एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म लेना भी किसी सजा से कम नहीं है. मैं तो क्या, मेरे दादाजी या पिताजी ने भी कभी धर्म ग्रंथों में डूब कर अध्ययन नहीं किया. धर्म का सार क्या है? गीता का रहस्य क्या है? उपनिषद के कठिन श्लोकों



क्या है? यह सब जानने की कभी हीं की. दालरोटी की व्यवस्था कैसे में वक्त गुजार दिया.

ाकदा दादी की परिपाटी पर चल भी पर्वत्योहार के मौके पर गलत ण से युक्त, बगैर समझे रामायण ाइयां बांचती रहतीं. बाकी के दिनों यण और गीता जैसे ग्रंथों को वह ड़े में लपेट कर पूजा के आले पर . पर अज्ञानता या अर्द्धज्ञान मनुष्य व भी कैसी परेशानी में डाल देता ात दीवाली के दिन हमें पता चली. स्सा इस तरह है कि सस्ते में जमीन कारण हमारे दादाजी ने शहर से किनारे थोड़ी जमीन मकान बनाने खरीदी थी. अब दादाजी तो मात्र रीदने के कारण गुजर गए और पिताजी दोमंजिला मकान बनाने के कारण साधारण सुविधाओं से भी वंचित रह कर चल बसे. एक स्कूल अध्यापक (आज के जमाने में नहीं) अपनी कमाई से मकान भी बनवा ले और टानिक और फल भी खा ले, यह पुराने जमाने में संभव नहीं था.

बापदादा की किल्लत भरी जिंदगी से सीख ले कर मैं ने फौरन से पेश्तर मकान के निचले हिस्से को भाड़े पर उठा दिया. हालांकि नाली के बहाव और बच्चों की तादाद के कारण अकसर मेरे घर का आंगन महिला सैनिकों की वजह से हल्दी घाटी का मैदान बन जाता था, पर महीने के अंत में पत्रपुष्पों की सरसराहट सारे वैमनस्य भुला देती.

एक दिन ऐसा चमत्कार हुआ कि



हमारे पड़ोस में अंगरेज दंपती आ कर रहने लगे तो पड़ो के बीच हमारा रुतबा बढ़ गया. पड़ोसियों की देखादे हम भी दीवाली वाले दिन उन को मिलने पहुंच गए और दीवाली का महत्व बताने. लेकिन अंगरेज दंपती ने हम से गणेशजी के मोटे होने का कारण पूछा तो हम खाने चित हो गए.

पूछिए मत, देश के सारे शहर और कसबों की तरह हमारे कसबानुमा शहर में भी चेचक उन्मूलन के लिए डाक्टर आए थे. मेरे घर में कोई भी चेचक से पीड़ित नहीं था. पर हर्ष की बात यह थी कि हमारे शहर में आने वाले डाक्टर अमेरिकी थे और उस से भी ज्यादा खुशी की बात यह थी कि गंगा किनारे अवस्थित होने की वजह से उन्होंने मेरे मकान के ऊपरी हिस्से को रहने के लिए पसंद किया था.

अब बेटी के लिए मनपसंद वर पा जाने से जैसे व्यक्ति प्रफुल्लित हो उठता है और शादी के लिए कर्ज लेने में भी आनंद का अनुभव करता है, वैसे ही गोरी चमड़ी वाले किराएदार को पा कर मैं अत्यधिक प्रसन्न हो उठा. बिना किसी कष्ट का अनुभव किए अपने बीवीबच्चों और सामान के, दूसरे ही दिन अपनी गृहस्थी नीचे जमा ली.

'क्या फर्क पड़ता है... जैसा ऊपर, वैसा ही नीचे?' मैं ने अपने मन के साथसाथ बीवीबच्चों को भी तसल्ली दी.

अमेरिकी किराएदार बसाए जाने की वजह से मैं महल्ले के लोगों के मध्य ईर्ष्या का कारण बन गया. दूसरी तरफ शहर में अपना रुतबा भी बढ़ गया. कई लोग मुझ से दोस्ती गांठने को बेकरार थे.

डाक्टर साहब का नाम था जान, बेटे का जांडी और पत्नी का रोजलिन, जिसे वह बेहद प्यार से 'रोजी' कह कर पुकारते थे.

एक दिन जब ऊपरी माले पर प्यार सावनभादों की तरह बरस रहा था, तब मुझे भी अपनी जवानी के चंद घंटों की याद ताजा हो आई. मैं भी झिझकते हुए प्यार का इजहार करने की कोशि लगा. पर पत्नी वह शिलाखंड थी, प्यार का पानी तनिक भी न ठहर उस पर घास उगने की गुंजाइश थी. जब भी कोशिश करता, व बच्चों की बढ़ रही उम्र और खि चुके बालों की ओर संकेत कर दे ऐसे पत्थर से कोई क्या दिल लग मसोस कर रह जाता. रोजलिन की का मैं मन ही मन कायल हो गया

जान और रोजलिन को बेडमि दिलचस्पी थी. उन दिनों ठंड की थी, इसलिए खेल जमने लगा था. कर पड़ोसियों ने तरहतरह से सहा सहयोग करने के प्रस्ताव मेरे समक्ष

शाम के 7 बजते ही हमा महल्ला गुलजार हो उठता. जब जान और रोजलिन के बीच चल रह तब महिलाओं सहित दर्शकों की खासी भीड़ मैदान के इर्दगिर्द, छज छतों पर एकत्र हो जाती. बच्चे त बड़े भी दूर गिरे 'शटल काक' को जो खुशी महसूस करते थे, वह आंखों की चमक और मुसकराती पंक्तियां व्यक्त कर देती थीं.

कभी जान साहब अनुपस्थित रोजलिन का साथ देने के लिए न और अधेड़ों में होड़ सी मच ज बाजी उसी के हाथ लगती, जो खिलाड़ी होता था. जो रोजलिन क

(शेष पृष्ठ 214 पर)


Fragrance that rises like a song.
When day breaks till dusk falls.
Wisps of perfumed, silver
noke arise like a prayer.
Veaving a soft, velvet spell,
hat captivates your senses
nvelopes your being. In-
agrances that linger on
d on.
Panchavati®
OOP STICKS
andal *Fancy *Dasanga

हमनाम

कहानी • प्रेम वाही

भाभी का नाम था सूर्यबाला और मेरा सूर्यकांत. इस प्रकार वह मेरी हमनाम थीं.

हनीमून से लौटने के बाद जब सुबह चाय के साथ उन्होंने 'हैलो, हमनाम' कह कर मेरा अभिवादन किया तो मुझे बेहद अच्छा लगा. अलसाए से मेरे उस घर में भाभी एक सुगंधित झोंका बन कर आई थीं. यह एक संयोग ही था कि हम दोनों की जन्मतिथि भी एक ही थी.

पहले घर में बड़े भैया, मां तथा बाबूजी यानी हम 4 ही



प्राणी थे. मां को स
शिकायत रहती कि हम
घर को धर्मशाला से ज्य
कुछ नहीं समझते. मैले क
इधरउधर डाल देना,
बरतन जहांतहां छोड़
उठ जाना और जब चाहे
लौटना उन शिकायतों
एक हिस्सा था.

परंतु अब सब ब
रहा था. चाय के बाद
भगदड़ अब व्यवस्था



लने लगी थी. हमारी मुखर आव-
कताओं का भाभी मूक उत्तर देतीं,
ल चिट लिख कर. मैं ही सब से ज्यादा
ाड़ैल था. मेरे कमरे में लिखा मिलता,
ाया मैले कपड़े थैले में छोड़िए,''गीजर
करते जाइए,' रात को 9 बजे भोजन पर
श्य मिलें' आदिआदि. भैया के लिए
ग चिट होती, 'जाने से पहले रसोई में
जाइए.'

कई बार मैं हाथ से प्रश्नचिह्न बना
खड़ा हो जाता. जिस के उत्तर में मेरे
लेसलोने भैया केवल मुसकरा देते. मां
बाबूजी तो भाभी से सदा ही प्रसन्न
. बाबूजी को रक्तचाप की शिकायत
ी थी. भाभी उन की जेब में दवाई
तीं, चिट के साथ, 'बाबूजी रायते में
क मत डालिए और यह गुलाबी गोली
बजे खा लीजिए.'

एक दिन बाबूजी ने खूब हंसाया. खाने की मेज पर मुंह बिसूर कर बैठ गए, "आज दोपहर को दुकान पर खाने का जरा भी मजा नहीं आया."

भाभी हैरान थीं क्योंकि खुद चख कर ही वह खाना डब्बे में रखती थीं. फिर क्या बात थी कि बाबूजी को खाना बेस्वाद लगा. अपराधभाव से भाभी का चेहरा उतर गया.

तब बाबूजी ने चुप्पी तोड़ी, "आज कोई चिट नहीं निकली."

फिर तो सब खूब ही हंसे थे. सुनते ही भाभी का चेहरा खिल उठा था.

भाभी सदा हंसतीखिलखिलाती सब काम निबटाती रहतीं और भैया बिना किसी प्रयास के सपूत की पदवी दर पदवी पाते चले गए. बहू अच्छी हो तो उस का सारा श्रेय बेटे को जाता है कि बीवी को पहले दिन से ही कस कर रखा है.

पढ़नेलिखने में मैं बहुत तेज था. पास होता मैं लेकिन गर्व से सीना चौड़ा होता भैया का, "देखना मां, यह इस बार बैंक की परीक्षा में भी निकल जाएगा. फिर इंटरव्यू में तो उस की शक्ल देख कर ही वह इसे चुन लेंगे."

सचमुच ऐसा ही हुआ था. जिस दिन नियुक्तिपत्र आया, भाभी चुपचाप बाजार से मिठाई ले आई थीं. खाने की मेज पर जब उन्होंने सब के मुंह में मिठाई ठूंस कर पत्र दिखाया तो सब कितने प्रसन्न हुए थे.

उन्हीं दिनों भाभी ने मेरे लिए बीवी ढूंढ़ने की घोषणा की थी. सब सहमत भी

थे. लड़का बैंक अफसर हो तो रिश्तों की कमी नहीं रहती. मुझे बैंक मैनेजर ने ही पसंद कर लिया था, अपनी साली के लिए.

रविवार को सुबह ही वे लोग हमारे घर आए थे. मैं अभी सो रहा था. भाभी का मधुर व्यवहार और प्रेम से पेश की गई चाय के वे इतने कायल हो गए कि 'हां' बोल कर ही उठे. भाभी की पसंद सब की पसंद. लड़की मंजूर हो गई. इस तरह मेरा भी ब्याह हो गया.

शोभा एम.एससी. थी. पब्लिक स्कूल में गणित पढ़ाती थी. देखने में चुस्त एवं आकर्षक लगती थी. पर मेरे परिवार से वह सामंजस्य नहीं बैठा पाई थी. वह इतना ही जानती थी कि एक और एक मिल कर 2 होते हैं. एक और एक 11 भी हो सकते हैं, ऐसा उसे कभी सिखाया ही नहीं गया था.

भाभी से तो वह अकारण ही नाराज रहती. कभी उसे स्कूल से लौटने में देर हो जाती तो भाभी पूछ बैठतीं, "शोभा, क्या बात है, आज बहुत देर लगा दी?"

इसी बात को ले कर शोभा रात को मुझ से शिकायतें करती, "तुम्हारी भाभी व्यक्तिगत बातों में हस्तक्षेप बहुत करती हैं," या फिर, "मां, भाभी को ज्यादा चाहती हैं. भाभी मुझ पर एहसान लादती हैं."

सूर्यबाला अपने देवर सूर्यकांत को हमनाम मानती थी. अपने परिवार की खुशी ही उस के जीवन का ध्येय था. किंतु एक अनहोनी ने उसे सूर्यकांत की पत्नी बनने पर बाध्य कर दिया. ऐसी नाजुक स्थिति में भी क्या वह अपना कर्तव्य निभा पाई?

मैं उसे भरसक समझाने की चेष्टा करता परंतु छिद्रान्वेषण उस की आदत थी.

दीवाली पर भाभी ने मुझे एक हजार रुपया अलग से दिया था ताकि मैं उन की ओर से शोभा को अच्छी सी साड़ी खरीद दूं. लेकिन शोभा इसी बात पर उलझ गई कि भाभी के पास इतना पैसा कहां से आया?

मुझे भी तैश आ गया, "भैया भी तो कमाते हैं. करोलबाग में दुकान होना हंसीखेल है क्या?"

साड़ी तो मैं ने खरीद दी थी पर शोभा का कुप्पे सा फूला चेहरा देख कर मां कुछकुछ समझ गई थीं. उस दिन शोभा उखड़ीउखड़ी सी रही.

मेरी स्थिति अजीब थी. पत्नी मुझे अपनी ओर घसीट रही थी जबकि मातापिता इसे मेरी कमजोरी बता रहे थे. मैं भैया से पूछता, "भैया, तुम ने पहली रात क्या 'मंत्र' फूंका था, जो तुम्हें बाला जैसी पत्नी मिलीं? मैं कहां गलत हो गया?"

मां मुझे ही डांट देतीं, "शुरूशुरू में ऐसा ही होता है. बच्चा हो जाएगा, तब ठीक हो जाएगी."

पर ऐसा कहां हुआ था. भाभी तो मां के साथ ही अस्पताल जाती थीं. नानू हुआ तो तभी हमें पता चला कि समय कितनी जल्दी बीत गया है. पर शोभा चाहती कि मैं ही छुट्टी ले कर उस के साथ चलूं. खाने की मेज पर याद दिलाती, "कल अस्पताल चलना है."

मैं विषय बदलता तो वह बुरा मान जाती, "इस घर में मेरी किसी को परवाह नहीं है."

मां ने एक दिन मुझे अलग से समझाया था, "देख सूरज, तेरा कोई दोष नहीं है. परंतु शोभा का मन पूछ ले ताकि दोनों भाइयों का प्यार हमेशा बना रहे. बाला कुछ कहती नहीं, यह उस की महानता है. तू अलग रह ले... इसी में सब की भलाई है."

शोभा मुझ से प्यार न करती हो, ऐसी बात नहीं थी परंतु वह मुझ पर एकाधिकार

ी थी. संयुक्त परिवार में एकदूसरे का
खना उसे नहीं आया. समझौता उस
ा नहीं था. झुकना उस की आदत न
सरों की भावनाओं को चोट पहुंचा
से अजीब सा आनंद मिलता था.

भी की और मेरी जन्मतिथि भी एक
दोनों का एक ही केक बनता था. उस



ूर्यबाला प्रकट हुई और सूर्यकांत से
कर रोने लगीं.

हमनाम लिखवाता था. इस बात का
ने शोभा से एक सप्ताह पहले ही
या था. परंतु वह स्वयं ही केक बनवा
ौर उस पर केवल मेरा नाम ही
या. जन्मदिन तो बीत गया पर
ें दरार पड़ गई. भाभी ने मुझे
हमनाम कहना छोड़ दिया पर ऊपर से कभी नाराजगी जाहिर नहीं होने दी.

परिणाम वही हुआ जो शोभा चाहती थी. मुझे अलग घर लेना पड़ा. शोभा ने ही स्कूल के पास फ्लैट ले लिया था. घर अच्छा था पर मुझे सब सूनासूना लगता था. मेरी सास अकसर आने लगी थीं और 4 सालियों में से किसी न किसी की झलक अकसर दिख ही जाती थी.

जब मुनमुन हुई तब मां शोभा को अस्पताल से सीधा अपने घर ले जाना चाहती थीं पर वह कोई न कोई बहाना बना कर टाल गई. मां, बाबूजी, भैया तथा भाभी ढेरों उपहार ले कर आए थे.

धीरेधीरे मुझ में थोड़ा परिवर्तन आया. मैं बच्ची की ओर आकृष्ट होने लगा. मैं अपनेआप को नए वातावरण में ढालने की कोशिश कर रहा था. अब मांबाबूजी की कम याद आती थी. बैंक में भी बेहद व्यस्त रहता था. कुछ दिनों तक उन से संपर्क नहीं हो पाया.

एक दिन आफिस पहुंचा तो मेरा सहयोगी विनोद बोला, "यार सूरज, तेरे घर में कौन बीमार है?"

मैं कुछ जानता तभी तो बताता. मैं ने अनभिज्ञता जताई.

"यार, मैं ने आज अस्पताल में तेरी भाभी को लाइन में खड़े देखा. बाद में उन्हें आपरेशन के लिए पैसे भी जमा करवाते देखा था."

मैं हक्काबक्का रह गया. थोड़ी देर की छुट्टी ले कर घर भागा.



हाल पे

मुझ से बिछड़ कर
पहरों रोया करता था,
वो जो मेरे हाल पे
हंसता रहता है.
—जहीर कशमीरी

बात सच थी. पिछले कुछ दिनों से भैया को सिर में भयंकर दर्द होने लगा था. भाभी रात को उठ कर चाय के साथ गोली दे देती थीं. लेकिन जब दर्द असहनीय हो गया तो डाक्टर से सलाह ली गई.

डाक्टर के कहे अनुसार कई परीक्षण करवाए. अंत में पता चला कि सिर के पिछले भाग में मटर बराबर मांस का उभार है आपरेशन की सलाह दी थी और बताया था कि अधरंग होने का भी खतरा है.

मुझे यह दुख था कि मुझे पहले क्यों नहीं बताया गया.

"तुझे हम बुलाएं तो तेरी पत्नी बुरा मानती है. बाला कहती थी कि अपनी मुसीबत हम दूसरों पर क्यों डालें?"

"अब मैं दूसरा हो गया," कहते हुए मैं सचमुच रो पड़ा.

"तू दूसरा न होता तो यहां से जाता? चंद्र तेरे गम में बीमार हो गया. उसे कुछ हो गया तो हम तो जीतेजी मर जाएंगे," मां बिफर पड़ी थीं.

मुझे गले में कुछ अटकता सा लगा. सीधा अस्पताल भागा. दूसरे दिन भैया का आपरेशन होना था. मुझे देख वह रो पड़े, "छोटे, जब से तू चला गया, मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता. यार, सब को संभाल लेना, मैं तो बेकार हो गया हूं."

भाभी ने नजरें घुमा ली थीं. पता नहीं उन में क्या था? गुस्सा, उलाहना या अपनापन, जो भी था, मैं सब सहने को तैयार था.

भैया का आपरेशन सफल हो गया था. उन के पास बैठे रहना मुझे बहुत अच्छा लगता था. खाना खाने बैठता तो लगता, भैया बुला रहे हैं. खाना वहीं रह जाता. मेरी दाढ़ी बढ़ गई थी.

दोस्त कहते, "लगता है, भैया नहीं, तुम ही बीमार हो."

10-11 दिन बाद भैया को अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी. सप्ताह भर तक उन को रोज अस्पताल सिकाई के लिए भी ले जाता रहा. शोभा भी एकदो बार हाल पूछने आई थी.

एक महीने बाद भैया को स्वस्थ दशा में दुकान पर छोड़ कर मैं बैंक गया था साथियों ने बधाई दी थी. सब ने प्रशंसा भी खूब की थी. तब क्या पता था कि भैया मृत्यु को आवाज दे आए हैं.

मैं बराबर फोन पर भैया का हाल पूछता रहता था. कभीकभी स्वयं भी जा कर देख आता और आश्वस्त हो जाता कि घर वालों ने मुझे माफ कर दिया है.

2 महीने ठीक तरह निकल गए. फिर वही समस्या शुरू हो गई. सख्त सिरदर्द और बेचैनी. डाक्टर ने फिर से आपरेशन बताया था. मांस का लोथड़ा फिर बढ़ गया था. परंतु इस बार डाक्टर ने कोई आश्वासन नहीं दिया था. भैया दोबारा आपरेशन को तैयार नहीं हुए.

फिर सिलसिला शुरू हुआ दवा का. कोई विशेषज्ञ नहीं छोड़ा था हम ने. इस बार बाबूजी भी डोल गए थे. उन से अकेले कारोबार संभालना कठिन था. परेशान

से बातें करती रहतीं. भाभी सब को
न देतीं पर उन की आंखें स्पष्ट कहतीं
ह बेहद चिंतित हैं.

अब मुझे एक ही धुन थी कि मुझे कपूत
कहलाना है. 'शोभा से कह दिया था,
जानो, तुम्हारा काम.'' मैं ने लंबी छुट्टी
थी. दिन को बाबूजी के साथ दुकान
ाता और रात को भैया की देखभाल
.

लगभग 6 माह बाद भैया का देहांत
या. बाबूजी बुत बन गए.मां ने अपने
नोच डाले और भाभी तो जैसे जीतेजी
ईं.

क तरफ थी मेरी पत्नी व बच्ची तथा
तरफ था, 4 लोगों का अपना
ार. लगता था, बाबूजी रातोंरात 20
बूढ़े हो गए हैं. भाभी सब का खयाल
ी थीं. नानू मुझ से चिपट जाता तो जब
सो न जाता, अलग ही न होता.
घार, घरपरिवार सब दांव पर लग
ो, केवल एक व्यक्ति के चले जाने से.
की क्षतिपूर्ति कर
था तो केवल मैं.
बैंक मैनेजर ने ही
या था, ''नौकरी
व्यापार संभालो.
से आधी दुकान
ी भाभी की है.
ी का मन टूट चुका
हें वहां न पा कर
तुम्हारी भाभी के
से बहकाने आ गए
क्या करोगे? सब
विष्य दांव पर लग
. 'शोभा को मना
ापस ले आओ...
का मलहम सब
र देगा.''

ं ने ऐसा ही किया
ोभा को लेने गया
आने को राजी

नहीं हुई. मैं ने सोचा था, भाभी की दयनीय दशा देख कर स्वतः पिघल जाएगी. रात को घर जाता तो 'शोभा सो चुकी होती. सुबह मेरे उठने से पहले वह स्कूल चली जाती.

मां और बाबूजी कुछ संभल गए थे. भाभी भी परिस्थितियों से समझौता कर रही थीं.

पर 'शोभा ने हठ नहीं छोड़ा. मैं जाता तो बेहद कड़वा बोलती, ''अब भाभी के लिए जीवन भर वहीं जमे रहने का इरादा है?''

''समझदारी की बात करो 'शोभा, उस घर में मेरे बूढ़े मातापिता भी हैं. नानू मेरे भैया की निशानी है. उसे बड़ा करने में मेरी मदद करो. मुझे परिवार व समाज की नजरों में मत गिराओ,'' मैं सचमुच गिड़गिड़ाया था.

''भाभी को जीने लायक बना दो. बात पुरानी हो जाएगी तो हम उन का पुनर्विवाह कर देंगे. बच्चा हम गोद ले लेंगे. यहां रहूंगा तो तुम्हारी अपेक्षाएं बढ़ेंगी. वहां हम



''विपक्ष का काम तो बोलना ही है. वह शानदार फार्म हाउस तो मैं ने किसानों में पार्टी का प्रभाव बढ़ाने के लिए बनवाया है.''

एकदूसरे को सहारा देंगे. चलो, लौट चलें," मैं ने सचमुच उस के पैरों को पकड़ लिया था, "मैं भी तो तुम्हारे कहने पर घर छोड़ कर तुम्हारे पीछे चला आया था. अब तुम मेरे पीछेपीछे चली आओ." फिर उस की पीठ थपथपा कर काम पर चला गया था.

सोचा था, ठंडे मन से सोचने पर उसे मेरी बात में वजन लगेगा. अपने अनुभव और ज्ञान से वह भाभी में आत्मविश्वास पैदा करेगी. मेरे उस घर में फिर चहलपहल हो जाएगी. दोनों बच्चों का समवेत हास्य मां और बाबूजी को हमारे बचपन की याद दिलाएगा. उदासी स्वतः कम हो जाएगी.

लगभग एक महीने बाद रजिस्टर्ड लिफाफा मिला था, तलाक का नोटिस था. इलजाम? 'भाभी के चक्कर में है अतः मैं साथ नहीं रह सकती.'

> *विश्वास*
>
> *मनुष्य उसी काम को ठीक तरह से कर सकता है, उसी में सफल हो सकता है, जिस की सिद्धि में उस का सच्चा विश्वास है.*
>
> *—स्वेट मार्डेन*

खत मैं ने छिपा लिया था पर मां की अनुभवी आंखें कुछ भांप गई थीं. पत्र पढ़ कर मुझे क्रोध नहीं आया. तलाक चाहने वाले दंपती अकसर ऐसे ही झूठे आरोप एकदूसरे पर लगाते हैं जिस से प्रेम और विश्वास बिखर जाता है. लाभ पहुंचता है केवल वकीलों को.

मैं ने इस इलजाम का खंडन नहीं किया क्योंकि मेरे अंदर का विश्वास टूट कर बिखर गया था. मन के कोने में सिमटी कोमल भावनाएं मर गई थीं. सफाई पेश करने के प्रयास में तर्कोंवितर्कों से उपजा कीचड़ मेरे पूरे खानदान को बदनाम कर सकता था. मैं ने चुपके से हस्ताक्षर कर दिए.

मां मेरा दूसरा विवाह करना चाहती थीं. परंतु बाबूजी को न जाने क्या सूझी वह मां को अंदर ले गए. फिर काफी मंत्रणा के बाद कोई फैसला हुआ था. बाबूजी ने भाभी के भाइयों को बुला भेजा था. उन के सामने जो बात हुई, उस से मैं सकते में आ गया.

बाबूजी चाहते थे कि मैं भाभी से ब्याह कर लूं. किसी को कोई एतराज नहीं था. होता भी क्यों? यह हमारा एकदम निजी एवं घरेलू मामला था.

रात को मैं सोने के तैयारी कर रहा था. सहसा भाभी कहीं से प्रकट हो गईं. वह आते ही मुझ से लिपट कर रोने लगीं.

"क्या हुआ?" मैं हैरान था, "यदि आप को यह फैसला मंजूर नहीं तो अभी समय है. यह तो केवल एक सुझाव था. मैं तो वैसे भी नानू और आप का जीवन भर पालन करूंगा. भैया की यह अंतिम इच्छा थी."

"हमनाम, सच कहना, क्या तुम ने कभी इस रिश्ते की कल्पना की थी?" उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर अपने सिर पर रख लिया.

"नहीं, मैं ने कभी सपने में भी आप को इस दृष्टि से नहीं देखा. पर अब शोभा न लौटे तो मैं क्या करूं?" मैं जोर से रोने लगा था.

मां के पैरों की आहट सीढ़ियों पर सुनाई दी तो हम दोनों चौंके. सोचा, जरूर वह हम दोनों को कुछ समझाने के उद्देश्य से आई होंगी. लेकिन हमें रोता देख कर वापस सीढ़ियां उतर गईं.

फिर वह रात हम ने बैठेबैठे ही गुजार दी. शोभा से हुई हर बात मैं ने भाभी को बता दी. दबी जबान से पुनर्विवाह संबंधी अपने विचार भी प्रकट कर दिए. पहले तो वह रोती रहीं, फिर शांत हो गईं.

"यदि आप सहमत नहीं हैं तो फिर मेरा इस घर में रहने का भी कोई औचित्य नहीं. मैं अन्यत्र कमरा ले कर रह लूंगा," यह कह कर थोड़ाबहुत सामान मैं ने अपने बैग में रख लिया. भाभी वहीं बैठीबैठी ऊंघने लगी थीं.

मैं ने सोचा, रोज की तरह घर से कलूंगा. मेरे इरादे का पता बाद में चलता हेगा. मैं स्नानघर में चला गया था. मां ायद बाहर गई थीं. मुझे लगा कि कोई ाग कर सीढ़ियां उतर रहा है. फिर ोरजोर से स्नानघर का दरवाजा ड़भड़ाया और आवाज आई, "मांजी, रज को रोकिए, वह घर छोड़ कर चला या है."

समय दौड़ रहा है. बाला से मेरा ब्याह ो चुका है. हम ने घर बदल लिया है. नानू हुत शरारती हो गया है. बाबूजी उसे सरी में दाखिल करवा आए हैं. उस की मां ा नाम है सूर्यबाला और पिता का ूर्यकांत. बाबूजी पिछली कोई कड़वाहट गली पीढ़ी को सौंपना नहीं चाहते.

अब मैं सोचता हूं तो अपनेआप को कहीं दोषी नहीं पाता. मेरे मन ने मेरे कृत्य के लिए मुझे कभी नहीं धिक्कारा. आत्मग्लानि तो कभी सपने में भी नहीं हुई.

मन के घोड़े समय की दीवारें फलांगने लगे हैं. मैं देखता हूं, राखी का दिन है, मुनमुन दुलहन बनी अपने दूल्हे के साथ आई है. बाला भाग कर उसे बांहों में समेट लेती है और पुकारती है, "हमनाम, देखो हमारी बेटी आई है."

समय आने पर वह ऐसा ही करेगी. उस का हृदय बड़ा विशाल है. वह रिश्तों को गरिमा प्रदान करने का गुर जानती है.

मैं ने अपनी पूर्व पत्नी से केवल ऐसे ही व्यवहार की आशा की थी. फिर कभी विश्वास न टूटता. मन के कोने में सिमटी, 'केवल शोभा के लिए' कोमल भावनाएं कभी न मरतीं. ●

इंतजार

तो लूं
लाब को मैं
गर
रता हूं
कहीं वो
ला न हो जाए.
फिर
ंटों से बिंध
गलियां लहूलुहान हो जाएं
र
लाब को
पीने की लत पड़ जाए.
ीलिए
उसे दूर से निहारता हूं
र इंतजार करता हूं
स के मुरझा कर गिरने का.

—डा. कृष्ण जोशी



परिक्रमा

गतांक से आगे

दूसरा भाग

धारावाहिक कहानी • सुषमा मुनींद्र



इधर जयति कुछ अस्वस्थ रहने लगी. वह गर्भवती थी. ज्ञात होते ही बूआ हुलस कर बोलीं, ''बहू, अब तो लंबी लाइन लगानी पड़ेगी तुम्हें... बालगोपालों को पालने का जिम्मा हमारा.''

''बूआ, तब तो मर जाऊंगी मैं.''

''ऐसा मत बोलो जयति. इस अकेले लड़के में जान अटकी रहती है. सहदेव जब तक घर नहीं लौट आता, मेरा तो चैन हराम रहता है. तुम्हें इस घर की 'इकलौते वाली' वंश परंपरा को तोड़ना पड़ेगा. इतनी धनदौलत किस के काम आएगी आखिर?''

जयति हंसने लगी.

''हंसो मत बहू, हमारी बात पर गौर करो. बड़ी मुशकिल से इस हवेली ने अच्छे दिन देखे हैं. इस हवेली में तो लगता है, किसी 'प्रेत' की छाया पड़ गई है. मां मरखप गईं, कोई सुख न देखा. पिताजी तब साड़ियों का गट्ठर उठाए घरघर घूमते थे.दो जून खाने के लाले पड़ते थे. मां दिनभर घर पर खपती थीं, पिताजी सड़कों पर.

''फिर वह दिन भी आया जब अपनी कपड़ा मिल चलने लगी. पर मां यह सब देखने के लिए नहीं थीं. तुम्हारी सास के सामने पैसा तो खूब बरसने लगा पर जिंदगी में सुख नहीं था... बीमार रहने लगीं.''

''पिताजी ने ध्यान नहीं दिया?''

''फुरसत होती तब न. न आने का ठिकाना, न जाने का. दिनभर के थकेमांदे आदमी से विद्या अपनी परेशानी कहती नहीं थी. तब परदा भी था, अकेली कहीं नहीं निकलती थी. कभी वैद्य तो कभी डाक्टर से दवाई मंगा लेती थी.

पूर्व कथा

हदेव सरिता को पसंद करता था. परंतु डली न मिल सकने के कारण उसे पिता की द के आगे उस की छोटी बहन जयति से ादी करनी पड़ी. जयति के मन को यह बात चोटती रहती कि उस ने अपनी बहन का हक न लिया. इस बीच सरिता को दूसरी जगह से डके वाले यह कह कर कि छोटी का विवाह हले हो गया, बड़ी में जरूर कोई खोट होगा, श्ता नामंजूर कर देते हैं. जयति इस सब का म्मेदार स्वयं को मानती है. अब आगे...

शंकर को तो तब होश आया जब दिन विद्या सुबह उठी ही नहीं," बूआ ने छोड़ी, "पता नहीं, किस की नजर लग इस हवेली को."

जयति बूआ के भोलेपन पर मन ही हंसी. बोली, "किसी की नजर नहीं ी... अकेलापन लील गया है इस घर की तों को. इन्हें ही देखो, न घर आने का य है न हम से बात करने का. आप न होतीं तो मैं तो पागल हो जाती."

"दुखी मत हो बहू, गर्भ के बच्चे के लिए खुश रहो. मैं आज ही सहदेव की खबर लूंगी."

बूआ से डांट खा कर सहदेव 11 बजे अपने कमरे में घुसा. रूठी पत्नी पर निगाह गई. वह आंखें बंद किए लेटी हुई थी. सहदेव ने देखा, चेहरा कुछ कमजोर हो गया है और आंखों के नीचे हलके काले घेरे बन गए हैं. उसे अपनी अनियमितता पर क्षोभ हुआ. पत्नी के बालों को सहलाता हुआ बोला, "जयति, बूआ बता रही थीं, तुम ने खाना नहीं खाया."

"तुम्हारे बगैर खाया है आज तक."

"खाया तो नहीं पर अब खा लिया करो. तुम तो जानती हो काम ही ऐसा है. आज मैं जल्दी उठ रहा था पर काम के सिलसिले में कुछ लोग आ गए और पिताजी ने मुझे भी जबरन बैठा लिया. वैसे भी वह कई बार कह चुके हैं काम में ध्यान दो, काम में लापरवाही मैं सहन नहीं करूंगा. अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूं?" सहदेव ने स्पष्टीकरण दिया.

"दुखी मत हो बहू, गर्भ के बच्चे के लिए खुश रहो," बूआ ने जयति को समझाया.



सहदेव जयति को खुश रखने का प्रयास करता था परंतु जयति सब कुछ पाने के बावजूद अपना महत्त्व कम ही महसूस करती और सरिता को देख अपराधबोध से भर जाती थी. क्या वह इस भावना से मुक्त हो सकी? क्या जिंदगी में आने वाले मोड़ फिर से तीनों की उलझी जिंदगी में खुशियां ला सके?

"यह सब तब सोचना था जब मेरी आदतें बिगाड़ीं. न साथ खाने की आदत पड़ती, न मुझे अकेले खाने में कष्ट होता. फिर मैं अधिक कुछ तो मांगती नहीं, बस थोड़ा सा वक्त मांगती हूं आप से, अपने लिए," जयति दुखी मन से बोली.

"अच्छा चलो, अब ऐसा नहीं करूंगा. उठो, खाना खाते हैं. पर यार, मुझे देर हो जाए तो खा लिया करो. अपने लिए न सही पर यह जो नन्हा शैतान छिपा है तुम्हारे भीतर, उसे क्यों व्रत कराती हो? इस समय जिद ठीक नहीं."

सहदेव ने पत्नी को मना लिया. जयति का मान, अभिमान पति के स्नेहिल स्पर्श से दूर बह गया. तब उसे अपने थके पति पर तरस आया. ये लोग दिनभर क्यों खपते हैं? इस घर की सुखसुविधा के लिए ही तो.

फिर जयति अकेले ही खाना खाने लगी. सहदेव घर में रहता ही कम था. पिताजी उसे कुछ व्यावसायिक यात्राओं में भी भेजने लगे थे. व्यवसाय के सारे गुर सिखा उसे अनुभवी बना देना चाहते थे. फलतः सहदेव की व्यस्तता बढ़ी और जयति का एकांतवास.

प्रसव के दिन निकट आ रहे थे. जयति की चिंता बढ़ रही थी. वह एक पत्रिका ले कर बैठी थी तभी मास्टरजी मिठाई ले कर पहुंच गए. उत्साह से बोले, "सरिता की कालिज में नियुक्ति हो गई है. उस का व्याख्याता बनने का सपना पूरा हो गया."

जयति भी उन के उत्साह में सम्मिलित हो गई, "सच बाबूजी? आज मैं कितनी खुश हूं, बता नहीं सकती. उस जैसी विदुषी लड़की एक दिन किसी ऊंचे पद पर पहुंचेगी, इस का मुझे पूरा विश्वास था."



"बेटी, इसी उपलक्ष्य में सरिता की कुछ सहेलियां शाम को खाने पर आ रही हैं, तुम्हें और दामाद को भी आना पड़ेगा."

"जरूर आएंगे."

बाबूजी कुछ औपचारिक बातों के बाद जाने लगे तो बूआ पहुंच गईं, "हाय नारायण, भैया, कुछ खा कर जाते."

"नहीं बहनजी, आप तो जानती हैं मैं बेटी के घर का पानी तक नहीं पीता."

"अब वह जमाना नहीं रहा, भैया."

"पर हम तो उसी जमाने के हैं,

जी," कह कर बाबूजी चले गए.

यति ने सहदेव को फोन पर सूचना दे
वह हर्षातिरेक से बोला, "सरिताजी
ख्याता बन गईं? मुझे तो बड़ी ईर्ष्या हो
है उन से. आहा, क्या मजा आता है
और पढ़ाने में."



*सी बन गईं आप," उत्साह के मारे सहदेव
पने निकट खड़ी सरिता के दोनों हाथ पकड़*

"जी हां, आप को आता होगा. हमें तो
कभी अच्छी नहीं लगी."

सहदेव हंस पड़ा.

"देखो, हंसो मत, अब यह बताओ,
तक खाली हो सकोगे?"

"अभी तो काम है. ऐसा करो, तुम
ले कर ड्राइवर के साथ चली जाओ, मैं
तक पहुंच जाऊंगा."

"जो हुक्म," सरिता की उपलब्धि पर जयति खुश थी और व्यवहार में वह खुशी स्पष्ट झलक रही थी.

"हुक्म तो हम पर करो मुहतरमा, हम कौन होते हैं तुम पर हुक्म चलाने वाले," सहदेव ने चिरपरिचित ठहाके के साथ फोन रख दिया.

जयति चली गई. सरिता का उत्साह समुद्र सा ठाठें मार रहा था. जयति के पहुंचते ही बोली, "अब मैं मास्टरनी बन गई हूं, डर कर रहना मुझ से."

"अरे, बाप रे, अब तो घर आने में डर लगेगा," जयति हंसी. एकांत के बाद मायके की चहलपहल उसे बड़ी भली लग रही थी. वह छक कर क्षणों को जी लेना चाहती थी. मां ने उसे सलाद बनाने जैसे छोटेमोटे काम सौंप दिए.

आयोजन में शीतल ने वही कपड़े पहने जो सहदेव ने दिए थे. उन बहुमूल्य कपड़ों में वह राजकुमारी सी खिल उठी थी. मां बोलीं, "शीतल, तुझे भी जयति जैसा घरद्वार मिले."

"मिलेगा मां, मिलेगा," सरिता चहकी, "अब तो मैं भी कमाने लगी हूं. हम तो जैसा कहो, वैसा वर चुरा लाएं इस के लिए."

"पर पहले तो तुम जाओगी घर से. फिर हम तुम्हारी तनख्वाह कैसे लेंगे?"

"तो पहले शीतल को निबटा दो."

सरिता ने बात किसी प्रयोजन से नहीं कही थी, पर मां और जयति मर्माहत हुईं कि सरिता व्यंग्य तो नहीं कर रही? माहौल

खराब न हो जाए, इस भय से चतुराई से जयति ने चेहरे पर तिर आए अवसाद को छिपा लिया.

शाम हुई, फिर शाम से रात, पर सहदेव नहीं पहुंचा. जयति परेशान हो गई. उधर शीतल चहकती फिर रही थी. कपड़ों की प्रशंसा किए जाने पर वह साथ में अपने जीजाजी की प्रशंसा नत्थी कर देती थी. उस की नजरों में सहदेव का स्थान शीर्ष पर था. उसे सहदेव से आए दिन उपहार मिलते रहते थे.

सरिता ने कभी कुछ नहीं लिया. सहदेव का साहस नहीं था और जयति को वह 'छोटी बहन से नहीं लूंगी ' कह कर टाल देती थी. जयति अपने विचारों में गुम थी और सरिता सहेलियों की बातों में डूबी थी. एक सहेली बोली, "शादी, फिर बच्चों की लाइन, यह घटना तो लगभग हर लड़की के साथ घटती है. पर लड़कियों को मिली शैक्षणिक सुविधा का लाभ ले कुछ कर दिखाने का हौसला आज भी मुट्ठीभर लड़कियों में ही है. अच्छा हुआ सरिता, जो तेरा विवाह उस समय नहीं हुआ, वरना व्याख्याता की जगह कमर में चाबियों का मोटा सा गुच्छा लटकाए सेठानी बनी घूमती. यह वाहवाही न पाती."

उस के सेठानी के अभिनय से छात्राओं का समूह हंस पड़ा. सहसा सरिता का ध्यान जयति की ओर गया जो क्षुब्ध सी थी. एक तो सहदेव अभी तक नहीं आया था, दूसरे उस लड़की ने एक बार फिर सत्य पर पड़ी राख को हटा दिया था. सरिता जयति का पक्ष ले कर बोली, "भाषण तो बहुत दे रही है, पर जैसे ही मातापिता कोई अफसर ढूंढ़ देंगे, बन्नो सारे उपदेशों को ठेंगा दिखा चल देगी."

सहेलियां चली गईं. सहदेव के न पहुंचने से जयति का मन उचाट हो गया. मां ने ड्राइवर भेज बुलाने की बात की तो वह फट पड़ी, "नहीं आना चाहते तो जबरदस्ती है क्या? उन्हें अपने काम के अलावा और किसी से कोई मतलब नहीं है."

उत्तर दिया शीतल ने, "जीजाजी की बुराई मत करो, जयति दीदी, तुम्हें घर बैठे क्या मालूम कि बाहर कैसेकैसे पापड़ बेलने पड़ते हैं. बस, मुंह फुला कर बैठ जाती हो. अरे, आदमी को क्या चाहिए, अच्छा खाना, कपड़ा, बंगला, कार, नौकरचाकर... और क्या चाहिए तुम्हें?

"मुझे चाहिए वह वातावरण जहां सुविधाएं भले ही कम हों, पर मेरी भावनाओं को महत्त्व दिया जाए."

जयति के मुंह से व्यथा फूट ही पड़ी, अन्यथा वह विशेष सतर्क रहती थी कि कोई ऐसी बात न करे जिस से मांबाबूजी को कष्ट हो. पहले ही परिस्थितियों ने सब को किंकर्तव्यविमूढ़ बना दिया था.

मां ने बात संभाली, "किसी काम में ही फंस गए होंगे दामाद बाबू. मैं ड्राइवर भेजकर बुलवाती हूं." और जयति के विरोध के बावजूद उन्होंने ड्राइवर को भेज ही दिया.

ड्राइवर खाली गाड़ी ले कर लौट आया, "एक मंत्रीजी के पुत्र घर आए हैं. भैया के साथ दून स्कूल में पढ़े हैं. भैया नहीं आ पाए, बहूजी को जल्दी बुलाया है, मिलवाना है उन से."

जयति क्षुब्ध मन से थोड़ाबहुत खा कर लौटने लगी. मंत्रीपुत्र के सामने उस के मायके वालों का खयाल कैसे रहे उन्हें? मां ने स्नेहवश थोड़ाबहुत खाने का सामान साथ रख दिया.

सहदेव बैठक में ही मिल गया, "क्षमा करना जयति, पहुंच नहीं सका. यह मेरा यार अचानक टपक पड़ा, कैसे आता इसे छोड़ कर."

"तुम ने बताया ही नहीं. भाभी के मायके हम भी चल देते." मंत्रीपुत्र हर्षवर्धन बोला.

"बरखुरदार, तुम्हें तो चमचमाती सड़कें देखने की आदत है. तुम्हारे पिताजी के आने की सूचना मिलते ही सड़कों की मरम्मत और साफसफाई शुरू हो जाती है

ससुराल का रास्ता गलियों से हो कर
ा है. कहां जाते तुम?"

जयति की क्रोधाग्नि में घी पड़ गया,
सहदेव इसलिए नहीं आया कि कुटिया
घर को अपनी ससुराल कहते उसे
ा महसूस होती. किसी ने ठीक ही कहा
ार्थिक स्तर समान न हो तो जीवन की
ा धारा में व्यक्तिक्रम आते हैं.'

ार उस की मनस्थिति से अनभिज्ञ दोनों
हंस रहे थे. हर्षवर्धन कह रहा था,
गलियां दिखा दो, पिताजी से कह कर
ोंद्धार करा दूंगा."

"चलो, खूब हंस लिए, अब खाना
ा हैं. देखो जयति, खाने का क्या इंतजाम

जयति वहां से भाग जाना चाहती
इसलिए तुरंत भीतर चली गई.
शिष्ट व्यंजनों से मेज भरी थी. मां ने
ा सामग्री स्नेह से दी थी, पर कृष्ण की
पर सुदामा के चावल रखने का उस को
स नहीं हुआ. चुपचाप अपने कमरे में
आई. सोचा, बाद में बावरची को दे
.

भोजनोपरांत मंत्रीपुत्र को अतिथि-
में छोड़ कर सहदेव अपने कमरे में
ा. अचानक झोले पर नजर गई, "यह
है जयति?"

"मां ने तुम्हारे लिए खाने का सामान
ा है."

"अच्छा... तुम क्या चुपचाप हजम
जाना चाहती थी," कहता हुआ सहदेव
कचौड़ी निकाल कर खाने लगा, "वाह,
स्वाद है?"

"मत खाओ, खाना खा चुके हो. पेट
ब हो जाएगा."

"पहले क्यों नहीं दिया?"

"हर्षवर्धन को गलियों में लाते संकोच
ा था, अब सुदामा के चावल खिलाते
च न होता?"

"ओह, तुम तो बुरा मान गई. मैं नहीं
ता था, वह तुम्हारे घर आए और



मुसकान

तेरी मंद मुसकान से
फूलों के सेज बनते हैं,
मगर बिछुड़ते ही
वे अंगारे जैसे धधकते हैं.
—डा. अखिलेश्वर तिवारी

मखौल उड़ा कर कहे कि इस कुटिया के अलावा और कहीं से रिश्ता नहीं आया था क्या? खैर, यह बताओ, सरिताजी का आयोजन कैसा रहा?"

"ठीक था."

"उन के व्याख्याता बनने पर सचमुच मैं बड़ा खुश हूं. मेहनत का फल मिल गया उन्हें."

जयति खामोश ही रही.

'छोटीछोटी बातों में नाराज मत हुआ करो. जो बहुत रूठते हैं, लोग उन की परवाह करना छोड़ देते हैं. रात बहुत हो रही है, चलो सो जाएं," कहते हुए सहदेव शीघ्र ही सो गया. जयति सोचती रही, 'कैसा पति मिला है उसे, जिस के स्वभाव की परतें बंदगोभी के पत्तों की तरह खुलती ही जा रही हैं. समझ में नहीं आता, वह उसे स्नेह करता है या उपकृत करना चाहता है अथवा दुनिया को दिखाना चाहता है उस ने एक गरीब का उद्धार किया है.

इस विवाह से इन पिता, पुत्र की दहेज-विरोधी छवि बन गई थी. उसे याद है, स्थानीय समाचारपत्र में सुर्खियों में छपा

था, 'जानेमाने उद्योगपति श्री शंकर दयाल ने अपने पुत्र का विवाह एक गरीब घर में कर, दहेज न ले आदर्श प्रस्तुत किया है. उन का यह प्रयास अनुकरणीय है.'

जयति ने सोचा, इन लोगों को तो 'माया और राम' दोनों मिल गए. माया की कमी पहले ही नहीं थी, दहेज न लेने पर जयघोष भी खूब मिला.

उचित समय पर जयति को जब प्रसव-वेदना शुरू हो गई तो बूआ 'हाय नारायण, हाय नारायण' करती पूरे घर में घूमीं. फिर आवश्यक सामान कार में लदवा कर, उसे ले नर्सिंग होम के लिए रवाना हो गई. सहदेव साथ था और प्रसव पीड़ा से निश्चेष्ट होती पत्नी को धीरज बंधा रहा था.

उस ने दूसरी कार जयति की मां को लेने भेज दी थी. तुरंत ही मां और सरिता चली आईं.

"कैसी है जयति?" पहली बार सरिता का सीधा वार्त्तालाप सहदेव से हुआ.

"जी... जी.... डाक्टर कह रही हैं, आपरेशन करना पड़ेगा. सामान्य प्रसव नहीं हो सकता," सहदेव सरिता को यों अचानक बोलते देख हड़बड़ा गया. यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि उस आसन्न विपत्ति में भी वह इस वार्त्तालाप से हर्ष में डूब गया.

सरिता क्रोधवश उस से बोलती नहीं थी और वह संकोच करता था. संवादहीनता के अंत पर वह हर्षित था. तभी बूआ हांफती हुई आईं, "डाक्टर कह रही हैं आपरेशन करना ही होगा. हाय नारायण, शंकर को भी अभी ही बंगलौर जाना था."

सहदेव के हृदय में प्रस्फुटित हुई नवजात हर्ष की किरण विलुप्त हो गई. सरिता बोली, "घबराइए मत... सब ठीक हो जाएगा. इतने डाक्टर भागदौड़ कर ही रहे हैं."

"हां, मनुष्य के लिए डाक्टर ही सब कुछ होते हैं."

आपरेशन के बाद एक नर्स प्रसन्न मुद्रा में आई, "बधाई हो, जुड़वां बेटे हुए हैं."

सुनते ही सहदेव ने मारे उत्साह के निकट खड़ी सरिता के दोनों हाथ पकड़ लिए, "मौसी बन गईं आप."

सरिता और सहदेव का वह प्रथम स्पर्श था. उन कठिन क्षणों में भी सहदेव की देह में विद्युत सी दौड़ गई. उस ने महसूस किया, मनचाहे व्यक्ति के स्पर्श का प्रभाव मन पर कितना पुरजोर होता है. सरिता ने इस प्रथम पुरुष स्पर्श से महसूस किया, सहदेव के तप्त स्पर्श में एक जादू है, मोहिनी है. एकाएक उसे अब तक का संचित क्रोध ध्वस्त होता जान पड़ा.

सहसा सहदेव को ध्यान आया कि अति उत्साह में वह यह क्या कर बैठा? उस ने नजरें झुका लीं, "माफ कीजिए, मैं जरा आपे में..."

"कोई बात नहीं... कभीकभी ऐसा भी हो जाता है."

उधर मां और बूआ जयति और उस के बच्चों की सूरतें देखने को व्यग्र थीं. बच्चों के सुंदर, सलोने चेहरे देख सब ऐसे संतुष्ट हुए मानो धूप से दरकती भूमि में पानी की शीतल फुहार पड़ गई हो. पुत्रों के मुंह देख सहदेव सोचने लगा, 'कितना सुंदर उपहार दिया है जयति ने.'

सहदेव जयति से अभी बात भी नहीं कर पाया था कि मिल के 4-5 कर्मचारी बदहवास से पहुंचे. मिल में आग लग गई थी. सहदेव के पैरों तले की जमीन खिसक गई. अकेला क्या करेगा? तुरंत मिल की ओर चल पड़ा.

आगजनी का स्पष्ट कारण ज्ञात नहीं हो सका, पर नुकसान लाखों का हो गया. कपड़ों के गट्ठर के गट्ठर जल रहे थे और सहदेव विमूढ़ सा सब कुछ राख होते देख रहा था. आग पर काबू पाने में कई घंटे लग गए.

एक ओर आनंद का उत्कर्ष था तो दूसरी ओर घोर निराशा का गहन अंधकार. दोनों स्थितियों को सहदेव ने

ले झेला. तुरंत बंगलौर तार भेज दिया
ा. आगजनी की बात लिखी. ऐसे में
जातों की गाथा क्या बताते.

इधर जयति रातभर सहदेव की
क्षा करती रही. सोचा था, वह एक पल
अस्पताल नहीं छोड़ेगा, पर वह कहीं
दिख रहा था. उस ने अपने पुत्रों को
ा. एक मां की गोद में था, दूसरा बूआ

त बीच सरिता घर चली गई थी और
तल व मास्टरजी वहां आ गए थे. बस,
था तो वह, जिसे जयति व्याकुलता से
रही थी. उस समय उसे शारीरिक पीड़ा
ी नहीं हो रही थी जितनी कि
सिक. सहदेव की उपेक्षा नश्तर चुभा
थी.

जयति सोचने लगी, सच इन बड़े
ों को दूर से देखना जितना आकर्षक
रोमांचक होता है, पास से देखना
ा ही कष्टदायक. इन हृदयहीन लोगों
ए काम, पैसा, प्रतिष्ठा और बाजार में
ी जगह बनाना ही एकमात्र उद्देश्य
है. भावुकता, संवेदना इन्हें बेकार की
लगती है. दूसरे शब्दों में कहें तो
ापतियों को शोषण की आदत पड़
है. फिर चाहे शोषण मजदूर वर्ग का
उपभोक्ता का हो या पत्नी का. हां,
का मानसिक शोषण करते हैं ये लोग.
न जाने क्याक्या सोचती रही और
ल पड़ती रही.

सुबह पहुंचा
. चेहरा स्याह,
बेतरतीब.
संपन्न पति आज
या स्वांग रचा
है? जयति की
में प्रश्नचिह्न
ह बोला, "कैसी
ति?"

"पूछने की याद
ई आप को."

"मैं जरा काम में..."

"हां, वह तो है... मर जाऊंगी तो यह कह कर मेरी चिता को आग मत देना कि मैं जरा काम में व्यस्त था."

जवाब दिया सरिता ने, जो सुबह की चाय ले कर अभीअभी कमरे में प्रविष्ट हुई थी, "ऐसा बुरा मत बोल, जयति. काम सचमुच आ पड़ा था. कभी लापरवाही हुई होगी, पर आज तो काम ही ऐसा था."

"ऐसा क्या काम था?"

"था... बाद में बताएंगे. अभी अधिक सवाल नहीं," कह कर सरिता गिलास में चाय डालने लगी.

"सरिताजी का तो विश्वास कर लो, जयति. तुम यह कैसे सोच सकती हो कि ऐसी हालत में तुम्हें छोड़ कर मैं और कहीं रहूंगा. आपरेशन की बात से मेरी तो जान ही निकल गई थी," सहदेव उस को विश्वास दिलाने की चेष्टा कर रहा था.

"लीजिए, चाय पीजिए," सरिता ने सहदेव को गिलास थमाया.

एक बार पुनः उंगलियों का स्पर्श हुआ. एक कंपन सा दौड़ गया सरिता की देह में. उस ने प्रयास कर अपनी मनोदशा पर काबू पा लिया. सोचने लगी, इन से न बोलना ही ठीक था. मन में कोई हलचल नहीं होती थी. क्रोध, खीज, पीड़ा के आवरण में वह शांत तो रह पाती थी. पर यह इधर क्या हो रहा है? क्या मन में पड़े सुप्त भाव जाग उठे हैं? सहदेव को नजदीक



"मेरे सचिव महोदय, आप अपनी हिंदी में सुधार करो, उदारीकरण को उधारीकरण लिखते हो..."

से देखने पर उसे कुछ ईर्ष्या हुई जयति से.

सहदेव इतने दिनों से प्रयास करता आ रहा था जयति को पूर्ण समर्पण देने का. अब एकाएक उसे यह प्रयास निष्फल होता जान पड़ रहा था. तो क्या सरिता को पाने की चाह अभी भी बाकी है उस के भीतर?

दोनों कुछ देर अपनेअपने भावों में खोए रहे. उन के मनोभावों से अनभिज्ञ जयति को सुखद आश्चर्य हो रहा था दोनों की बातचीत शुरू हो जाने पर. सोचने लगी, इस तरह शायद वह आत्मग्लानि से छुटकारा पा सकेगी. एक पल को अपनी नाराजगी भूल कर बोली, "अच्छा लग रहा है, तुम लोगों को बोलते देख कर. साली, बहनोई में तो खूब मजाक चला करता है और यहां तुम लोग उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव बने हुए थे."

सहदेव और सरिता हंसने लगे. बोला सहदेव, "चलो, इसी बात पर तुम ने अपना गुस्सा तो थूका."

"वह तो अभी बाकी है. जम कर लड़ूंगी तुम से, तब गुस्सा उतरेगा."

"हम तैयार हैं, पर तुम पहले ताकत इकट्ठी कर लो. बिस्तर में पड़ेपड़े मैदाने जंग का आनंद नहीं लिया जाता," कह कर सहदेव ने उसे मना ही लिया.

—क्रमशः

जीवन की मुसकान



र पिताजी एक दिन भीलवाड़ा
रेलवे क्रासिंग से पटरी पार
दूसरी तरफ जा रहे थे.
ी आने वाली थी इसलिए
क बंद था पर पास से
ल जाने का रास्ता था.
जी उसी रास्ते से निकल
थे. पिताजी ने ध्यान ही नहीं
कि गाड़ी आ रही है. पटरी
स पहुंचते ही सामने गाड़ी
ख कर वह ऐसे घबराए कि
ी पर ही गिर गए. वह जैसे
ारे, एक व्यक्ति ने फुरती से
ी जान की परवाह न करते
उन्हें तुरंत पटरी पर से
लिया.

पिताजी इतना डर गए थे
न से कुछ बोला ही नहीं
हम उस अजनबी के प्रति
आभारी हैं जिस की
त, भलमनसाहत व फुरती
रण हमारे पिताजी हमारे
हैं. —रोशन छाजेड़

*

दिनों हमारी यूनिट
म्मूकशमीर के दूरदराज
म बहुल इलाके में तैनात
ातंकवादियों का खतरा
य बना रहता था.

क दिन हम कुछ साथी
यूनिट से करीब 10
ीटर की दूरी पर विद्युत
ग लगा रहे थे कि
क मेरे मित्र को 440
वोल्ट का एक गहरा झटका लगा. वह बुरी तरह जख्मी हो कर बेहोश हो गया. उस समय हमारे पास कोई ऐसा साधन नहीं था कि उसे तुरंत अस्पताल ले जाया जा सके.

गांव वालों को जब मालूम पड़ा तो वे तुरंत दौड़ेदौड़े मदद करने के लिए आए. उन्हीं के कारण हम अपने मित्र को तुरंत डाक्टरी सहायता उपलब्ध करा सके तथा अथक प्रयास के बाद उसे बचा सके. —विक्रम सरकार

*

रात को 11 बजे हम लोग अपने मकान मालिक की बेटी को लाने के लिए उस की ससुराल जा रहे थे जो लगभग 40-50 किलोमीटर दूर थी. रास्ते में हमारी वैन का पेट्रोल समाप्त हो गया. पेट्रोल पंप 15 कि.मी. दूर था. हमारे पास गाड़ी को धक्का लगाने के सिवा कोई और चारा न था. हम 4-5 लोग थे पर मई के महीने में धक्का लगातेलगाते हमारा बुरा हाल हो गया. थोड़ी दूर धक्का लगा कर हम आराम करने लगते.

तभी पुलिस की एक गाड़ी हमारे पास से गुजरी. उस में सवार पुलिसवालों ने हमारी परेशानी समझ कर अपनी गाड़ी रोकी और हमारी गाड़ी के साथ बांध दी और उसे खींचते हुए हमें पेट्रोल पंप तक पहुंचाया. उस दिन दिल्ली पुलिस ने अपने आदर्श वाक्य– 'दिल्ली पुलिस आप के साथ, आप के लिए, सदैव' को सच कर दिखाया.

—दीपक कुमार अग्रवाल



जब मैं 9 वर्ष का था तो एक बार साइकिल चलाते समय उस की चेन उतर गई. साइकिल से नीचे उतरे बिना ही मैं ने पैर से चेन चढ़ाने का प्रयास किया तो मेरे पैर का अंगूठा चेन व चक्के के दांतों में फंस गया. मैं जोरजोर से चिल्लाने लगा. तेज धूप की दोपहरी में कोई भी मेरी सहायता करने नहीं आया.

कुछ दूर पर एक साइकिल की दुकान थी. वहां काम कर रहे एक युवक ने मुझे देख लिया. तुरंत औजार ला कर उस ने चेन ढीली की और मेरे अंगूठे को सावधानी से निकाल दिया.

—आशिष कुमार हड़प●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

कई दिनों से मूंछ को ले कर मैं सोचविचार में डूबा था. ज्योंज्यों अनेक पहलुओं पर विचार किया, मेरी अपनी मूंछ गहरी चिंता का कारण बन गई. अमिताभ बच्चन बिना मूंछ के भी अच्छाखासा लगता है. पर मूंछ की बात अलग है. हिटलर की छोटी सी मूंछ ने ही सारी दुनिया में तहलका मचा दिया था. जनरल मानिक शा की मूंछ के आगे तो दुश्मन दुम दबा कर भाग गया था. कई पहलुओं का जायजा लेतेलेते विचारों के घोड़ों ने छलांगें भरीं, दुलत्तियां मारीं और मानस स्थल के ऊबड़खाबड़ में हुड़दंग मचा दिया.

सोचविचार की दुनिया में भ्रमण करने पर यह स्पष्ट हुआ कि मूंछें कई हुए भी पुरुष को वास्तव में पुरुषत्व प्रदान करती है, मर्दानगी बख्शती है.

मूंछ पालना बच्चों का खेल नहीं है क्योंकि जवानी से पहले मूंछ नहीं आती. मैं भी 30-35 साल से मूंछ का मालिक रहा हूं और इन की अपनी धाक रही है. पर कुछ दिनों से सफेद बालों ने सिर उठाना शुरू किया और मूंछ का मोह दिनबदिन कम होता गया. इसीलिए कई दिनों से इस दुविधा और असमंजस का शिकार रहा हूं कि मूंछ रखूं या न रखूं. सोचा, मेरी मूंछ राजस्थान के किसन बारी की तरह एक मीटर लंबी तो है नहीं और न ही उस की तरह मूंछ के बल पर मुझे ऊंट गाड़ी खींचनी है.

मुसीबत मूंछ की

व्यंग्य • जितेंद्र राय ज्योति

साइजों, डिजाइनों और विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होती हैं. मूंछों के धनी अपनीअपनी हैसियत के मुताबिक ऐंठ और अकड़ का दम भरते हैं. हां, राम और कृष्ण तो मूंछधारी नहीं थे, वे तो धनुषधारी और चक्रधारी थे. पर धनुष और चक्र का तो आजकल चलन है नहीं, इसलिए मूंछ धारण करना भी बड़ी बहादुरी और जोखिम का काम है. ऐसा नहीं होता तो सभी इन का भार उठा लेते.

मूंछ रखना मर्दानगी का काम तो है ही, इस के पीछे बहुत सी और मान्यताएं भी हैं. मूंछ का बाल होना इज्जत की बात है. मूंछ कट जाना नाक कट जाने के बराबर है. मूंछ पर ताव देना बड़ी हिम्मत का काम माना जाता है. इसीलिए तो सेना के जवान अकसर बड़ीबड़ी मूंछों के मालिक होते हैं. दूसरे नंबर पर आते हैं, पुलिस के सिपाही और अधिकारी. मूंछ पालना हर एक के बलबूते की बात नहीं है. मूंछ स्त्रीलिंग होते

सोचा, क्यों न मूंछ को काट कर देख लिया जाए. पर विचार आते ही झट से अंदर से प्रश्न उठा, साफ चेहरा अच्छा नहीं लगा तो? क्या फर्क पड़ता है, फिर रख लेंगे. मूंछ के बाल तो दिनरात, सोतेजागते बढ़ते ही रहते हैं, महंगाई की लकीर की तरह. निश्चय किया, कल काट ही डालूंगा.

पर दूसरे दिन दाढ़ी की सफाई के पश्चात मूंछ के करीब आते ही हाथ कांप गया और रेजर भी आगे नहीं बढ़ सका. मेरी स्थिति ठीक कुरुक्षेत्र में अर्जुन जैसी थी. रेजर हाथ से खिसकने लगा.

उसी समय हिम्मत बंधाने के लिए म[न] में एक विचार आया, क्यों न पहले मूंछ को छोटा किया जाए, ताकि वह दिखे भी और न भी दिखे. फिर एक दिन सब की नजर को धोखा दे कर उसे गायब कर दिया जाए किसी को पता तक नहीं चलेगा.

योजना पर एकदम अमल हुआ. ज[ब] 2-4 दिनों तक छोटीछोटी मूंछ को देख क[र]

यं अपने को नहीं पहचान पा रहा था
ांखें बंद कर के हमला बोल दिया.
ामस्वरूप एक साफ मैदान दृष्टिगोचर
ठीक क्रिकेट की पिच की तरह. मुझे
कि किसी और को शीशे में देख रहा
य, यह क्या कर दिया? मुंह छोटा सा
लगा तथा आत्मग्लानि ने आ घेरा. मैं
ार फिर अर्जुन की भांति विजयी हो
ी सिर ऊंचा नहीं कर सका.

आखिर हिम्मत कर आंख बंद कर के मूंछ पर हमला बोल ही दिया. परिणामस्वरूप एक साफ मैदान दृष्टिगोचर हुआ.



जैसे ही स्नानघर से निकला तो मेरी बेटी देख कर हंसने लगी. सभी बच्चे इकट्ठे हो गए. लड़के ने जो स्वयं मूंछ का मालिक है, तसल्ली दी, कई प्रकार की टिप्पणियां हुईं. पर खैर इतनी थी कि मजाक नहीं उड़ाया गया. लेकिन दफ्तर जाने की सोच कर पांव कांपने लगे. लोग क्या कहेंगे? ऐसा क्यों कर डाला? आखिर इतना बड़ा कदम किसलिए? पर अब पछताने से क्या होना था, चिड़ियां खेत चुग गई थीं.

दफ्तर में घुसते समय लोगों से नजर बचा रहा था. मुंह पर हाथ फेरने के बहाने मूंछ के मैदान को ढक रहा था. पी.ए. को बुला कर एक छोटा सा पत्र 'डिक्टेट' किया. न जाने क्यों वह कमरे से बाहर जा कर तुरंत बिना बुलाए फिर अंदर आई. मुझे शक था कि वह मूंछ की सफाई को देख नहीं पाई और अपने शक को दूर करने के लिए दोबारा कमरे में घुसी है. वह बोली कुछ नहीं, पर प्रश्न उस के चेहरे पर साफ लिखा था. हैरानी, परेशानी तथा मुसकराहट का अजीब हावभाव उस के चेहरे पर था.

बड़े साहब के कमरे में घुसा तो वह फोन पर व्यस्त थे. फोन रखते ही बोले, "कुछ अलग दिख रहे हो. हां, अब समझा, मूंछ गायब है."

एक और साथी भी देख कर हक्काबक्का रह गया. बोला, "चश्मा बदला है क्या?"

"नहीं तो," मैं ने कहा.

"फिर इतने बदले क्यों दिख रहे हो? कुछ अजीब सा लग रहा है. हां, मूंछ रफूचक्कर हो गई है. भई, बिना मूंछ के अच्छे नहीं लगते. मेरा तो सुझाव है कि फिर से रख लो, तुम्हें खूब जंचती है."

मैं दूसरे साथियों के कमरों में जाने से कतरा रहा था, पर राजगोपाल मेरे कमरे में ही आ धमका, "भई वाह, आज तो पूरे प्रोफेसर लग रहे हो, सच, मूंछ तो एक मुसीबत है. अच्छा किया, छुटकारा पा लिया."

इस प्रकार कुछ लोग मूंछ रखने के हक में थे तो कुछ इस के विरुद्ध. कुछ ने छोटी मूंछ रखने की भी सलाह दी.

किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में 3 दिन मूंछ को छुआ तक नहीं तो देखा कि कोपलें फिर फूट आई हैं.

एक साथी ने कहा, "क्या बात है, मूंछ रखने की सोच रहे हो? अरे, इस उम्र में यह शौक क्यों?"

मुझे यह सोच कर रोना आया कि यह शख्स मुझे 30 साल से मूंछ के साथ देख रहा था और इस के भेजे पर मेरी मूंछ का तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा. मूंछ के अस्तित्व तक की इसे खबर नहीं थी.

सुझावों का तांता बंधा रहा. मूंछ के खिलाफ और हक में वोट बढ़ते रहे साथसाथ बढ़ता रहा मेरा धर्मसंकट. मूंछ के रहते मैं ने कभी उस का बाल बांका नहीं होने दिया, पर अब उस के चले जाने के बाद मेरा मानसिक तनाव बढ़ रहा था. जैसे मनुष्य के चल बसने के बाद उस की चर्चा अनिवार्य हो जाती है, ठीक उसी तरह जो भी आता, मेरी मूंछ का बखान करता. साल तक जब मूंछ बरकरार थी, किसी ने उस की तरफ ध्यान भी नहीं दिया, उस की तारीफ के पुल बांधने की बात तो अलग

मैं ने मूंछ में आई सफेदी देख उसे साफ कर दिया लेकिन इस मुसीबत से बचा तो दूसरी मुसीबत खड़ी हो गई. सफाचट चेहरा देख कर प्रतिक्रिया व्यक्त करने वालों और सुझाव देने वालों का तांता बंध गया. फिर तो यह हाल था कि जैसेजैसे मूंछ के खिलाफ और हक में वोट बढ़ते रहे वैसेवैसे मेरा धर्मसंकट भी बढ़ता गया.

ब मूंछ की चर्चा जैसे अनिवार्य हो गई अनिवार्य प्रश्न की तरह इस पर सब ने आजमाए.

सामाजिक जीव होने के कारण सब को रखना भी आवश्यक है. बहुत गहरे विचार के पश्चात एक ऐसा हल ला जिस से सांप भी मर जाए और भी न टूटे. इस योजना के मुताबिक कि अब मेरा चेहरा रेगिस्तान के की तरह साफ है, चिकना है, पर मेरी में हमेशा 2 जोड़ी मूंछें रहती हैं. मेरी . के पास सूची है मेरे दोस्तों की, जो उसे जबानी याद है और भलीभांति म है कि किस को छोटी, किस को मूंछ पसंद है और कौन सफाई पसंद है. छोटी मूंछ को सराहने वाला यदि कोई है तो वह मुझे फोन पर आगाह कर है और एक क्षण में छोटी मूंछ चिपका हूं. इसी तरह दिन में कई बार छोटीबड़ी मूंछ मेरे चेहरे पर शोभायमान होती रहती हैं. साधारणतया साफ चेहरा देखने का आदी हो गया हूं. पर मूंछ की जोड़ी जरूरत पड़ने पर बड़े काम आती है.

यह सब मुसीबत उठाना जरूरी इसलिए है कि इनसान की छवि, उस की शान वही है, जिसे दूसरे पहचानें. आप अपनी नजर में चाहे तीसमारखां हों, पर दूसरों की नजर में आप क्या हैं, इस का ध्यान और खयाल रखना आवश्यक है. इसीलिए मेरी मूंछ के बराबर न रहते हुए भी उस की आन, बान और शान को बनाए रखना जरूरी है, चाहे उस के लिए मुझे कितने ही जोखिम उठाने पड़ें.

खयाल रहे कि मूंछ रखने या मूंछ साफ करने से पहले सामाजिक छवि का ध्यान अवश्य रखें. बीच मंझधार यदि घोड़े बदलना चाहोगे तो मुसीबत खड़ी हो जाएगी. ●

खाओ पियो मौज करो

कहानी • शकुंतला शर्मा

"क्या हुआ मीता, कल छुट्टी पर थीं क्या? तबीयत ठीक नहीं थी?" उस की नई कीमती साड़ी पर हसरत भरी नजर डालते हुए दीर्घा ने प्रश्न किया.

"तबीयत खराब हो हमारे दुश्मनों की... हम तो 'खाओपीओ और मौज करो' के सिद्धांत में विश्वास करते हैं. बैंक में पाईपाई जमा कर, रोनी सूरत बना कर बैठे नहीं रहते. मैं पूछती हूं कि पैसा होता किसलिए है?" मीता ने कनखियों से वहीं बैठी नंदिता को देखते हुए व्यंग्य किया.

"तुम्हारी बात से हम तो पूरी तरह सहमत हैं. इस छोटे से जीवन को भी कंजूसी के कारण रोपीट कर गंवा दिया तो पैसा होना न होना बराबर है," वहीं बैठी समाजशास्त्र की व्याख्याता सुमन बोलीं.

नंदिता उठ खड़ी हुई. वह न तो मीता की आत्मप्रशंसा में रुचि रखती थी और न अपने सहयोगियों की दिखावे की बातों में.

"मीता, तुम्हारी परम मित्र तो यहां से उठ कर चली गई. हमारी बातें बुरी लगीं क्या उन्हें?" नंदिता द्वार तक भी न पहुंची थी कि दीर्घा का स्वर उस के कानों में पड़ा.

"कौन परवाह करता है ऐसे मित्रों की, और जो समय पर काम न आए, वह काहे की मित्र. तुम्हीं बताओ सुमन, जो जरूरत के वक्त मदद न करे, उसे मित्र कहा जा सकता है? कुछ रुपए ही तो मांगे थे.

ऐसा क्या हुआ जो बोलचाल तक बंद कर दी."

उस कक्ष के पीछे के गलियारे में बैठी नंदिता ने मीता की बात सुनी तो केवल मुसकरा कर रह गई. सोचने लगी कितनी सरलता से मीता सब कुछ कह जाती है और



ऊपर से उस पर बोलचाल बंद करने आरोप भी लगा रही है.

नंदिता इतनी सरलता से अपना दूसरों के सामने नहीं रख पाती थी. अंतर्मुखी व्यक्तित्व था उस का, दू ओर अपने बहिर्मुखी व्यक्तित्व उन्मुक्त व्यवहार के कारण मीता

सहयोगियों में अत्यंत लोकप्रिय थी. अब नंदिता उस की उपेक्षा का पात्र थी, पर कुछ माह पहले तक दोनों की घनिष्ठ मित्रता के चर्चे पूरे कालिज में थे. कालिज में अपना पहला दिन उस की स्मृति में आज भी वैसा ही ताजा था...



"यह कालिज है या अजायबघर," ह अपना नियुक्तिपत्र प्रधानाचार्या को खा कर प्राध्यापक कक्ष में बैठी ही थी कि ता का क्रोधित स्वर सुन कर तेजी से पीछे ड़ी थी.

"क्यों, ऐसा क्या हो गया?"

"क्या नहीं हुआ, मेरी कक्षा में आज आधी से अधिक छात्राएं बड़े ही अजीबोगरीब वस्त्रों में सज कर आई हैं, लगता ही नहीं पढ़ाई में उन का तनिक भी ध्यान है," मीता झुंझलाई.

"आप ठीक कहती हैं. ये लड़कियां यहां पढ़ने थोड़े ही आती हैं, ये तो शादी तक के खाली समय को भरने आती हैं," सुमन बोली थी.

"मैं तो कहती हूं, ऐसी छात्राओं को प्रवेश देना ही नहीं चाहिए, इस से पूरे कालिज का वातावरण खराब होता है," मीता बोली.

"ऐसी बातों से क्या लाभ, जो असंभव हैं," दीर्घा ने अपना मत प्रकट किया था, "बड़ेबड़े लोगों की बेटियां हैं. देखा नहीं, लगभग सब के पास कारें हैं."

अब नंदिता थोड़ी चौंकी थी. महिला कालिज के संबंध में उस के काफी अच्छे विचार थे. इसीलिए व्याख्याता का नियुक्तिपत्र मिलते ही वह प्रसन्नता से झूम उठी थी. उस ने उन महिलाओं की ओर मुंह कर लिया था जिन के बीच यह वार्त्तालाप चल रहा था.

"आप की तारीफ?" उस पर नजर पड़ते ही मीता ने पूछा था.

"नंदिता... भौतिकी की नई व्याख्याता, आज ही आई हूं..."

"ओह, प्रसन्नता हुई आप से मिल कर," मीता ने तपाक से हाथ बढ़ाया था.

अब नंदिता ने एक भरपूर दृष्टि अपने नए सहयोगियों पर डाली थी. अभी कुछ क्षण पहले तक जो छात्राओं के फैशन का रोना रो रही थीं, अब स्वयं फैशन की चर्चा में व्यस्त थीं.

पारदर्शी नाभिदर्शना साड़ी तथा बिना बांहों के ब्लाउज में मीता

व्याख्याता कम माडल अधिक लग रही थी. साथ ही सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग पूर्ण मनोयोग से किया गया था. सुमन मोटी सी पुस्तक में डूबी अवश्य थी. किंतु बीचबीच में वार्त्तालाप में अपना सहयोग भी देती जा रही थी. उन्होंने एक नजर घड़ी पर डाली और उठ खड़ी हुईं, "मेरी कक्षा का समय हो गया है,"

फिर बोली, "चलो नंदिता, तुम्हें भी भौतिकी विभाग दिखा देती हूं."

"कौन से चिड़ियाघर से आया है यह नया पंछी?" प्राध्यापक कक्ष से बाहर निकलते हुए मीता का स्वर दोनों के कानों में पड़ा. पर दोनों पर बात का अलगअलग प्रभाव पड़ा था. सुमन मुसकरा दी थी, वहीं नंदिता का चेहरा क्षोभ व अपमान से तिलमिला उठा था.

"क्यों, बहुत बुरा लग रहा है क्या?" नंदिता के चेहरे के बदलते भाव देख कर सुमन गंभीर स्वर में बोली, "इन साधारण सी बातों को मन से लगाओगी तो यहां काम कैसे कर पाओगी. यह तो तुम भी मानोगी कि हर नवागंतुक का स्वागत इसी प्रकार होता है. कालिज में 'रैगिंग' का अनुभव तो हुआ ही होगा."

"जी," नंदिता किसी प्रकार बोली.

"वैसे एक बात कहूं, मीता स्वभाव की बुरी नहीं है. वह जीवन को भरपूर जीती है, जीतोड़ परिश्रम करती है और जीवन का भी पूरी तरह आनंद लेती है," सुमन बोली, पर नंदिता खामोश ही रही.

जैसेजैसे समय बीतता गया नंदिता मीता को अच्छी तरह जाननेपहचानने लगी. सत्र समाप्त होतेहोते तो दोनों की मित्रता इतनी गहरी हो गई कि मीता एक दिन भी कालिज न आती तो नंदिता उखड़ीउखड़ी रहती.

"क्या हुआ, कल कालिज क्यों नहीं आई?" एक दिन मीता के कालिज में प्रवेश करते ही नंदिता ने प्रश्न किया.

"अरे वाह, तू तो प्रधानाचार्या की तरह जवाबतलब करने लगी. छुट्टियां बची हुई हैं, वैसे भी दिसंबर चल रहा है... छुट्टियां नहीं लीं तो व्यर्थ चली जाएंगी. फिर कंट्री क्लब में नववर्ष की पूर्व संध्या पर विशेष कार्यक्रम होगा, उस की तैयारी भी तो विशेष होगी. कल पूरा दिन तो खरीदारी में बीत गया," मीता स्वयं में ही खोई बोलती रही.

"क्या मिलता है तुम लोगों को नववर्ष के स्वागत के नाम पर हजारों रुपए फूंक कर?" नंदिता ने यों ही प्रश्न कर दिया.

"तुम भी आओ न इस बार, तभी तो पता चलेगा कि जीवन में भागदौड़, हायतोबा के अतिरिक्त भी कुछ है. कंट्री क्लब में सजेधजे जोड़े जब संगीत की धुन पर थिरकते हैं तो लगता है जीवन में कहीं कोई कुरूपता नहीं है."

"कंट्री क्लब में प्रवेश करते या वहां से निकलते समय तुम्हें सामने झोंपड़ियां नजर नहीं आतीं?" नंदिता ने पूछा.

"तुम्हारे जैसे लोगों में यही खराबी है...रंग में भंग डालना खूब जानते हो. एक बात साफसाफ कहूं, मेरा समाजवाद में कभी कोई विश्वास नहीं रहा. समानता की दुहाई देने वाले स्वयं अपने स्वार्थ की बात आते ही सारा समाजवाद भूल जाते हैं. सच

मीता के लिए अच्छा खाना, अच्छा पहनना और घूमनाफिरना ही जीवन का पर्याय था. वह केवल वर्तमान में विश्वास रखती थी, भविष्य की चिंता करना तो उस ने सीखा ही नहीं था. लेकिन एक अप्रत्याशित घटना ने उस की सोच ही बदल दी.



"समझ में नहीं आता किस तरह आप को धन्यवाद दूं," नंदिता से कहते हुए मीता की आंखें डबडबा आईं.

यह है कि हमारी सारी सभ्यता का धार ही शोषण है," मीता एकाएक जित हो उठी.

"मैं ने तुम से समाजवाद पर भाषण के लिए नहीं कहा था. शायद तुम मेरी न का बुरा मान गईं. मैं ने तो यों ही हास किया था."

"तो इस बार 31 दिसंबर की शाम रही हो न, कंट्री क्लब में?"

"नहीं, मेरे पति को यह सब पसंद नहीं नंदिता मुसकराई.

"लेदे कर वही एक घिसापिटा ना...हम सब मध्यवर्ग से आए हैं, पर श्यक तो नहीं कि जीवनभर मध्यवर्गीय सिकता से ही जकड़े रहें. जीवन में न कूपमंडूक बनने से ही काम नहीं ना. लोगों से मिलोजुलो, अपने बारे में ओ, दूसरों के बारे में जानो, नए संपर्क सित करो," नंदिता को समझाने के लिए मीता ने अपनी तरफ से अनेक तर्क प्रस्तुत किए.

"यह संभव नहीं है मीता, सच पूछो तो इस सारी तड़कभड़क के बीच मुझे बहुत घुटन महसूस होती है," नंदिता ने बात को वहीं समाप्त करने का प्रयत्न किया. तभी अगली कक्षा के लिए बजने वाली घंटी ने उसे उबार लिया और वह अपनी कक्षा की ओर चल दी.

एक दिन मीता अपने कार्य में व्यस्त थी कि प्रयोगशाला सहायक राजन ने उस से पूछा, "नंदिताजी कहां मिलेंगी?"

"अपनी कक्षा में होंगी, क्यों कोई खास कार्य है क्या?"

"बैंक गया था. उन्होंने अपनी

पासबुक लाने के लिए कहा था," राजन ने आने का प्रयोजन बताया.

"बस, इतनी सी बात है. पासबुक मुझे दे दो...नंदिता के आने पर दे दूंगी."

"हां...यह ठीक रहेगा. मैं एक बार प्रयोगशाला में चला गया तो सब भूल जाऊंगा. फिर कहीं पासबुक इधरउधर हो गई तो व्यर्थ ही परेशानी होगी," कहते हुए राजन ने पासबुक वहां रख दी और चला गया.

मीता ने आसपास नजर दौड़ाई, पूरा कक्ष लगभग खाली था. दूसरे कोने में गणित के प्राध्यापक अपने कार्य में व्यस्त थे. मीता नंदिता की पासबुक खोल कर देखने का लोभ संवरण न कर सकी.

पर पासबुक खोल कर देखते ही मीता की आंखें खुली की खुली रह गईं. केवल 2 वर्ष हुए थे नंदिता को कालिज की नौकरी करते और बैंक में उस के डेढ़ लाख रुपए जमा थे. मीता सोचने लगी, एक वह है, 10 वर्ष से कालिज में है, पर माह का अंतिम सप्ताह आतेआते बैंक में आवश्यक न्यूनतम राशि के अतिरिक्त कुछ भी नहीं बचता. सब ग्रहों का फेर है.

कुछ देर वह वैसे ही निराशा की अवस्था में बैठी रही. पर एकाएक उस के मस्तिष्क में कुछ कौंधा और उस का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा. कितने समय से मीता और उस के पति पैसा जुटाने का प्रयत्न कर रहे थे. केवल 2 वर्ष पुरानी कार बेहद सस्ती मिल रही थी. यहां उस की अपनी मित्र के पास इतना पैसा है. पता नहीं नंदिता से पैसा लेने की बात उस के दिमाग में पहले क्यों नहीं आई.

कब नंदिता उस के पीछे आ कर खड़ी हो गई, उसे पता तक नहीं चला.

"क्या है मीता, इस तरह पासबुक को क्यों घूर रही हो?" नंदिता ने मुसकराते हुए पूछा.

"नहीं...कुछ नहीं...यों ही देख रही थी. राजन तुम्हारी पासबुक दे गए थे," मीता ने घबराते हुए कहा. पर जब देखा, नंदिता ने उस ओर ध्यान भी नहीं दिया तो वह सामान्य हो गई.

"नंदिता, तुम तो बड़ी छिपी रुस्तम निकलीं, तुम्हारे जमा खाते में डेढ़ लाख रुपया है, तुम ने कभी बताया ही नहीं," मीता बोली.

"इस में बताने जैसा क्या था मीता," नंदिता मुसकराई.

"मैं सब समझती हूं...तुम ने सोचा होगा कि कहीं मीता कुछ मांग न बैठे."

"कैसी बातें करती हो...इतनी ओछी बात तुम ने सोच भी कैसे ली. पैसा क्या हम दोनों की मित्रता से अधिक मूल्यवान है," नंदिता ने बिना सोचेसमझे कह दिया.

"तुम्हारे जैसी सहेली तो सब को मिले," मीता मुसकराई.

"व्यर्थ ही औपचारिकता निभाने के लिए प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं है," नंदिता बोली.

"मैं औपचारिकता नहीं निभा रही... तुम नहीं समझोगी कि तुम ने मेरे मन का बोझ कितना हलका कर दिया है," मीता विनम्र स्वर में बोली.

"क्या कह रही हो तुम?"

"मुझे 30 हजार रुपयों की सख्त जरूरत है. ऐसे समय में तुम्हीं मेरी सहायता कर सकती हो."

"30 हजार? पर तुम्हें इतने सारे पैसों की क्या आवश्यकता आ पड़ी?"

"एक कार बहुत सस्ती मिल रही है. यों हम लोगों ने अधिकतर पैसे का प्रबंध कर लिया है, बस 30 हजार की ही कमी पड़ रही है."

"ठीक है, मुझे थोड़ा समय दो. अपने पति से पूछ लूं, फिर तुम्हें सूचित करूंगी," नंदिता ने उत्तर दिया.

"बड़े दकियानूसी विचार हैं तुम्हारे. अपनी कमाई के पैसे के लिए पति से अनुमति लेने की क्या आवश्यकता है?"

"क्या कह रही हो...आपसी विश्वास

ांपत्य जीवन की आधारशिला है. यदि पने धन को मनमाने ढंग से खर्च करने धिकारिणी हूं तो मेरे पति सुबोध को अपने ढंग से धन खर्च करने का पूर्ण कार है," नंदिता बोली.

"नहीं, घर चलाने का भार वहन ा पुरुष का कर्तव्य है. उसे पत्नी से इस में किसी सहयोग की अपेक्षा नहीं ी चाहिए," मीता ने अपना मत प्रकट ा.

"कमाल है, एक ओर तो तुम लाओं की स्वतंत्रता की दुहाई देती हो, ी ओर परिवार में अपनी भागीदारी वीकार नहीं करतीं. जब पत्नी पति से ा करती है कि वह घर चलाने में उसे ोग दे तो फिर वह आर्थिक क्षेत्र में ोग से मुंह कैसे मोड़ सकती है?"

"रहने दो, मैं इस समय बहस के मूड में हूं. तुम्हारे घर की बात तुम जानो पर ति ने आज तक कभी मेरी कमाई का बकिताब नहीं मांगा," मीता ने गर्व से

"हम सामान्य परिस्थितियों में केवल व्यक्ति की कमाई से घर चलाते हैं. नहीं कब यहां से मेरे पति का ांतरण हो जाए और मुझे दूसरी जगह पड़े. वहां कैसी नौकरी मिले, मिले भी ीं," नंदिता बोली.

"तो क्या सुबोध का स्थानांतरण होने म नौकरी छोड़ कर चली जाओगी?"

"जाना ही पड़ेगा. हमारा बेटा न मेरे बिना रह सकता है, न सुबोध ंदिता हंसी.

'तुम्हारी तो हर बात ही विचित्र है. इतनी अच्छी नौकरी छोड़ कर जाने त कोई सोच भी कैसे सकता है. मैं चलती हूं... थोड़ा काम है. मेरी ूलना मत," कहती हुई मीता कक्ष से चली गई.

के जाते ही नंदिता सोच में डूब गई. में धन के लेनदेन से समस्याएं ही



इक और जिंदगी

जीना जो चाहते थे
कब की दफन कर चुके,
इक और ही जिंदगी
जीते चले गए.
—कांता अरोड़ा

उत्पन्न होती हैं. अतः यथासंभव वह इस पचड़े में नहीं पड़ती थी. सोचा, फिर भी सुबोध से वह बात करेगी.

खाने की मेज पर नंदिता को स्वयं में ही खोए देख सुबोध ने प्रश्न किया, "क्या बात है, बड़ी गंभीर लग रही हो?"

"मैं पिछले सप्ताह बैंक गई थी तो अपनी पासबुक वहीं छोड़ आई थी," नंदिता बोली.

"तो क्या हुआ, कल लेती आना," सुबोध ने पानी का गिलास उठाते हुए कहा.

"वह बात नहीं है, बैंक वालों ने मेरी पासबुक एक कालिज के कर्मचारी के हाथों भेज दी थी. मैं कक्षा में थी, अतः वह मेरी पासबुक मीता को दे कर चला गया.

"ठीक है, पासबुक तुम्हें मिल तो गई न?"

"वह तो मिल गई, पर मीता ने उसे खोल कर देख लिया."

"तो देख लेने दो, तुम्हारा क्या बिगड़ता है? हम सब जानते हैं कि दूसरों का पत्र खोल कर पढ़ना या अन्य किसी व्यक्तिगत जानकारी को प्राप्त करने का प्रयत्न करना शिष्टाचार के विरुद्ध है. पर

भला कितने लोग हैं जो शिष्टाचार का पालन करते हैं."

"बात यह भी नहीं है. तुम अच्छी तरह जानते हो कि ऐसी मामूली बातें मुझे विचलित नहीं करतीं. हुआ यह कि मीता ने जब देखा कि मेरे खाते में इतनी बड़ी रकम जमा है तो उस ने तुरंत ही 30 हजार रुपयों की मांग कर दी."

"देखा, मैं ने पिछले 2 महीने में कितनी बार कहा है कि अपने खाते में इतनी रकम मत रखो, कहीं और निवेश कर दो, पर तुम सुनती कहां हो," सुबोध ने कहा.

"यह कार्य तो तुम भी कर सकते थे. मैं ने तुम से कहा भी था, पर तुम्हारे पास तो किसी काम के लिए समय ही नहीं है."

"अब इस बहस का कोई अर्थ नहीं है. अब तो यह सोचो कि तुम करना क्या चाहती हो?" सुबोध ने समझाने का प्रयत्न किया.

"वही तो मैं तुम से पूछ रही हूं. मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है."

"पैसे के लेनदेन के बीच में आने पर मित्रता समाप्त होते देर नहीं लगती. मेरे विचार से तो मित्रों को आर्थिक लेनदेन से कोसों दूर रहना चाहिए," सुबोध ने अपना निर्णय सुनाया.

"लेकिन आवश्यकता के समय कोई अपने मित्रों से सहायता नहीं मांगेगा तो क्या गैरों के सामने हाथ पसारेगा?" नंदिता ने आश्चर्य प्रकट किया.

"आवश्यकता को पहचानना सीखो. मीता तुम से अधिक कमाती है. पति की कमाई भी अच्छीखासी है. पर वे लोग जिस तरह की जीवनशैली अपनाए हुए हैं, उस के लिए कोई भी रकम छोटी पड़ेगी. मनोरंजन के नाम पर होटलों, क्लबों के चक्कर लगाना, सारा वेतन किस्तों में सामान खरीदने में लुटा देना और फिर आवश्यकता के नाम पर मित्रों के सामने हाथ फैलाना... इसे तुम क्या कहोगी?" सुबोध ने अपनी बात स्पष्ट की.

"तुम्हारी बात से मैं पूर्णतया सहमत हूं. मुझे इस बात की तनिक भी आशा नहीं है कि एक बार रकम देने पर सरलता से वापस मिलेगी. फिर 30 हजार इतनी छोटी रकम भी नहीं है कि मैं दे कर भूल जाऊं," नंदिता ने सोचते हुए कहा.

"ऐसा करो, 10 हजार दे दो."

"नहीं, सुबोध, तुम्हीं तो कहते हो हमें 'नहीं' कहना सीखना चाहिए. मैं यह साहस जुटाऊंगी," नंदिता ने दृढ़ता से कहा.

"चलो, देर से ही सही, पर तुम दुनियादारी समझने तो लगी हो," सुबोध मुसकराया.

"तुम्हें हंसी सूझ रही है, यहां जान पर बनी है... गले से खाना भी नहीं उतर रहा."

जीवन का रहस्य

जीवन का रहस्य भोग में नहीं है, अनुभव के द्वारा शिक्षा प्राप्ति में है.

—स्वामी विवेकानंद

नंदिता द्वारा 30 हजार की धनराशि देने में अपनी असमर्थता जताते ही मीता का व्यवहार ही बदल गया. अब वह नंदिता की निंदा करने का कोई अवसर हाथ से न जाने देती.

एक दिन नंदिता बड़ी हड़बड़ी में कालिज पहुंची. घर में मेहमान आए हुए थे और सुबह की बस से ही जाने वाले थे. अतः कालिज पहुंचने में लगभग एक घंटे की देर हो गई. वहां पहुंची तो देखा, लगभग सभी प्राध्यापिकाएं कहीं जाने को तैयार हैं.

"कहां जा रही हैं आप सब?" नंदिता ने उन्हें देखते ही प्रश्न किया.

"तुम्हें नहीं मालूम... मीता सपरिवार एक गंभीर दुर्घटना की शिकार हो गई है. कुछ देर पहले प्रधानाचार्या के पास फोन आया था," किसी ने कहा.

"मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम. जरा

कए न, मैं भी साथ चलूंगी. प्रधानाचार्या
कह कर आती हूं," कहती हुई नंदिता
हवास सी प्रधानाचार्या के कक्ष की ओर
ी.

"मैं न कहती थी, नंदिता अवश्य
एगी. भला छुट्टी मिलने का अवसर कोई
से गंवाता है." उस अवस्था में भी एक
यापिका का व्यंग्यपूर्ण स्वर उस के कानों
कराया.

धानाचार्या ने सभी को न केवल जाने
अनुमति ही दी थी बल्कि कालिज की
ो बस की व्यवस्था भी कर दी थी.

"तुम आ गईं नंदिता, मैं ने सोचा
यद तुम छुट्टी पर हो." उस को देखते ही
नाचार्या ने राहत की सांस ली.

"आज जरा देर हो गई," नंदिता
चाई.

"वह सब छोड़ो और मेरी बात ध्यान
ुनो. मीता व उस का परिवार गंभीर
टना का शिकार हुआ है. उस के पति व
ी दोनों ही गहन चिकित्सा कक्ष में हैं.
ब वहां से चली, तब तक किसी को
नहीं आया था. चोट मीता को भी
है, पर वह होशोहवास में है और
रे से बाहर है," वह बोलीं.

"मुझे सचमुच बड़ा खेद है, मैं भी उसे
जाना चाहती हूं," नंदिता बोली.

"केवल देखने से काम नहीं चलेगा.
को सहायता की आवश्यकता है. उन
ोई करीबी संबंधी यहां नहीं है. सब से
बात तो यह है कि चिकित्सा के लिए
का कोई प्रबंध नहीं है. तुम तो जानती
हो, मीता की जीवनशैली को...
ताल वाले 10 हजार रुपए की अग्रिम
लिए बिना तो उन्हें भरती करने को
नहीं थे.

"मीता ने मुझे फोन से सूचित किया
तुरंत वहां पहुंची. अग्रिम राशि जमा
ई. पर मेरी भी अपनी सीमा है और
नुसार तो एक माह के वेतन से
क अग्रिम राशि हम भी नहीं दे
सकते," प्रधानाचार्या ने अपनी बात
समाप्त की.

"आप चिंता मत कीजिए, मैं सब
संभाल लूंगी," नंदिता बोली.

"मुझे पता है, इसीलिए तो मैं तुम से
कह रही हूं. अधिकतर प्राध्यापिकाएं तो
मीता को देखने के बाद फिल्म देखने या
खरीदारी करने का कार्यक्रम बना भी चुकी
होंगी," वह बोलीं.

"जी, तो मैं चलूं?" नंदिता ने अनुमति
ली.

"हां... कालिज का चौकीदार सुखराम
अभी अस्पताल में है. जब वह घर जाएगा
तो नेकचंद उस का स्थान ले लेगा," उन्होंने
बताया.

नंदिता और अन्य प्राध्यापिकाओं को ले
कर बस चली तो हंसीमजाक का दौर प्रारंभ
हो गया. लगता ही नहीं था कि वे गंभीर
रूप से घायल मीता के परिवार को देखने
जा रही हैं. प्रधानाचार्या का अनुमान गलत
नहीं था, सभी ने आननफानन में इस
अनायास मिली छुट्टी का आनंद उठाने का
कार्यक्रम बना डाला था.

"क्या बात है नंदिता, बड़ी गंभीर
लग रही हो?" उसे गुमसुम बैठे देख सुमन ने
पूछा.

"कुछ नहीं... यों ही मीता की दुर्घटना
के संबंध में सोच रही हूं."

"भूल जाओ सब और जो क्षण सामने
है, उस का आनंद उठाओ. विपत्ति, दुर्घटना,
मृत्यु इन सब के बीच जीवन अपनी ही गति
से चलता रहता है," दीर्घा ने जीवन के प्रति
अपना दृष्टिकोण प्रकट किया.

नंदिता केवल मुसकरा कर रह गई,
'अच्छा जीवनदर्शन है. वैसे भी हम
पलायनवादी संस्कृति में ही तो विश्वास
करते हैं,' नंदिता ने सोचा.

तभी अस्पताल आ गया. वहां
मिलनेजुलने वालों का समय समाप्त हो
गया था. बहुत मिन्नतों के बाद अस्पताल
वालों ने मिलने की अनुमति दी.

उन सब को देखते ही मीता की आंखें आशा और विश्वास से चमक उठीं. कुछ देर तक सभी ने सहानुभूति प्रकट की, आवश्यकता पड़ने पर सहायता प्राप्त करने की बात की और एकएक कर मीता से विदा ली. उस के पति व बच्ची को गहन चिकित्सा कक्ष में देखने की अनुमति नहीं थी. जब सभी चली गईं तो अकेली नंदिता मीता के पास पड़े स्टूल पर बैठ गई.

"तुम नहीं जा रहीं नंदिता?" मीता ने कमजोर स्वर में पूछा.

"नहीं, मैं यहीं हूं. पता नहीं कब क्या आवश्यकता पड़ जाए," नंदिता ने एक ओर बैठे ऊंघ रहे सुखराम पर दृष्टि डाली.

अब तक मीता के मन में एकत्रित दुख आंखों की राह बह चला था.

"यह क्या है मीता, सब ठीक हो जाएगा, इस तरह घबराने से कुछ नहीं होगा," नंदिता बोली.

"मनीष और वत्सला को बचा लो, नंदिता, दुर्घटना के बाद उन दोनों ने न तो आंखें खोली हैं, न ही एक भी शब्द बोला है. उन्हें कुछ हो गया तो मैं जीतेजी मर जाऊंगी."

"यहां चिकित्सक जीजान से प्रयत्न कर रहे हैं. मनीष और वत्सला दोनों ठीक हो जाएंगे, चिंता मत करो," कहने को तो कह दिया नंदिता ने, पर वह स्वयं भी बहुत घबराई हुई थी.

फिर बोली, "मैं जरा डाक्टरों से पूछ कर आती हूं. कोई आवश्यकता हो तो सुखराम से कहना," कहती हुई नंदिता गहन चिकित्साकक्ष की ओर चली गई. वहां कोई डाक्टर तो नजर नहीं आया, पर एक नर्स मेज के पास बैठी फाइल में व्यस्त थी.

"आज सुबह ही यहां मनीष कुमार व उन की बेटी को भरती किया गया है. अब उन की दशा कैसी है?" नंदिता ने प्रश्न किया.

"आप क्या उन की रिश्तेदार हैं?" नर्स ने प्रश्न किया.

"नहीं, मैं उन की मित्र हूं."

"तो फिर उन के संबंधियों को सूचित कर दीजिए. मनीष कुमार की दशा काफी चिंताजनक है. कोई निकट संबंधी आ जाए तो तुरंत डाक्टर से संपर्क करने को कहिए. मस्तिष्क की जांच का कार्य काफी खर्चीला है, शायद इसीलिए डाक्टर हिचकिचा रहे हैं."

"लेकिन सिस्टर, संबंधियों के आने में तो 2-3 दिन तो लग ही जाएंगे. तब तक..."

"तब तक इलाज चलता रहेगा, मेरा मतलब है, जांच आदि..."

नर्स से बात कर के नंदिता और घबरा गई. शीघ्रता से बाहर आई और सुबोध को फोन पर सूचित किया.

"क्या हुआ नंदिता, कब से अस्पताल में हो?" सुबोध ने आते ही प्रश्न किया.

"सुबह कालिज पहुंचते ही दुर्घटना का समाचार मिला. सभी प्राध्यापिकाएं भी

उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोगों के लिए गरम पानी से स्नान सुरक्षित

वाशिंगटन के विशेषज्ञों के अनुसार गरम पानी के टब में डुबकी मारना बहुत से उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है. हालांकि डाक्टरों को इस बात का डर है कि इस से दिल का दौरा पड़ सकता है. हृदय धमनी के संकुचन से पीड़ित 15 आदमियों को 40 डिग्री सेंटिग्रेड गरम पानी में 15 मिनट तक रखने पर पाया गया कि उन पर कोई प्रतिकूल असर नहीं हुआ. लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि गरम पानी से स्नान हमेशा ही सुरक्षित है परंतु यह उतना प्रतिकूल भी नहीं है जितना पहले समझा जाता था. गरम पानी के प्रतिकूल प्रभावों के बारे में कुछ ज्यादा ही बढ़ाचढ़ा कर कहा जाता रहा है.

ई थीं, पर औपचारिकता निभा कर
ी गईं. 10 हजार की अग्रिम राशि भी
नाचार्या ने जमा कराई थी. मीता के
तो कुछ है ही नही. नर्स कह रही थी,
की चिकित्सा में लगभग 50 हजार
खर्च आएगा. क्या करूं सुबोध, ऐसी
स्था में मैं मीता को छोड़ कर नहीं जा
," अब नंदिता सिसकने लगी.

"कुछ तो है न हमारी पत्नी में कि हमें
पर गर्व है," सुबोध ने मुसकरा कर
वरण को हलका बनाने का प्रयत्न
ा. "अब स्वयं को संभालो. चलो, देखते
नीष को," कहता हुआ सुबोध नंदिता
ाथ गहन चिकित्साकक्ष की ओर चल

2 दिन नंदिता व सुबोध ने अस्पताल में
बता दिए. दोनों कभी चिकित्सकों के
तो कभी दवाइयों की दुकान पर या
विभिन्न प्रकार की जांच करवाने के
अस्पताल के एक विभाग से दूसरे
ग के चक्कर लगाते रहे.

"नंदिता, आज तुम घर जाओ,
स को भी साथ ले जाओ, नहाधो कर
तरह आराम कर के आना. तुम्हारे
के बाद मैं भी घर जा कर आराम
ा. अस्पताल के वातावरण में तो मन
ने लगता है," तीसरे दिन सुबोध ने

'ठीक है, शायद आज मीता को भी
ाल से घर जाने की अनुमति मिल
' नंदिता ने अपने कपड़े वगैरह
ते हुए कहा.

ाभी डाक्टरों के समूह ने वहां रोगियों
भाल के लिए प्रवेश किया.

'आप के लिए अच्छा समाचार है
ी, आप आज घर जा सकती हैं. आप
व बच्ची भी अब खतरे से बाहर हैं.
पूरी तरह जांच कर ली गई है.केवल
पति के दाहिने पैर तथा पुत्री के बाएं
र 2-3 माह तक प्लास्टर चढ़ा
' डाक्टर ने कहा.

समझ में नहीं आता, किस तरह आप
को धन्यवाद दूं. आप लोगों ने तो मेरे पूरे
परिवार को जीवनदान दिया है," मीता की
आंखें डबडबा आईं.

"यदि आप किसी को धन्यवाद देना
ही चाहते हैं तो अपनी मित्र तथा उन के
पति को दीजिए, जिन्होंने आप के परिवार
को बचाने के लिए दिनरात एक कर दिया."

नंदिता घर जाने लगी तो मीता फूटफूट
कर रो पड़ी. "क्या हुआ? मैं तो 2 घंटे में
लौट आऊंगी," नंदिता बोली.

"वह बात नहीं है. मुझ में तो इतना
संयम भी नहीं है कि स्वयं को अपनी ही
निगाहों में गिरने से बचा लूं. मैं ने तुम से
कैसा दुर्व्यवहार किया, क्योंकि मैं अपने
लिए सुख के साधन जुटाने को ही जीवन का
ध्येय समझ बैठी थी. आशा है, तुम मुझे
क्षमा कर दोगी."

"मित्रों के बीच ऐसी औपचारिकता
शोभा नहीं देती, मीता."

"यह औपचारिकता नहीं, मन की
गहराई से निकले शब्द हैं. अपने संबंधी तो
सूचना मिलने पर भी पास नहीं फटके. तुम
ने व सुबोध ने न केवल भागदौड़ की, पानी
की तरह पैसा भी बहाया. 25 हजार की
राशि कम नहीं होती. पता नहीं, कब तक
हम तुम्हें लौटा पाएंगे," मीता बोली.

"यह समय ऐसी बातें करने का नहीं
है. पर यह बात तुम्हें कैसे पता चली?"

"मैं ने सिस्टर से पूछा था. हमारी
आर्थिक स्थिति तो तुम से छिपी नहीं है.
जीवन में पहली बार स्वयं पर शर्म आ रही
है. एक तरफ तुम हो, जो इतनी बड़ी राशि
हम पर व्यय कर पाई हो. दूसरी ओर हम हैं
जो इस आकस्मिक दुर्घटना के बाद अपनी
चिकित्सा कराने की स्थिति में भी नहीं थे,"
कहते हुए मीता फूटफूट कर रो पड़ी.

"ऐसा नहीं सोचते, मीता. तुम्हें
अपनी भूल का एहसास हो गया. जब जागे
तभी सवेरा, धीरज रखो, सब ठीक हो
जाएगा," नंदिता बिलखती मीता को शांत
कराने का प्रयत्न करने लगी. ●

मारे स्कूल की गणित की अध्यापिका प्रायः देर से
ल आती तथा प्राचार्य कक्ष में
ाक्षर करते समय कोई न
बहाना बना देती. कभी
ती बच्चा बीमार है, कभी
को बीमार बताती.

एक दिन वह 20 मिनट देर
ाई तथा मुझ से कहने लगी,
े अफसोस है मैं देर से आई,
भर मेरे पति को बहुत तेज
र रहा.''

तभी उन के पति प्राचार्य-
में ही उन से मिलने आ



पासा पलट गया

, शायद कोई जरूरी काम
वह अध्यापिका बहुत
त हुई. —वी.के.जैन

*

मित्र के परिवार वाले उस
ी शादी किसी ऐसे परिवार
ना चाहते थे जिस में सिर्फ
ड़की हो ताकि उस की
संपत्ति उन के बेटे को मिले.
स मित्र के लिए रिश्ते के
स्ताव आए. लड़कियां भी
थीं और दहेज भी पर्याप्त
ें मिलने वाला था पर वहां
से इनकार कर उस के
र वालों ने एक ऐसा ही
खोज लिया. लड़की
व कमसिन थी. दहेज भी
न मिला पर वह मांबाप की इकलौती संतान थी.

किंतु शादी के एक साल बाद ही मित्र की ससुराल में एक पुत्र पैदा हुआ. वहां खूब खुशियां मनाई जा रही थीं जबकि मित्र के परिवार वाले दुखी थे क्योंकि अब संपत्ति का हकदार पैदा हो गया था. —वेंकट रमण

*

मैं अपने मित्र के साथ कलकत्ता घूमने गया था. वापसी में हम ट्राम द्वारा हावड़ा स्टेशन आ रहे थे. ट्राम में बैठे एक व्यक्ति ने मेरे मित्र से बंगला भाषा में कुछ पूछा पर हमें बंगला तो आती नहीं थी. रोब जमाने के लिए मित्र ने कह दिया, ''आई डोंट नो बंगला.''

फिर उस व्यक्ति ने वही सवाल अंगरेजी में पूछा. अब उस के चेहरे का रंग उड़ गया. वह बगलें झांकने लगा क्योंकि उसे अंगरेजी भी थोड़ी ही आती थी. —राजेश छाबड़ा

*

शहर में पढ़ाई के दौरान मैं अपने दोस्त के साथ एक कमरे में रहता था. सुबह देर तक सोना मेरे दोस्त की आदत थी. मैं ही रोजरोज उसे जगाया करता था, इसी कारण कई बार कालिज जाने में भी देर हो जाती थी. जब भी मैं उसे जगाता वह आधी नींद में पूछता, ''कौन है बे?'' मैं बड़े रोब से कहता, ''तेरा बाप.''

एक रोज सुबहसुबह अचानक मेरे पिताजी शहर आ गए. मैं नहाने के लिए बाहर गया था और दोस्त रोज की तरह खर्राटे ले रहा था. पिताजी ने आ कर उसे जगाया तो वह दूध लेने चला गया.

पिताजी थके हुए थे. बिस्तर पर लेटते ही उन्हें नींद आ गई. कमरे में आते ही मैं ने



आवाज लगाई, ''अबे उठ.''

पिताजी ने नींद में पूछा, ''कौन है?'' मैं ने आदतवश कह दिया, ''तेरा बाप.''

यह सुनते ही मेरे पिताजी उठ कर बैठ गए. मैं अचानक उन्हें देख कर घबरा गया. तभी मेरा दोस्त दूध ले कर लौटा और मुसकराने लगा.—समीर पराते •

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



कलकत्ता :

लेख ● बिमल राय

हड़प्पा से ले कर हावड़ा (कलकत्ता) तक की लंबी यात्रा में नगर विविध युगों की सभ्यता को उजागर करते रहे हैं. वैसे भारत में नगरीकरण की गति काफी धीमी रही है, फिर भी आधुनिक काल में नगरों की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है. भारत इस दौड़ में पीछे नहीं है. गांवों से शहरों में लोगों का पलायन जारी है और इस के साथ ही नगरों का जीवन भी विविध समस्याओं से घिरता जा रहा है. आज बढ़ती जनसंख्या की सुखसुविधा के लिए विकास की अंधी दौड़ लगी है, भले ही इस की दिशा सही न हो. आबादी, उद्योगधंधों तथा मोटरगाड़ियों की अंधाधुंध बढ़ोतरी के कारण जागरूकता के अभाव में नगरों का प्रदूषण इस कदर बढ़ रहा है कि सरकार व नगर नियोजकों को नगरों का आकार कानूनन सीमित करने की बात सोचनी पड़ रही है.

एक बार राजीव गांधी ने कलकत्ता को 'मरता हुआ नगर' कहा था. तब यहां के लोगों, खास कर बंगालियों में इस की तीखी प्रतिक्रिया हुई थी. पर पुराने ढहतेगिरते मकान, बरसात में घुटनों तक खड़ा पानी, उबड़खाबड़ सड़कें, घिसी हुई पटरियों पर बैलगाड़ी की तरह रेंगती और कभीकभी अड़ियल टट्टू की तरह पटरी से उतर कर खड़ी हो जाती ट्रामें, बिजली के अभाव में



दूषण का मारा

क 'दड़बों' में उबलते लोग, जाम
कारण 2-2 मील तक कतारों में खड़े
जगहजगह कूड़े के ढेर आदि दृश्यों
कर कलकत्ता सचमुच एक 'मरता
र' लगता है.

लकत्ता विश्व के 10 सर्वाधिक
नगरों में से एक है. 1901 में इस की
मात्र 10 लाख थी, पर 1981 में यह
कर 91.7 लाख हो गई, जिन में 5
गों के पास सिर छिपाने की जगह
उस समय इन फुटपाथी लोगों के
10 लाख से ज्यादा लोग गंदी
में रहते थे.

इस महानगर की आबादी बढ़
करोड़ 10 लाख हो गई है और
जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर 33 हजार व्यक्ति हो गया है. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार एक स्वस्थ नगर के लिए जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर 2,500 व्यक्ति होना चाहिए. पर कलकत्ता इस की चिंता नहीं करता.

देश के अन्य राज्यों से रोजीरोटी के लिए आने वाले लोग तो यहां हैं ही, बंगलादेशी घुसपैठियों को भी राजनीतिक कारणों से यहां 'शरण' मिलती रही है. फिर जिन्हें रहने के लिए घर नहीं मिलेगा वे फुटपाथ पर रहेंगे ही और तरहतरह से प्रदूषण फैलाने में अपना 'योगदान' करेंगे ही.

कलकत्ता वायु और जल प्रदूषण से सब से ज्यादा प्रभावित है. यहां स्थित

कलकत्ता अपनी बढ़ती जनसंख्या और विकास की अंधी दौड़ के कारण विश्व के 10 सर्वाधिक प्रदूषित नगरों में गिना जाता है. उद्योगों के कारण वायु प्रदूषण के साथसाथ जल प्रदूषण भी बढ़ रहा है. यदि सरकार ने जल्दी ही इस दिशा में ठोस कदम न उठाए तो वह दिन दूर नहीं जब यहां सांस लेना भी दूभर हो जाएगा.

जुओलाजिकल सर्वे आफ इंडिया के निदेशक आशीष घोष के मुताबिक कलकत्ता में वायु को प्रदूषित करने वाले तत्त्वों की मात्रा प्रति क्यूबिक मीटर 1 हजार माइक्रोग्राम है, जबकि यह 90 माइक्रोग्राम से ज्यादा नहीं होनी चाहिए. वाहनों, उद्योगों व अन्य स्रोतों से निकल रहे कार्बन, हाइड्रोकार्बन, टेट्रएथिल,लेड, एरोमेटिक्स आदि के प्रभाव से कैंसर व सांस की बीमारियों के बढ़ने का खतरा पैदा हो गया है.

वायु प्रदूषण में वाहनों का हिस्सा 52 प्रतिशत है. जीवन स्तर में वृद्धि के साथ ही वाहनों की संख्या भी बढ़ती जा रही है और इस के साथ ही हवा में जहरीलापन बढ़ता जा रहा है. भारत में अन्य देशों की तुलना में ईंधन की गुणवत्ता घटिया है इसलिए भी वायु प्रदूषण से हम ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं.

उद्योगों के कारण वायु प्रदूषण के साथसाथ जल प्रदूषण भी बढ़ रहा है. कलकत्ता के धापा, टेंगरा और बेहला जैसे उपनगरीय अंचलों के कसाईखानों, चमड़ा प्रसंस्करण इकाइयों व रबड़ फैक्ट्रियों के कारण सांस लेना दूभर हो गया है. पिछले माह उच्चतम न्यायालय ने कलकत्ता के बेहला उपनगर क्षेत्र के 6 कारखानों को अन्यत्र हटाने का आदेश दिया था, क्योंकि आसपास की घनी बस्तियों पर इन कारखानों का प्रदूषण बहुत बुरा असर डाल रहा था.

राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर ही इस अंचल में प्रदूषण की स्थिति की जांच की थी. संस्था

सड़क के किनारे सड़ता कूड़े का ढेर : कलकत्ता नगर निगम की कार्यक्षमता का नमूना. ▼





प्रदूषण के विरोध में जलूस निकालते युवकयुवतियां : पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास.

पोर्ट में कहा गया था कि लुब्रिकेटिंग , हाइड्रोकार्बन केमिकल्स, कलकत्ता ईजिंग, क्राउन मोल्डिंग, मेल्विन एंड इंजीनियरिंग तथा कलकत्ता इंक नामक 6 कारखाने निर्धारित ज्यादा प्रदूषण फैला रहे हैं. सुप्रीम पश्चिम बंगाल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड माह के भीतर यह जानकारी देने को था कि इन कारखानों को कहां ारित किया जा रहा है.

ाज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट बिक 1992 में राज्य के 195 में से 48 नों का अवशिष्ट कचरा पर्यावरण के अनुरूप नहीं था. जल प्रदूषण क अधिनियम के पारित होने के 20 द भी केवल 25 प्रतिशत कारखाने ण संबंधी कायदेकानूनों का पालन हैं. पतित पावनी कही जाने वाली हां हुगली) का हाल यह है कि इस में ने से पुण्य जब मिलेगा तब मिलेगा, व्यक्ति चर्मरोगों से तो ग्रस्त तो हो गा. इस महानगर में पेय जल के र नहाने, कपड़े धोने जैसे कार्यों के गाजल' की व्यवस्था है. गंगा का जल सीधे घरघर पहुंचता है और बीमारियों को फैलाता है.

36 पर्यावरण संगठनों की समन्वय समिति 'कलकत्ता-36' ने हाल ही में एक प्रेस कानफरेंस में महानगर में बिगड़ती जा रही आबोहवा पर चिंता जताई थी और कहा था कि कोई भी विकास योजना शुरू करते समय पर्यावरण संबंधी पहलुओं पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए. पश्चिम बंग विज्ञान मंच ने भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए 498 स्कूलों में 'इकोक्लबों' के गठन के लिए पहल की है.

कलकत्ता से ट्राम सेवा हटाने के फैसले से भविष्य और अंधकारपूर्ण दिख रहा है और कई पर्यावरण संस्थाओं ने इस के प्रति विरोध भी जताया है. भारी घाटे, कोष के अभाव (पटरियों के नवीनीकरण के लिए) तथा परिवहन व्यवस्था सुधारने के नाम पर ट्राम सेवा खत्म करना आत्मघाती ही होगा. एक ट्राम के बदले 2 से ज्यादा बसों की जरूरत होगी, जिस से वायु प्रदूषण और बढ़ेगा.

बिजली से चलने वाली ये ट्रामें पर्यावरण ठीक रखने में सहायक हैं. यह

आश्चर्यजनक ही है कि बढ़ते प्रदूषण से घबरा कर विश्व के कई देश ट्राम सेवा शुरू कर रहे हैं, वहीं पश्चिम बंगाल में ट्रामें बंद की जा रही हैं. 1960 के दशक में दुनिया के केवल 17 नगरों में ही ट्रामें चलती थीं, वहीं 1990 के दशक में 334 नगरों में ट्रामें चलाई जा रही हैं. वियतनाम, पराग्वे और मैक्सिको जैसे देश अपने यहां फिर ट्राम सेवा शुरू करने पर विचार कर रहे हैं.

पर्यावरण शुद्ध रखने में पेड़ों का योगदान कम नहीं है. कलकत्ता में 1 वर्ग किलोमीटर में केवल 21 पेड़ हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय मानदंड 100 पेड़ों का है. वर्तमान में अधिक से अधिक सुखसुविधा जुटाने की दौड़ में महानगरवासियों को भविष्य की चिंता नहीं है. पेड़ लगाने का काम मात्र सरकारी अनुष्ठान बन कर रह गया है.

इस महानगर में सांस्कृतिक प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है. रवींद्र संगीत से दिनचर्या शुरू करने वाला बंगाली समाज तेजी से पाश्चात्य समाज की बुराइयों को ग्रहण कर रहा है. भावना प्रधान कही जाने वाली बंगला फिल्मों में भी बंबइया दृश्यों की प्रमुखता हो चली है. यहां तक कि सरकारी समारोहों में भी 'चोली के पीछे क्या है' की जिज्ञासा व्यक्त की जा रही है. कलकत्ता की सांस्कृतिक पहचान तेजी से विलुप्त हो रही है. यह तो यहां के निवासियों का दायित्व है कि वे इस पहचान को लुप्त न होने दें और साथ ही यह भी सोचें कि यहां की हवा में घुलते जहर को कैसे रोका जाए. ●

बिंब प्रतिबिंब

* एक चक्कर फिल्मी किस्म का *

हिंदी फिल्मों का जादू दर्शकों के सिर चढ़ कर बोलता रहा है. जानेअनजाने लोगों की बातचीत का अंदाज, चलने, ठनेबैठने का ढंग अपने पसंदीदा कलाकार प्रभावित हो जाता है. यदि पूरा का पूरा रिवार ही फिल्मों का दीवाना हो तो घर



की रोजमर्रा की जिंदगी कैसी हो सकती है, इस का अंदाजा तो सुनील खानवलकर के जी टीवी पर प्रसारित होने वाले सीरियल 'फिल्मी चक्कर' से लगाया जा सकता है.

सतीश शाह, रत्ना पाठक शाह, शम्मी और दो नटखट बच्चों कवीन दवे, ओंकार कपूर के परिवार में कुछ न कुछ ऐसा घटता रहता है कि देखने वालों को हंसाहंसा कर लोटपोट कर दे. सुनील बताते हैं कि उस के पास पूरे 52 एपिसोड का मसाला मौजूद है.

"आप ने निर्देशक कई रखे हैं... इस की कोई खास वजह?"

"अशोक पंडित, मनीश प्रेम, अलका मैत्रा, राजीव खंडेलवाल सब हमारे मित्र हैं. अलगअलग एपिसोड निर्देशित करने की जिम्मेदारी सौंपने का कारण एक ही है... हरेक की दृष्टि अलग है तो हर एपिसोड में दर्शकों को विविधता देखने को मिलेगी," सुनील का उत्तर था.

* सदाशिव लालू भैया के गेटअप में *

फिल्म वालों को जब भी मौका मिलता है, जानेमाने राजनीतिबाजों की खबर लेने से नहीं चूकते. आजकल उन्हें बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव में फिल्मी मसाला नजर आ रहा है. तभी तो 'जनता की अदालत' में सदाशिव अमरापुरकर ने हूबहू लालू भैया का गेटअप चुन लिया



है. यह कोई अंदाजा लगाने की बात नहीं कि सदाशिव फिल्म में भ्रष्ट नेता बने हैं. लालू भैया 'जनता की अदालत' देख कर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, यह तो पता लगने में अभी समय लगेगा, लेकिन जनता को मनोरंजन के लिए खासा मसाला मिल जाएगा.

*लौह पुरुष *

होटल हालिडे इन के रीजेंसी हाल का एक कोना ईंटों की चिनी हुई दीवार जैसा से लग रहा था. उस के आगे रोहिणी हटंगड़ी शुभ्र वस्त्रों और जंजीर में जकड़ी भारत माता बनी खड़ी हुई थी. निर्देशक हर्ष केनू के 'कैमरा' और 'साउंड' की आवाज के साथ ही जावेद अख्तर ने क्लैप दिया.

रोहिणी ने अपना संवाद बोला, ''मैं भारत माता हूं और आज मेरी कोख से जन्मे मेरे अपने बेटों ने ही मुझे गुलाम बना दिया है. क्या किसी ऐसे बेटे ने भी मेरी कोख से जन्म लिया है जो मुझे इस से आजाद करवा सके.''

इसी के साथ हाल में तेज संगीत और गोलियों का शोर गूंज उठा. ईंटों की दीवार तोड़ कर मय बंदूकों के 'लौह पुरुष' धर्मेंद्र और कमल सदाना मंच पर प्रकट हो गए. शेर जैसी रोबदार आवाज में धर्मेंद्र ने संवाद मारा, ''न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिंदुस्तान वालो, तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में.''

फिर समवेत स्वर में धर्मेंद्र और कमल ने कहा, ''भारत मां, जब तक तेरी कोख से हम जैसे लौह पुरुष जन्म लेते रहेंगे तब तक तुझे कोई गुलामी की जंजीरों में बांध नहीं सकता, मां.''

फिर दोनों ने भारत मां के इर्दगिर्द जमा भ्रष्ट लोगों पर गोलियां दागीं.

इस के साथ ही 'कट' की आवाज हुई और तालियों से हाल गूंज उठा. एक अरसे तक प्रकाश मेहरा के सहायक रहे हर्ष केनू ने इस शानदार तरीके से 'लौह पुरुष' के मुहूर्त की रस्म पूरी की.



* राधा सेठ फिर से सक्रिय *

अभिनेत्री राधा सेठ की खूबसूरती पर लगता है कि समय का कोई प्रभाव हीं पड़ा है. एक विदेशी बैंक में कार्यरत धिकारी के साथ विवाह करने के बाद उस 'शो बिजनेस' को अलविदा जरूर की थी किन इस में वह प्रबल आकर्षण है कि ारबार खींच ले आता है. इसलिए राधा ने पनी निर्माण संस्था 'निकेल ओडियन क्चर कंपनी' के अंतर्गत 'यूल लव स्टोरी' ीरियल का निर्माण किया है. 16 जुलाई से स का प्रसारण जी टीवी पर शुरू हो चुका .

राधा सेठ से मुलाकात हुई तो पूछा, क्या इन कहानियों का संबंध यूल नगर से ?"

"नहींनहीं, दरअसल हमारे इस ीरियल के प्रायोजक यूल एंड्रूज कंपनी है सलिए लव स्टोरी में यूल जोड़ लिया है. ाकी ये सारी कहानियां स्त्रीपुरुष के बीच वाभाविक आकर्षण के बारे में हैं जो ार्वभौमिक है... किसी भी नगर या गांव में नप सकता है."

"आप ने हर एपिसोड में स्वतंत्र कथा यों रखी है?"

"लोगों की अपनी व्यस्तताएं रहती . यह जरूरी नहीं कि वे हर सप्ताह ारियल देख सकें. यदि कहानी लंबी है तो ाच में एक एपिसोड छूटने से बड़ी कोफ्त ती है. मैं तो यही चाहती हूं कि कथा के त्र एक ही एपिसोड में बिखरे हों ताकि गे की चिंता छोड़ कर पूरा लुत्फ एक ही र में उठाया जा सके."

"आप ने नारी भूमिकाओं में रेणुका हाणे, असावरी जोशी, प्रीति खरे, पिका देशपांडे, सादिया सिद्दीकी आदि लिया है... स्वयं अभिनय न करने की ई खास वजह?"

"नहीं, कोई खास वजह नहीं है. लहाल तो मुझे परदे के पीछे की तिविधियों में ज्यादा मजा आ रहा है."



* संक्षिप्त टिप्पणियां *

● आमिर खान अपने गिरते कैरियर से घबरा कर अब निर्देशक भी बन गया है. वह अपनी फिल्म में अभिनय भी करेगा. उस की नायिका होगी ऐश्वर्या राय.

● अभिनेत्री शम्मी फिल्मी नृत्यांगनाओं पर एक 13 एपीसोड का सीरियल बना रही है जिस में आशा पारिख, वैजयंती माला, वहीदा रहमान, हेलन, रीना राय, जय प्रदा के साथसाथ जितेंद्र का नाम भी शामिल है.

● देव आनंद की खोज अभिनेत्री फातिमा शेख देखने में भले ही दुबलीपतली है, पर है ताकतवर. उस की ताकत देखने के लिए दर्शकों को फिल्म 'फूल और फौलाद' देखनी पड़ेगी. इस फिल्म में वह एक ऐसी पुलिस इंस्पेक्टर बनी है जो एकसाथ 4-4 खलनायकों से अकेले ही मारामारी करती है.

● लता मंगेशकर एकसाथ दो तमिल फिल्मों का निर्माण कर रही हैं. एक फिल्म का नायक प्रभु है और दूसरी का नायक कमल हासन है.



जूही सी

लेख ● विजय अग्रवाल

पिछले साल 2 ऐसी फिल्में आईं, जिन्होंने जानेअनजाने तथा चाहे-अनचाहे जूही चावला को 'नंबर वन' अभिनेत्री की दौड़ में शामिल कर दिया. पहले उस की फिल्म आई थी 'हम हैं राही प्यार के, जो बेहद सफल रही. इस में आमिर खान से अधिक जूही चावला को सराहा गया. उस की बालसुलभ चेष्टाएं, हंसता हुआ चेहरा तथा स्वाभाविक हावभावों को बच्चों ने तो पसंद किया ही, युवा और अधेड़ भी इस से अलग नहीं रहे.

इस फिल्म में जूही चावला ने जितनी साफसुथरी छवि के साथ अपनी भूमिका निभाई और जो लोकप्रियता प्राप्त की उस ने अनेक समकालीन अभिनेत्रियों को यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि शरीर से अधिक से अधिक कपड़े उतारना किसी फिल्म की सफलता का एकमात्र कारण नहीं है.

...हकती जूही चावला

इस फिल्म में जूही चावला का ...नय एक प्रकार से इस से पहले की ...म 'बोल राधा बोल' का विस्तार ही था. ...राधा बोल' फिल्म में जूही चावला ने ... की एक लड़की की भूमिका निभाई थी. ... फिल्म का गीत 'तू तू तू तू तारा...' ...ी लोकप्रिय हुआ था, और इस में जूही ...ला ने अपने चुलबुलेपन और मासूमियत ...अच्छा समन्वय प्रस्तुत किया था.

जूही चावला की लोकप्रियता पिछले ... के अंतिम दिनों में अपने शिखर पर ... गई जब उस की फिल्म 'डर' रिलीज ...हालांकि इस फिल्म की लोकप्रियता का ...शाहरुख खान को भी जाता है, लेकिन ... चावला को इस श्रेय से पूरी तरह से ...त नहीं किया जा सकता. इस में भी ... चावला की ...का अपनी पहले ...ूमिकाओं से कोई ... अलग नहीं थी. ... लेकिन इस मायने ...लग जरूर थी कि ... ने पहली बार ...ी 'ढकी हुई छवि' ...दलने की कोशिश ... जूही ने इस में ...दर्शन से परहेज ... किया, जबकि ... पूर्व की फिल्मों ...स ने इस से

...' राही प्यार के' ...वला और आमिर ...ी जोड़ी को बच्चों ...नहीं, बड़ों ने भी ...किया.



साफसाफ इनकार कर दिया था. स्वीमिंग सूट पहन कर तैरना, बरसात में भीगना तथा अन्य छोटेछोटे दृश्यों के माध्यम से जूही ने आने वाली फिल्मों में अपनी भूमिका के संकेत दे दिए.

एक बिंदु तक पहुंचने के बाद 'शायद अभिनेत्रियों को यह लगने लगता है कि अब उन के पास निभाने के लिए कोई विशेष भूमिका नहीं रह गई है. इसलिए 'दिखाने' में उन का विश्वास बढ़ता जाता है. कमोबेश यही स्थिति 'नंबर वन' की दौड़ में शामिल श्रीदेवी और माधुरी दीक्षित की भी रही. फिल्म 'खलनायक' में 'चोली के पीछे क्या है...' गीत में किया गया माधुरी दीक्षित का भड़काऊ नृत्य इसी प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है. लगता है कि जूही चावला भी इस

अभिनेत्री जूही का मासूम चेहरा व स्वाभाविक हंसी दर्शकों को भाती है. यही उस के अभिनय की विशेषता भी बन गई है. लेकिन विविधता के इस दौर में क्या वह अपनी छवि को बरकरार रख दर्शकों में लोकप्रिय रह पाएगी?

सत्य को स्वीकार कर उस रास्ते पर चल पड़ी है.

जूही चावला ने 'मिस इंडिया' बनने के बाद मार्डलिंग की दुनिया में प्रवेश किया था. अन्य अभिनेत्रियों की तरह उसे भी पहली बार मुकुल दत्त की 'सल्तनत' फिल्म में काम करने का अवसर मिला. यह फिल्म बुरी तरह असफल रही. किंतु उस की दूसरी फिल्म 'कयामत से कयामत तक' में न केवल उस की भूमिका को पसंद किया गया बल्कि यह फिल्म सुपर हिट भी रही.

यह जूही चावला की विशिष्टता कही जा सकती है कि इस के बाद जितनी भी फिल्में आती गईं, वे सभी कमोबेश हिट रहीं. पिछले वर्ष की 'हम हैं राही प्यार के' तथा 'डर' फिल्मों के अतिरिक्त 'राजू बन गया जेंटलमैन,' 'बोल राधा बोल,' 'बेवफा से वफा,' 'प्रतिबंध' तथा 'राधा का संगम' फिल्में सफल रहीं. 'कर्ज चुकाना है,' 'लुटेरे,' 'आईना,' 'दौलत की जंग' तथा 'बेनाम बादशाह' जैसी फिल्में यदि हिट नहीं रहीं तो असफल भी नहीं रहीं. 'हम हैं राही प्यार के' में भूमिका के लिए उसे सर्वश्रेष्ठ नायिका का फिल्म फेयर अवार्ड प्राप्त हुआ. 'प्रतिबंध' में निम्न वर्ग की लड़की तथा इस के बाद एक इंस्पेक्टर की पत्नी की भूमिका निभाने के लिए उसे पुरस्कृत किया गया.

जूही चावला के अभिनय के केंद्र में अभी तक उस की रोमांटिक छवि प्रधान रही है. इस दृष्टि से उस की भूमिकाओं में विविधता नहीं आई है. लेकिन भविष्य में उस की कुछ ऐसी फिल्में आने वाली हैं जिन में उस की भूमिका अभी तक की भूमिकाओं

जूही चावला : यह मासूमियत दर्शकों को अच्छी लगती है.





फिल्म 'कयामत से कयामत तक' में जूही चावला के अभिनय को सराहा गया.

इसी के साथ ही जुड़ जाती है उस के उच्चारण की स्पष्टता और स्वाभाविकता... हेमा मालिनी के उच्चारण के अंत में शब्दों की ध्वनि दब सी जाती है. श्रीदेवी के उच्चारण में अंत की ध्वनि अनायास उठ जाती है, जबकि रेखा और माधुरी दीक्षित के उच्चारण की तरह जूही चावला का स्पष्ट होता है, और उस में भाव के अनुसार बदलाव का भी अनुभव होता है. किसी भी अच्छी अभिनेत्री के लिए यह एक वरदान होता है, जो जूही चावला को मिला हुआ है.

कुछ हट कर है. भविष्य में आने वाली ुख फिल्में हैं, 'आसमान से आगे,' 'साजन घर,' 'तलाशी' तथा 'कर्तव्य.'

जूही की सफलता और लोकप्रियता बताती है कि भारतीय दर्शक भारतीय रेमोहरे वाली खिली हुई नायिका को द करते हैं. एकाध फिल्म का सफल हो ना अलग बात है, लेकिन कई फिल्मों का फल होते चले जाना दूसरी बात है. ा मालिनी, रेखा, श्रीदेवी और माधुरी क्षित की लगातार सफलताओं को देखने यह बात और भी सही ठहरती है.

जूही चावला का सौंदर्य भारतीय र्य चेतना के अनुकूल है. उस का हंसता ा चेहरा बरबस दर्शकों को लुभाता है. शरीर की संपूर्ण बनावट को देखा जाए जूही का गठन रेखा, श्रीदेवी और माधुरी क्षित की तरह छरहरा और लचकदार है. किंतु इस के बावजूद चेहरे की ूमियत और उस मासूमियत में घुली हुई भाविक हंसी दर्शकों को बरबस लुभाने ती है. हालांकि यह मासूमियत श्रीदेवी चेहरे पर भी है, किंतु जहां उस की मियत में एक बनावटीपन की झलक ती है, वहीं जूही की मासूमियत बहुत भाविक लगती है. यहां तक कि यह मियत उस के संवाद बोलने में भी ती हुई निकलती है.

जूही की सफलता का राज उस के अपने व्यवहार में भी छिपा है. वह न तो श्रीदेवी की तरह अहंभावी है, और न ही माधुरी दीक्षित की तरह संकोची या आत्मसंयमी. जूही का खुला व्यवहार, खुशमिजाजी तथा लोगों से घुलनेमिलने की आदत की प्रत्यक्ष छाया उस के अभिनय में देखने को मिलती है. उस के लिए उस का अभिनय इसलिए बहुत सहज और स्वाभाविक हो जाता है, क्योंकि जिसे दर्शक अभिनय समझते हैं, वह उस के अपने व्यवहार की सचाई होती है. ऐसी स्थिति में उस का अभिनय अनजाने ही निखर उठता है.

जूही चावला के रूप में हिंदी फिल्म जगत को एक साफसुथरी छवि वाली अभिनेत्री मिली है. लेकिन देखना यह है कि वह कब तक अपनी इस छवि को बरकरार रख पाती है. यदि वह अपनी भूमिकाओं में विविधता नहीं ला पाई तो निश्चय ही दर्शक एक ही जैसी भूमिका में किसी को भी बारबार देखना पसंद नहीं करेंगे. इसलिए जरूरी है कि वह चुनौतियों से भरी नईनई भूमिकाओं में आए. ●

महलों का वैभव होटलों में

लेख • डा. उषा अरोड़ा

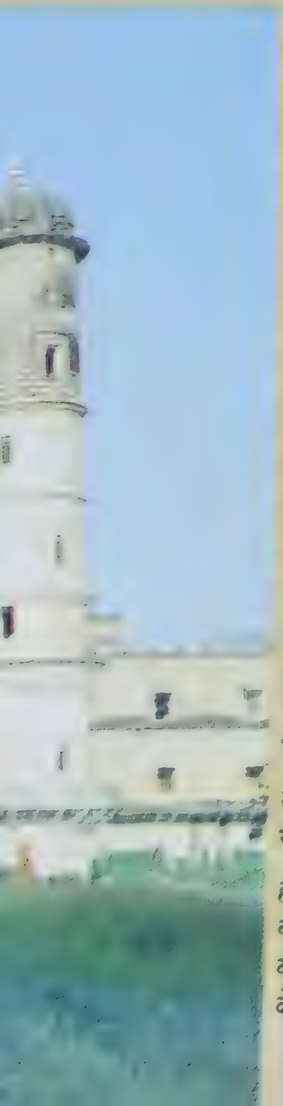
रजवाड़ों के खत्म होने के साथसाथ महलों की चमक, वैभव और उन की अनूठी कारीगरी भी फीकी पड़ने लगी थी. महलों की गिरती दीवारें खंडहर होने से बच सकें, इस के लिए पर्यटन मंत्रालय ने महलों के वैभव को होटलों में परिवर्तित करने की दिशा में कदम उठाए. 1991 से भारत सरकार ने 'हेरिटेज' होटलों की एक नई श्रेणी बनाई.

किलों व महलों को होटलों में परिवर्तित रूप देने के 2 मुख्य कारण दिखाई दिए. पहला तो यह कि किले मात्र खंडहर बन रहे थे, जहां मिट्टी में गिर कर इन का सौंदर्य विलीन हो रहा था. दूसरा कारण पर्यटकों से संबंधित है. देशीविदेशी पर्यटक कला, संस्कृति, इतिहास और राजा-





होटल लेक पैलेस : झील के बीचोबीच बना यह होटल स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है.



होटल सरिस्का पैलेस : घने वन के बीच बने इस होटल के कमरों की आंतरिक सज्जा देखने योग्य है.

महाराजाओं की जीवन शैली जीने की ललक रखते हैं. वे कुछ समय के लिए उस प्राचीन परिवेश को भोगने के लिए आतुर हो उठते हैं. पर्यटकों की इस सुप्त भावना को हेरिटेज होटलों की स्थापना ने सजीव किया है. पर्यटन विभाग का यह सार्थक प्रयास दिनप्रतिदिन पर्यटकों के आकर्षण को बढ़ा रहा है.

राजस्थान पर्यटन विकास निगम ने इस ओर बहुत ही रुचि दिखाई है. देश में कुल 19 हेरिटेज होटल घोषित हुए हैं, जिन में से 15 राजस्थान में हैं. जोधपुर के अजीत भवन को भारत का प्रथम हेरिटेज होटल होने का गौरव प्राप्त है.

राजस्थान के हेरिटेज होटल:

अजीत भवन, जोधपुर.
सामोद पैलेस होटल, सामोद.
खींवसर पैलेस होटल, खींवसर रोहितगढ., जिला पाली.
शिवनिवास पैलेस होटल, उदयपुर.
नारायण निवास पैलेस होटल, जयपुर.
रामगढ़ लाज, रामगढ़.
सामोद हवेली, जयपुर.
मंडावा कैसल, मंडावा.
सवाई माधोपुर लाज, सवाई माधोपुर.
होटल सरिस्का पैलेस, सरिस्का.
होटल भरतपुर, पैलेस, माउंट आबू.
नीमराणागढ़ पैलेस, नीमराणा.
लालगढ़ पैलेस, लालगढ़.
राजमहल पैलेस, जयपुर.

घने वन के बीच बना होटल सरिस्का पैलेस बड़ा मनोहारी है. यह अलवर के राजा महाराजा जयसिंह का किला था. अब इस होटल के कमरों की आंतरिक सज्जा

देखते ही बनती है.

उदयपुर के शिव निवास पैलेस का बाहरी दृश्य डीग के शाही महलों की याद दिलाता है. होटल में प्रवेश करते ही लगता है हम किसी महल में घूम रहे हैं. इस में पूरा शीशे का काम है. यह पैलेस महाराणा फतेहसिंह ने बनवाया था. यहां 'शाहजहां सूट' तथा 'मलिका आलम नूरजहां सूट' बहुत सुंदर हैं. इन में उस युग की कला, संस्कृति को संजोने का प्रयास किया गया है.

नीमराणा पैलेस खंडहर के एक टुकड़े के बीच में बसा होटल है. यह किला दिल्ली के महाराजा पृथ्वीराज चौहान की देन है. महल में प्रवेश करने पर ऐसा लगता है, मानो हम उसी युग में घूम रहे हैं.

जयपुर का राजमहल पैलेस एक लंबे उद्यान के रूप में सुसज्जित किया गया है. महा-राजा और महारानी के नाम से विख्यात यह किला अब होटल के रूप में उसी तरह के संसाधनों से सजाया गया है.

'मंडावा कैसल' अपनी चित्रकला के लिए भी प्रसिद्ध है. दरवाजे पर बनी कृष्ण और गायों की बारीक कारीगरी देखते ही बनती है. यहां म्यूजियम भी है. जिस में पुराने औजार और परिधान रखे हैं.

खींवसर पैलेस होटल को वेलकम ग्रुप ने सजाया है. यह नागौर से 40 किलोमीटर दूर है. यहां का वातावरण बहुत ही सुखद है. बालू पर जब अस्त होते सूरज की किरणें होटल से दिखाई देती हैं तो दूरदूर तक रेत लालिमा से रंग जाती है.

रोहितगढ़ किला राजपूत संस्कृति को खुद में समेटे है. यह जोधपुर से 18 किलोमीटर दूर है.

होटल नारायण निवास को पहले कन्नौता के ठाकुर की हवेली कहा जाता था. यहां का तरणताल बहुत सुंदर है. इस होटल में पुराने आभूषण, हथियार और फर्नीचर को बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया गया है.

होटल सामोद हवेली जय-पुर के भीड़भाड़ वाले क्षेत्र में स्थित है. परंतु हवेली के अंदर बहुत शांत और सुखद वातावरण है. 18वीं सदी की यह हवेली जयपुर के त्रिपोलिया बाजार में है. यहां से नगर का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है.

जयपुर से 24 किलोमीटर दूर सामोद महल अब सामोद

रजवाड़ों की समाप्ति के बाद अब राजस्थान के खूबसूरत महलों पर भी वक्त की परछाईं नजर आने लगी है. और इसी धूमिल पड़ती धरोहर को बचाने का प्रयास हैं ये हेरिटेज होटल, जहां महलों का वैभव अपने साकार रूप में पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है.





होटल सामोद पैलेस : पर्यटकों को राजा महाराजाओं की जीवनशैली से अवगत कराने में योगदान देता है. (ऊपर) इस की भीतरी दीवारें उस काल की कला व संस्कृति को दर्शाती हैं (बाएं).

स होटल बन गया है. सामोद स को 'शिल्पधाम' कहा ा है. सामोद के अंतिम रावल राजेश्वर ने एक क स्थल के रूप में सामोद के ों को परिवर्तित कर इसे नियों हेतु सुलभ कराया है. का दरबार हाल, सुलतान वगैरह कांच के बने हैं.

रणथंभौर नेशनल पार्क के जंगलों के बीच सवाई पुर लाज है. यहां जयपुर के महाराजा शिकार खेलने थे. होटल के झरोखों से पशुओं को सुविधापूर्वक पीते देखने में बड़ा आनंद



है. ताज ग्रुप ने इसे होटल र्वतित कर दिया है.

रामगढ़ लाज जयपुर से लोमीटर दूर रामगढ़ में है. जयपुर के राजा- जाओं की शिकारगाह को ाज ग्रुप ने होटल में ित कर दिया है. सैलानी की खिड़कियों से प्राकृतिक सुषमा का आनंद लेते ही हैं, साथ में टेनिस, बिलियर्ड आदि खेलों की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं.

जोधपुर का अजीत भवन भारत का प्रथम हेरिटेज होटल है. यहां जोधपुर के महाराजा अजीत सिंह और उन के छोटे भाई महाराजा उम्मेद सिंह रहते थे. भवन के चारों ओर बहुत सुंदर लान है. कमरों को बहुत सुंदर ढंग से सजाया गया है. और झोंपड़ियों की शक्ल देने का प्रयास किया गया है.

हेरिटेज होटलों की ओर पर्यटक बहुत आकर्षित हो रहे हैं. इतिहास से जुड़े ये होटल पर्यटकों को अनेक सुविधाएं देने में सक्षम हैं. साथ ही ये इतिहास की मूक गौरव गाथा को भी सजीव कर देते हैं.

हेरिटेज होटलों से संबंधित जानकारी

मंडावा कैसल, मंडावा, दिल्ली से 240 किलोमीटर दूर है. 9, सरदार पटेल मार्ग, सी स्कीम, जयपुर, फोन : 382214.

होटल सरिस्का पैलेस, सरिस्का दिल्ली से 199 किलोमीटर दूर है. होटल सरिस्का पैलेस, जिला अलवर, फोन : 222.

खींवसर पैलेस होटल, खींवसर नागौर से 40 किलोमीटर दूर है. वेलकम ग्रुप, फोन : 28.

राजमहल पैलेस, सरदार पटेल मार्ग, जयपुर, फोन : 381625, 381676.

शिवनिवास पैलेस होटल, उदयपुर, फोन : 282394.

रोहितगढ़, जिला पाली, जोधपुर से 18 किलोमीटर दूर है. रोहित हाउस, पी. डब्ल्यू. डी. रोड, जोधपुर, फोन: 66231 नीमराणागढ़ पैलेस, नीमराणा दिल्ली से 125 किलोमीटर दूर है. ए-58, निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली : फोन : 616145.

अजीत भवन, न्यू सर्किट हाउस, जोधपुर, फोन : 20409.

होटल नारायण निवास पैलेस, कानौता बाग, नारायण सिंह रोड, जयपुर, फोन : 563448.

होटल सामोद हवेली, जयपुर. सामोद हाउस, फोन : 42407.

सामोद पैलेस, सामोद जयपुर से 42 किलोमीटर दूर है. सामोद हाउस, गंगापोल, जयपुर, फोन : 42407.

सवाई माधोपुर लाज, सवाई माधोपुर, रणथंभौर, नेशनल पार्क. फोन: 2541/2718.

रामगढ़ लाज, रामगढ़ जयपुर से 30 किलोमीटर दूर है. रामगढ़ लाज, जमुआ रामगढ़, जयपुर. रामबाग पैलेस होटल में यहां के लिए संपर्क कर सकते हैं. फोन : 3217.

लालगढ़ पैलेस, लालगढ़, बीकानेर.

होटल भरतपुर पैलेस, माउंट आबू. ●



कहानी ● चंद्रमोहन प्रधान

घुंघरुओं की छनक और तबले की थाप के साथ सुरीले कंठों से आ रही गाने की स्वरलहरियां वातावरण में गूंज रही थीं.

आलोक चौंक पड़ा. दबे स्वर में उस ने पूछा, "यह आप किधर ले आए मियां?" सड़क के किनारे एक कूड़े के ढेर पर पान की पीक थूकते शाहरुख ने कत्थे से रंगे हुए दां निकाले, "क्यों, क्या हुआ? ये सब त गायिकाएं हैं, नाचने वालियां हैं जनाब, य इन्हीं का महल्ला है."

"मतलब कि वेश्याएं..."

मियां मुसकराए. टोपी उतार कर सहलाते हुए बोले, "अजी, अब ं कहां रह गई हैं? वह एक जमाना सब तो शरीफ धंधे वालियां हैं साहब. भर जो इल्मोहुनर सीखा, उसी की त दो रोटियां कमा लेती हैं तो क्या बुरा नून की जद में नाचनेगाने की मनाही ."

आलोक समझ रहा था. दाएंबाएं यों, कव्वालाओं के नामों की छोटीबड़ी ट्टियां दिख रही थी. एक जगह तो ल्प सिलाईकढ़ाईबुनाई प्रशिक्षण का

शाहरुख उसे साथ लिए एक छोटे से पक्के घर तक आया. घर अच्छा था, नया ही लगता था. आसपास कुछ जगह छूटी हुई थी. अहाता चारदीवारी से घिरा था. शाहरुख ने अहाते के गेट का ताला खोला और बरामदे पर आए. दूसरी चाबी से सदर दरवाजे का भी ताला खोला और बोले, "मकानमालिक की बदली कानपुर हो गई है. उन्हें महीना भर गए हुए हुआ होगा. मकान बने 5-6 साल मुशकिल से हुए होंगे. आप देख लीजिए."

आलोक ने सारा घर देखा. वह जितने में

ले लोग बुरे लोग

ई दिखाई पड़ा. जब से वेश्यावृत्ति की मनाही हुई है, इन घरों के सामने ये टकने लगे हैं. उसे याद आया, रों में अकसर छपा करता है, 'फलां बाईजी के घर पुलिस ने गुप्त सूचना छापा मारा तो अवैध देह व्यापार में कई स्त्रीपुरुष पकड़े गए.'

से विचारमग्न देख कर शाहरुख ने अजी साहब, आप किस फिक्र में पड़ च्ची बात तो यह है कि अब बहुतों ने ा छोड़ कर सचमुच दूसरे रास्ते लिए हैं. कुछ ही हैं जो कोई हुनर न चोरीछिपे धंधा करती हैं. वह तो जगह बदनाम है बस. कहते हैं, 'बद दनाम बुरा.' और आप का मकान तो ीं, इस महल्ले के पिछवाड़े दूसरी र पड़ता है. वह इलाका ही और है. इन लोगों से क्या मतलब?"

लोक चुपचाप चलता रहा. चौराहा र दूसरी सड़क पर रिहायशी के मकानों की बस्ती मिली. इधर चप्पल, किराना आदि की की दुकानें भी थीं. कहींकहीं अच्छे घर भी दिखे.

किराए का मकान खोज रहा था उस में ऐसा घर मिलने की उसे आशा नहीं थी. वह तो आज बैंक में उस के वरिष्ठ सहयोगी ने उसे मकानों के दलाल शाहरुख मियां का पता बताया था, इसलिए वह छुट्टी के बाद इन के साथ इधर आया है.

मकान में एक बड़ी बैठक और 3 बड़ेबड़े शयनकक्ष थे. 2 शयनकक्षों के साथ गुसलखाना भी था. पिछवाड़े घूम कर एक और गुसलखाना संभवतः बाहरी अतिथियों या नौकरों के लिए था. खासा अच्छा स्टोर, साथ में लगा पिछवाड़े की ओर रसोईघर, भीतरी चौड़ा बरामदा और रसोईघर के साथ लगा भोजन के लिए माकूल स्थान बहुत अनुकूल था. दरवाजे, खिड़कियां अच्छी हालत में थीं, घर में सफाई थी.

आलोक ने पूछा, "इस घर की देखभाल कौन करता रहा है?"

"मकानमालिक का भरोसा इस खादिम पर बहुत रहा है," शाहरुख मियां ने सगर्व कहा, "उन्होंने चलते वक्त चाबियां मुझे सौंपते हुए इस की सही देखभाल और किसी शरीफ कुनबे को किराए पर लगा देने

का जिम्मा भी दे दिया था. बंदा ही देखभाल करता रहा है."

"यह अभी तक चढ़ा क्यों नहीं किराए पर?"

'शाहरुख मियां मुसकराए, "जनाब, मकान लेने को तो हजारों लोग पलकें बिछाए हैं. लेकिन मकानमालिक की सख्त हिदायत है कि किसी शरीफ आदमी को ही मकान दिया जाए, भले ही किराए में कुछ बल खाना पड़े. साथ ही, यह भी जरूरी शर्त है कि किराएदार तबादले वाली नौकरी करता हो. मालिक की इच्छा है, भरसक किसी बैंक के अफसर को मकान दिया जाए, स्थानीय लोगों को मकान दे कर मुसीबत खरीदनी है क्या? कब्जा कर लेंगे तो मकान गया हाथ से. समझे साहब?"

मकान की खोज में वह सड़कों की खाक छानता रहा है. फिलहाल, एक होटल में रह रहा है, लेकिन परिवार को भी लाना है. मनपसंद घर मिलता तो किराया उस के वेतन के बराबर और किराया माकूल होता तो घर रहने के काबिल नहीं. पूरे शहर में ऐसा स्वाधीन घर मिलने की उसे आशा नहीं थी. मकान उसे ललचाने लगा, पर किराए की कल्पना कर घबरा रहा था. दोढाई हजार भी कह सकता है दलाल.

"देखिए मियां, मैं ने आप से पहले ही कह रखा है कि 11सौ से ज्यादा मैं नहीं दे सकूंगा. बैंक से जो मुझे आवासीय भत्ता मिलता है उस में सौ दो सौ और भी जोड़ दे सकता हूं, बस."

"अजी, आप यह क्या फरमा रहे हैं?" मियां हंसे. टोपी उतार उस से पंखे की तरह

आलोक को किराए का मकान अपनी पसंद का तो मिल गया था परंतु मकान नाचनेगाने वालियों के महल्ले से सटा होने के कारण न केवल वह बल्कि उस की पत्नी नीरजा भी ऊहापोह की स्थिति में पड़ गई थी. परंतु अचानक एक ऐसी घटना घटी जिस से उन के सामने सब कुछ स्पष्ट हो गया

आलोक को रहरह कर खटक रहा था. मकानों की इस किल्लत के जमाने में ऐसा अच्छा मकान महीना भर खाली पड़ा रह गया. मियां ने वजह माकूल बताई. उस ने पूछा, "आप मुझे शरीफ कैसे समझते हैं?"

"बड़े इल्म की बात की. यह आप फरमा रहे हैं हुजूर?" मियांजी ने तपाक से कहा, "कहीं शरीफाना सूरत भी छिपती है? बंदा तो उन में से है जो खत का मजमूं भाप जाते हैं, लिफाफा देख कर. जिंदगीभर बड़े लोगों की सोहबत की है, शरीफों की नजरें देखी हैं, कमीनों को पहचाना है. बंदा शरीफ और रजील का फर्क मीलों दूर से ही भांप लेता है. खुशकिस्मती से आप की मुलाकात मुझ से हो गई वरना मकान के लिए न जाने कब तक भटकते."

बात सच थी. आलोक को यहां के बैंक में तबादले पर आए 2 महीने हो रहे होंगे.

चेहरे को हवा करते बोले, "आप को मकान पसंद आया, पैसे वसूल हो गए. जो आप को सुविधा हो, दे दीजिए. मकानमालिक को तो शरीफ आदमी को देने से मतलब है और मुझे अपनी दलाली से. अब मैं कहांकहां झांकता फिरूं?"

आलोक बोला, "तो बात पक्की रही. ये 5 सौ रुपए पेशगी लीजिए और चाबी मुझे दे दीजिए. कल बैंक में आ जाइएगा, ज... लिखापढ़ी होगी, वहीं हो जाएगी."

मकान की उम्मीद में आजकल व... जेब में 5 सौ रुपए अलग से रख क... निकलता था. उस ने शाहरुख मियां ... रुपए दिए और चाबी ले ली.

मियां ने इतमीनान की सांस ली, "क... किराएनामा वगैरह ले कर बैंक आ जाऊं... आप तैयार रहें."

चलतेचलते उन्होंने फरमाया, "हुज...



ी जगह पर मकान लिया है?" नीरजा
क से असमंजस में पूछा.

कमीशन तो मकान मालिक देगा.
आप को इतनी जहमत से बचाने के
प की तरफ से भी तो हमें कुछ इनाम
है."

लोक ने हंस कर कहा, "जरूर-

क्कत तो यह थी कि ट्रेन का समय
जे था. जब नीरजा और दोनों बच्चों
ले कर आलोक स्टेशन पर उतरा तो
धा मकान में लाना पड़ा. तबलों की
ारंगी की रींरीं आदि के साथ गाने
ाजें सुनता वह डर रहा था कि
पर महल्ले के वातावरण का पता
असर पड़े.

नए मकान के आगे सामान उतार कर रिकशों को विदा करने के बाद ही नीरजा ने असमंजस से पूछा, "यह कैसी जगह पर मकान लिया है? मुझे जगह अच्छी नहीं लगती."

बटुआ जेब में डालते आलोक जबरन मुसकराया, "पहले मुझे भी लगा था, पर बाद में सब सोचसमझ लिया है. तुम इतमीनान रखो. इधर जगह अच्छी ही है. वह महल्ला दूसरी ओर पड़ता है. इधर सभ्य परिवारों की बस्ती है."

नीरजा ने देखा, छोटेबड़े अधिकतर घर खपरैल के हैं. निम्न मध्यमवर्गीय परिवार हैं. कहींकहीं 2-3 पक्के बड़े से घर टापुओं जैसे लग रहे हैं.

"लेकिन, एक बात पर तुम ने ध्यान दिया है? कोई मिलने वाला या घर के लोग

आएंगे तो उसी रास्ते से न? और भी कोई राह है?"

आलोक चुप रहा. और कोई सीधी राह रहती तो वह उन्हें उसी तरफ से लाता. इधर से जो राह घूम कर गई थी, वह बहुत चक्कर काट कर शहर पहुंचती थी.

मकान नीरजा को पसंद आया. किंतु उस के मन में वही 'किंतुपरंतु' की अनवरत गूंज चल रही थी, 'पासपड़ोस वाले पता नहीं कैसे हों, छोटी दुकानें तो बिखरी हैं. दूसरी ओर का वह महल्ला... कोई घर से आया तो क्या सोचेगा... ऐसी जगह तो शरीफ लोग आते हिचकते हैं. वह छोटे शहर की मानसिकता वाली थी और यह शहर भी कोई बड़ा तो नहीं था. उस महल्ले में कैसेकैसे लोग आते होंगे, और यह उस से सटा महल्ला ही है.

'वह भी घर में कब तक छिपी बैठी रहेगी. कुछ चीज खरीदनी हो तो उस चौराहे की तरफ जाना पड़ेगा जिधर से वह क्षेत्र शुरू होता है. अच्छी दुकानें उधर ही हैं. आलोक इस जगह रह कर क्या यहां के रागरंग और सम्मोहन से बचा रहेगा? बच्चों पर माहौल का क्या असर पड़ेगा?'

नीरजा के मन में ये सवाल गूंज रहे थे. कुछ ऐसे ही सवाल आलोक के मन में भी उठते रहे. बैंक के सहकर्मियों को जब पता चला कि उस ने मकान वहां लिया है तो 2-3 लोग आंख दबा कर मुसकराए थे. घनिष्ठ मित्र ने चुभते मजाक किए थे.

एक ने कहा, "यार, जगह अच्छी मिली है. घर से भाभी को लाने के झंझट में क्यों पड़ते हो?"

दोस्तों का मजाक वह सह गया था. नीरजा के नाजुक और डरपोक स्वभाव को ले कर भी वह चिंतित था. ऐसी जगह सामंजस्य कर सकेगी? नीरजा की बात से वह नई चिंता में पड़ गया. ठीक कहती है नीरजा. औरतों को इस प्रकार की बातें पहले [illegible] जाती हैं. घर से लोग आएंगे, [illegible]ताजी, भाई... क्या कहेंगे?

[illegible]र झटक कर उस ने इन विचारों को दिमाग से दूर किया. फिलहाल तो कुछ चैन ले लें, फिर आगे देखा जाएगा. मकान खोजने का अभियान जारी रखा जाएगा. लेकिन अभी 2-4 दिन तो आराम कर लें.

वह नीरजा की सामान उतारने में मदद करने लगा.

दिन में लेखापाल वेदप्रकाश ने उसे अलग बुला कर पूछा, "सुना है, तुम ने 'रेड लाइट एरिया' में मकान लिया है?"

आलोक सावधानी सहित बोला, "रेड लाइट तो उसे नहीं कह सकते, वेदप्रकाशजी, उस के पीछे वाली सड़क..."

"हांहां, जानता हूं. वह भी वही इलाका है. उधर देखा है किसी शरीफ परिवार को?"

"रिहायशी महल्ला तो है. उधर 2-4 अच्छे मकान भी हैं."

वेदप्रकाश हंसा, "बड़े भोले हो, भलेमानस, पता भी किया है, वे घर किन के हैं? पैसे वाली वेश्याओं के. वह उन में खुद रहती हैं और शायद चोरीछिपे धंधा उधर भी चलता है. यार, कहां जा फंसे?"

आलोक सन्न रह गया. शाहरुख मियां पर क्रोध आने लगा, 'भलेमानस ने कुछ नहीं बताया और मकान गले मढ़ दिया. तभी वह मकान यों पड़ा था. मालिक को शरीफ किराएदार तो चाहिए था, पर शरीफ वहां जा कर क्या करेगा?'

"तुम ने मुझे पहले बताया होता," वेदप्रकाश ने तसल्ली दी, "मेरे बड़े साढ़ू का अपना घर यहीं है. उन का नीचे का फ्लैट अभी खाली हुआ है. ऊपर वे खुद रहते हैं. कहते तो दिला देता. शरीफ महल्ला, वाजिब किराया."

आलोक को लगा, जैसे वेदप्रका[श] तारणहार बन कर उस की मुशकिल आसा[न] करने आया हो. बड़े अदब से उस का हा[थ] पकड़ कर बोला, "बड़ी मेहरबानी हो[गी] आप जरूर वह मकान दिला दें, देखिए ज[रा] कहीं अब तक किराए पर चढ़ न गया हो."

"बात चल तो रही है, पर मैं दि[...]

गा. अभी फोन कर के पूछता हूं."

उन्होंने फोन किया. बातें करते रहे, आलोक उत्सुकता से देखता रहा. फोन रख कर बोले, "ठीक है. छुट्टी में चल कर देख ना."

"किराया कितना लगेगा?"

"यह तो उन्हीं से पता लगेगा."

वेदप्रकाश के साढ़ू का मकान ऐसी कलोनी में था, जहां अधिकतर सरकारी दफ्तरों के कर्मचारी रहते थे. मकान मंजिला था. नीचे 3 कमरे, एकएक सलखाना, रसोईघर और बरामदा. पहले ले घर की बात तो नहीं थी लेकिन महल्ला रीफों का था. वेदप्रकाश के साढू बकारी निरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए . 2 लड़के थे जो कालिज में पढ़ते थे. 2 यानी लड़कियां थीं. बड़ा सा परिवार देख र आलोक को लगा, घर अच्छा रहेगा. रजा को अकेलापन नहीं अखरेगा. कराया बताया गया 15 सौ रुपए. दप्रकाश ने कहसुन कर 13 सौ करा दिया. लोक ने सोचा, 2 सौ रुपए शरीफाना हल्ले में रह पाने का अतिरिक्त टैक्स ही ही.

वेदप्रकाश के साढ़ू ने फरमाया, "आप ल से आ सकते हैं. लेकिन किराया हर मास पहले हफ्ते अग्रिम देना पड़ेगा. इस मास किराया कल तक दे कर कब्जा ले जिए. कई लोग पीछे पड़े हैं पर वेदजी के ते आप अपने ही आदमी हैं, अतः आप का ले हक बनता है."

आलोक अगले दिन बैंक से समय काल कर चला वेदप्रकाश के साढ़ू के यहां. के ठीक नीचे सीढ़ियों के किनारे चाय के ल पर चाय पीते मिले जगदीश चंद्र.

"कहां चले?" उन्होंने पुकारा, "चाय पीते जाओ."

आलोक चाय का गिलास थामे बताने , "वेदप्रकाश के साढ़ू का मकान मिला वहीं रुपए देने जा रहा हूं. अभी जहां न मिला हुआ है, उसे तो एक महीने का



प्रीत

आना है तो आ जाओ
हमारे ख्वाब में लेकिन,
अपनी प्रीत दुनिया को
यूं दिखाया नहीं करते.
—कनक अग्रवाल 'कनु'

किराया दे चुका हूं मगर रुपए पानी में गए समझो."

बैंक का अधेड़ चपरासी हुलास वहीं खड़ा ऊपर ले जाने के लिए चाय बनवा रहा था. वह गौर से सुनने लगा.

"भई, बड़ी राहत मिली," आलोक ने कहा, "वेदप्रकाश के साढ़ू का बड़ा परिवार है, महल्ला भी बहुत ठीक है. उस दलाल ने तो ऐसी जगह मकान दिला दिया कि क्या कहें. अब कलपरसों ही पत्नी को नए मकान में ले जाना है."

जगदीश चंद्र गंभीर होते हुए बोले, "जल्दी न कर के जरा नया मिला मकान भी जांच कर देख लो."

आलोक ने ध्यान दिया. खुद को देखसुन चुका ही है वहां जा कर. शायद जगदीश चंद्र को ईर्ष्या हो रही है. उस ने उन की बात से ध्यान हटा कर चौराहे पर रिकशे के लिए नजर दौड़ाई. तभी किसी ने पुकारा, "आलोक बाबू."

आलोक ने देखा, चपरासी हुलास है. बुजुर्ग आदमी समझ कर वह उसे अकसर चाय पिलवा दिया करता था, पानबीड़ी के लिए पैसे दे दिया करता था. हुलास के

पुकारने पर जल्दी में होते हुए भी ठहर गया. नजदीक आ कर हुलास ने धीमे स्वर में पूछा, "क्या रजनी बाबू का मकान ले रहे हैं?"

अपने निजी मामलों में यों दखल तो आलोक को अच्छा न लगा, पर उस ने कह दिया, "हां, मिल गया है."

"आप कहां फंस रहे हैं साहब. रजनी बाबू के दोनों लड़के 10 नंबरिया गुंडे हैं. कालिज में कुछ पढ़तेलिखते नहीं, वहां भी दादागीरी करते हैं. बड़े लड़के पर अभी बलात्कार के कई मामले चल रहे हैं, पहले वाले किराएदार की बीवी और बेटी दोनों को उस ने तबाह कर दिया था, इसलिए वे मकान छोड़ गए. छोटा लड़का उस से बढ़ कर है. पिस्तौल, छुरा रखता है, आए दिन पकड़ा जाता है. लड़कियां भी बड़ी बदनाम हैं, साहब. वहां तो आए दिन महाभारत मचता रहता है, पुलिस आती रहती है. रजनी बाबू सेवानिवृत्त आबकारी अफसर हैं, सो शराब का इंतजाम मुफ्त में कर लेते हैं. शाम होते ही पी कर टर्र. पूरा खानदान पियक्कड़ है ससुरा."

आलोक का सिर घूम गया. हुलास यह क्या कह रहा है. संभल कर बोला, "वेदप्रकाश ने तो कहा है कि शरीफ लोग हैं, शरीफों का इलाका है."

"इलाका अच्छे लोगों का है, लेकिन वे लोग अच्छे नहीं हैं. आप ने इस जमाने में देखा है यों फ्लैट को खाली होते? वहां कोई किराएदार 2 महीने से ज्यादा नहीं टिकता."

"लेकिन जगदीश चंद्र ने..."

"साहब, उन्होंने तो इशारा किया था, सोचसमझ लें, वह भी उधर ही रहते हैं."

लंबी सांस ले कर आलोक ने कहा, "वेदप्रकाश ने तो कुछ नहीं बताया."

"वह थोड़े ही बताएंगे," हुलास कड़वाहट से बोला, "आप को यहां नया जान कर फंसा रहे हैं. मैं जो कह रहा हूं, आप चाहें तो उधर जांच कर लें. सारी कालोनी उन से तंग आई हुई है. पर किस के कंधे पर 2 सिर हैं कि कुछ बोले?"

"बैंक में और किसी ने नहीं बताया?"

"जो जानते हैं वे आप के लिए वेदप्रकाशजी से दुश्मनी क्यों मोल लेंगे," हुलास हंसा, "तभी जगदीशचंद्रजी ने सिर्फ इशारा किया था. मैं तो उसी महल्ले के पास रहता हूं, सब पता है."

आलोक को लगा, हुलास सच कह रहा है. झूठ बोलने से इसे क्या लाभ. बोला, "ठीक है, अभी जरा जांच कर लूंगा, तब पैसा दूंगा. यह लो, चाय पी लेना."

2 रुपए का नोट हुलास को दे कर वह सुस्त पैरों से वापस लौट पड़ा. अभी वेदप्रकाश से कह देगा, पत्नी की तबीयत ठीक नहीं. एकदो दिन बाद जाएगा.

'शाम को उस कालोनी में जा कर उस ने एकदो बुजुर्गों से बातें कीं. उसे लगा जैसे हुलास ने बहुत कम कर के रजनी बाबू के परिवार की यशोगाथा बखानी हो. बालबाल बचा. हुलास का मन ही मन आभार मानता वह लौट पड़ा. कह देगा, वेदप्रकाश से कि पत्नी वहीं रहना चाहती है. मगर फिर वही समस्या... मकान... किराया... और शरीफाना महल्ला.

उस ने तय किया, अब खुद ही पता लगाएगा. अखबारों में विज्ञापन देखता रहता. एक दिन देखा एक विज्ञापन, 'किराए के लिए मकान खाली है.'

शनिवार का दिन होने से ढाई बजे छुट्टी हुई. वह बैंक में काम रहते भी जरूरी काम के बहाने उस महल्ले की ओर चला. शहर के बिलकुल दूसरे छोर पर वह जगह थी. मकान पक्का पर बिलकुल पुराना, बोसीदा, एकमंजिला था. अगले भाग में मोटरसाइकिल, स्कूटर आदि की मरम्मत संबंधी कारखाना था. वर्कशाप में दर्जन भर लड़के और युवा मिस्तरी कार्यरत थे. वह पहले सामने की पान की दुकान पर गया. पान खाते सावधानी से पूछा, "भई, सुना है वह मकान खाली है? देखने में तो वर्कशाप लग रहा है."

पनवाड़ी ने गौर से उसे देख कर कहा,

आप मकान चाहते हैं? कारखाने के भीतर हो कर पीछे जाने का रास्ता है, वही स्सा खाली है. मालिक कारखाने में लेगा, उसी का घर है."

आलोक पहले के अनुभवों से सावधान . टहलता हुआ वर्कशाप के पास पहुंचा. स्तरी लोग काम करते बड़ी फोश और हड़ भाषा में बात कर रहे थे. सब देखने में फंगे ही लगे. मोटा सा मालिक सिर्फ लुंगी धे तोंद खुजलाता एक लड़के को गंदीगंदी लियां देता कुछ आदेश दे रहा था. संकरा था, भारी मूंछें और गलमुच्छे, लाललाल खें जैसे पी रखी हो.

वह उस मुछल्ले तोंदू के पास जा कर ला, "कोई मकान खाली है इधर, किराए लिए?"

मालिक सहित सभी लोग उसे घूरने लगे से वह कोई अजूबा हो. तोंद खुजलाता लिक बोला, "आप को मकान चाहिए? ा करते हैं? कितने लोग हैं?"

आलोक ने टाला, "यहीं एक दफ्तर में दली हुई है. पत्नी और 2 बच्चे हैं."

पिच्च से पान पीक थूकता वह ला, "साहब, किराया सौ लगेगा, बिजली पर से. देख जिए."

कारखाने के तर से हो कर एक म अंधेरी तंग राह आलोक उस के छेपीछे चला. बहुत ाना घर. सफेदी तो जाने कब से नहीं थी. 2 कुछ बड़े र एक छोटा कमरा. चालय एक ही पुराने ढंग का. ी के लिए हैंडपंप. कोठरी जिस में अंगड़खंगड़ की भरावट खचाखच थी.

बरामदे की तरफ इशारा करते मालिक ने कहा, "उधर चौका है. मेहतरानी आ कर शौचालय साफ कर जाती है, रास्ता वहीं है."

आलोक ने कल बताने को कहा और वापस लौट पड़ा. ऐसे लफंगे किस्म के लोगों के बीच उसे कुछ घबराहट होने लगी थी. नीचे आते ही एक दुबलीपतली जवान सी मेहतरानी झाड़ू लिए कतरा कर दुकान में घुसी तो मिस्तरियों ने काम छोड़ दिया, उसे भूखी नजरों से घूरने लगे. मालिक ने आलोक के सामने ही बड़ी गंदी गाली दे कर डांटते हुए कहा, "अब तेरी सुबह हुई है, हेंहेंहें."

मेहतरानी इन बातों की आदी लगती थी, सीधी पिछवाड़े चली गई.

लौटते हुए आलोक का दिमाग भन्ना रहा था. इस नरक में नीरजा और बच्चे? वह आगे की कल्पना नहीं कर पाया. पान की दुकान से सटा सूना चायखाना था. वह वहीं बैठ गया.

"एक कप गरम चाय," उस ने आदेश दिया.



"ये देखिए, मेरे 15 बम, 10 राकेट, 12 चकरी, 4 पैकेट फुलझड़ी . सब खराब निकले हैं. क्या आप दुकानदार से इन्हें बदलवाने में मेरी मदद करेंगे?"

चाय वाले ने उसे चाय दे कर कहा, "साहब, आप भलेमानस लगते हैं. पान वाले से आप को पूछते सुना है. उस मकान को किराए पर सोचसमझ कर ही लीजिएगा. शरीफ परिवार के लायक जगह नहीं है. यह गैरेज वाला नंबरी लोफर और 10 नंबरी पियक्कड़ है. रात में यहां जुए का अड्डा जुड़ता है. हमारा तो डेढ़ सौ रुपए चाय का बाकी है. देता नहीं है, मगर चाय भेजनी पड़ती है. अब यहां से हम लोग दुकानें हटा रहे हैं."

चाय वाला न बताता तो भी आलोक का यही विचार था. चाय के पैसे दे कर वह थका सा लौट पड़ा.

घर आतेआते शाम के 6 बज रहे थे. झुटपुटा होने लगा था. उसे आश्चर्य हुआ, मकान के अहाते का द्वार खुला है, बाहर रोशनी तक नहीं. रोज की तरह टीवी की आवाज नहीं आ रही थी.

बरामदे में बैठे हुए एक बुजुर्ग बीड़ी पी रहे थे, उसे देख कर उठ खड़े हुए. आलोक ने बरामदे के बल्ब का स्विच दबा दिया. रोशनी में उन्हें पहचाना, बगल में उन की एक छोटी सी दुकान बरतनों पर कलई करने की थी.

"कहिए, आप?"

"आ गए साहब, बड़ी देर लगाई," बुजुर्ग ने चाबी का गुच्छा उसे देते कहा, चाबी लीजिए. बहूजी और बच्चे वहां गए हैं, तबीयत कुछ गड़बड़ थी लेकिन अब ठीक हैं. कोई फिक्र करने की बात नहीं."

उन्होंने उंगली से 3-4 घर बाद वाले पक्के मकान की ओर संकेत किया. आलोक की समझ में बात नहीं आई. दुविधा में पड़ कर पूछा, "वह किस का घर है?"

"नसीमाजी का. क्या आप को मालूम नहीं?" बुजुर्ग ने अपने घर की तरफ किसी को पुकारा एक प्रौढ़ा महिला और 8-9 साल की बच्ची वहां आ गई. बुजुर्ग ने बच्ची से कहा, "बाबू को नसीमाजी के घर पहुंचा दो."

जब तक आलोक कुछ सोचे, बच्ची उस की उंगली पकड़ कर खींच कर ले चली, "चलिए."

उस तरफ से हो कर कभीकभी आते वक्त आलोक ने देखा था, उधर एक तख्ती लगी होती है, 'संगीत विद्यालय' की. अकसर पक्के और प्रचलित रागों की तानें, विभिन्न साजों की आवाजें सुनी हैं. बच्ची खींचती हुई उसे सीधे वहीं ले गई.

बाहरी बड़े से कमरे में दरी पर 8-10 छोटीबड़ी उम्र की लड़कियां बैठी अभ्यास कर रही थीं. सामने मसनद से टिके एक वृद्ध सज्जन धोतीकुरता दुपट्टे में, तिलक लगाए, बड़ी तनमयता से कोई राग दोहरा रहे थे. आलोक को देख लड़कियां चौंकी, पर फिर स्वर साधने लगीं. उसे वहीं छोड़ कर बच्ची भीतरी दरवाजे में चली गई. आलोक वहीं बेवकूफों की तरह खड़ा संगीत का अनचाहा जायका लेता रहा.

एक महिला के साथ बच्ची तुरंत वापस लौटी. महिला 30-32 साल की रही होगी, खुलता साफ रंग, बहुत आकर्षक नैननक्श, मेकअप नहीं, बाल सादे ढंग से संवारे हुए. आधुनिक महिलाओं की तरह लिपस्टिक, काजल कुछ नहीं. एक हलके हरे रंग की साड़ी पहने. वह आलोक को अपनी सादगी में भी बड़ी सुंदर और कांतियुक्त लगी.

"बाहर क्यों खड़े रह गए?" महिला ने सहज मगर सलीकेदार मुसकान के साथ उसे आमंत्रित किया, "आइए भीतर."

मंत्रमुग्ध सा आलोक उस के पीछे चला गया.

बड़ी सी बैठक, लाल कालीन पर सोफासेट और भारी परदे. कोने में रंगीन टेलीविजन चल रहा था. वहीं दोनों बच्चे बैठे थे. आलोक को देखते ही वे उस से आ लिपटे. छोटे के माथे पर पट्टी बंधी थी.

"तुम्हें क्या हुआ बिन्नू?" आलोक ने पूछा, "मां कहां हैं?"

महिला ने साग्रह कहा, "आप बैठिए तो सही. अभी बुलाती हूं."

आलोक ने बैठते हुए कहा, "क्या बात आप का परिचय जान सकता हूं? इस थे पर पट्टी..."

महिला ने बच्चों को प्यार के साथ बैठा , "तुम लोग टीवी देखो," फिर आलोक छा, "आप की पत्नी को नर्वसनेस का कभी दौरा पड़ता है?"

आलोक ने माना, "आप की बात सही या वह..."

महिला मुसकराई, "जी, आप फिक्र न वह बिलकुल ठीक हैं. बात यह हुई कि दोपहर में बच्चे बाहर अहाते में खेल कि बिन्नू ठेकर खा गया. चारदीवारी कली एक ईंट के कोने से सिर में सख्त लगी. खून बह चला. आप की पत्नी तरह घबरा उठीं. शोर सुन कर बगल महादेव मिस्तरी, जो कलई का काम हैं, दौड़े आए, बच्चे को संभाला, ाजी ने आप को बुलाने के लिए फोन चाहा. फोन हमारे यहां है, अतः व यहीं ले आए. फोन करने पर बैंक से चला कि आप आधे दिन की छुट्टी में चुके हैं.

"मैं ने डाक्टर को बुलवाया. लेकिन क घबराहट में नीरजाजी के हाथपैर ने लगे. वह बेहोश हो गईं. डाक्टर ने र बच्चे को सूई लगाई, पट्टी की. जी को भी देखा, एक सूई उन्हें भी दी. कह रहा है कि सब ठीक है, सिर्फ गई थीं. उन के लिए दवाएं लिखीं जो गा ली हैं. होश में आने पर उन्हें गरम दी गई, फिर ग्लूकोज और संतरे का ब वह बिलकुल ठीक हैं."

रजा भीतरी कमरे से आई. जरा ी लग रही थी. आलोक को देख कर न भाव से मुसकराई, "आप यहीं आ नसीमाजी को तो आज मेरे कारण ख्वाह की तकलीफ..."

सीमा संजीदगी से बोलीं, "ऐसी हिएगा भी नहीं. पड़ोसी का पड़ोसी होता है. कल को मुझे जरूरत पड़ेगी तो क्या आप लोग न दौड़ेंगे?"

आलोक हाथ जोड़ कर बोला, "आप को किन शब्दों में धन्यवाद दूं, मैं सोच भी..."

"धन्यवाद दे कर ही छुट्टी पा लेना चाहते हो?" वह मुसकरा कर बोलीं, "मतलब, मुझे जरूरत हुई तो मदद नहीं करेंगे?"

आलोक लाजवाब हो गया. एक नौकरानी ट्रे में शीतल पेय और भुने काजू ले कर आई. नसीमा ने आग्रह किया, "लीजिए, हम लोग और बच्चे नाश्ता भी कर चुके हैं."

कुछ काजू ले कर आलोक ने गिलास ले लिया. उस के हृदय में अजीब से भाव उठ रहे थे, हिचकिचाता हुआ बोला, "आप का शुभ नाम और परिचय तो..."

"जी, मुझे नसीमा कहते हैं. यह घर मेरा ही है."

अंतिम परीक्षा

भलाई न करने वाले के प्रति आदर भाव रखना सज्जन की अंतिम परीक्षा है.

—विलियम लियोन फैल्प्स

"नीचे एक संगीत विद्यालय चल रहा..."

"वह 8-10 साल हुए, मैं ने अपने शौहर की मदद से शुरू किया था. मेरी मां बहुत मशहूर गायिका थीं, उन के रेकार्ड भी बनते थे. पिछली पीढ़ी वाले जानते हैं उन्हें. उन्होंने मुझे बहुत कुछ सिखाया. मैं ने अपने गुजारे के लिए यह संगीत विद्यालय खोल रखा है.हुजूर की मेहरबानी से यह अच्छी तरह चल रहा है. वैसे मेरे शौहर एल.आई.सी. में फील्ड अफसर हैं."

"ओह," आलोक ने चकित हो कर कहा, "बड़ी खुशी हुई. नीरजा को भी गाने का शौक है."

नीरजा बोली, "मैं ने दीदी को पहले ही

कह रखा है कि आ कर कुछ सीखूंगी-सिखाऊंगी."

आलोक ने कहा, "आप का मुझ पर यह एहसान रहेगा, नसीमाजी. अब आप इजाजत दें, फिर आएंगे." कुछ सोच कर उस ने बटुआ निकालते हुए कहा, "हां, डाक्टर की फीस और दवा के पैसे तो..."

नसीमा आहत सी हो कर बोलीं, "क्या आप अपने मेहमानों से पैसे वसूलते हैं? नीरजाजी मेरी मेहमान हैं, इन का खर्च मुझ पर. फीस और दवा के पैसे मैं ने दे दिए हैं."

आलोक लज्जित हो कर बोला, "बड़ी कृपा है. पर यह तो ज्यादती है. दवा के..."

नसीमा ने वर्जित किया, "हरगिज नहीं. आप को बहुत महसूस हो, तो हमें कभी दावत खिला दीजिएगा. अब तो हुआ? और खर्च की बात से आप को मतलब ही क्या? हम ने अपनी बहन और भतीजों पर खर्च किया."

आलोक गद्गद हो गया, "आप से मैं बहस नहीं कर सकता."

वापसी में आलोक ने बताया कि बैंक से एक मकान देखने यों ही निकल गया था. जगह कैसी निकली, सो भी उस ने नीरजा को बताया.

नीरजा बोली, "कोई जरूरत नहीं, यही जगह अच्छी है."

आलोक भी यही सोच रहा था, 'बड़ा अच्छा मकान मिला है. कमी थी सिर्फ पड़ोसियों और वातावरण की, सो नीरजा जब खुद कह रही है...'

"लेकिन तुम्हीं कहती थीं कि पासपड़ोस..."

"हमें ऐसा पड़ोस कहां मिलेगा?" नीरजा ने कहा, "भलेबुरे लोग सब जगह हैं. यहां के पड़ोसी कितने हमदर्द हैं. चल कर पहले कलई वाले महादेव मिस्तरी और उन के घर वालों को तो धन्यवाद दे दें." ●



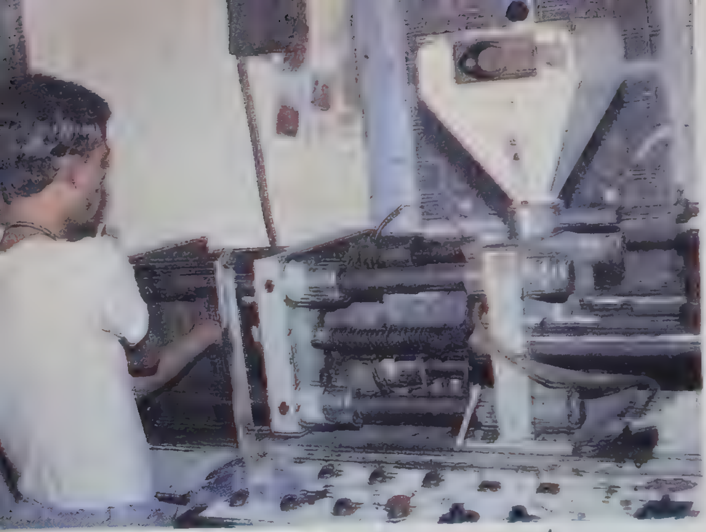
बचपन से हम सभी सुनते आ रहे हैं– 'धन ही सारी बुराइयों की जड़ है.' हमारा धार्मिक चिंतन भी हमें इस दुनियबी माया से दूर रह कर स्वर्गलोक के सुख प्राप्त करने की शिक्षा देता है. आज भारत में इस बात पर काफी वादविवाद है कि क्या धनी होना वास्तव में जरूरी है.

धन क्या है? यह केवल एक आदानप्रदान का माध्यम है और मूल्य का द्योतक है. यह वही साधन है जो खरीद सकता है. अपनेआप में इस का कोई मूल्य नहीं है. यह बेकार है यदि वस्तुओं का

लेख • मनोज सक्सेना

क्या धन का महत्व है?

आज की दुनिया में पैसा केवल आदानप्रदान का माध्यम न रह कर व्यक्ति की योग्यता का प्रतीक बन गया है. ऐसी स्थिति में जहां धन मानव जीवन का अभिन्न अंग बनता जा रहा है, क्या गलत तरीकों से धन कमाना उचित है?



धन उत्पादन में केवल शारीरिक मेहनत का होना ही पर्याप्त नहीं है.

उत्पादन न हो अथवा कोई उत्पादनरत न हो.

जब मानव को सभ्यता ने नहीं छुआ था तब उस को धन की कोई जरूरत नहीं थी. सब कुछ प्रकृति के ऊपर निर्भर था. सभ्यता की शुरुआत के साथ व्यवसाय ने जन्म लिया. व्यवसाय की नींव ही इस बात पर निर्भर है कि एक उत्पादक को अपने उत्पाद का पूरा मूल्य मिले और वह जब भी चाहे उस मूल्य के बदले दूसरी चीजें खरीद सके. इस प्रकार धन का निर्माण हुआ.

धन की प्रकृति यह है कि कोई भी व्यवसाय तब तक धन नहीं कमा सकता जब तक कि दोनों ही पक्ष अपनी मरजी से व्यवसाय न करें. धन को आंसू दिखा कर या छीन कर पैदा नहीं किया जा सकता. धन को छीनने या दान करने से पहले उस का उत्पादन जरूरी है. धन को नोट छाप कर भी पैदा नहीं किया जा सकता, यदि आर्थिक व्यवस्था में कोई मूल्यवान उत्पादन नहीं है.

धन को भ्रष्टाचार के द्वारा भी नहीं पैदा किया जा सकता. यह तो केवल उस के एक सही मालिक से गलत मालिक को देना भर है. भ्रष्टाचार द्वारा अर्जित धन कभी भी ज्यादा देर तक नहीं टिक सकता क्योंकि भ्रष्टाचारी को उस के मूल्य का तो एहसास ही नहीं होता.

धन को बुरा कहना उस के उत्पादक की मेहनत और पुरुषार्थ को अपमानित करना है. धन की इज्जत करना उस के साथ जुड़े मूल्य को स्वीकारना है. जो व्यक्ति अपने जमीर को दो कौड़ी में बेच देता है वही धन को बुरा कहने में सब से आगे रहता है. जिस व्यक्ति के पास धन भ्रष्टाचार अथवा चोरी से आता है, वही धन का अपमान करता है.

धन उत्पादन सिर्फ शारीरिक बल से नहीं हो सकता. हाथ की शक्ति या शारीरिक मेहनत के साथसाथ एक आविष्कारक का आविष्कार और एक उद्यमी का साहस भी उतना ही मूल्यवान है. अगर शारीरिक मेहनत ही सब कुछ होती तो भारत और चीन सब से धनी देश होते.

इस समाज का क्या होगा जिस में व्यक्ति को उस के प्रयत्न के बजाय उस की आवश्यकतानुसार धन मिले. यह केवल भिखारियों को प्रोत्साहित करेगा. हर कोई दुखदर्द की दास्तान ले कर ज्यादा से ज्यादा मांगेगा. यदि उत्पादनशक्ति को सही मूल्य नहीं मिला तो हर कोई स्तरहीन हो जाएगा क्योंकि ज्यादा उत्पादन करने वाले को ज्यादा मूल्य तो मिलेगा नहीं और भिखारियों के पास नएनए तरीकों से भीख मांगने के लिए ज्यादा वक्त होगा.

बच्चे पैदा करना तो एक खेल बन जाएगा क्योंकि ज्यादा बच्चे होंगे तो ज्यादा भीख मिलेगी. सिर्फ डाकू और भिक्षुक ही ऐसे समाज में सुखी रह पाएंगे. कानूनों का जाल बिछाया जाएगा इसलिए नहीं कि जनता की रक्षा करनी है, बल्कि इसलिए कि ज्यादा से ज्यादा लोग कानून तोड़ें और डाकुओं के चंगुल में आ जाएं. यदि आप के पास पड़ोसी से एक रुपया ज्यादा है आप डरेंगे और यदि एक रुपया कम है तो दुखी होंगे. तब प्रयत्नशील और उद्यमी इस समाज से भाग जाएंगे. ●

बच्चों के मुख से



मारे पिताजी सरपंच हैं. एक दिन एक पुलिस का आदमी रे पिताजी से मिलने आया. 10 वर्षीय भाई ने उस से , "आप किस तरह के लोगों जेल ले जाते हैं? जो मारपीट ते हैं उन्हें आप जेल क्यों नहीं ाते?"

"क्यों नहीं, जो मारपीट ता है उसे हम जरूर जेल ले हैं," उस ने जवाब दिया.

"तब मेरे अध्यापक को नहीं ले जाते. वह तो स्कूल च्चों के साथ रोज मारपीट ते हैं. —दीपक जायसवाल

अपने भाई के नवजात शिशु को देखने अपनी और दोनों बेटों 10 वर्षीय त व 7 वर्षीय वैभव के साथ होम गया.

शिशु को प्यार करते हुए ने कहा, "छुटकू, देख ले, भाई हूं."

वैभव भी पीछे न रहा. उस , "मुझे भी देख ले, मैं तेरे ा भाई हूं."

—विमल सुनेजा

*

छोटा भाई पहली बार ूल गया. कक्षा में उस के ने कहा, "जो नए आए या खड़े हो जाएं."

ुछ छात्र खड़े हो गए. मेरा छोटा भाई नहीं खड़ा हुआ. शिक्षक ने उस से कहा, "ऐ लड़के, तुम नए हो फिर भी क्यों नहीं उठे?"

"आप भी तो मेरे लिए नए हैं, आप नहीं उठे तो मैं भी क्यों उठूं?" उस ने जवाब दिया.

—चंद्रमोहन उर्फ डब्लू कुमार

*

मेरे मामाजी अध्यापक हैं. एक बार वह घर पर परीक्षा की कापियां जांच रहे थे. पास बैठी मेरी 4 वर्षीया भानजी ने उन से पूछा, "पिताजी, आप इन कापियों में लाल पेन से क्यों काट रहे हैं. मैं ऐसा अपनी कापियों में करती हूं तो आप डांटने लगते हैं. जिस की कापी है वह भी तो आप को डांट सकता है."

—भरत कुमार

*

मेरा 10 वर्षीय बेटा कनु फिल्में देखने का बहुत शौकीन है. टीवी पर चल रही एक फिल्म में खलनायक नायिका से जबरदस्ती कर रहा था. मेरे पति ने कहा, "कनु, बंद करो टीवी, क्या गंदगी देख रहे हो?"

"एक मिनट की तो बात है पापा, अभी हीरो आने वाला है. सारी गंदगी साफ कर देगा," कनु ने तपाक से उत्तर दिया.

—कंचन दुआ

मेरे 5 वर्षीय बेटे डोनल ने एक दिन मुझ से कहा, "पिताजी, सब लोग कुत्ता पालते हैं. मुझे भी एक हरा पप्पी चाहिए."

मैं ने पूछा, "बेटा, पप्पी तो ठीक है, पर यह हरे रंग का पप्पी तुम ने कहां देखा?"

डोनल भोला सा मुंह बना कर बोला, "रेडियो में आंटी गा तो रही थीं बोले रे पपीहरा, पपीहरा.'" —विजय महेंद्र

*

हमारे पड़ोसी की लड़की बहुत बातूनी है. एक बार उस की मां ने उसे समझाते हुए कहा, "पिंकी, पढ़ाईलिखाई पर ध्यान दिया कर. बीता समय फिर कभी लौट कर नहीं आता."

"पर मां, स्कूल जाने का समय तो रोज लौट कर आता है," पिंकी ने मासूमियत से कहा.

—प्रवीरचंद्र भंडारी 'प्रणव'



इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

"वैसे वह कह ठीक रही थीं," रतन लाल ने उन लोगों के जाने के बाद कहा.

चमन ठहाका लगा कर हंस पड़ा, "ठीक हो या गलत... यह अच्छेबुरे मौके का फायदा उठाने वाली बात आशा के मुंह से शोभा नहीं देती."

"क्यों?"

"क्योंकि उस ने स्वयं भी तो कभी मौके का फायदा उठा कर अपने 'पाप' को 'पुण्य' में बदल लिया था."

कहानी • कुमुद भटनागर

प्रश्नचिह्न

टेनिस के 3 सेट खेलने के बाद रतन लाल ने अपने साथी खिलाड़ी और दोस्त चमन से पूछा, "आज कुछ उमस ज्यादा है या मुझे ही बेतहाशा पसीना आ रहा है?"

"बहुत ही गरमी है, भई. चल, कुछ ठंडा पीते हैं," चमन ने कहा.

"अब घर ही चलते हैं, यार. आराम से नहाधो कर ही कुछ पीने का मजा आएगा," रतन लाल ने टालने के स्वर में कहा. तभी उन की नजर सामने से आते संसद सदस्य सुधाकरजी और उन की पत्नी डाक्टर आशा लता पर पड़ी और वह आगे बढ़ कर तपाक से बोले, "आइएआइए सुधाकरजी, और आज डाक्टर साहिबा को इस समय कैसे फुरसत मिल गई?"

"बस, सुधाकरजी खींच लाए हैं."

"जरा टेनिस कोर्ट में दोदो हाथ करने को," सुधाकरजी हंसे, "कल से तो संसद का सत्र शुरू हो रहा है. सो फिर इन से उलझने की फुरसत नहीं मिलेगी न."

"सुधाकरजी, इस बार तो इस सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती महंगाई और मुनाफाखोरी के विरुद्ध आवाज उठाइए," चमन ने कहा.

"आवाज उठाने का आंदोलन चलाने से कुछ नहीं होने वाला चमन भाई," आशा कड़वे स्वर में बोली, "तब तक कुछ नहीं सुधर सकता, जब तक इस देश के लोगों की हर अच्छेबुरे मौके का फायदा उठाने की आदत नहीं सुधरती."

"फिलहाल तो आप मौके का फायदा [illegible]," चमन व्यंग्य से बोला, "इस [illegible] कोई और आए, आप टेनिस [illegible]."



"क्या मतलब?" रतन लाल ने भौंहें
ा कर पूछा.
"क्यों, तुझे याद नहीं कि किस सफाई
ान 1965 की लड़ाई का फायदा उठा कर
शा ने अपनी बदनामी को नेकनामी में
लने के साथसाथ सुधाकरजी को भी
स लिया था?"
"मगर 1965 की लड़ाई में मैं यहां था
कहां, यार. वह पूरा दशक तो अमेरिका
ही गुजारा था," रतन लाल ने याद
ाया.
"तभी तुझे आशा का लफड़ा नहीं
ूम वरना उन दिनों तो लड़ाई से ज्यादा
ा की चर्चा थी, शहर में."
"लेकिन चर्चा क्या थी?" रतन लाल
ाग्रह चमन के कंधे पर हाथ रखा,
ल, अंदर बैठ कर कुछ ठंडा पीते हैं और
ारी कहानी सुनते हैं."
"चलो, मगर अचानक डाक्टर
ा लता में तुझे इतनी दिलचस्पी कैसे हो
कि नहानाधोना भूल कर उस की
नी सुनने बैठ रहा है?" चमन ने चुटकी

नहाल तो आप मौके का फायदा उठा
ए," चमन व्यंग्य से आशा लता से बोला.

रतन लाल ने असहाय भाव से चमन की ओर देखा. अब उसे क्या बताते कि उन के बेटे रजत का रिश्ता सुधाकर और डाक्टर आशा लता की बेटी रतिका से प्रायः पक्का हो गया है. सगाई की रस्म रजत के जन्मदिन पर होनी तय हुई है. ऐसे में भावी समधिन के बारे में ऐसावैसा सुन कर किस की उत्सुकता नहीं जागेगी?

"समझ ले, किस्सा उस हुस्नपरी का और अंदाजे बयां तेरा. बस, दिलचस्पी जाग गई," रतन लाल का दिल स्वयं को अपनी सूझबूझ की दाद देने को किया.

"आशा की पहली नियुक्ति पोर्ट ब्लेयर में हुई थी. मेरे पिता उन दिनों गृह मंत्रालय में सचिव थे. सो आशा के पिताजी उन के पीछे लगे थे कि किसी से कह कर किसी तरह आशा को यहीं बुला लें. फिर अचानक एक रोज कहने लगे कि आशा को वह जगह पसंद आ गई है. इसलिए उस के तबादले की कोशिश न की जाए. 2 साल तक किसी को आशा दिखाई नहीं दी.

अचानक 1965 की लड़ाई छिड़ गई. उन्हीं दिनों आशा की बदली भी यहां हो



गई. आने के एक सप्ताह बाद ही आशा ने नन्ही सी बच्ची ला कर मां की गोद में डाल दी और बात फैला दी कि लड़ाई में लुटेपिटे किसी परिवार की अनाथ बच्ची है, जिसे वह दयावश अस्पताल से उठा लाई है."

"तुम्हारा मतलब है कि रतिका सुधाकर और आशा की अपनी बेटी नहीं है?" रतन लाल ने चौंक कर पूछा.

"आशा की तो खैर है ही मगर सुधाकर की नहीं. उस बेचारे को तो इस ने बाद में फंसाया. रतिका 7-8 महीने की रही होगी, तब उसे गोद में ले कर इन दोनों ने भांवरें ली थीं. तब बहुत चर्चा थी, शहर में इस शादी की."

रतिका रतनलाल के घर की बहू बनने वाली थी. ऐसे में उन्हें रतिका से संबंधित ऐसी बात पता चली जिस से एक प्रश्नचिह्न ने उन्हें घेर लिया. आखिर ऐसी क्या बात थी जिस की असलियत जानने के लिए वह उतावले हो उठे?

"यह तो छोटे शहरों की अपनी खासियत है," रतन लाल व्यंग्य से हंसे, "रतिका, अनाथ नहीं बल्कि आशा की बेटी है, इस का कोई सुबूत तो किसी के पास होगा नहीं?"

"इस से बड़ा सुबूत और क्या होगा कि आशा जैसी बिंदास और बेपरवाह लड़की इतनी बड़ी जिम्मेदारी बगैर किसी दबाव के अपने ऊपर ले ले? जाहिर है, पोर्ट ब्लेयर में किसी के साथ अटक गई होगी. इसीलिए वहां से तबादला नहीं करवाया, कभी छुट्टी ले कर घर नहीं आई. इस झमेले में घिरने के बाद भी शायद न आती, अगर लड़ाई न छिड़ जाती

"अब अपना शहर तो पाकिस्तान की सीमा पर है. सो दूरदराज से डाक्टरों को यहां बुलाया जाता है. उसी चक्कर में आशा का तबादला भी यहां हो गया. मौका देखते हुए आशा स्वेच्छा से यहां आ गई," चमन लाल ने उठते हुए कहा, "तभी हंस रहा था कि मौके का फायदा उठाने वाली बात आशा के मुंह से नहीं जंचती."

रतन लाल भी अनमने भाव से उठ खड़े हुए. उन के मनमस्तिष्क में अजीब झंझावात उठ रहा था. क्या उन के भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी पुत्र का विवाह एक ऐसी युवती से होगा, जिस के बाद के नाम पर समाज ने एक प्रश्नचिह्न लगाया हुआ है? पर वह पुत्र की पसंद की गई लड़की को भी हाथ से नहीं जाने देना चाहते थे. रजत 30 का हो चुका था और उस की उम्र से तालमेल खाती सर्वगुणसंपन्न लड़की का मिलना आसान नहीं था क्योंकि अच्छी लड़कियों के रिश्ते 22-23 वर्ष की आयु में ही तय हो जाते हैं. अब या तो लड़के की हमउम्र कामचलाऊ लड़की से शादी करो या फिर लड़के से 6-7 साल छोटी लड़की लाओ.

चमन के साथ वह भी पार्किंग स्थल की ओर आ गए. लेकिन अपनी गाड़ी में नहीं बैठे. वह चमन के जाने की प्रतीक्षा करते रहे. फिर टेनिस कोर्ट की बगल वाले लान में चले गए.

रतन लाल अकेले में इस अकस्मात आन पड़ी समस्या पर विचार करना चाहते थे. उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि चमन इस उम्र में ऐसी बेसिरपैर की कहानी गढ़ेगा या सुधाकरजी जैसे जानामाना सांसद और निष्ठावान व्यक्ति उन से रतिका की असलियत छिपाएंगे.

लेकिन तभी उन्हें खयाल आया कि चमन ने कहा था इस शादी की शहर में बहुत चर्चा रही थी, सो हो सकता है सुधाकरजी ने सोचा हो कि यह बात रतन लाल को भी मालूम होगी. अब भले ही



सुना है कि रतिका आप की बेटी नहीं
रतन लाल ने सुधाकरजी से पूछा.

का हर व्यक्ति रतिका की असलियत
चुका हो लेकिन उस की रजत से सगाई
बर सुनते ही सब को वह बात याद आ
गी. फिर जानपहचान वाले चटखारे
कर शोभा को आशा के 'पाप' को
' बनाने वाली कहानी सुनाएंगे.
परंतु आधुनिक विचारों वाली शोभा
उदार नहीं है कि यह सब सुनने के
भी वह रतिका को खुशीखुशी बहू के
स्वीकार कर सकेगी. हां, अगर उसे
से सब समझा कर बता दिया जाए तो
रजत की पसंद का खयाल करते हुए
हीलहुज्जत के बाद मान ही जाए.
लेकिन रजत की क्या प्रतिक्रिया
? वह अनुमान न लगा सके. सोचने
यों तो वह जातपांत या ऊंचनीच में
स नहीं करता लेकिन शादी तो अपने
पद की प्रतिष्ठा के अनुरूप किसी ऊंचे स्तर के परिवार में ही करना चाहेगा. भले ही सुधाकरजी वरिष्ठ सांसद और आशा लता जानीमानी डाक्टर हैं, लेकिन वे लोग तो केवल रतिका के संरक्षक ही कहे जाएंगे. रतिका के जन्म के आगे लगा प्रश्नचिह्न झेल सकेगा रजत?'

रतन लाल ने सोचा कि इस से पहले कि यह समाचार वह शोभा को या रजत को दें, एक बार सुधाकरजी से बात करनी बेहतर रहेगी. वह भी आज ही क्योंकि कल से संसद का सत्र शुरू हो जाएगा और सुधाकरजी उस में व्यस्त हो जाएंगे.

कुछ देर बाद आशा और सुधाकरजी टेनिस कोर्ट से बाहर आए. रतन लाल को देख कर सुधाकरजी पूछने लगे, "कहिए, किस का इंतजार कर रहे हैं?"

"आप ही का. कुछ जरूरी बात करना चाहता हूं."

"मगर मेरा तो क्लिनिक का समय हो रहा है," आशा असहाय भाव से बोली.

"आप चलिए, सुधाकरजी को मैं घर पहुंचा दूंगा," रतन लाल हंसे, "कभीकभी हम मर्दों को भी अकेले में बात करनी चाहिए."

"जरूर," आशा भी हंस पड़ी, "इतमीनान से बातें करिए, मुझे क्लिनिक पहुंचा कर ड्राइवर सुधाकरजी के लिए गाड़ी ले आएगा."

"हां, तो कहिए साहब, कहां बैठेंगे?" आशा के जाने के बाद सुधाकरजी ने पूछा.

"जहां कोई व्यवधान न पड़े."

सुधाकरजी कुछ सोचते रहे, फिर बोले, "चलिए, ऊपर जो मेहमानों के लिए रिहायशी कमरे हैं, उन में से एक खुलवा लेते हैं."

ऊपर जा कर सुधाकरजी ने कमरे का दरवाजा बंद करते हुए कहा, "हां, अब कहिए, क्या बात है?"

"मैं ने सुना है, रतिका आप की बेटी नहीं है?"

"इस सवाल के लिए आप इतना एकांत और बंद दरवाजे चाह रहे थे?" सुधाकरजी खिलखिला कर हंस पड़े, "इस का जवाब तो इस शहर के हमारी और आप की उम्र के प्रत्येक व्यक्ति को मालूम है, साहब?"

"मालूम होगा, मगर हमें तो आप ने कभी यह बात बताई नहीं?" रतन लाल ने उलाहने के स्वर में कहा.

"बताते तो तब, जब हम ने कुछ छिपाया होता. सभी को मालूम है कि रतिका हमारी बेटी नहीं है. मैं ने और आशा ने रतिका को गोद में ले कर शादी की रस्में पूरी की थीं. शहर में काफी अफसाने बने थे, इस शादी को ले कर. लेकिन आप को यह बात कैसे मालूम नहीं हुई अब तक?" सुधाकरजी के स्वर में व्यंग्य था.

"मैं उस समय अमेरिका में था. मगर रतिका है किस की बेटी?"

"नाम तो नहीं...हां, धाम जरूर बता सकता हूं. सन 1965 की लड़ाई में जब हम स्वयंसेवक बमबारी की चपेट में आए गांवों का दौरा कर रहे थे तो एक युवक की क्षतविक्षत लाश से एक युवती लिपटी पड़ी थी. देखने पर मालूम पड़ा कि उस में जान बाकी है. हम उसे तुरंत शहर ले आए. आपरेशन से बच्ची की जान तो बचा ली गई लेकिन मां को नहीं बचा सके. आशा उन दिनों सहायक डाक्टर थी और बच्ची उसी की देखरेख में थी. यह जान कर कि बच्ची को अनाथआश्रम में भेजा जाएगा, उस ने कहा कि वह बच्ची को स्वयं पालेगी.

"मैं उन दिनों नयानया राजनीति और समाज सेवा में आया था और अकसर घायलों को ले कर अस्पताल जाया करता था. बीमारों के प्रति आशा की सहानुभूति और कर्तव्य के प्रति निष्ठा देख कर मैं बहुत प्रभावित हुआ. मुझे लगा कि मुझ जैसे उभरते नेता को आशा जैसी संवेदनशील पत्नी चाहिए. सो मैं ने उसे और रतिका दोनों को अपनाने का प्रस्ताव रखा, जो उस ने मान लिया. फिर हम ने फैसला किया कि अपना बच्चा होने पर हम कहीं ममतावश रतिका के साथ अन्याय न कर बैठें, इसलिए हमारे अपने बच्चे नहीं होंगे. हां, रतिका के बारे में मैं बस इतना ही बता सकता हूं कि उस गांव का नाम था हीरा नगर और वहां की आबादी अधिकांश ठाकुरों और अहीरों की है."

"खैर, जातपांत की तो कोई बात नहीं," रतन लाल हिचकिचाए, "मगर कहने वाले तो कुछ और ही कहते हैं."

सुधाकरजी मुसकराए, "अब कहने वालों की जबान तो मैं पकड़ नहीं सकता. फिर भी बताइए, क्या सुना है आप ने?"

रतन लाल ने चमन से सुनी हुई बात बताई. सुधाकरजी पहले तो सुन कर हंसते रहे. फिर गंभीरता से बोले, "देखिए, पोर्ट ब्लेयर में आशा ने क्या किया, न तो मैं ने

ी पूछा, न ही उस ने स्वयं बताया. हम
ों को ही वर्तमान का सुख भोगने और
ष्य के सपने देखने से कभी फुरसत ही
मिलती कि एकदूसरे के अतीत में झांक
या अपने अतीत को याद कर सकें.

"मैं दावे के साथ आशा के अतीत के
में कुछ नहीं कहूंगा क्योंकि मैं न तो उस
में कुछ जानता हूं और न ही मुझे जानने
कोई आवश्यकता है."

"लेकिन मुझे तो है," रतन लाल ने
नी खिसियाहट कड़वाहट में छिपाने का
न किया, "मुझे तो मालूम होना चाहिए
मेरी होने वाली बहू किस की बेटी है?"

"वह तो असंभव है क्योंकि उस युवती
होशी में ही दम तोड़ दिया था. रहा
ल रतिका के आशा की बेटी होने का,
आशा ने कई नर्सों और एकदो अन्य
यक डाक्टरों के संग डाक्टर सावित्री
रतिका की मां का आपरेशन करने में
यता की थी. कई कागजों पर उस के
ख्त भी मौजूद होंगे.

"आशा की अगर कोई और औलाद
मैं नहीं जानता कि वह कहां है. लेकिन
जरूर कह सकता हूं कि वह रतिका
है. इस की पुष्टि तो डाक्टर सावित्री
उन के उस दिन के अन्य सहायक
र और नर्सें कर देंगी."

न लाल अब सचमुच ही खिसिया गए,
श्चर्य है, उन लोगों ने उस समय इस
ाह का खंडन क्यों नहीं किया?"

"उस से भी बड़ा आश्चर्य तो इस
का है कि कहने वाले इसे मेरे 'पाप' का
क्यों नहीं दे रहे क्योंकि अस्पताल में
होश युवती को मैं ही लाया था. मेरे
अनुचित संबंध हो सकते थे. रतिका
बच्ची हो सकती है. क्योंकि आशा ने
ोद ले लिया था इसलिए मैं ने आशा
दी कर ली. यह सब अटकलें क्यों नहीं
गईं? क्योंकि हमारे समाज में स्त्री
लांछन लगाया जाता है... पुरुष पर
हीं?"

इस सीधेसपाट सवाल से रतन लाल सकपका गए, "वैसे लांछन किसी ने नहीं लगाया. ऐसे ही किसी संदर्भ में बात आ गई थी."

"किसी संदर्भ में क्या... रतिका, रजत की सगाई की खबर सुन कर ही किसी ने यह कच्चाचिट्ठा खोला होगा," सुधाकरजी व्यंग्य से बोले.

"जी नहीं, यह बात तो हम ने अभी किसी को बताई ही नहीं है."

"तो अभी बताइए भी नहीं. जब तक आप की शंका का समाधान न हो जाए, बात बाहर नहीं निकलनी चाहिए. रतिका हमारी संतान नहीं है, यह सर्वविदित है. किस की संतान है, इस की मुझे और आशा को कोई परवाह नहीं है, न ही रतिका को इस से कोई फर्क पड़ता है. अच्छे से अच्छे स्कूल, कालिज में बिना किसी झंझट के उसे दाखिला मिलता रहा है. शहर के जानेमाने घरों के बच्चों के साथ उस की दोस्ती है, न ही उस की नौकरी में अभी तक कोई अड़चन आई है..."

"खैर, इन सब चीजों में तो नहीं, मगर शादीब्याह के मामले में तो ऐसे सवाल उठते ही हैं," रतन लाल ने बात काटी, "आखिर हमें रहना तो इसी समाज में है



"सूखा पड़ा हुआ है इसलिए मैं तुम्हें भाषण पिलाने आया हूं..."

न... इसलिए शादी के मौके पर समाज की बनाई गई मान्यताओं को मानना ही पड़ता है."

"आप के समाज में बहू के लिए अलग मान्यताएं या मापदंड क्यों हैं?" सुधाकरजी व्यंग्य से हंसे, "जिस लड़की को मेरी बेटी स्वीकार करने में समाज को कोई एतराज नहीं हुआ, उसी को आप की बहू स्वीकार करने में क्यों होगा? फिर भी आप पहले स्वयं से और अपने परिवार के सदस्यों से भी यह पूछ लीजिए कि आप के लिए क्या ज्यादा अहम है? रजत की रजामंदी या पसंद अथवा समाज की रजामंदी या पसंद. उस के बाद ही इस रिश्ते की बात पक्की कीजिए."

अवसर

अवसर आदमी को साहसी या कायर नहीं बनाता. बल्कि वह तो केवल छिपे गुणों और अवगुणों को अनावृत्त करता है.

—कानन वेस्कोट

"जी हां, रजत और उस की मां से बात कर के आप को फोन करूंगा."

"लेकिन इस विषय में आशा या रतिका से कृपया कोई पूछताछ न करें. जितना मैं ने आप को बताया है, उस से अधिक वे कुछ नहीं बता सकेंगी, लेकिन दुखी मुझ से ज्यादा होंगी," सुधाकरजी उठ खड़े हुए, "तो फिर चलें?"

सुधाकरजी हाथ मिला कर अपनी गाड़ी की ओर बढ़ गए. लेकिन रतन लाल फिर ऊहापोह की स्थिति में लान में टहलने लगे. जिस आत्मविश्वास से सुधाकरजी ने समाज के लगाए आरोपों पर प्रत्यारोपण किया था, उस से वह सिटपिटा से गए थे.

चमन की बातों से साफ जाहिर था कि लोग रतिका को अनाथ नहीं बल्कि आशा की अवैध संतान के रूप में देखते हैं. सुधाकरजी भले ही कड़ी चमड़ी कर के लोगों के व्यंग्यबाण सह लें या आशा के प्रेम का चश्मा आंख पर चढ़ा लें, रतन लाल स्वयं भी और विशेषकर उन की पत्नी तो यह बरदाश्त नहीं कर पाएगी.

जब काफी देर तक एकांत में टहलने के बाद भी रतन लाल किसी निष्कर्ष पर न पहुंच सके तो उन्होंने फैसला किया कि घर चल कर शोभा से ही सलाह करनी चाहिए. यों भी वह अब तक उन के घर न पहुंचने पर परेशान हो रही होगी.

घर पहुंच कर उन्होंने बड़े धैर्य से शोभा को पूरी कहानी सुनाई.

"हां, उस समय हम अमेरिका में थे," शोभा ने जम्हाई लेते हुए कहा, "छोटी भाभी ने मुझे पूरा कच्चाचिट्ठा लिख कर भेजा था कि कैसे आशा ने एक अनाथ बच्ची से अपनी बच्ची बदल ली."

"तुम ने मुझे तो यह बात बताई नहीं?" रतन लाल ने हैरानी से पूछा.

"सब चिट्ठियों के साथ ही वह चिट्ठी भी तुम्हारी मेज पर रख दी होगी. उन दिनों बातचीत की फुरसत किसे हुआ करती थी."

"तब न सही, अब तो बताना था, जब बात चली थी," रतन लाल ने रोष से कहा.

"बताया था रजत को, जिस ने बात चलाई थी. मेरा खयाल था कि तुम ने छोटी भाभी की चिट्ठी पढ़ ली होगी."

"मेरी छोड़ो, यह बताओ कि रजत ने क्या कहा?" रतन लाल ने उतावली से पूछा.

रतन लाल शोभा से यह सुन कर सन्नाटे में आ गए कि रजत ने रतिका को क्यों और कैसे पसंद किया. जब दोनों लाल बहादुर अकादमी में भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिए प्रशिक्षण ले रहे थे तो एक दिन कुछ प्रशिक्षार्थियों में अंगरेजी भाषा की समृद्धता को ले कर बहस छिड़ गई. कुछ लोगों का कहना था कि यह पूर्णतया विकसित भाषा नहीं है. उन्हीं में रतिका भी एक थी. उस के पूछने पर कि अंगरेजी में अवैध बालक को तो 'बास्टर्ड' कहते हैं,

किन अवैध बालिका को क्या कहते हैं? भी स्तब्ध रह गए थे. धीरेधीरे वे वहां से सक लिए थे.

रजत ने रतिका से कहा था कि प्रश्न शक बहुत अच्छा था, परंतु उस जैसी लीन युवती के मुंह से शोभा नहीं देता . इस पर रतिका ने उत्तर दिया था कि वास्तव में इस प्रश्न का उत्तर जानने को हुत उत्सुक है कि अंगरेजी में उसे क्या हा जाएगा. कुछ लोगों के अनुसार वह ाथ और कुछ के अनुसार अवैध संतान जिसे दो सहृदय व्यक्तियों ने अपनाया ा है. रजत उस की इस बेबाकी से बहुत ावित हुआ और तभी उस ने रतिका से दी करने की ठान ली.

''लेकिन तुम्हें ऐसी लड़की को बहू बनाने में, जिस के नाम के आगे एक प्रश्नचिह्न लगा हुआ है, एतराज नहीं है?'' रतन लाल ने पूछा.

''जब जो शादी कर रहा है, जिसे उस के साथ उम्र भर रहना है, उसे ही एतराज नहीं है या सुधाकरजी, जिन्होंने सब अफवाहों की परवाह किए बगैर मांबेटी को अपनाया है, समाज में सिर उठा कर चल रहे हैं, तो फिर भला मैं हीलहुज्जत करने वाली कौन होती हूं?'' शोभा ने लापरवाही से कहा.

रतन लाल को लगा, जैसे अन्य सब के लिए यह बहुत ही गौण विषय है, जिसे इतना तूल दे कर उन्होंने स्वयं अपने विचारों और तर्क शक्ति के आगे प्रश्नचिह्न लगा लिया है. ●



रात से लगातार बारिश हो रही थी. ऐसे मौसम में हमेशा ही सीमा का दिल घबराया करता था. इसलिए नदीम उसे तनहा न छोड़ता. कभी दोनों मिल कर कैसेट बजाते या फिर टीवी देखते.

लेकिन इस वक्त सीमा तनहा थी. नदीम कहां था, उस के साथ या उस के इर्दगिर्द. इसलिए उस का दिल टेप की तरफ देखने को न चाह रहा था. फिल्मों से तो जैसे उसे नफरत सी हो गई थी. बस दिल था कि उचाटउचाट था, इस रूखी, फीकी जिंदगी से.

उस ने मन-बहलाव की गरज से पत्रिका उठाई लेकिन व्यर्थ. वह भी उस के दुखी दिल पर मरहम न रख सकी. नदीम का साथ, उस का प्यार,

मुहब्बत के रंग

कहानी • अजीमा इकबाल

उस के साथ गुजारे हुए दिन किसी न किसी दिशा से झांकने लगते और मन को निराशा की चादर से ढक देते.

नदीम और सीमा का प्रेमविवाह हुआ था. दोनों एक ही कालिज में पढ़ते थे. फिर एक साथ ही दोनों की नियुक्ति एक कालिज में हुई.

शुरूशुरू में तो कालिज में मुलाकात होती. लेकिन धीरेधीरे उन की बातचीत का सिलसिला बढ़ने लगा, और कालिज से



लगा कर उड़ते रहे. नदीम भी सीमा पर जान छिड़कता था. अतः वह अपने जीवन से संतुष्ट थी.

कुदरत ने सीमा को हर खुशी दी, सुखसुविधा दी और अमनचैन दिया, लेकिन उस की बगिया में कोई फूल न खिल सका. उम्मीद और नाउम्मीदी में कई साल गुजर गए, लेकिन आंगन में किसी बच्चे की किलकारियां न गूंज सकीं.

सीमा ने किस्म-किस्म के इलाज करवाए, लेकिन सारे प्रयास विफल रहे. उस के दिल में अब तरहतरह के विचार घर करने लगे, 'कहीं ऐसा न हो कि नदीम दूसरी शादी कर ले? औलाद की खातिर इनसान क्या नहीं कर सकता.'

हर भी उन की मुलाकातें होने लगीं. इस ह दोनों में प्यार पनपने लगा.

सीमा ने नदीम को हंसमुख, सौम्य सुशील पाया. नदीम को भी सीमा में मियत नजर आई. वह काफी हसीन बात घरवालों के इल्म में भी आ ही थोड़ी नानुकर के बाद दोनों पक्ष राजी गए. इस तरह प्यार की यह डोर साल-के अंदर ही शादी के बंधन में बंध गई.

सीमा और नदीम की खुशी का ना न रहा. दोनों एकदूसरे में खो गए. गुजरता रहा और प्यार के क्षण पंख

सीमा की जिंदगी नीरस होती जा रही थी. वह नदीम को संदेह की नजरों से देखती. उस से कटीकटी और खिचीखिची सी रहती. उस की हालत उस अपराधी जैसी थी, जिसे अपने जुर्म का एहसास तो हो, लेकिन वह जुर्म कबूल करने से डरता हो.

उन के संबंधों में थोड़ा कसैलापन आ गया था. ऐसा लगता था कि नदीम अपने दिल का दर्द अपने अंदर ही समेटे हुए है.

धीरेधीरे वातावरण की मधुरता लुप्त होती चली गई और घर में खिंचाव

और तनाव व्याप्त हो गया. सूनेपन, उदासी और निराशा ने डेरा जमा लिया. प्यारमुहब्बत की बातें खवाबोखयाल हो गईं. कभी दोनों में तकरार शुरू हो जाती तो कभी शीतयुद्ध की सी स्थिति रहती.

सीमा और नदीम चुपचाप रहने लगे थे. जिंदगी अपना रंग और रस खोती जा रही थी. दोनों को एक ही कष्ट था, दोनों का केंद्रबिंदु था, एक नन्हामुन्ना, लेकिन प्रकृति ने उन की गोद सूनी ही रखी. इस में दोष किस का था, यह बिना जानेबूझे वे दोनों एकदूसरे को दोषी समझते. दोनों चिड़चिड़े और एकदूसरे से विमुख होते जा रहे थे.

यद्यपि नदीम हालात की नजाकत को महसूस करता और कुछ नरम पड़ना चाहता, लेकिन तभी उसे अपने घर के चिराग का खयाल आ जाता. अब तो नदीम को डाक्टरी रिपोर्ट से पता चल गया था कि सीमा कभी मां बन नहीं सकती. इस सत्य को उस ने सीमा से छिपाया तो जरूर, लेकिन उस के दिल में दूसरी शादी करने का विचार जड़ पकड़ता गया.

औलाद पाने की ख्वाहिश में नदीम ने दूसरा विवाह कर लिया. यह सीमा की बरदाश्त से बाहर था इसलिए वह अपना घर छोड़ मायके आ गई. परंतु क्या नदीम की मुहब्बत उस के दिल से मिट सकी?

एक दिन वह विस्फोट भी हो ही गया, जिस का सीमा को डर था. नदीम ने सीधेसपाट से लहजे में बिना किसी भूमिका के कहा, "सीमा, मैं दूसरी शादी करना चाहता हूं...बच्चे की खातिर."

सीमा के पैरों से जमीन खिसक गई, "हाय, यह आप क्या कह रहे हैं? मैं इसे सहन नहीं कर सकती. आप समझते क्यों नहीं...कृपया ऐसा न करें. मैं बेमौत मर जाऊंगी."

"सीमा, होश की दवा करो. मैं तुम्हें छोड़ नहीं रहा हूं और न ही शादी करने की कोई और वजह है. सिर्फ बच्चे की खातिर मैं ने ऐसी बात सोची है. तुम तो मेरे दम के साथ हो. तुम मेरी बात को और मेरी भावनाओं को समझने की कोशिश करो. मुझे बढ़ापे का सहारा चाहिए...घर का चिराग चाहिए."

"हां, आप को तो सब कुछ चाहिए, लेकिन न मेरी कोई भावनाएं हैं, न कोई एहसास. औरत हूं न...इसलिए मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं," सीमा ने आंसू पीते हुए कहा.

"मैं ने यह कब कहा है...इस घर पर पहले तुम्हारा हक होगा, फिर किसी और का," नदीम ने समझाया.

"बहुत देखे हैं इस तरह की बातें कहने वाले. जब वक्त आता है तो करते वे उलटा ही हैं. इस भुलावे में मत रहना कि बातों से मुझे बहलाफुसला कर उल्लू बनाया जा सकता है."

"जलीकटी से कभी कोई नतीजा नहीं निकलता. अपनी भलाई की खातिर तुम इसी घर में रहो, मेरे साथ."

"यह कभी नहीं हो सकता. अगर ऐसे ही मेरे साथ रहने की ख्वाहिश है तो छोड़ दो दूसरी शादी का खयाल."

"ऐसा कहने में तुम्हारी खुदगरजी झलक रही है. मुझे औलाद की जरूरत है और तुम्हारी नजर में यह कोई अहम बात नहीं. बहरहाल, जो समझ में आए करो. तुम्हारे लिए इस घर के दरवाजे हमेशा खुले रहेंगे."

सीमा ने नदीम की किसी बात पर कान नहीं धरा. उस का अंगअंग गुस्से से सुलग रहा था. सोचनेसमझने की ताकत जवाब दे चुकी थी. आंखें अंगारों की तरह दहक रही

ीं. वह सोच रही थी, 'काश, कुदरत मुझे ो संतान दे देती तो उस के खजाने में क्या मी आ जाती.'

सीमा ने नदीम की दूसरी शादी को हं का मसला बना लिया. उस का दिल टूट या था. नदीम के फैसले की चुभन उसे चोट रही थी. उस के अहं और गैरत को ह कतई गवारा न था कि वह दूसरी औरत होते हुए नदीम के साथ रहे. उस ने नदीम ा घर छोड़ने का फैसला कर लिया.

सीमा ने उस घर पर आखिरी बार सरत से नजर डाली. सब कुछ पहले जैसा था. दरोदीवार सब वैसे ही थे, सिर्फ लों में मैल आ गया था. वह नदीम की रफ देखे बगैर तेजतेज कदमों से घर के हर निकल रही थी कि नदीम उस का

आप की होने वाली बीवी की बांदी बन कर मैं हीं रह सकती," सीमा गुस्से में नदीम से ली.



रास्ता रोक कर खड़ा हो गया. वह बोला, "सीमा, मत जाओ."

"आप की होने वाली बीवी की बांदी बन कर मैं नहीं रह सकती...और न ही मुझे आप की माली इमदाद की जरूरत है. मेरे गुजरबसर के लिए मेरे मायके में बहुतकुछ है," सीमा की बातें नदीम के लिए असहनीय होती जा रही थीं. उसे इन जहरबुझे शब्दों की उम्मीद न थी. उस का पौरुष आहत हो उठा.

उस ने संजीदा हो कर बस इतना ही कहा, "ठीक है...जब साथ रहना तुम को गवारा ही नहीं है तो मैं रोक भी कैसे सकता हूं...तुम्हारी मरजी."

घर छोड़ते वक्त सीमा का दिल मचलने को बेताब था, नयन नीर बहाने को व्याकुल थे, लेकिन उस ने सख्ती से इन जज्बातों को कुचल दिया. अपनी कमजोरी पर काबू पा लिया. कलेजे पर पत्थर रख कर उस ने उस घर की ड्योढ़ी लांघ दी, जहां वह हमेशाहमेशा के लिए रहने आई थी.

सीमा मायके पहुंची तो सब उसे अचानक आया देख कर बड़े खुश हुए. शुरूशुरू में तो सब यही समझते रहे कि वह कुछ दिनों के लिए मिलने आई है. लेकिन धीरेधीरे संगीन सूरत का हाल सब के इल्म में आ गया. मां परेशान हो गईं. पिता पत्थर की मूर्ति बन गए.

घर के लोगों ने अपने तौर पर सीमा को समझाया, लेकिन उस का अपना हठ था. उस के दिल पर चोट लगी थी. नदीम की दूसरी



दोष

दोष था हमारा
पकड़े गए तुम,
मालूम हुआ जब
टुकड़े हुए हम.
—सुधा भार्गव

शादी का जख्म हर वक्त हरा रहता. इसलिए अपनेआप को इस घर से जोड़ न सकी.

उस का तर्क था कि जिस तरह नदीम को दूसरी शादी की जरूरत महसूस हुई, चूंकि सीमा की औलाद न हुई, क्या इन्हीं हालातों में औरत स्वप्न में भी दूसरे मर्द से शादी रचाने की सोच सकती है? आखिर मर्द अपनेआप को समझते क्या हैं?

सूनी वीरान रातों में सीमा को किसी करवट चैन न आता, नदीम की कमी उसे हर पल खलती. और वह अपने अंदर जो रिक्तता महसूस करती, उस की पूर्ति तो सिर्फ एक शख्स ही कर सकता था. यों दिखावटी तौर पर और दूसरों को जलाने के लिए उस ने स्वयं को कड़ा बना लिया था.

नदीम ने दूसरी शादी कर ली. उस ने सीमा को कई खत लिखे, खर्च भी भेजा. लेकिन सीमा के जख्म इन खतों से हरे हो गए. उस ने रुपए भी वापस कर दिए और खतों के जवाब भी न दिए.

रातों की तनहाई में वह जरूर रोती, लेकिन खर्च ले कर या खतों के जवाब दे कर वह खुद को कमजोर साबित करना नहीं चाहती थी. न ही वह नदीम पर यह जाहिर करना चाहती थी कि उसे उस की चाहत अब भी है. उस ने नदीम के सिलसिले में बाहरी तौर पर कड़वाहट का जामा पहन लिया था.

लेकिन मायके में जिस अधिकार के साथ वह दाखिल हुई थी, उस की कलई उसी दिन से उतरनी शुरू हो गई थी, जिस दिन घरवालों पर यह जाहिर हो गया कि वह नदीम से नाराज हो कर आई है. शादी के बाद औरत को मायके में मांबाप का ही सहारा होता है. भाईभावज किस के होते हैं. पिता बीमार रहने लगे थे. अभी सीमा को आए एक महीना ही हुआ था कि वह चल बसे. बूढ़ी मां खुद बेटों के सहारे थीं.

कुछ दिनों में ही सीमा पर मायके की हकीकत खुल गई. वह अभी तक इस बात को समझ ही नहीं पाई थी कि अब वह शादीशुदा है. अब पहले वाली बात मायके में कैसे मुमकिन हो सकती है. यहां रह कर उसे हर रोज नएनए अनुभव हो रहे थे, जो दिल पर करारी चोटें लगाए चले जाते.

भावजें तो सीमा को उलटासीधा कहने के लिए हमेशा तैयार रहतीं. मौकाबेमौका उस पर फब्तियां कसना, उसे फूहड़ साबित करना उन्होंने शुरू कर दिया था. भाई उस की तरफ से बेगाने हो गए थे, उस की जरूरतों को वे जानबूझ कर नजरअंदाज करते. उस से न कोई बात करता न कोई उस की सुध लेता. वह ढेरों काम निबटाती, लेकिन भाइयों और भावजों का मुंह फिर भी सीधा न होता.

भाइयों के बच्चे कहते, "फूफी कितनी गंदी है...झगड़ा करती है. अपने घर से लड़झगड़ कर हमारे घर रहने को आ गई है."

सीमा की मां की अब इस घर में चलती ही कहां थी. उन को इन बातों का एहसास भी होता और बेटी की बेबसी का खयाल भी आता, लेकिन वह बोलने की स्थिति में

हां थीं. वह भी तो बेटों, बहुओं के साथ ह रही थीं. उन के खिलाफ आवाज कैसे ठातीं. बेटी का मुंह देखतीं और कुढ़तीं.

सीमा को कभीकभी अपने किए पर छतावा जरूर होता, लेकिन फिर उस का हं जाग उठता.

लेकिन फिर भी एक कमी और एक सक सी दिल में हमेशा मौजूद रहती, जो से चैन न लेने देती. अब यह बात सीमा ने च्छी तरह समझ ली थी कि औरत अपने र में रानी होती है. चाहे वह घर कैसा ही , लेकिन उस घर में अपनापन होता है.

भाइयों के घर हर चीज अजनबी सी ौर पराई सी लगती है. जो काम करना ता है उसे डर कर और बहुत मुंहताज हो र करना पड़ता. ऐसा लगता, जैसे यहां हवा में आजादी न हो, लेकिन जो चनेसमझने का वक्त था, वह तो गुजर का था. अब तो वह थी और उस की करार जिंदगी.

नदीम का घर छोड़ कर आने पर जब गों ने सीमा से हमदर्दी दिखाई और बंधों को जोड़े रखने को कहा, तब तो उस अपने तर्कों से उन्हें खामोश कर दिया था र टाल दिया था, लेकिन अब स्वयं को से समझाए?

सीमा का जीवन सूखी नदी के समान गया था. अब वह यहां चाह के नहीं बल्कि मजबूरी से रह रही थी. उसे हर पल किसी आहट का इंतजार रहता कि शायद अगला क्षण कोई उम्मीद की किरण ले कर आए. कुछ ऐसा संदेश आए, जो उस के जीवन को खुशियों से भर दे, उस की उजड़ी जिंदगी में तरोताजगी पैदा कर दे. वह अंदर ही अंदर कमजोर पड़ती जा रही थी.

उस ने कभी पहले सोचा भी न था कि नदीम उस के दिल में इतनी गहराई तक समा चुका है. हंसी तो जैसे उस से रूठ गई थी और होंठों से मुसकान गायब हो गई थी.

दूसरी ओर दिमाग की यह दलील थी कि नदीम के बिना भी रहा जा सकता है. लेकिन दिल में प्यार की लहरें यह विश्वास दिलाना चाहती थीं कि उस की जिंदगी नदीम के बिना बेरंग है, बेरस है. उसे नदीम की जरूरत है.

उसे किसी करवट चैन न आता. दिल बेकरार ही रहता. पूरी रात चैन से सोए हुए उसे महीनों गुजर गए थे.

फिर एक दिन ऐसी खबर आई कि सीमा की जिंदगी में सचमुच फूलों का सा निखार आ गया. नदीम की दूसरी पत्नी से जो नफरत और जलन उस को थी, वह न जाने कहां चली गई. शायद किसी कोने में दब सी गई.

सीमा को खबर मिली कि नदीम के


'क्या बताऊं, मेरी पत्नी बहुत बरसती है.''


''ओह, तभी तुम्हारा तबादला सूखाग्रस्त क्षेत्र में हुआ है.''

यहां लड़का पैदा हुआ है. वह फूली न समाई. साथ ही दिल में टीस सी भी उठी. बच्चे को देखने की ख्वाहिश सिर उभारने लगी.

एक के बाद एक दिन गुजरते रहे. अब तो सबकुछ एक ख्वाब सा बन कर रह गया था. वक्त का पंछी उड़ता रहा. सीमा ने भी परिस्थितियों से समझौता कर लिया था. इस के अलावा चारा ही क्या था.

एक दिन सीमा बाजार से लौटी तो उस का भतीजा दरवाजे पर ही मिल गया. कहने लगा, "बैठक में कोई साहब आप के इंतजार में बैठे हैं."

"मेरे इंतजार में कौन हो सकता है?" कहती हुई सीमा बैठक में प्रविष्ट हुई.

सीमा के भीतर दाखिल होते ही वह आदमी उठ खड़ा हुआ.

जीवन

जीवन स्वयं में न तो अच्छा होता है और न ही बुरा. उसे तुम जैसा बना दो वह तो वैसा ही अच्छा या बुरा बन जाता है.

—मांतेन

सीमा ने एकदम दिल पकड़ लिया. उस के सामने और कोई नहीं, नदीम ही था.

"बोलोगी नहीं...बैठने को भी नहीं कहोगी?" नदीम ने धीरे से कहा.

"बैठोबैठो," सीमा ने धड़कते दिल से कहा.

कुछ देर दोनों के बीच खामोशी छाई रही. फिर सीमा ने ही जबान खोली, "क्यों आए हो?"

"तुम्हें लेने आया हूं," नदीम ने दबी जबान से कहा.

"जिस वजह से मैं ने घर छोड़ा, वह तो वहां मौजूद होगी ही," सीमा के सामने अतीत मुखरित हो उठा था, उसे इतने दिनों के भोगे हुए कष्ट याद आ गए. कदमकदम पर हुई अपनी जिल्लत और तौहीन याद आ गई और उस का रोष उमड़ पड़ा. लहजे में तल्खी और कड़वाहट घुल गई.

चंद क्षणों बाद नदीम बोला, "हां, है तो वहीं, लेकिन लाचारी के साथ. उस ने ही मुझे तुम्हारे पास तुम्हें लेने भेजा है. उस की इच्छा पूरी कर दो और मेरे साथ चलो."

"यानी अब भी तुम खुद नहीं आए. वह कौन होती है मुझे बुलाने वाली?" सीमा ने गुस्से से कहा.

"वह बुरी तरह जख्मी है. उस के साथ दुर्घटना हो गई है. बड़े कष्ट में है. बस, तुम्हें एक नजर देखना चाहती है. बड़ी उम्मीद के साथ उस ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है."

दुर्घटना की बात सुन कर सीमा सिहर उठी. लेकिन अपनी सिहरन को उस ने नदीम पर जाहिर नहीं होने दिया. वह नहीं चाहती थी कि उस के चेहरे पर इनसानियत के नाते जो कोमल भाव उभर आए हैं, उन्हें नदीम देख ले. वह स्वयं को तटस्थ ही प्रकट करती रही.

नदीम चलने के लिए सीमा से आग्रह करने लगा. उस ने विनती की, "इस वक्त अगलीपिछली बातें भूल जाओ और मेरे साथ चलो. कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें पहुंचने में देर हो जाए और फिर पछतावे के सिवा कुछ भी हाथ न लगे.

सीमा का मन भारी हो रहा था. मां ने उसे ऊहापोह में देख कर समझाया, "जा, जल्दी कर. सामान ठीक कर ले. जब लेने आया है तो जरूर चली जा. यह समझ ले कि आदमी की छत्रछाया पत्नी के लिए बहुत बड़ी जरूरत है. अपने कष्टों को याद कर, कितनी तकलीफें उठाई हैं तुम ने यहां. पहाड़ सी जिंदगी बाकी है."

"जो खास परेशानी का वक्त था, वह तो गुजर गया. अब तो इस जीवन से मैं ने समझौता कर लिया है. जब शीशे में बाल पड़ जाता है तो उसे कौन निकाल सकता है," सीमा ने कहा.

"शीशे से नहीं...हां, दिल से जरूर निकल सकता है. फिर यह तो सोचो कि जो हमें पसंद है, क्या वही अच्छा है? जो फैसला

म ने कर लिया उस से बेहतर कोई बात हीं. जिस में हम सुखसंतोष की अनुभूति रते हैं, उसी में दूसरों को भी सुखसंतोष मलना चाहिए.

"नदीम बहुत दुखी हो कर तुम से वनती कर रहा है. उस की औरत खतरे में और वह तुम्हारी खुशामद में लगा हुआ . ऐसा नहीं है कि तुम्हें उस की चाह नहीं ...तुम्हें अब भी उसी से प्रेम है. सिर्फ म्हारे अहं ने तुम्हारे पैरों में बेड़ियां डाल खी हैं. अपने अहं के हवाले खुद को मत हो ाने दो. दूसरों की खुशीनाखुशी का मान खना भी सीखो."

मां की नसीहत और प्रताड़ना ने सीमा ो झकझोर कर रख दिया. वह चलने को यार हो गई.

वे घर पहुंचे तो सन्नाटा छाया हुआ था. क कमरे में हलकी रोशनी का बल्ब टमटिमा रहा था. नदीम ने नौकर को ावाज दी तो वह दौड़ा हुआ आया. 2 ौरतें उस कमरे में नजर आईं. एक का तो ारा जिस्म ही पट्टियों से ढका हुआ था. सरी उस की तीमारदार थी, जो देखने में स की मां प्रतीत हुई.

सीमा ने नजदीक जा कर देखा तो दीम की पत्नी रेहाना ने अपना पीला पकपाता हुआ हाथ बढ़ा दिया.

"सीमा, तुम आ गईं. मैं ने बुलाया जो ...मुझे उम्मीद थी कि तुम जरूर ओगी."

सीमा ने सांत्वना के अंदाज में अपना थ उस के कंधे पर रख दिया.

"मैं मरने से पहले तुम्हारी चीज तुम्हें पस करना चाहती हूं और अमानत ..."

"मेरी चीज और अमानत? क्या कह ी हो?"

"हां...तुम्हारा घरसंसार, तुम्हारा न और तुम्हारा बच्चा...उस के भी मूली सी चोटें आई हैं और वह बगल के रे में सो रहा है."

इतने में नौकर नाश्ता और चाय रख कर चला गया. रेहाना की अम्मी ने प्रेमपूर्वक सीमा को चाय पिलाई.

रेहाना ने सीमा को एक पैकेटनुमा लिफाफा देते हुए कहा, "यह रही तुम्हारी चीज."

सीमा ने हैरत में डूब कर लिफाफा थाम लिया.

"मुझे डर था कि कहीं तुम्हें आने में देर न हो जाए. मेरे पास वक्त की कमी जो थी," रेहाना ने आंसुओं में डूब कर कहा.

सीमा ने लिफाफा खोला तो उस में से एक पैकेट मेहंदी का निकला. साथ ही हरी, लाल कांच की चूड़ियां, कुछ सोने के जेवर, बैंक की पासबुक व चैकबुक. उस में बच्चे के चंद फोटो भी रखे हुए थे.

सीमा का दिल तड़प उठा. रेहाना ने डबडबाई आंखों से उस की तरफ देखा. जरा सी संतोष की सांस ली और फिर उस की गरदन एक तरफ को ढलक गई.

सब रोने लगे. नदीम उस के शरीर पर गिर कर फफक उठा. इतने में रेहाना की मां बच्चे को गोद में लिए रोती हुई कमरे में दाखिल हुई. नदीम उसे देख कर और ज्यादा रोने लगा.

तभी रेहाना की मां सीमा के पास बच्चे को लाई और रोती हुई बोली, "इसे संभालो." सीमा ने बंटी को अपनी छाती से लगा लिया और सोचने लगी कि रेहाना से वह नफरत करती रही, लेकिन वह उस से मुहब्बत करती रही और जातेजाते उस की सूनी गोद को भी भर गई.

नदीम भीगी पलकों से मांबेटे को निहार रहा था. सीमा को लगा कि कल ही तो नदीम से जुदा हुई थी और आज नदीम बेटे सहित उसे मिल गया. वह सोचने लगी कि रेहाना ने उस की धरोहर सूद के साथ वापस की है. उसे घाटा नहीं हुआ, फायदा ही हुआ है. उस ने बढ़ कर रेहाना के चरणों पर अपना सिर रख दिया और फफक पड़ी. ●

पाठकों की समस्याएं



मैं 34 वर्षीया विवाहिता 4 बच्चों की मां हूं. मेरे पति विकलांग हैं और एक दुकान से आजीविका चलती है. पिछले एक वर्ष से एक 36 वर्षीय शादीशुदा, बीवीबच्चों वाले पुरुष से मेरा शारीरिक संबंध चल रहा है. अब उसी के संपर्क से मुझे 4 माह का गर्भ भी है. उस से मेरा गहरा शारीरिक संबंध मेरे पति की रजामंदी से ही चल रहा है. मेरा प्रेमी मुझ से शादी कर के पूरे परिवार का खर्च उठाने को भी तैयार है जबकि उस का अपना भी पूरा परिवार है. क्या उस से शादी कर लेनी चाहिए? मैं उसे बेहद चाहती हूं.

आप एक नितांत गैरजिम्मेदाराना बात के लिए तत्पर हैं. ऐसी अवैध हरकत को स्थायी बनाने की आप की कोशिश सिर्फ इसलिए है क्योंकि आप के पति आप को स्वतंत्रता दे रहे हैं. उस पर तुर्रा यह कि आप अवैध गर्भ धारण कर के भी पछता नहीं रहीं. पति की विकलांगता का लाभ तो उठा ही रही हैं आप, साथ ही अपने चारों बच्चों का भविष्य भी बरबाद कर रही हैं. इस के साथ ही अपने तथाकथित प्रेमी के परिवार की सुखशांति भी भंग कर रही हैं.

अपने उस प्रेमी को भी समझ लीजिए. प्रथम तो आप उस से कानूनन विवाह नहीं कर सकतीं. दूसरे, वह भी कभी आप से विवाह नहीं करेगा. वह इसलिए अपनी रजामंदी दिखा रहा है क्योंकि मजे से आप को भोग रहा है और अपने परिवार का सुख भी उठा रहा है. हो सकता है उस की पत्नी को इस प्रकरण का पता ही न हो. ऐसे खुदगर्ज लोग बाहर सुख लूट कर दूसरे की गृहस्थी में आग लगा देते हैं पर अपने परिवार पर आंच भी नहीं आने देते.

समय रहते आप इस अवैध गर्भ से छुट्टी पा लीजिए और तुरंत इस व्यक्ति का साथ छोड़ कर पति व बच्चों की ओर पूरा ध्यान दीजिए. हो सकता है कुछ समय बाद सब सामान्य हो जाए. वरना जीवन में आप को कुछ भी हासिल न होगा. आप के पति तभी तक आप के साथ हैं जब तक उन की चेतना सुप्त है. जब बच्चे बड़े हो जाएंगे तो वे भी आप को दुत्कारेंगे

मैं 24 वर्षीया अविवाहिता स्नातक हूं. एक तलाकशुदा 3 वर्षीय बेटे के 26 वर्षीय पिता से प्रेम करती हूं. वह सरकारी नौकर हैं. उन में शराब, सिगरेट वगैरह की कोई भी बुरी लत नहीं है. पर हमारी जाति अलगअलग है. जैसा मैं चाहती थी वैसे ही वह हैं. इसलिए उन से ही विवाह करना चाहती हूं पर घरवाले उन की गैरजाति व तलाकशुदा होने की स्थिति को पसंद नहीं कर रहे, हालांकि उन के स्वभाव व आदत से बेहद खुश हैं.

कृपया बताइए क्या तलाकशुदा से विवाह करना उचित है? उजड़े घर को मैं बसाना चाहती हूं, क्या करूं?

तलाकशुदा से विवाह करने पर आमतौर पर सब की सवालिया निगाहें उठती हैं. कोई भी परिवार अपनी कुंआरी लड़की का विवाह ऐसे तलाकशुदा से नहीं करना चाहता. आप का परिवार भी इस का अपवाद नहीं है. आप को उस व्यक्ति के तलाक के कारणों का ठीक पता कर लेना चाहिए क्योंकि उस की पूर्व पत्नी ने इतने छोटे लड़के को छोड़ कर अलग होने का निश्चय किया तो कोई ठोस कारण अवश्य होगा. आमतौर पर भारतीय परिवेश में स्त्रियां अपने पति का घर व बच्चा छोड़ती नहीं हैं.

आप को स्वयं को भी परखना होगा कि क्या आप उस व्यक्ति से विवाहोपरांत निभा लेंगी. आप को हर पक्ष को गहराई से सोचना होगा क्योंकि यह आप के जीवन का अहम फैसला है. आगे आने वाले समय में विवाह के बाद आप के बच्चे भी होंगे, उस समय आप की कठिन परीक्षा होगी. यदि आप सौतेले बच्चों को संरक्षण और पति को प्यार दे सकती हैं तो आप विवाह कर सकती हैं.

—कंचन •

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

गणेश जी

(पृष्ठ 130 का शेषांश)

रहा होता, उस की तो शान ही मत पूछिए.

डा. जान के परिवार की देखादेखी अब नाश्ते में हम भी डबलरोटी और मक्खन लेने की व्यवस्था करने लगे थे. उबली और सादी सब्जी का गुणगान करने लगे थे. 'गुडमार्निंग' और 'गुडनाइट' जैसे शब्दों को हम ने भी अपनी दिनचर्या का अंग बना लिया था.

जब से जान साहब हमारे किराएदार हुए थे, तब से हिंदुस्तान की हर चीज हर तौरतरीके से मुझे नफरत सी हो गई थी. जी कचोट उठता, 'काश, मैं भी किसी पश्चिमी देश में पैदा हुआ होता.' यहां तो एक खूंटे से जो बंध जाओ, तो जब तक दम न निकल जाए, तब तक गरदन से रस्सी नहीं छूटती. यही तरीका है हमारे मुल्क में और इसी पर कुछ हिंदुस्तानी सीना फुलाए चलते हैं.

"पिताजी, दीवाली आने में सिर्फ 4 ही दिन रह गए हैं... पटाखे कब ला दोगे?" मैं विचारों में उलझा हुआ था कि बेटे चिंटू ने आ कर गरदन से झूलते हुए कहा.

"चल हट... अभीअभी दशहरे से गरदन छूटी है. अब लगा, दीपक राग अलापने," मैं ने चिंटू को परे झटकते हुए कहा.

आखिर दीवाली का दिन आ पहुंचा. संपूर्ण शहर कहना तो अतिशयोक्ति होगी, पर महल्ले के लोगों के अतिरिक्त अन्य लोग भी हमारे घर मिलने आते रहे. डाक्टर तो हमारे शहर में थे, पर विदेशी चीज का अपना अलग ही आकर्षण होता है. लोग औपचारिकता के तहत मुझ से मिलते और फिर अमेरिकी दंपती की ओर मुखातिब हो जाते. हर आगंतुक के हाथ में [illegible] और पटाखों के डब्बे थे. शहर के नामीगिरामी घरों से खाने का निमंत्रण मुझे भी मिला था. 'वी.आई.पी.' होने का स्वाद मैं पहली बार चख रहा था.

दीवाली के लिए खासतौर पर बनवाए गए भारतीय परिधान में रोजलिन अत्यंत आकर्षक लग रही थी. सजाए गए दीयों की पंक्तियां देख कर वह अत्यंत प्रसन्न हो रही थी. हर पटाखे और फुलझड़ी पर खुश हो कर वह बच्चों की तरह तालियां पीट रही थी.

रोजलिन की देखादेखी महल्ले के भी कई युवाओं और अधेड़ों में भी बचपना जाग उठा था. खैर, कुंआरों का तो अधिकार ही बनता था पर यहां तो अधेड़ भी अपनी गृहलक्ष्मी को भूल कर रोजलिन की तरफ ऐसे सम्मोहित हो रहे थे, जैसे लोग हिंदी को भूल कर अंगरेजी की तरफ सम्मोहित होते हैं. रोजलिन की तरफ उठी अनेक नजरों को देख कर मैं कुढ़ रहा था, पर करता भी क्या?

मैं कोई उपाय ढूंढ़ ही रहा था कि सहसा बिजली कौंधी. ध्यान आकृष्ट करने के लिए मैं भीड़ में जबरन घुस कर रोजलिन को दीवाली की पौराणिक गाथा और गणेशलक्ष्मी पूजन का महत्त्व समझाने लगा. वह दिलचस्पी ले कर मेरी बातें सुनने लगी तो मेरा हौसला बुलंद होता गया.

लेकिन सारी गड़बड़ यहीं पर हो गई. काश, मैं ईर्ष्या की आग में न जलता. अपनी सीमा मुझे मालूम थी, फिर भी मैं उस से आगे निकल गया.

मेरी मिट्टी कुछ यों पलीद हुई कि भारतीय सभ्यता और देवीदेवताओं की जानकारी लेने में डाक्टर दंपती को विशेष रुचि थी. दोनों ही पटाखे और फुलझड़ी को नजरअंदाज कर मेरी बातों को गौर से सुनने लगे. उन के एकएक प्रश्न का मैं उत्तर दिए जा रहा था. पड़ोसियों के उतरे हुए चेहरे और जलन भरी नजरें मुझे बेहद खुशी दे रही थीं.

सहसा बैठक में गणेश, लक्ष्मीजी के

ी कैलेंडर को देख कर रोजलिन ने पूछ ही
या, "क्या आप यह बताएंगे कि आप के
की सभी देवीदेवता तो बहुत खूबसूरत व
रहरे बदन के हैं, मगर गणेश बहुत मोटे
. आखिर क्यों?"

अब गेंद महल्ले वालों की पकड़ में थी.
गों के होंठ व्यंग्यात्मक अंदाज में फैल गए
'दो बच्चू, अब इस का जवाब?'

"वह ऐसा है मैडम, गणेशजी
ड्डुओं के बहुत शौकीन थे," मैं ने गला
खार कर कहा, "इसीलिए वह मोटे हो
. गणेशजी की तसवीर हमें यही संदर्भ
ी है कि अत्यधिक मीठे और घी का सेवन
ने से इतना मोटापा हो जाता है कि
ष्य पास आ कर भोजन कुतरते चूहे को
नहीं भगा सकता."

री बात सुन कर जान दंपती संतुष्ट
कर चले गए. पर मैं सोचने लगा कि इन
ं हमारे देश में भी लोग धर्म के प्रति
ी जागरूक हो गए हैं. बजाय अपने
के, गर्व से तन कर अपने धर्म का नाम
हैं. धर्म ही हमें अपनी पहचान बता रहा
रमान यात्रा से भी ज्यादा आकर्षक अब
यात्रा हो गई है. सती प्रथा और बलि
को जायज ठहराया जाने लगा है. ऐसे
ोई धर्मगुरु फतवा जारी कर मुझे
ान रुशदी का भारतीय संस्करण न
डाले, यह प्रश्न मेरे मन को विचलित
रहा था.

पर मैं सभी भाईबहनों से पूछता हूं कि
मेरी जगह होते तो गणेशजी के लिए
गए ऐसे प्रश्न का क्या उत्तर देते?
जी द्वारा हाथी के बच्चे का सिर जोड़े
की कथा मुझे भी पता है, पर लड्डुओं
लंबोदर का इस से क्या ताल्लुक?
किसी भाईबहन को किसी वेद, किसी
के माध्यम से इस बात की जानकारी
कृपया मुझे लिखें. इस से पहले कि
रास्ता किसी अंगरेज या किसी जरमन
पु से पड़ जाए, मुझे इंतजार रहेगा,
के उत्तर का. ●

प्रतीति
(पृष्ठ 50 का शेषांश)

लिए उकसा रहा है? अपनी रखैल बनाने के लिए निमंत्रण दे रहा है? क्या छिप कर करने से 'पाप', पाप नहीं रह जाता? क्रोध से वह सुलग उठी. सुबोध पर नहीं, अपनेआप पर गुस्सा आया उसे. उफनता हुआ, खुद को जलाता हुआ गुस्सा. उसी ने ही तो सुबोध को कुछ जाने, कुछ अनजाने इस मंजिल तक पहुंचने की हिम्मत दी थी, शायद और अब...

संजय वापस आया और उस दिन शुक्ला बच गई.

पर तब से अकसर सुबोध उसे अपने सवाल के जवाब के लिए द्विअर्थी शब्दों से छेड़ता रहता.

शुक्ला सोचती कि संजय को कैसे बताए और क्या बताए? अपना दोष जान कर भी पति के आगे कैसे अपनी भूल का इकरार करे? वह सुबोध का साथ बहाने बना कर टालने की कोशिश करती रही थी... पर कितने दिनों तक? और अब... यह चिट्ठी...

सुबोध की गाड़ी से नागार्जुन सागर जाने का, वहां 2-3 दिन बिताने का प्रस्ताव... पूरे परिवार को तो वह बुलाएगा ही... जा भी सकते हैं सब... पर बाद में ऐसे निमंत्रणों का सिलसिला... उस में भी सुबोध के ढूंढ़े हुए... एकांत के क्षण... उस का बदन कांप गया... शर्म से, डर से, मुंह सूख गया, उस का...

अचानक उस का ध्यान कभी से बज रही दरवाजे की घंटी की ओर गया.

"आई... आई..." कहती हुई वह भागी. सुबोध की चिट्ठी उस ने जल्दी से साड़ी के अंदर के पल्लू में बांध ली. दरवाजा खोला तो सामने संजय खड़ा था.

"सो रही थी क्या? तबीयत कुछ खराब है?" उस ने प्यार से पूछा.

शुक्ला का गला भर आया. "नहीं तो..." जैसेतैसे उस ने कहा. संजय अंदर गया तो उस की नजर रसोईघर में फैली हुई चीजों पर पड़ी.

"वाह... दीवाली आ रही है..." उस ने हंस कर कहा.

शुक्ला कुछ न बोली. डर, आशंका, चिंता का धुआं उस के दिलोदिमाग पर छा गया था.

"देखो, सब से बड़ी बात तो मैं भूल ही गया," संजय बोला, "तुम कहती थी न कि तुम्हारे मन में कई बार कितनी ही चीजों के बारे में तरहतरह के विचार आते हैं और मैं ने तुम्हें लिखने की सलाह दी थी... याद है?"

"हां..." मरी हुई आवाज में शुक्ला बोली. अपनी योग्यता के अनुरूप कार्यक्षेत्र न मिल पाने का दुख फिर एक बार उभर आया.

"पर पढ़ेगा कौन मेरे विचार?" उस ने उदास स्वर में पूछा.

"यही तुम्हारा सवाल था... पर तब मेरे पास जवाब नहीं था. आज है... 'स्मिता' मासिक के कार्यालय में मैं आज गया था. चुपके से तुम्हारे लिखे गीतों की डायरी भी साथ ले गया था. सोचा, अपने कार्यालय के काम के साथ अपनी शुक्ला का काम भी करता चलूं."

बिजली का बटन दबाते ही हटने वाले अंधेरे की तरह शुक्ला की उदासी फौरन भाग गई. आतुरता से उस ने संजय की आंखों में झांका.

"तुम्हारी कविताएं अच्छी हैं... कुछ सुझावों के लिए तुम्हें बुलाया है..."

"सच?"

"तो क्या झूठ? मैं कभी तुम से झूठ बोलता भी हूं? और सुनो, बाद में पता चला कि वहां सहायक संपादिका हमारी परिचिता हैं... सुबोध की... परित्यक्ता पत्नी..."

''क्या?'' शुक्ला को जैसे बिजली छू

''हां, उन्होंने आगे पढ़लिख कर
ना रास्ता बना ही लिया. बच्चे भी
जाते रहते हैं, उन के पास. बड़ी अच्छी
भाभीजी मुझे...''

''भाभीजी? अब... भी?''

''तो क्या हुआ? मैं तो उसी नाम से
ता था न? आज भी उसी तरह से बातें
तो हंस पड़ीं. बोलीं, ''भाभी और देवर
रिश्ता अब भी तो हो सकता है...''

''दूसरी शादी की है, उन्होंने?''

''यह सब मैं वहां कैसे पूछता? और
क्या फर्क पड़ता है, अगर की भी हो तो?
उन के पति को 'भैया' बना लेंगे,'' संजय
पड़ा, ''पर... कुछ मिठाईविठाई
ताओगी नहीं? इतनी बड़ी खुशखबरी
ा हूं... तब भी?''

शुक्ला ने अपने पति के स्निग्ध मुख
एक भरपूर नजर डाली. फिर उस के
जा कर, उसे बांहों के घेरे में भर कर
बोली, ''मिठाई, चाय... सभी कुछ मिलेगा. दीवाली का त्योहार क्यों न अभी से ही शुरू कर दें?'' चकित संजय के हाथों का एक हलका सा चुंबन ले कर शुक्ला रसोई की ओर मुड़ी.

मिठाई की सोंधी महक से घर भर गया था. संजय को प्लेट पकड़ा, चाय बनाती हुई शुक्ला का मन सोच रहा था, 'पानी को खौलने तक ढक कर रखने से वह ढक्कन को दूर करने के लिए भाप बन जाता है. मनुष्य का स्वभाव भी वैसा ही है.

सुबोध के विचित्र स्वभाव से छुटकारा पाने के लिए अब उसे भी एक भाप का सहारा मिल गया है. संजय के प्रेम की गहनता का एहसास... उस के सहारे वह सब कठिनाइयों को पार करती आई है. वही सच्चा दीया है, उस के जीवन की दीवाली का. अगर उस के मन में दृढ़ निष्ठा है तो सुबोध को दूर रखना जरा भी कठिन नहीं. फिर धीरे से पल्लू खोल कर उस ने सुबोध की चिट्ठी को गैस की लौ पर रख दिया.●

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

जायसवाल, 22 वर्षीया, 5'3", एम.एससी. (रसायन विज्ञान), बी.एड., राजस्थान निवासी कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण जानकारी सहित दें. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 2918, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 27, 160, एम.ए., सेवारत, सुंदर, गौरवर्ण, मृदुभाषी कन्यार्थ उत्तम वर चाहिए. वि.नं. 2931, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (धोबी), 23, 5'2", एम.बी.बी.एस., इंटर्नशिप चल रही है, सुंदर, सुशील, गोरी कन्या हेतु एम.डी., एम.एस., सजातीय वर चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी. वि.नं. 2932, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, जाटव कन्या, सुशील, गृहकार्यदक्ष, रंग साफ, मैट्रिक हेतु सरकारी सेवारत, व्यवसायी वर. शीघ्र विवाह. वि.नं. 2933, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, 22, 165, सुंदर, स्लिम, गोरी, गोल्ड मेडलिस्ट, एम.एससी. (बाटनी), आई.ए.एस. की तैयारी में संलग्न, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु आई.ए.एस./इंजीनियर, डाक्टर/इंडस्ट्रियलिस्ट वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 2946, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुलीन, सभ्य, सुसंस्कृत, उच्च शिक्षा प्राप्त परिवार के सुंदर, सुशील, 27, 160, एम.बी.बी.एस. डाक्टर, पोस्ट ग्रेजुएट (स्त्रीरोग दिल्ली), कार्यरत, बहुमुखी प्रतिभा, कुछ सफेद दाग, कन्या हेतु उच्च शिक्षा प्राप्त (मेडिको वरीयता), सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 2953, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 165, एम.ए., बी.एड., गौरवर्णीय, राजस्थानी, गौड़ ब्राह्मण कन्यार्थ डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, फील्ड आफीसर, क्वालीफाइड बिजनेसमैन, शाकाहारी, निर्व्यसनी, मांगलिक, सजातीय वर चाहिए. प्रथम बार में ही संपूर्ण बायोडाटा, जन्मकुंडली अत्यावश्यक सहित पत्रव्यवहार करें. वि.नं. 2954, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रावत (बारी), 29, 153, एम.ए., गृहकार्य प्रवीण, सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व हेतु सुस्थापित, प्रगतिशील, सजातीय या अंतरजातीय, दहेजबंधन से मुक्त वर चाहिए. म.प्र. वासियों को प्राथमिकता. प्रथम बार ही पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3038, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 5'2", कुर्मि क्षत्रिय, एम.ए. (अंग्रेजी और हिंदी), गोरी, सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 3039, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

कुशवाहा, तलाकशुदा, निसंतान, 28, सुंदर, सुशील, स्नातिका हेतु वर चाहिए. वि.नं. 3040, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खटीक, 23, 5'3", दो वर्षीय नर्सरी टीचर डिप्लोमा, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु राजकीय सेवारत, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी. वि.नं. 3041, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कांसल अग्रवाल, एम.ए., कंप्यूटर डिप्लोमा, प्रतिष्ठा (अध्ययनरत), 24 वर्षीया, 157 सें.मी., गौरवर्ण, सुंदर, बिहारवासी कन्या हेतु सेवारत, शिक्षित, व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3042, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20, 153, 57 किलो, इंटर पास, स्वस्थ, श्यामवर्ण, तीखे नाकनक्श, बिहार निवासी, माथुर कायस्थ कन्या हेतु स्वावलंबी, कायस्थ वर चाहिए. शीघ्र तथा उत्तम ब्याह. वि.नं. 3043, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर (तेली), 23, 5'1", एम.ए., सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 3044, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25, 163, बी.ए., फैशन डिजाइन में ट्रेंड, कंप्यूटर प्रोग्राम कोर्स अध्ययनरत, रंग गेहुआं, आकर्षक व्यक्तित्व, गृहकार्यदक्ष, मधुर स्वभाव, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सी.ए., डाक्टर, इंजीनियर, शासकीय अधिकारी अथवा उत्तम व्यवसायी वर चाहिए. पिता सरकारी प्रतिष्ठान में महाप्रबंधक. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3045, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ श्रीवास्तव, 20, 155, 55, बी.ए. आनर्स इकोनोमिक्स प्रथम श्रेणी, गोरी, अति सुंदर कन्यार्थ सजातीय, सर्विसरत वर चाहिए. वि.नं. 3046, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैथिल ब्राह्मण (सांडिल), 22, 5'4", दरभंगा मूल, दिल्ली सेटल्ड, आरंभिक शिक्षा (लंदन/नाईजीरिया), बी.एच.एम.एस. (दिल्ली), कन्या हेतु वर. मेडिको/अभियंता/उच्चपदस्थ/दिल्लीवासी प्राथमिकता. वि.नं. 3047, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

26½, 155, बंगाली वैश्य साहा, बी.एससी. (आनर्स), सुंदर, गौरवर्णा, केंद्रीय सरकारी कार्यरत (विवाह बाद नौकरी ट्रांसफर), भागलपुर (बिहार) निवासी हेतु सुशिक्षित, उच्चपदस्थ, सरकारी व सहसरकारी, बंगाली वर चाहिए. दहेज, जातिप्रथा विरोधी. वि.नं. 3048, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 31, 150, एम.ए., बी.एड., दिल्ली सेवारत, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर. शीघ्र विवाह, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3049, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, 27, 5′2″, बी.ए., बी.एड. (अध्ययनरत); हुआं, गृहकार्यदक्ष, शाकाहारी, विभिन्न पुरस्कार प्त कन्यार्थ सेवारत, व्यवसायरत, सुयोग्य, ध्यमवर्गीय वर चाहिए. वि.नं. 3050, सरिता, नई ल्ली-110055.

कुर्मी, मेडिको, एम.बी.बी.एस., एम.डी. (पीडिया-क्स) कन्या, 26, 160 के लिए मेडिको/एम.डी. ध्ययनरत/आई.ए.एस./इंजीनियर, स्वजातीय वर ाहिए. वि.नं. 3051, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जिझौतिया ब्राह्मण, 28 वर्षीया, एम.ए., म.पी.एड., केंद्रीय सेवारत कन्या हेतु योग्य वर ाहिए. वि.नं. 3052, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 27½, 155, एम.ए., पीएच.डी., री, सुंदर, पब्लिक स्कूल टीचर हेतु सुयोग्य वर ाहिए. शिक्षित परिवार, जातिबंधन नहीं, उत्तम वाह. वि.नं. 3053, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यप्रदेशीय जायसवाल, संपन्न, प्रतिष्ठित, वसायी परिवार, 22, 153, एम.एससी. (केमेस्ट्री), रवर्ण. आकर्षक, स्मार्ट, सुशील, गृहकार्यदक्ष हेतु नातीय, चौकसे, राय, शिवहरे, डाक्टर, इंजीनियर, लिट्री आफीसर अथवा व्यवसायी वर चाहिए. पिता र्वसरत डिफेंस इंजीनियर, शीघ्र उत्तम विवाह. पूर्ण वरण सहित लिखें. वि.नं. 3054, सरिता, नई ल्ली-110055.

35, 160, स्लिम, सुंदर, गेहुआं रंग, पोस्ट जुएट, उत्तरप्रदेशीय वैश्य, निसंतान, कानूनन ाकशुदा कन्या हेतु बारोजगार वर चाहिए. वि.नं. 55, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 152, 2,500/-, सनाढ्य ब्राह्मण, गौरवर्ण, .एड., गृहकार्यदक्ष, यू.पी. कानवेंट टीचर हेतु ीनियर, सी.ए. या उच्चपदस्थ, कार्यरत, अधिकारी चाहिए. वि.नं. 3056, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव कन्या, 26, 164, एम.काम., बी.एड., वा आधारित शासकीय अधिकारी, आकर्षक, ील, गेहुआं, साफ, गृहकार्यदक्ष हेतु मध्य प्रदेश में थापित, सुयोग्य, निर्व्यसनी वर चाहिए. जातिबंधन . प्रस्ताव आमंत्रित. वि.नं. 3057, सरिता, नई ली-110055.

कश्यप (कहार) परिवार हेतु वर चाहिए. कन्या गोरी, आकर्षक, 10+2 (उत्तीर्ण), गृहकार्य में ण, बाथम व मल्लाह को प्राथमिकता है. वि.नं. 8, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 18, 5′4″, हायर सेकेंड्री, सुंदर, गृहकार्य ण, दिल्ली में निजी आवास, कन्या हेतु ग्य वर चाहिए. पूर्वी उत्तरप्रदेशीय दिल्लीवासी वरीयता. वि.नं. 3059, सरिता, नई दिल्ली-055.

सरयूपारी ब्राह्मण, 150, 36 वर्षीया, गृहकार्य- हिंदीभाषी, दक्षिण पूर्व एशिया के एक देश से धन, परित्यक्ता, निसंतान लड़की हेतु संतान-रहित, भारमुक्त, विधुर, परित्यक्त या कुंआरा, सहनशील, कुलीन, दहेज अनिच्छुक जीवनसाथी चाहिए. जन्मपत्री और पूर्ण परिचय सहित पत्र लिखें. वि.नं. 3060, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, मध्यमवर्गीय, 22 वर्षीया, 152 सें.मी., एकहरा बदन, गेहुआं रंग, विज्ञान स्नातक (बायोलोजी), गृहकार्य में दक्ष, सुशील कन्या हेतु शासकीय सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 3061, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई (हिंदू), डिप्लोमा इंजीनियर (मध्य रेलवे), 160 सें.मी., 27 वर्ष कन्यार्थ सजातीय वर. शीघ्र विवाहार्थ, पिता (सेवानिवृत्त क्लास-1 आफीसर), प्रतिष्ठित परिवार, म.प्र. वरीयता. वि.नं. 3062, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चंद्रवंशीय क्षत्रिय (रवानी) कन्या, 20 वर्ष, 5′3″, गोरी, अत्यंत सुंदर, एम.ए. द्वितीय छात्रा, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सरकारी सेवारत, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3063, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, राजपूत क्षत्रिय मनहस परिवार की बी.ए., 155 सें.मी., सुंदर, सुशील, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3064, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उम्र 23 साल, कद 155 सें.मी., एम. काम. फाइनल अध्ययनरत के लिए सुयोग्य, गढ़वाली, राजपूत वर. जन्मकुंडली सहित आवेदन करें. वि.नं. 3065, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 155 सें.मी., बी.एससी., सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 3066, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 22, 5′4″, एम.ए., बी.एड., गोरी, अति सुंदर, उच्च/प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु अच्छी नौकरी, उच्च व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 3067, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, एम.एससी., गेहुआं रंग, मध्यमवर्गीय राजपूत कन्यार्थ सुयोग्य वर. जातिबंधन, दहेजरहित शीघ्र विवाह. वि.नं. 3068, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 5′1″, एम.ए. हिंदी, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु सुशिक्षित, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3069, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 28, 5′2″, एम.ए. (अर्थशास्त्र), सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 3070, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 22, 160, स्नातक, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, सेवारत, व्यवसायी, स्वजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3071, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी, ब्राह्मण, 22, 5′2″, एक हाथ में मामूली दोष, घरेलू काम करने में सक्षम, मैट्रिक, सुंदर कन्या हेतु बारोजगार वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 3072, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 27 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.एससी. (रसायन विज्ञान), एम.एड., लेक्चरर राजकीय विद्यालय (उ.प्र.), आकर्षक, स्मार्ट कन्यार्थ डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, अधिकारी (बैंक, प्रशासनिक) या अन्य समकक्ष, योग्य, स्मार्ट वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें, 'शीघ्र 'शादी. वि.नं. 3073, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, ग्रेजुएट, 25, 5′3″, साफ गेहुआं रंग, सुंदर, मृदुभाषी, गृहकार्यकुशल, अध्यापिका हेतु उच्च पद पर कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3074, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिर्फ मंगली लड़का चाहिए. सुंदर, स्वस्थ, गोरी, स्नातक, गोयल लड़की के लिए 23/157/52, उत्तम विवाह. वि.नं. 3075, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (धीवर), 22, 167, दिल्ली, साइंस ग्रेजुएट, बी.एड., एडवांस कंप्यूटर डिप्लोमा, शिक्षारत, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पिता एवं भाई केंद्र सरकार अधिकारी. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3076, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप तोमर, 26, 4′10″, सुंदर, 11वीं पास, पिता इंजीनियर, कन्यार्थ नौकरीशुदा वर चाहिए, जो दहेज के खिलाफ हो. वि.नं. 3077, सरिता, नई दिल्ली-110055.

5′1″, 32, अग्रवाल, एम.ए., गृहकार्यदक्ष, कार्यरत, डायवोर्सी कन्यार्थ वर चाहिए. वि.नं. 3078, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 28, 5′4″, एम.ए., कंप्यूटर डिप्लोमा, कार्यरत, सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, उच्च शिक्षित परिवारीय कन्यार्थ कार्यरत, अधिकारी वर चाहिए. पिता वरिष्ठ अधिकारी. वि.नं. 3079, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 152 सें.मी., आकर्षक, शार्प फीचर, गेहुआं रंग, स्लिम, गृहकार्यदक्ष, कानवेंट शिक्षित, एम.एससी., कंप्यूटर ट्रेंड कन्या हेतु साहू (तेली), उपजातिबंधन नहीं. मिलिट्री आफीसर, इंजीनियर, डाक्टर, अधिकारी वर्ग चाहिए. पूर्ण शिक्षित, सभ्य परिवार. 'शीघ्र 'शादी. संपूर्ण विवरण सहित तुरंत लिखें. वि.नं. 3080, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोत्र अयोध्यावासी, स्वर्णकार, 22 वर्षीया, 5′3″, अति आकर्षक छवि, गोरी, सुंदर, स्लिम, प्रतिभाशाली, हाई स्कूल से बी.ए. तक अंगरेजी सहित, कालिज में प्रथम स्थान, प्रथम श्रेणी, एम.ए. अध्ययनरत, एन.सी.सी. प्रमाणपत्र, संगीत प्रभाकर, गायन, तबला, कत्थक, भाव संगीत प्रथम श्रेणी, अन्य [illegible] प्रतियोगिताओं के प्रमाणपत्र, सिलाई, कढ़ाई एवं गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. कृपया प्रथम बार में विवरण भेजने की कृपा करें. वि.नं. 3081, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 162, 2,500/-, बी.एससी. (इंगलिश मीडियम), कंप्यूटर डिप्लोमा, पी.आर.ओ. डिप्लोमा, कंप्यूटर प्वाइंट हैदराबाद में कार्यरत, सुंदर, आकर्षक कन्यार्थ सुयोग्य वर. केंद्रीय सेवारत को प्राथमिकता. दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3082, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खूबसूरत, स्लिम, 32, 152, एम.ए. (अर्थशास्त्र), पश्चिमी उत्तरप्रदेशीय, सुस्थापित परिवार की कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3083, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मांगलिक गुप्ता, 31, 5′3″, बी.एससी., बी.एड., आकर्षक, हफ्ते के अंदर ही विधवा, निसंतान, गेहुआं, स्लिम, घरेलू कन्या हेतु उच्च कुलीन, सुस्थापित वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3084, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वर चाहिए कानवेंट शिक्षित क्रिश्चियन लड़की के लिए, 29, 156, इकहरा बदन, गेहुआं रंग, एम.ए., बी.एड., हाई स्कूल अध्यापिका, डब्लू.सी.एल. स्कूल रु. 2600/-, मुफ्त क्वाटर्स, न शिनाख्त होने वाली चेहरे में थोड़ी सी खराबी. लिखें : वि.नं. 3085, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, सरयूपारीण ब्राह्मण कन्या, 162 सें.मी., असिस्टेंट प्रोफेसर, 4,800/-, सुंदर, गोरी हेतु डाक्टर, इंजीनियर, असिस्टेंट प्रोफेसर, स्टील प्लांट, मिल्स, सेना, रेलवे, पुलिस, वन, किसी भी विभाग से प्रस्ताव आमंत्रित. वि.नं. 3086, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, राजपूत, 5′2″, बी.ए. I, स्टेनो डिप्लोमा, पतली, गोरी, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, अस्थायी कार्यरत, पिता पुलिस इंस्पेक्टर कन्यार्थ स्मार्ट, ग्रेजुएट, सरकारी कार्यरत. शीघ्र लिखें. वि.नं. 3087, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता निवासी, 19, 163 सें.मी., बी.काम., एल.आई.सी. कार्यरत, सुंदर, बिहारी, तेली कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 3088, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 22, 172, कंप्यूटर डिप्लोमा, एम.काम. अध्ययनरत, कानवेंट शिक्षित, मध्य प्रदेश निवासी, पिता उच्च पदाधिकारी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. इंजीनियर, डाक्टर को प्राथमिकता. वि.नं. 3089, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल गोयल, एम.बी.बी.एस., 25, 5′2½″, गेहुआं रंग, आकर्षक, स्लिम कन्यार्थ सजातीय, डाक्टर वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3090, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, 31½, 5′1″, विधवा, एम.ए.,

ीएच.डी. में अध्ययनरत, आकर्षक, सुंदर, ृहकार्यदक्ष, सुशील, एक पुत्र, एक पुत्री को सजातीय, उच्च व्यापारी या अधिकारी वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3091, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 34, 5′2″, जूनियर स्टेनोग्राफर (पब्लिक सेक्टर), अति साधारण, पितृविहीन, एम.ए. कन्यार्थ सजातीय, सरकारी सेवारत, अविवाहित वर चाहिए. दिल्ली, गाजियाबाद को प्राथमिकता. शीघ्र सादा विवाह. वि.नं. 3092, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 5′3″, स्नातक, 22, 5′4″, स्नातक (फाइनल), कुर्मि, पितृविहीन सुंदर बहनों हेतु उच्चपदस्थ, आदर्शवादी, दहेजविरोधी वर. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3093, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, 20, 150, बी.ए. अध्ययनरत, सुंदर, गेहुआं रंग, मध्यम वर्ग हेतु सजातीय, शासकीय सेवारत, म.प्र. निवासी वर चाहिए. वि.नं. 3094, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महावर कोली कन्या, फैशन डिजाइनर, सेवारत, 24, 160, 3,000/-, सुंदर, सुशील, स्नातक, गृहकार्य में दक्ष, पिता राजपत्रित अधिकारी (रेलवे), हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 3095, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लोहार), 26, 161, एम.ए., बी.एड., शिक्षिका कन्या हेतु सजातीय, उच्च सेवारत, व्यवसायी वर. शीघ्र उत्तम विवाह. वि.नं. 3096, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हैहय वंश (कसेरा), सेंट्रल स्कूल शिक्षिता, साइंस आनर्स, बी.एड. (पटना यूनिवर्सिटी) अध्ययनरत, बहुमुखी प्रतिभा, 25½, 156, गोरी कन्यार्थ योग्यताप्राप्त, सुस्थापित, अधिकारी/व्यवसायी वर. उपजातिबंधन नहीं. बायोडाटा सहित शीघ्र विवाहार्थ लिखें. वि.नं. 3097, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 20, 158, बी.ए., सुंदर, स्लिम, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, सुस्थापित, सुशिक्षित वर चाहिए. वि.नं. 3098, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रांची निवासी, सौंडिक, सुंदर, गोरी, ग्रेजुएट कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3099, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (बीसा), 28, 5′3″, बी.एससी., एम.बी.ए., कानवेंट सोफिया शिक्षित, प्रतिभाशाली, नूनन तलाकशुदा, निसंतान, स्लिम, गोरी, प्रतिष्ठित व्यापारीय, प्रशासनिक कार्य का अनुभव, राजस्थान निवासी कन्या हेतु उच्च कुलीन, सुशिक्षित, आत्मनिर्भर, अविवाहित वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. वि.नं. 3100, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 26, 5′3″, कानवेंट शिक्षित, एम.एससी., बी.एड., सुंदर, गौरवर्ण (मंगली) कन्या हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. वि.नं. 3101, सरिता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत, महरा/कहार, 27 वर्षीया, 5′4″, बी.ए. कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. भाई व रिश्तेदार डाक्टर एवं राजपत्रित अधिकारी. वि.नं. 3102, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 26½, 162, 3,500/-, सरकारी सेवारत, गौरवर्णीय, सुंदर, पतली, डाक्टर, इंजीनियर परिवार की कन्या हेतु सेवारत, डाक्टर/इंजीनियर/अधिकारी वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3103, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भाटी (राजपूत), 22, 155, बी.एससी. (बायोलोजी), सुंदर, स्लिम, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर. शीघ्र विवाह. वि.नं. 3104, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 22½, 5′2″, कंप्यूटर कोर्स, एम.ए. अंगरेजी अध्ययनरत, बी.एड., गेहुआं, साफ, सुंदर, इकलौती, संपन्न परिवार, हेतु इंजीनियर, उच्च नौकरी वाला, सजातीय वर चाहिए. दोनों भाई असिस्टेंट इंजीनियर, मातापिता सरकारी सेवारत, उत्तम एवं शीघ्र विवाह. वि.नं. 3105, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

वधू चाहिए

जायसवाल, बिहार निवासी, 31, 178, बिजनेस मैनेजमेंट, गोरा, स्वव्यवसाय हेतु सुशिक्षित, सुंदर, लंबी, घरेलू वधू. जाति, उपजातिबंधन नहीं. दहेज-रहित, सविवरण लिखें. वि.नं. 2983, सरिता, नई दिल्ली-110055.

61 वर्षीय, पंजाबी, दायित्वमुक्त, विधुर, बिजनेसमैन, सुखमय, शांत जीवन बिताने हेतु 50 के आसपास, सत्यनिष्ठ, स्वस्थ, एकाकी जीवनसंगिनी चाहिए. वि.नं. 3000, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बरनवाल, 27, 178, 6,500/-, स्मार्ट, भारत सरकार के प्रतिष्ठान में इंजीनियर, आवास उपलब्ध, युवक हेतु लंबी, सुंदर, गोरी, शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 3001, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 30, 4,000/-, भिलाई इस्पात संयंत्र में टेकनीकल पद पर कार्यरत, स्वस्थ युवक हेतु सुशील, सुशिक्षित वधू. वि.नं. 3002, सरिता, नई दिल्ली-110055.

फूलमाली (सैनी), 23, 170, 65, ग्रेजुएट, इकलौता, स्वतंत्र व्यवसाय, गाड़ी, बंगला, हेतु सुंदर लड़की चाहिए. वि.नं. 3003, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 27, 170, 3,000/-, बैंक क्लर्क, सुंदर व्यक्तित्व हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित कन्या चाहिए. कार्यरत को वरीयता. वि.नं. 3004, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिटायर्ड पुरुष हेतु सुंदर, सुशील, संगीत

विशारद जीवनसाथी. शीघ्र लिखें. वि.नं. 3006, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 30, 8,000/-, 5'9" एवं 27, 6,500/-, 5'11", चार्टर्ड एकाउंटेंट भाइयों, पिता सेवानिवृत्त इंजीनियर हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित कन्याएं चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3019, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, 33, 168, 3,600/-, एम.ए., बी.एड., अध्यापक दिल्ली प्रशासन, सरकारी आवास, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3020, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नई बंबई स्थापित, उत्तर भारतीय, 29, 183, 4,500/-, एन.सी.वी.टी., सरकारी सेवा, मध्यमवर्गीय, सुविधायुक्त घर, अकेला, निर्व्यसनी, साधारण व्यक्तित्व, उच्च परिवार, युवकार्थ गृहकार्यदक्ष, कार्यरत (बंबई या आसपास), कुंआरी/विधवा, प्रांत, जातिबंधन नहीं. संपूर्ण विवरण, स्वयं निर्णायिका/ अभिभावक लिखें. वि.नं. 3025, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, पीएच.डी., 28, 168, 5,300/-, लेक्चरर, राजकीय महाविद्यालय, उ.प्र. निवासी युवक हेतु सुंदर, शिक्षित कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3106, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, पंजाबी सिडाना, 33, 5'6", एम.ए., 3,500/-, अध्यापक (म्यूजिक) दिल्ली नगर निगम, सुंदर, गोरे युवक हेतु घरेलू, शिक्षित, नेत्रवान वधू चाहिए. आंशिक विकलांग, परित्यक्ता भी विचारणीय. वि.नं. 3107, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वाराणसी निवासी, आत्मनिर्भर, कार्यरत कोल इंडिया (कार्मिक), 32, 165, 5,000/-, युवकार्थ सुंदर, सुशील वधू चाहिए. वि.नं. 3108, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 28, 187, प्रतिष्ठित परिवार, आकर्षक व्यक्तित्व, मासिक आय पांच अंकीय, खुद का व्यवसाय, पिता सरकारी प्रतिष्ठान में उच्च अधिकारी, हेतु शिक्षित, सुंदर, हंसमुख, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय वधू चाहिए. भाई डाक्टर, पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3109, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोटा (राजस्थान) निवासी, भार्गव/ब्राह्मण, 37, 167, 5,000/-, बी.काम., निजी व्यवसाय, निजी मकान, प्रतिष्ठित परिवारीय युवकार्थ ब्राह्मण/वैश्य वधू चाहिए. विवाह शीघ्र. वि.नं. 3110, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंगाल निवासी, पब्लिक सेक्टर में सहायक पद पर कार्यरत, हिंदीभाषी युवक 30, 175, 5,500/-, हेतु सुंदर, गोरी, ग्रेजुएट (23 वर्ष से 26 वर्ष तक) चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 3111, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 5'4", गोरा, शिक्षित युवक, नितांत अकेला को घरजमाई बनाने की पूर्णरूप से इच्छुक, केवल इकलौती कन्या के परिवार अथवा स्वतंत्र कन्याएं, महिलाएं सविवरण संपर्क करें. किसी प्रकार का कोई बंधन नहीं. वि.नं. 3112, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, 30, 160, 57, इंजीनियरिंग स्नातक, अपना व्यवसाय, आय पांच अंकों में, को सुंदर, सुशिक्षित, संभ्रांत परिवारीय, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 3113, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय, (उ.प्र.), 26 वर्षीय, बी.एससी., कद 5'8", गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व, स्मार्ट, नगर में निजी भव्य निवास, कृषि फार्म, गाड़ी, आय छः अंकों में, कांट्रेक्ट व ट्रांसपोर्ट में भागीदारी, निजी व्यवसायी युवक हेतु शिक्षित, गोरी, विशेष सुंदर, लंबा कद, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. नगर में निवास प्राथमिकता. वि.नं. 3114, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जयपुर निवासी, माहेश्वरी, बी.काम., 167, 34, व्यसायरत युवक के लिए सुंदर, माहेश्वरी/अग्रवाल/ जैन कन्या की आवश्यकता है. दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 3115, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 28, 170, इंजीनियर, एम.बी.ए. (आई.आई.एम), प्रतिष्ठित कंपनी में प्रबंधक हेतु सुंदर, उच्च शिक्षित वधू चाहिए. प्राथमिकता व्यावसायिक महिला, आई.ए.एस. इंजीनियर. संपूर्ण बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 3116, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मौर्य (कुशवाहा), 32½, 158, डाक्टर, एम.बी.बी.एस., एम.एस. (सर्जरी), उ.प्र. निवासी हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. बंधन नहीं. वि.नं. 3117, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहार निवासी, वैश्य, बी.काम., 28, 175, व्यवसायी, 7,000/- मासिक, युवक हेतु संस्कारी, मध्यम वर्ग परिवार की लंबी, गोरी, सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. उपजाति एवं दहेजबंधन नहीं. विवाह शीघ्र. वि.नं. 3118, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बाल्मिकी अनु. जाति (वैद, लाहोट, जिनवाल), नवंबर 65/170/68/9000/-, पिता चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, एकमात्र पुत्र, राष्ट्रीय स्तर छात्रवृत्तियां प्राप्त, नास्तिक, बहुभाषी, कंप्यूटर इंजीनियर के लिए आत्याकर्षक, सुयोग्य वधू की चाह. केवल कन्या का व्यक्तित्व विचारणीय. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण न मिलने पर पत्रव्यवहार नहीं. दहेज नहीं. कन्या/ अभिभावक लिखें. वि.नं. 3119, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गर्ग, 41, 5'2½", ग्रेजुएट/व्यवसाय, मासिक आय पांच अंकीय, दो पुत्रियां, साउथ निवासी, हेतु कुंआरी, विधवा, निसंतान, पूर्ण स्वस्थ, सुंदर, सुयोग्य, 30 वर्ष से कम नहीं, वधू प्रथम बार में संपूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 3120, सरिता, झंडेवाला एस्टेट,

झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

27, 5'8", सनाढ्य ब्राह्मण, शासकीय सेवारत, ,00/- मासिक, एम.ए. युवक हेतु योग्य वधू हिए. (सजातीय) कुंडली सहित संपर्क. वि.नं. 1, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू धोबी, 31, 175, 6,200/-, एम.बी.बी.एस., डी. (अल्टरनेटिव मेडीसिन), सुंदर, सौम्य, पत्रित चिकित्साधिकारी युवक हेतु सजातीय, सूरत, गोरी, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 2, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आयु 28, 5'8", चार्टर्ड एकाउंटेंट, सी.एस., सक आय पांच अंकीय, प्रतिष्ठित परिवार, पारीण ब्राह्मण, हेतु सुंदर, गोरी, संभ्रांत वारीय, ग्रेजुएट (बी.काम. प्राथमिकता), कन्या म बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें. शीघ्र विवाह. ं. 3123, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रोहिला (नामदेव वंशी), 30, 5'6", ग्यारहवीं , मासिक आय 2,000/-, हेतु सुयोग्य वधू. पत्री, बायोडाटा भेजें. शीघ्र विवाह, दहेज नहीं. ं. 3124, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति (कुम्हार), 33, 172, रंग गोरा, सक आय 5,000/-, भारतीय वायुसेना कार्यरत, य, आकर्षक युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू हए. वि.नं. 3125, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 27, 162, 3,500/-, फार्मासिस्ट, ारी अस्पताल दिल्ली, हेतु सरकारी विद्यालय/ लिय सेवारत वधू चाहिए. वि.नं. 3126, सरिता, दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, ब्राह्मण, सरकारी नौकरी, सेक्स में र्थ हेतु पढ़ीलिखी लड़की चाहिए. जातिबंधन वि.नं. 3127, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल सिंघल, 26 वर्षीय, 5'6", निजी साय, मद्रास निवासी हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील चाहिए. लिखें. वि.नं. 3128, सरिता, नई ी-110055.

राजपूत अविवाहित, 58 वर्ष, प्रधानाचार्य, इंटर ज पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त संगिनी. लिखें. वि.नं. 3129, सरिता, नई ी-110055.

49, अरोड़ा, प्रवक्ता, 5,500/-, निसंतान, , निजी मकान, घरेलू वधू, 39 वर्ष तक विधवा, कशुदा स्वीकार्य. संपर्क: वि.नं. 3130, सरिता, नई ी-110055.

माहेश्वरी, 26, 173, स्मार्ट, बी.ई. (मैकेनिकल), ी.ए. एल.एंड टी. में कार्यरत, 6,000/-, मासिक हेतु अतिसुंदर, गौरवर्ण, ग्रेजुएट वधू चाहिए. 3131, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत, कानपुर निवासी, 170, बी.ए., , 26 हेतु सुयोग्य वधू. बायोडाटा भेजें. वि.नं. , सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती नागर ब्राह्मण, 26½, 173, 6,250/-, एम.बी.बी.एस./डी.सी.एच. (फाइनल ईयर) कर रहे, सुंदर, स्मार्ट युवक हेतु प्रतिष्ठित परिवार की सुंदर, स्लिम, गौरवर्ण, मृदुभाषी, उच्च शिक्षित वधू चाहिए. मेडिको को वरीयता. वि.नं. 3133, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 5'8", 6,000/- मासिक, जाटव, स्मार्ट, गोरा, केंद्रीय सरकार में सेवारत, पोस्टिंग दिल्ली, हेतु स्मार्ट, गोरी, शिक्षित, सुशील वधू की आवश्यकता है. शीघ्र विवाह, संपूर्ण विवरण के साथ लिखें. वि.नं. 3134, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीय, 167 सें.मी., 5,000/-, यादव, एडवोकेट हेतु एडवोकेट जीवनसाथी चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 3135, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैढ़ क्षत्रिय (स्वर्णकार), 166, 29, सैकिंड ईयर कामर्स, स्वव्यवसायरत हेतु सुंदर, स्लिम वधू चाहिए. जाति एवं दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 3136, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 28, 5'4", बी.काम., टिंबर ट्रेडर्स के थोक विक्रेता, मासिक आय 10,000/- प्रतिमाह हेतु सुंदर कन्या चाहिए. बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 3137, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, बंसल गोत्र, बी.एससी., 26, 5'6", स्वयं का व्यवसाय, आय उच्च चार अंकीय, उत्तर प्रदेश निवासी, प्रतिष्ठित परिवार के इकलौते, सुंदर युवक हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें. वि.नं. 3138, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महाराष्ट्रीयन, बौद्ध, 29, 5'5", निर्व्यसनी, शाकाहारी, बी.ए., 4,200/- प्रतिमाह हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष, सर्विसवाली जीवनसंगिनी चाहिए. नर्स प्राथमिकता. वि.नं. 3139, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली, 4,000/-, 25, 155, बी.एससी। तीन वर्षीय मेडिकल डिप्लोमाधारी हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 3140, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोयल, बी.काम., 25, 165, 4,000/-, निजी व्यवसाय हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. दिल्ली के पास क्षेत्र को प्राथमिकता. वि.नं. 3141, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 29, 5'6", एम.ए. इंजीनियरिंग डिप्लोमा, निजी व्यवसाय, स्मार्ट युवक हेतु सजातीय, शिक्षित, सुंदर वधू. वि.नं. 3142, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय राजपूत, 25, 5'11", 5,000/-, शिक्षित, स्मार्ट, निजी व्यवसाय (दिल्ली), निजी मकान, युवक हेतु सुंदर, सुशील, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या चाहिए. वि.नं. 3143, सरिता, झंडेवाला एस्टेट,

रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, माहेश्वरी, बी.काम., आकर्षक, 174 सें.मी., सुव्यवस्थित, स्वकार्यरत, पांच अंकों की मासिक आय वाले युवक के लिए गौरवर्णीय, सुंदर, सुशिक्षित, माहेश्वरी/अग्रवाल वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3144, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 155, रेलवे पर्यवेक्षक हेतु सुशिक्षित, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू. वि.नं. 3145, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27, 165, 6,000/-, कानपुर निवासी, बिहार सरकार में राजपत्रित एवं प्रशासनिक (बी.डी.ओ.) पद पर सेवारत, आकर्षक युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3146, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 5′6″, गेहुआं, आकर्षक चेहरा, अविवाहित, क्षत्रिय, एम.ए. फिलासफी (प्रथम श्रेणी), परम प्रतिभावान, कोमल स्वभाव, राज कपूर की तरह संवेदनशील, आय मध्यमवर्गीय, सुंदर, आकर्षक वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. परित्यक्ता, गरीब, बेसहारा भी स्वीकार्य. ओशोप्रेमी को प्राथमिकता, कारणवश शादी जल्दी करनी पड़ रही है. पी.एस.सी. (मध्य प्रदेश) में उच्चतम पद हेतु सलेक्शन होगा. वि.नं. 3147, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्नोई, 28, 5½′, स्मार्ट, सिविल इंजीनियरिंग डिप्लोमा, बी. काम., साइकिल एवं पार्ट्स व्यवसायी के लिए सुंदर, योग्य वधू चाहिए. वि.नं. 3148, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, 165, 27, एम.टेक., सरकारी सेवारत, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व, मध्यमवर्गीय, शिक्षित, प्रतिष्ठित परिवार हेतु उपयुक्त वधू चाहिए. वि.नं. 3149, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, उ.प्र. में राजपत्रित अधिकारी, 32, 165, सांवला, स्वस्थ युवक हेतु शिक्षित, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. वि.नं. 3150, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 170, अग्रवाल, अविवाहित, सुंदर, प.बं. निवासी, सेक्सुअली कमजोरी, लेकिन डाक्टर के अनुसार सामान्य, संतान पैदा करने में पूर्ण सक्षम, निजी, अच्छा व्यवसाय, युवक हेतु सुंदर कन्या चाहिए. विधवा, तलाकशुदा भी स्वीकार्य. दहेजबंधन नहीं. सादगीपूर्ण विवाह. वि.नं. 3151, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू धोबी, 31, 5′7″, 5,000/-, स्नातक, इकहरे, सांवले, आकर्षक, अमेरिका में पारिवारिक व्यवसाय, स्वयं भी अमेरिका से वीजा के इंतजार में, अभी निजी लिमिटेड कंपनी में कार्यरत हेतु सुंदर, सुयोग्य, विदेश जाने की इच्छुक वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3152, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी, विधुर, अकेला, 54, 8,000/-, निर्व्यसनी, अपना मकान, हेतु सत्यनिष्ठ, शाकाहारी जीवनसाथी. धोखेबाज, लालची, डरपोक नहीं. प्राथमिकता विधवा. वि.नं. 3153, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्वालीफाइड एलोपैथिक डाक्टर, बैचलर, 35, 160, 70, हेतु सुंदर, मेडिको/नानमेडिको वधू. जाति, उम्र बंधनमुक्त. वि.नं. 3154, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शुद्ध शाकाहारी, 41, 165, 4,000/-, अविवाहित, सेक्सुअल कमजोर, सरकारी नौकरी, हेतु केवल दिल्लीवासी, सरकारी नौकरीवाली, धार्मिक, अपना मकान, बच्चेवाली वधू चाहिए. वि.नं. 3155, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न घराने के 45 वर्षीय, तलाकशुदा, हंसमुख, प्रभावशाली व्यक्तित्व, सुसंस्कृत इंजीनियर, अपना व्यवसाय हेतु पढ़ीलिखी, स्नेहमयी जीवनसंगिनी चाहिए. कोई बंधन नहीं. विधवा, तलाकशुदा स्वीकार. वि.नं. 3156, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 27, 163, बी.ई. (लंदन), एम.ई. (लंदन), एम.बी.ए. (लंदन) कर रहे हैंडसम युवक हेतु कानवेंट शिक्षित, सुंदर, मेडिको कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : 13, CLEVELAND, MANSIONS, LONDON NW 67 SY. U.K.

राजस्थानी राठौड़ राजपूत युवक 25, जो अमेरिका में एम. फार्मा व पीएच.डी. अध्ययनरत है के लिए सुंदर, लंबी, गोरी, खानदानी, राजपूत वधू चाहिए. अंगरेजी माध्यम से बी.एससी. को प्राथमिकता. दहेज नहीं. पूरा विवरण, कुंडली भेजें. वि.नं. 3157, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी मुसलिम, 29, 168, 6,000/-, एम.ए., एल.टेक., बंगलौर में कार्यरत, स्वयं निर्णायक, उत्तर प्रदेश निवासी परंतु कुछ पारिवारिक झगड़ों के कारण परिवार से कोई संबंध नहीं, हेतु सुंदर, शिक्षित, गोरी वधू चाहिए. जाति, धर्म कोई बंधन नहीं. शीघ्र दहेज रहित विवाह. कृपया प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 3158, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, तलाकशुदा, फिजीशियन, बी.ए., बी.एम.एस., 158 सें.मी., 6,500/-, राजपत्रित अधिकारी, उत्तर प्रदेश सरकार, निजी फार्म, मकान, हेतु कुंआरी, गोरी, 25-32 वर्ष के मध्य वधू. जातिबंधन नहीं. प्राथमिकता पर्वतीय/दक्षिण/उ.प्र., दहेज नहीं. प्रथम बार विवरण लिखें. वि.नं. 3159, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, राजकीय सेवारत अध्यापक, रु. 3,600/- मासिक, राष्ट्रपति पदक, हेतु वधू चाहिए. वि.नं. 3160, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट, 21, केंद्रीय सेवारत (क्लर्क), के लिए वधू चाहिए. वि.नं. 3161, सरिता, नई दिल्ली-110055.

...र भारतीय, फार्मेसिस्ट, 25, 168, 64, /-, निजी कार्य, आत्मनिर्भर, स्थापित मंगलौर (कर्नाटका) युवक हेतु शिक्षित, ...ाकाहारी वधू. वि.नं. 3162, सरिता, नई ...110055.

...राती, डा. एम.बी.बी.एस., डी. आर्थ ...मेडलिस्ट), विधुर, 38, 6′, 75 किलो, /-, हेतु वधू चाहिए. संतान-2, उपजातीय ...ीं. विधवा व परित्यक्ता भी स्वीकार्य. वि.नं. ...रिता, नई दिल्ली-110055.

...ावाहा, 25, 5′8″, गौरवर्ण, एम.बी.बी.एस., ... डाक्टर हेतु सुंदर, सुशील वधू चाहिए. ...ी.एस. अध्ययनरत को प्राथमिकता. वि.नं. ...रिता, नई दिल्ली-110055.

... वर्षीय, भारतीय, पोस्ट ग्रेजुएट, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, 5′8″, स्लिम, गोरा, संसार भ्रमण ...0 वर्षीया, गोरी, लंबी कन्या चाहिए. जाति, ... नहीं, वापसी योग्य फोटो सहित लिखें : 240 ... STREET, OTTAWA, ONTARIO ...T8 CANADA.

...ववाहित, बी.एससी. (गणित), 39+157, ..., ए.जी.एम.पी. में एकाउंटेंट, दुर्घटनावश ...र का पंजा लकवाग्रस्त, सहारा ले कर चलना, ... सेवारत कन्या को प्राथमिकता, कोई बंधन ...नं. 3166, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल बंसल, 23, 165, 55, बी. काम., उच्च व्यवसायी, वार्षिक आय 4 लाख, प्रतिष्ठित व संपन्न परिवार के अकेले युवक हेतु प्रतिष्ठित व सभ्य परिवारीय, वास्तविक सुंदर कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 3167, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यू.पी., जांगिड़ ब्राह्मण, 27, 162, जूनियर इंजीनियर के समकक्ष, मध्य रेलवे में कार्यरत हेतु सुंदर, ग्रेजुएट वधू. वि.नं. 3168, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पुरोहित, 24, 7,000/- मासिक, प्रा.लि. कं. एकाउंटेंट युवक हेतु सजातीय (राजस्थानी/गुजराती), शिक्षित, सुंदर, सुसंस्कृत वधू चाहिए. वि.नं. 3169, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 29, 172, बी.ई. इंजीनियर, आर्चीटेक्ट कंसलटेंट, शासकीय ठेकेदार, उत्तम आय, पिता राजपत्रित अधिकारी, सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. प्रथम बार में पत्रिका. वि.नं. 3170, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश निवासी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, उम्र 48, 162 सें.मी., आयुर्वेद चिकित्सक हेतु सजातीय, शिक्षित, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. अविवाहिता, तलाकशुदा, संतानोत्पत्ति में असमर्थ, विधवा, निसंतान स्वीकार. प्रथम पत्नी चिकित्सक थी इन का निधन हो गया इन के दो बच्चे हैं. बायोडाटा

विज्ञापनदाताओं के लिए सूचना

1. सरिता में वैवाहिक व गोद विज्ञापनों की दर 5.00 रु. प्रति शब्द है. अंगरेजी पाक्षिक वूमंस ईरा में ...रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के ...केवल 2.00 रु. अतिरिक्त यानी 7.00 रु. प्रति शब्द होगा.

...अन्य व्यक्तिगत व व्यावसायिक विज्ञापनों की दर सरिता में 9.00 रु. प्रति शब्द है तथा वूमंस ईरा में ...रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के ...केवल 2.50 रु. अतिरिक्त यानी 11.50 रु. प्रति शब्द होगा.

...विशेष छूट : यदि एक ही विज्ञापन दो लगातार अंकों में प्रकाशित कराया जाए तो तीसरे अंक में ...न मुफ्त में छपेगा. केवल 20 रु. डाक व्यय के अतिरिक्त देने होंगे, यानी डाक खर्च कुल 60 रु. एवं ...त डाक व्यय रु. 150/- होगा.

2. जाति/धर्म का उल्लेख न कर विवाह करने वालों के विज्ञापन आधे शुल्क पर प्रकाशित किए जाते हैं. ...ज्ञापनों में विज्ञापनदाता की निजी जाति/धर्म का उल्लेख भी नहीं होना चाहिए.

...पनराशि अग्रिम आने पर ही विज्ञापन प्रकाशित किया जा सकेगा.

3. मूल विज्ञापन के साथ 'वि.नं. सरिता, नई दिल्ली-110055.' इन 6 शब्दों का मूल्य आवश्यक है. ...सहित' शब्द वाले व विज्ञापनदाता के निजी पते वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते. पर विदेशों में ...वहार करने वाले विज्ञापनों में निजी पते छापे जाते हैं ताकि पत्रव्यवहार तुरंत हो सके. इन में बाक्स नं. ...विधा उपलब्ध नहीं है.

... विज्ञापनदाताओं के पते गुप्त रखे जाते हैं. यदि आप उन्हें पत्र लिखना चाहें तो कृपया लिफाफे पर ...सरिता, वूमंस ईरा, नई दिल्ली-110055 लिख कर हमें भेज दें. आप का पत्र हम उन के पास डाक द्वारा ...ी. कृपया प्रत्येक वि.नं. को अलगअलग पत्र लिखें. विज्ञापन नं. के उत्तर में पत्रों को विज्ञापनदाताओं के ...जने हेतु कोई शुल्क नहीं लिया जाता.

सहित लिखें. वि.नं. 3171, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (बीसा), सिंघल, 32, 5'7", एम.ए., एलएल.बी., कानूनी तलाकशुदा, स्टेट बैंक सेवारत हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील, शिक्षित, प्रतिष्ठित परिवारीय वधू चाहिए. अध्यापिका को वरीयता. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 3172, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 25, 5'8", 5,000/-, असिस्टेंट इंजीनियर, गोरा, सुंदर हेतु सुशिक्षित, सुंदर, सजातीय वधू चाहिए. सेवारत को प्राथमिकता. वि.नं. 3173, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 6'1", नेत्रहीन, स्टेज सिंगर व म्यूजिक टीचर हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3174, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रौनियार वैश्य, बिहारी, 26, कार्यरत इंजीनियर भेल, हेतु वधू. सिर्फ दाहिना पैर नीचे पोलियोग्रस्त स्वीकार्य, ड्राईविंग कुशल, दहेज, जाति, विकलांगता बंधन नहीं. वि.नं. 3175, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गर्ग, 33, 169, बी. काम., 3,000/-, आकर्षक, स्लिम, सुंदर, गेहुआं रंग, पश्चिम बंगालवासी, तलाकशुदा हेतु निर्धन, वास्तविक सुंदर, सुशिक्षित, इकहरे बदन की, कुंआरी या तलाकशुदा वधू चाहिए. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3176, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 55 वर्षीय, विधुर, स्वस्थ, बैंक आफीसर (3 वयस्क पुत्र), हेतु 40 वर्ष से अधिक, सजातीय/कायस्थ जीवनसंगिनी चाहिए. वि.नं. 3177, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, 172, निर्दोष तलाकशुदा, यू.एस.ए. निवासी, भारतीय, कंप्यूटर इंजीनियर, हेतु डाक्टर, कंप्यूटर इंजीनियर वधू. बंधन नहीं. बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 3178, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

यादव (अहीर), 36 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., (अविवाहिता) कन्या एवं 45 वर्षीय वर (विधुर 12 वर्षीय पुत्र), एम.ए. मध्य प्रदेश शासकीय सेवारत हेतु वर एवं वधू चाहिए. अन्य बंधन नहीं. वि.नं. 3032, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी आदि गौड़ ब्राह्मण, 30/160, बारहवीं पास, गेहुआं, सुशील कन्यार्थ वर एवं 28/173, रेल विभाग (प.रे.) में कार्यरत, चार अंकों में आय, युवक हेतु सुशील, गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. वि.नं. 3179, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 28, 152, ग्रेजुएट, केंद्रीय सरकार सेवारत, गौरवर्ण, अति सुंदर, प्रतिष्ठित परिवार कन्यार्थ योग्य वर एवं 30, 167, कंप्यूटर डिप्लोमा, टेलीकम्युनिकेशन इंस्पेक्टर हेतु वधू, जातिबंधन नहीं, शीघ्र विवाह. वि.नं. 3180, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी तंतुवाय प्रतिष्ठित 27, 154, हायर सेकंड्री सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सेवारत व्यवसाय-रत वर एवं 36, 162, 2,600/-, केंद्रीय सेवारत, मैट्रिक, स्मार्ट, कुंआरे युवकार्थ सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू. एक ही परिवार से रिश्ता स्वीकार्य. जातिबंधन नहीं. सविवरण लिखें. वि.नं. 3181, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

हिंदू दंपती को एक वर्ष तक का बच्चा गोद चाहिए. वि.नं. 3182, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारवाड़ी अग्रवाल, शिक्षित, युवा दंपती को नवजात या 6 महीने तक का सुंदर, स्वस्थ लड़का गोद चाहिए. इच्छुक गर्भवती महिलाएं प्राइवेट डाक्टर या नर्सिंग होम जो नवजात शिशु गोद दे सकते हैं, तुरंत संपर्क करें. अविवाहित भी मान्य. वि.नं. 3183, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आस्ट्रेलियन नागरिक सेरोगेट दादादादी या परिवार चाहता है. खूबसूरत, तलाकशुदा, 35 वर्षीय, आर्थिक संपन्न एवं खूबसूरत 3 वर्षीया पुत्री, मैं चाहता हूं, मेरी पुत्री भारत में पढ़े. मैं एक मेहनती, कार्यरत इंजीनियर एवं अन्य प्रतिभासंपन्न एवं व्यावसायिक विचारधारा का हूं, मैं कई बार भारत भ्रमण कर चुका हूं. मैं भावनात्मक एवं आध्यात्मिक रूप से वाकिफ मेधावी शाकाहारी हूं (आप के खानपान की कोई समस्या नहीं) भविष्य में स्थापित होने पर शादी का विचार, मेरे पास ब्रिटेन एवं न्यूजीलैंड की नागरिकता भी है : संपर्क : A. ROBERTS. BOX 36554, NORTHCOTE AUCKLAND, NEWZEALAND.

शिक्षा

ब्यूटीशियन मेहंदी, कटिंग, ड्रेस डिजाइनिंग, फैशन डिजाइनिंग, एंब्राइड्री, कुकिंग, आफिस मैनेजमेंट, टेक्सटाइल डिजाइनिंग, टेलीफोन आपरेटर, इंटीरियर डेकोरेटर, पेंटिंग, गिफ्ट पैकिंग, कैंडिल मेकिंग कोर्स हेतु महिलाएं संपर्क करें, वूमंस कैरियर इंस्टीट्यूट, 3721/1 कन्हैयानगर, त्रिनगर, दिल्ली-110035, फोन 7115307.

व्यवसाय

अमेरिकन ज्ञान पर अपना नामपता, 1,000, उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं, जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 70, वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दी माल, अमृतसर-143017.

